MAHN402DST

प्रेमचंद : विशेष अध्ययन

एम.ए.

(चतुर्थ सेमेस्टर के लिए)

पेपर – 16

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी

हैदराबाद-32, तेलंगाना, भारत

© Maulana Azad National Urdu University, Hyderabad

Course : **Premchand : vishesh adhyayan**

ISBN: 978-81-XXX-XXX-XX

First Edition: November, 2024

Publisher	:	Registrar, Maulana Azad National Urdu University
Edition	:	2024
Copies	:	500
Price	:	313/-
Copy Editing	:	Dr. Wajada Ishrat, MANUU, Hyderabad Dr. L. Anil, DDE, MANUU, Hyderabad
Cover Designing	:	Dr. Mohd. Akmal Khan, DDE, MANUU, Hyderabad
Printing	:	Print Time & Business Enterprises, Hyderabad

Premchand : vishesh adhyayan

For

M.A. Hindi

4th Semester

On behalf of the Registrar, Published by:

Directorate of Distance Education

Maulana Azad National Urdu University

Gachibowli, Hyderabad-500032 (TS), Bharat

*Director:*dir.dde@manuu.edu.in *Publication:* ddepublication@manuu.edu.in

Phone number: 040-23008314 Website: manuu.edu.in

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronically or mechanically, including photocopying, recording or any information storage or retrieval system, without prior permission in writing from the publisher (registrar@manuu.edu.in)

संपादक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Editor

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar
DDE, MANUU

संपादक-मंडल
(Editorial Board)

प्रो. ऋषभदेव शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, हैदराबाद
परामर्शी (हिन्दी), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय,
मानू

Prof. Rishabha Deo Sharma
Former Head, P.G. and Research
Institute, Dakshin Bharat Hindi Prachar
Sabha, Hyderabad
Consultant (Hindi), DDE, MANUU

प्रो. श्याम राव राठोड़
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
अंग्रेज़ी और विदेशी भाषा वि.वि.,हैदराबाद

Prof. Shyamrao Rathod
Head, Department of Hindi
EFL University, Hyderabad

प्रो. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक
केंद्रीय हिन्दी संस्थान, सिकंदराबाद, हैदराबाद

Prof. Gangadhar Wanode
Regional Director
Central Institute of Hindi
Secunderabad, Hyderabad.

डॉ. आफ़ताब आलम बेग
सहायक कुल सचिव,
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Aftab Alam Baig
Assistant Registrar, DDE, MANUU

डॉ. वाजदा इशरत
अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. Wajada Ishrat
Guest Faculty/Assistant Professor
(Cont.)
DDE, MANUU

डॉ. एल. अनिल
अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं)
दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू

Dr. L. Anil
Guest Faculty/Assistant Professor
(Cont.)
DDE, MANUU

पाठ्यक्रम-समन्वयक

डॉ. आफ़ताब आलम बेग

सहायक कुल सचिव, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

लेखक **इकाई संख्या**

- **डॉ. गुर्रमकोंडा नीरजा**, एसोसिएट प्रोफेसर, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै 1, 14, 15
- **डॉ. शशिबाला**, पूर्व हिन्दी अध्यापक, केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय पुलिस अकादमी, हैदराबाद 2, 3
- **डॉ. एल. अनिल,** अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर(सं), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू, हैदराबाद 4,7,9
- **डॉ. शेख अफ़रोज फातेमा शेख हबीब,** एसोशिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, मौलाना आज़ाद कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स, औरंगाबाद 5,10,11,12
- **डॉ. वाजदा इशरत,** अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफेसर (सं), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मानू 6,8
- **डॉ. मोहम्मद आल अहमद,** सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, मुमताज़ पीजी कॉलेज, लखनऊ 13,16

विषयानुक्रमणिका

संदेश	:	कुलपति	7
संदेश	:	निदेशक	9
भूमिका	:	पाठ्यक्रम–समन्वयक	11

खंड/ इकाई		विषय	पृष्ठ संख्या
खंड 1	:		
इकाई 1	:	प्रेमचंद कालीन समाज और साहित्य	13
इकाई 2	:	प्रेमचंद युगीन परिदृश्य	28
इकाई 3	:	प्रेमचंद युगीन श्रम जीवी संगठन और आंदोलन	39
इकाई 4	:	प्रेमचंद : एक परिचय	52
खंड 2	:		
इकाई 5	:	प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य : रचनात्मक और वैचारिक विकास प्रेमचंद की उपन्यासिक कला	64
इकाई 6	:	'गोदान का तात्विक विवेचन	83
इकाई 7	:	कृषक जीवन का महाकाव्य	93
इकाई 8	:	गोदान: पात्र एवं चरित्र चित्रण	101
खंड 3	:		
इकाई 9	:	कफ़न : सारांश एवं पात्रों का विवेचन	119
इकाई 10	:	शतरंज के खिलाड़ी : सारांश एवं पात्रों का विवेचन	129
इकाई 11	:	जुलूस : सारांश एवं पात्रों का विवेचन	140
इकाई 12	:	'ठाकुर का कुआँ : सारांश एवं पात्रों का विवेचन	152

खंड 4 :

इकाई 13 : प्रेमचंद की पत्रकारिता 162

इकाई 14 : महाजनी सभ्यता : निबंध की विवेचना 184

इकाई 15 : साहित्य का उद्देश्य : निबंध की विवेचना 197

इकाई 16 : प्रेमचंद के नाटक 'कर्बला' की विवेचना 211

प्रूफ रीडर:

प्रथम : डॉ. वाजदा इशरत, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर(सं), दू. शि. नि., मानू

द्वितीय : डॉ. एल. अनिल, अतिथि प्राध्यापक/असिस्टेंट प्रोफ़ेसर (सं), दू. शि. नि., मानू

अंतिम : डॉ. आफ़ताब आलम बेग, सहायक कुलसचिव, दू. शि. नि., मानू.

संदेश

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी की स्थापना 1998 में संसद के एक अधिनियम द्वारा की गई थी। यह NAAC मान्यता प्राप्त एक केंद्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय का अधिदेश है: (1) उर्दू भाषा का प्रचार-प्रसार और विकास (2) उर्दू माध्यम से व्यावसायिक और तकनीकी शिक्षा (3) पारंपरिक और दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना, और (4) महिला शिक्षा पर विशेष ध्यान देना। यही वे बिंदु हैं जो इस केंद्रीय विश्वविद्यालय को अन्य सभी केंद्रीय विश्वविद्यालयों से अलग करते हैं और इसे एक अनूठी विशेषता प्रदान करते हैं, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषाओं में शिक्षा के प्रावधान पर जोर दिया गया है।

उर्दू माध्यम से ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार का एकमात्र उद्देश्य उर्दू भाषी समुदाय के लिए समकालीन ज्ञान और विषयों की पहुंच को सुविधाजनक बनाना है। लंबे समय से उर्दू में पाठ्यक्रम सामग्री का अभाव रहा है। इस लिए उर्दू भाषा में पुस्तकों की अनुपलब्धता चिंता का विषय रहा है। नई शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार उर्दू विश्वविद्यालय मातृभाषा / घरेलू भाषा में पाठ्यक्रम सामग्री प्रदान करने की राष्ट्रीय प्रक्रिया का हिस्सा बनने को अपना सौभाग्य मानता है। इसके अतिरिक्त उर्दू में पठन सामग्री की अनुपलब्धता के कारण उभरते क्षेत्रों में अद्यतन ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने या मौजूदा क्षेत्रों में नए ज्ञान प्राप्त करने में उर्दू भाषी समुदाय सुविधाहीन रहा है। ज्ञान के उपरोक्त कार्य-क्षेत्र से संबंधित सामग्री की अनुपलब्धता ने ज्ञान प्राप्त करने के प्रति उदासीनता का वातावरण बनाया है जो उर्दू भाषी समुदाय की बौद्धिक क्षमताओं को मुख्य रूप से प्रभावित कर सकता है। ये वह चुनौतियां हैं जिनका सामना उर्दू विश्वविद्यालय कर रहा है। स्व-अध्ययन सामग्री का परिदृश्य भी बहुत अलग नहीं है। प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष के प्रारंभ में स्कूल/कॉलेज स्तर पर भी उर्दू में पाठ्य पुस्तकों की अनुपलब्धता पर चर्चा होती है। चूंकि उर्दू विश्वविद्यालय की शिक्षा का माध्यम केवल उर्दू है और यह विश्वविद्यालय लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों के पाठ्यक्रम प्रदान करता है, इसलिए इन सभी विषयों की पुस्तकों को उर्दू में तैयार करना विश्वविद्यालय की सबसे महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय अपने दूरस्थ शिक्षा के छात्रों को स्व-अध्ययन सामग्री अथवा सेल्फ लर्निंग मैटेरियल (SLM) के रूप में पाठ्य सामग्री उपलब्ध कराता है। वहीं उर्दू माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए भी यह सामग्री उपलब्ध है। अधिकाधिक लोग इससे लाभान्वित हो सकें, इसके लिए उर्दू में इलेक्ट्रॉनिक पाठ्य सामग्री अथवा eSLM विश्वविद्यालय की वेबसाइट से मुफ़्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध है।

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि संबंधित शिक्षकों की कड़ी मेहनत और लेखकों के पूर्ण सहयोग के कारण पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य उच्च-स्तर पर प्रारंभ हो चुका है। दूरस्थ शिक्षा के छात्रों की सुविधा के लिए, स्व-अध्ययन सामग्री की तैयारी और प्रकाशन की प्रक्रिया विश्वविद्यालय के लिए सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि हम अपनी स्व-शिक्षण सामग्री के माध्यम से एक बड़े उर्दू भाषी समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होंगे और इस विश्वविद्यालय के अधिदेश को पूरा कर सकेंगे।

एक ऐसे समय जब हमारा विश्वविद्यालय अपनी स्थापना की 25वीं वर्षगांठ मना चुका है, मुझे इस बात का उल्लेख करते हुए हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय का दूरस्थ शिक्षा निदेशालय कम समय में स्व-अध्ययन सामग्री तथा पुस्तकें तैयार कर विद्यार्थियों को पहुंचा रहा है। देश के कोने कोने में छात्र विभिन्न दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों से लाभान्वित हो रहे हैं। यद्यपि पिछले वर्षों कोविड-19 की विनाशकारी स्थिति के कारण प्रशासनिक मामलों और संचार में भी काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है लेकिन विश्वविद्यालय द्वारा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक संचालित करने के लिए सर्वोत्तम प्रयास किए गए हैं।

मैं विश्वविद्यालय से जुड़े सभी विद्यार्थियों को इस परिवार का अंग बनने के लिए ह्रदय से बधाई देता हूं और यह विश्वास दिलाता हूँ कि मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय का शैक्षिक मिशन सदैव उनके लिए ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करता रहेगा। शुभकामनाओं सहित!

प्रो. सैयद ऐनुल हसन

कुलपति

संदेश

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को पूरी दुनिया में अत्यधिक कारगर और लाभप्रद शिक्षा प्रणाली की हैसियत से स्वीकार किया जा चुका है और इस शिक्षा प्रणाली से बड़ी संख्या में लोग लाभान्वित हो रहे हैं। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी ने भी अपनी स्थापना के आरंभिक दिनों से ही उर्दू तबके की शिक्षा की स्थिति को महसूस करते हुए इस शिक्षा प्रणाली को अपनाया है। मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी का प्रारम्भ 1998 में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से हुआ और इस के बाद 2004 में विधिवत तौर पर पारंपरिक शिक्षा का आग़ाज़ हुआ। पारंपरिक शिक्षा के विभिन्न विभाग स्थापित किए गए।

देश की शिक्षा प्रणाली को बेहतर अंदाज़ से जारी रखने में UGC की अहम् भूमिका रही है। दूरस्थ शिक्षा (ODL) के तहत जारी विभिन्न प्रोग्राम UGC-DEB से मंजूर हैं।

पिछले कई वर्षों से यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) इस बात पर ज़ोर देता रहा है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था को पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम व व्यवस्था से जोड़कर दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के छात्रों के मेयार को बुलंद किया जाये। चूंकि मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी दूरस्थ शिक्षा और पारंपरिक शिक्षा का विश्वविद्यालय है, अतः इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यूजीसी-डीईबी (UGC-DEB) के दिशा निर्देशों के मुताबिक़ दूरस्थ शिक्षा प्रणाली और पारंपरिक शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को जोड़कर और गुणवत्तापूर्ण करके स्व-अध्ययन सामग्री को पुनः क्रमवार यू.जी. और पी.जी. के विद्यार्थियों के लिए क्रमशः 6 खंड- 24 इकाइयों और 4 खंड – 16 इकाइयों पर आधारित नए तर्ज़ की रूपरेखा पर तैयार किया गया है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय यू.जी., पी.जी., बी.एड., डिप्लोमा और सर्टिफिकेट कोर्सेज़ पर आधारित कुल 17 पाठ्यक्रम चला रहा है। साथ ही तकनीकी हुनर पर आधारित पाठ्यक्रम भी शुरू किए जा रहे हैं। शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए 9 क्षेत्रीय केंद्र (बेंगलुरु, भोपाल, दरभंगा, दिल्ली, कोलकत्ता, मुंबई, पटना, रांची और श्रीनगर) और 6 उपक्षेत्रीय केंद्र (हैदराबाद, लखनऊ, जम्मू, नूह, अमरावती और वाराणसी) का एक बहुत बड़ा नेटवर्क मौजूद है। इस के अलावा विजयवाड़ा में एक एक्सटेंशन सेंटर कायम किया गया है। इन क्षेत्रीय केन्द्रों के अंतर्गत 160 से अधिक अधिगम सहायक केंद्र (Learner Support Centre) और 20 प्रोग्राम सेंटर काम कर रहे हैं, जो शिक्षार्थियों को शैक्षिक और प्रशासनिक सहयोग उपलब्ध कराते हैं। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय (DDE) अपने शैक्षिक और व्यवस्था से संबन्धित कार्यों में आई.सी.टी. का इस्तेमाल कर रहा है। साथ ही सभी पाठ्यक्रमों में प्रवेश सिर्फ़ ऑनलाइन तरीके से ही दिया जाता है।

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की वेबसाइट पर शिक्षार्थियों को स्व-अध्ययन सामग्री की सॉफ्ट कॉपियाँ भी उपलब्ध कराई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त ऑडियो-वीडियो रिकॉर्डिंग का लिंक भी वैबसाइट पर उपलब्ध है। इसके साथ-साथ शिक्षार्थियों की सुविधा के लिए SMS और व्हाट्सएप्प ग्रुप एवं ईमेल की व्यवस्था भी की गयी है। जिसके द्वारा शिक्षार्थियों को पाठ्यक्रम के विभिन्न पहलुओं जैसे- कोर्स के रजिस्ट्रेशन, दत्तकार्य, काउंसेलिंग, परीक्षा आदि के बारे में सूचित किया जाता है। गत वर्षों से रेगुलर काउंसेलिंग के अतिरिक्त एडिशनल रेमेडियल क्लासेस(ऑनलाइन) उपलब्ध कराये जा रहे हैं। ताकि शिक्षार्थियों के मेयार को बुलंद किया जा सके।

आशा है कि देश की शैक्षणिक और आर्थिक रूप में पिछड़ी आबादी को आधुनिक शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय की भी मुख्य भूमिका होगी। आने वाले दिनों में शैक्षणिक जरूरतों के अनुरूप नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के अंतर्गत विभिन्न पाठ्यक्रमों में परिवर्तन किया जायेगा और आशा है कि यह दूरस्थ शिक्षा को अत्यधिक प्रभावी और कारगार बनाने में मददगार साबित होगा।

प्रो. मो. रज़ाउल्लाह ख़ान
निदेशक, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

दलित साहित्य : विशेष अध्ययन

इकाई 1 : प्रेमचंद कालीन समाज और साहित्य

इकाई की रूपरेखा

1.1 प्रस्तावना
1.2 उद्देश्य
1.3 मूल पाठ : प्रेमचंद कालीन समाज और साहित्य
1.3.1 प्रेमचंद का समय
1.3.2 प्रेमचंद की युगचेतना : समकालीन परिवेश का साहित्यिक प्रतिफलन
1.3.3 साहित्यिक परिपथ : आदर्श और आदर्शोन्मुख यथार्थ से यथार्थ की ओर
1.4 पाठ सार
1.5 पाठ की उपलब्धियाँ
1.6 शब्द संपदा
1.7 परीक्षार्थ प्रश्न
1.8 पठनीय पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! प्रेमचंद का समय भारतीय साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। 20 वीं सदी की शुरुआत में, जब भारत ब्रिटिश उपनिवेशी शासन के अधीन था, तब प्रेमचंद ने अपने लेखन के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक समस्याओं को उजागर किया। उनके काल में देश में बड़े पैमाने पर परिवर्तन हो रहे थे, जिसमें औद्योगीकरण, कृषि संकट और सामंती व्यवस्था का विघटन शामिल था। प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक कार्यों के माध्यम से इन मुद्दों को न केवल चित्रित किया है बल्कि उनके प्रति जागरूकता भी बढ़ाई है।

प्रेमचंद की कहानियों व उपन्यासों में ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों, किसानों की दुर्दशा और महिलाओं के अधिकारों जैसे विषयों पर गहन चर्चा होती है। उनके निबंधों में भी उनके विचारों को भलीभाँति देखा जा सकता है। इस प्रकार, प्रेमचंद ने न केवल एक लेखक के रूप में बल्कि एक समाज सुधारक के रूप में भी अपनी पहचान बनाई। उनका समय भारतीय समाज को जागरूक करने और उसे नई दिशा देने का समय था।

इसके अतिरिक्त, प्रेमचंद का लेखन हिंदी साहित्य को एक नई पहचान दिलाने वाला था। उन्होंने हिंदी भाषा को सरल एवं सहज बनाते हुए आम जनता तक पहुँचाने का कार्य किया। उनके द्वारा उपयोग किए गए स्थानीय बोल-चाल की भाषा ने उन्हें जनसामान्य से जोड़ा तथा उनकी रचनाओं को लोकप्रिय बनाया। इस प्रकार, प्रेमचंद का समय न केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसने आगे चलकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं सामाजिक बदलावों की नींव रखी।

छात्रो! अब हम इस इकाई में प्रेमचंदकालीन समाज और साहित्य का अध्ययन करेंगे और यह जानने की कोशिश करेंगे कि प्रेमचंद ने अपने विचारों से किस प्रकार समाज को प्रभावित किया था।

1.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- प्रेमचंदकालीन समाज के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- प्रेमचंद कालीन युगीन परिस्थितियों के बारे में जान सकेंगे।
- प्रेमचंद कालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे।
- प्रेमचंद कालीन युगचेतना को समझ सकेंगे।
- प्रेमचंद की साहित्यिक यात्रा से परिचित हो सकेंगे।

1.3 मूल पाठ : प्रेमचंद कालीन समाज और साहित्य

प्रिय छात्रो! हिंदी साहित्य के इतिहास में 1916-1945 तक की अवधि को प्रेमचंद का युग कहा है। ध्यान देने की बात है कि प्रेमचंद जिस समय साहित्य लिखना शुरू किया था उस समय प्रथम विश्वयुद्ध के बादल मंडरा रहे थे और उनकी मृत्यु के समय द्वितीय विश्वयुद्ध की तैयारियाँ हो रही थीं। इन दो महायुद्धों के बीच समाज में काफी परिवर्तन हुआ। इन तमाम परिस्थितियों को प्रेमचंद के साहित्य में भलीभाँति देखा जा सकता है। प्रगतिशील आलोचक रामविलास का मानना है कि "प्रेमचंद उन लेखकों में से हैं जिनकी रचनाओं में से बाहर के साहित्य-प्रेमी हिंदुस्तान को पहचानते हैं। उन्होंने हिंदुस्तान के राष्ट्रीय सम्मान को बढ़ाया है; हमारे देश को अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में गौरव दिया है। प्रेमचंद पर सारा हिंदुस्तान गर्व करता है, दुनिया की शांति-प्रेमी जनता गर्व करती है, सोवियत संघ के आलोचक मुक्त कंठ से उनका महत्व घोषित करते हैं, हम हिंदी-भाषी प्रदेश के लोग उन पर खास तौर से गर्व करते हैं, क्योंकि वह सबसे पहले हमारे थे, जिन विशेषताओं को उन्होंने अपने कथा-साहित्य में झलकाया है, वह हमारी जनता की जातीय विशेषताएँ थीं।" (रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, पृ.5-6)। आइए, अब हम विस्तार से प्रेमचंद कालीन समाज और साहित्य से संबंधित पहलुओं की जानकारी प्राप्त करेंगे।

1.3.1 प्रेमचंद का समय

प्रिय छात्रो! रामविलास शर्मा प्रेमचंद को हिंदुस्तान की नई राष्ट्रीय और जनवादी चेतना के प्रतिनिधि साहित्यकार मानते थे। पहले ही कहा जा चुका है कि प्रेमचंद जब लिख रहे थे, उस समय दो महायुद्धों का दौर था। उन तमाम स्थितियों का प्रभाव प्रेमचंद पर पड़ना स्वाभाविक था। अतः उनके लेखन में भी इनका अंकन देखा जा सकता है। "करोड़ों मनुष्यों का संहार करने वाले दो महायुद्धों के बीच प्रेमचंद की वाणी अपने भविष्य में अटल विश्वास रखने वाली भारतीय जनता की वाणी है। राजनीतिज्ञों के कोलाहल और तोपों की गड़गड़ाहट को भेदती हुई वह वाणी आज और भी स्पष्ट सुनाई देती है।" (रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, पृ.3)।

सामाजिक और राजनैतिक परिवेश

प्रेमचंद न ही सामाजिक स्थिरता के पक्षधर थे और न ही अतीत की ओर लौटने के प्रति उनका रुझान था। उन्होंने अपने समय के सामाजिक जीवन को एक नई गति और एक नई दिशा प्रदान की। प्रेमचंद अपने समय के भी थे और आने वाले समय के भी। इसीलिए प्रेमचंद आज भी प्रासंगिक हैं। प्रेमचंद के समय में जनता गुलामी का दंश झेल रही थी। राजनैतिक मुक्ति की

आकांक्षा इस काल की सबसे बड़ी सच्चाई थी। भारतीय जनता दासता से मुक्ति चाह रही थी और औपनिवेशिक शासन उसके दमन के लिए तत्पर था। पर इन दमनकारी नीतियाँ जन आंदोलन को रोख नहीं पाईं। तब परेशान सरकार ने 1910 में मार्ले-मिंटो रिफॉर्म लागू किया। इसको नरमपंथियों ने स्वागत किया था पर गरम दल वालों ने असंतोषजनक बताया। 1911 में बंग विभाजन के आदेश को भी वापस लिया गया था। इसके बाद दो-तीन वर्ष तक स्थिति सामान्य रही। उग्र राष्ट्रवादी नेता तिलक जेल में थे। इसी समय यूरोप की आर्थिक तथा राजनैतिक स्थितियों के कारण 1914 में युद्ध छिड़ गया, जो प्रथम विश्व युद्ध के नाम से जाना जाता है। "ब्रिटेन के हाउस ऑफ कॉमन्स में सेक्रेटरी ऑफ स्टेट ने घोषणा की, कि भारत में ब्रिटिश नीति का लक्ष्य उत्तरदायी सरकार की प्रगतिशील स्थापना है।" (गोपाल राय, हिंदी कहानी की इतिहास-भाग 1, पृ.68)। जल्दी ही स्थितियाँ समझ में आने लगीं। युद्ध काल में भी स्वराज का आंदोलन बंद नहीं हुआ। ऐसे में महात्मा गांधी के प्रभाव से स्वाधीनता आंदोलन चरम पर था। संपूर्ण समाज में अंग्रेजी शासन के विरोध में स्वाधीनता आंदोलन, भारतीय किसानों की दयनीय स्थिति और समांतवाद का विरोध द्रष्टव्य है। तत्कालीन समाज में जमींदारी व्यवस्था थी। जमींदार और उनके कारिंदे गाँव के सर्वेसर्वा थे। उनके रौब और उनकी अमानवीय कृत्यों से जनता को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता था। पुलिस भी उनके साथ ही हाथ मिलाकर जनता का शोषण करने लगी।

प्रेमचंद महात्मा गांधी और उनके असहयोग आंदोलन से इस कदर प्रभावित थे कि उन्होंने सरकारी नौकरी तक छोड़ दी थी। उस समय गाँव के आर्थिक जीवन में जमींदारों और महाजनों का शोषण तीव्र हो चुका था। महात्मा गांधी के भारतीय राजनीति में प्रवेश के काफी पहले प्रेमचंद ने देश की राजनैतिक-सामाजिक परिस्थितियों को समझ लिया था। अपने विचारों व संवेदनाओं को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त करने लगे थे।

भारत कृषि प्रधान देश है। प्रेमचंद के समय किसानों की दशा दयनीय थी। संपूर्ण देश के अन्नदाता को दो जून रोटी के लिए तरसना पड़ता था। किसान कर्ज तले दबा हुआ था। यह समस्या इतनी भयंकर थी कि किसानों को खेती-बाड़ी और गाँवों को छोड़कर शहरों की ओर पलायन करके मजदूरी करना पड़ता था। इतना होने के बावजूद उनकी स्थिति में कोई सुधार नहीं थी। समाज में चारों ओर भ्रष्टाचार, घूसखोरी, षड्यंत्र, कूटनीति, धोखाधड़ी, वेश्यावृत्ति, छुआछूत, सांप्रदायिकता, बाजारवाद आदि समस्याएँ विद्यमान थीं। प्रेमचंद कालीन समाज में दलालों का भोलाभाला था। प्रेमचंद उन बाजार के दलालों से निपटना नहीं जानते थे। उन्होंने स्वयं अपने जीवन के संबंध में कहा कि "मेरा जीवन सपाट, समतल मैदान है, जिसमें कहीं-कहीं गड्ढे तो हैं, पर टीलों, पर्वतों, घने जंगलों, गहरी घाटियों और खंडहरों का स्थान नहीं है। जो सज्जन पहाड़ियों की सिर के शौकीन हैं, उन्हें तो यहाँ निराशा ही होगी।" (प्रेमचंद विश्वकोश से उद्धृत)। 1901-1916 तक के समय में भारतीय समाज में आर्य समाज अत्यंत सक्रिय संस्था के रूप में उभरा था। प्रेमचंद भी आर्य समाज के सदस्य थे। आर्य समाज ने अस्पृश्यता निवारण के लिए कदम उठाए। प्रेमचंद ने भी अपनी भूमिका निभाई। इन तमाम स्थितियों का अंकन उन्होंने अपने साहित्य में किया है। साहित्य के माध्यम से प्रेमचंद ने समाज को चेताने का कार्य किया है।

प्रेमचंद ने यह अनुभव कर लिया कि देश को औपनिवेशिक शासन से छुटकारा मिलना अनिवार्य है। इसके लिए अपार जनशक्ति की आवश्यकता है। औपनिवेशिक शासन की पूरी कोशिश यह रही कि जनशक्ति अस्तित्व में न आए। गोपाल राय इसे गैर-बराबर शक्तियों का संघर्ष कहा। "औपनिवेशिक शासन ने पूरी उन्नीसवीं शताब्दी में यह भ्रम फैलाने की कोशिश की थी कि हिंदुस्तान बौद्धिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से इतना पिछड़ा हुआ है कि वह शासन करने योग्य है ही नहीं। इस शासन से शिक्षा, न्याय, प्रशासन आदि का जो नया ढाँचा खड़ा किया उसका एकमात्र उद्देश्य हिंदुस्तान में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, इस झूठ को प्रसारित करना था। फलस्वरूप शिक्षा एक ऐसा ढाँचा सामने आया जो ऐसे हिंदुस्तानी पैदा करे, जो नस्ल से हिंदुस्तानी सोच, मानसिकता, रहन-सहन, वेश-भूषा आदि से अंग्रेज और मूल अंग्रेज से भी अधिक 'राजभक्त' हों, जो अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता, आर्थिक और बौद्धिक समृद्धि की स्मृति से एकदम शून्य हों, और अपने निजी स्वार्थ के सामने व्यापक समाज के हितों को कोई महत्व न दें। इस विदेशी शासन ने न्याय का एक ऐसा ढाँचा खड़ा किया, जो गरीबों के बूते बाहर हो और व्यवस्था द्वारा बनाए गए कानून-तंत्र को कायम रखने में अपनी सारी बौद्धिक क्षमता लगा दे।" (गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास-भाग 1, पृ.69)। यह शासन-तंत्र साफ होने का दिखावा करता था। वास्तव में यह असमानता और पक्षपात पर टिका हुआ था। औपनिवेशिक शासन के दो तंत्र थे - शिक्षा और न्याय-तंत्र। राजे-रजवाड़े, जमींदार और महाजन उस औपनिवेशिक शासन के स्तंभ थे जो गरीब किसानों, मजदूरों व कारीगरों को दिन-दहाड़े लूटते थे। इसके लिए तो उन्हें पूरी तरह से छूट प्राप्त थी। औपनिवेशिक शासन ने पूरी तरह से इस बात का ध्यान रखा कि जनता अंधविश्वासों, सामाजिक रूढ़ियों और अंध परंपराओं की मकड़-जाल से बाहर न निकाल पाए, क्योंकि यदि जनता जाग गई तो औपनिवेशिक शासन-तंत्र का टूटना निश्चित था।

उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में बंगाल का पुनर्जागरण आंदोलन के दबाव में शासन ने सती-प्रथा के विरुद्ध कानून बनाया। स्त्री-शिक्षा के प्रसार के लिए भी कुछ प्रयत्न किया। लेकिन इसके पीछे यही मंशा थी कि भारतीय जनता अज्ञानता, अंधविश्वास और धार्मिक कलह से कभी भी मुक्त न हो पाए। यह ध्यान देने की बात है कि ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के मुख्य तंत्र अर्थात जमींदार, महाजन और अन्य अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग 'देश-सेवा' के नाम पर जनता को धोखा दे रहे थे। इस औपनिवेशिक शासन के खिलाफ साहित्यकारों ने आवाज उठाई।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद कालीन समाज में व्याप्त कुछ प्रमुख विसंगतियों के बारे में बताइए।
- औपनिवेशिक शासन के स्तंभ कौन हैं?

धार्मिक परिवेश

उन्नीसवीं सदी में धार्मिक रूप से भी समाज में काफी उथल-पुथल था। धर्म के नाम पर जनता को अंधविश्वासों में फँसाया रखा गया था। धार्मिक कलह के कारण समाज बिखरा हुआ था। सामाजिक रूढ़ियों के कारण जनता त्रस्त थी। स्त्रियों की स्थिति दयनीय थी। उन्हें मूलभूत अधिकारों से भी वंचित रखा गया था। धर्म की आड़ में समाज में बाल विवाह, सती प्रथा, कन्या

भ्रूण हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियाँ प्रचलित थीं। इंग्लैंड ईसाई देश था। अतः ब्रिटिश शासकों ने भारत में अपना धर्म प्रचार किया तथा भारतीयों को धर्म के नाम पर आपस में भिड़ने के लिए मजबूर किया। ऐसे में अनेक समाज सुधारक सामने आए और जनता को एकत्रित करने की पुरजोर कोशिश की। उन लोगों ने भारतीय प्राचीन परंपराओं से प्रेरणा लेकर पुनर्निर्माण का कार्य करने के लिए इच्छुक थे। उन्नीसवीं सदी में घटित धार्मिक आंदोलन प्राचीनता तथा आधुनिकता दोनों ओर चला। इस आंदोलन का मुख्य कारण था पाश्चात्य विचारों का प्रभाव। ध्यान देने की बात है कि यह आंदोलन भारतीयों द्वारा चलाया गया आंदोलन था। इसका एक मात्र उद्देश्य था कि धार्मिक जागृति के द्वारा राष्ट्रीयता को ठोस आधार प्रदान करना।

भारतीय शिक्षित नवयुवकों ने अंधविश्वास तथा संकीर्णता के स्थान पर तर्क तथा उदारवादी भावनाओं को आगे बढ़ाया। पाश्चात्य शिक्षा ने उनका दृष्टिकोण बदला। 1813 के बाद ईसाई धर्म प्रचारकों ने भारतीय धर्म और संस्कृति पर चारों ओर से आक्रमण किया था। उन्होंने भारतीय धर्मों में विशेष रूप से हिंदू धर्म की निंदा करनी शुरू कर दी। उन्होंने हिंदू समाज की मान्यताओं, सामाजिक कुरीतियों, अंधश्रद्धा आदि का लाभ उठाकर लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित करने लगे। इसीलिए अपनी संस्कृति की रक्षा के लिए सुधार आवश्यक हो गया।

भारत के प्राचीन तथा मध्यकाल में भी धर्म सुधार के कार्य हुए थे। यह कोई नई बात नहीं थी। उन्नीसवीं सदी में ऐसे अनेक सुधारकों का आविर्भाव हुआ जो समाज और धर्म की कुरीतियों को समाप्त करके देश को शक्तिशाली बनना चाहते थे। इन समाज सुधारकों ने लोगों को चेताया। इनमें राजा राम मोहन राय अग्रणी थे। बाद में दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद आदि ने अपनी महती भूमिका निभाई। 1815 में राजा राम मोहन राय ने आत्मीय सभा की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य यही था कि सभी आपस में एक-दूसरे के धर्म को समझने का प्रयास करें। उनका विश्वास था कि सभी धर्मों में मूलभूत एकता है। इसलिए उन्होंने 'एकतावादी मिशन' की स्थापना की थी। 1828 में उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की। इसने कुछ सिद्धांतों की स्थापना की जो इस प्रकार हैं - ईश्वर एक है। जीवात्मा अमर है। ईश्वर सर्वव्यापी है। मूर्ति-पूजा और कर्मकांड निरर्थक हैं। सत्य की अंतिम कसौटी मानव विवेक है।

उन्नीसवीं सदी के धार्मिक आंदोलन में दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य समाज का महत्वपूर्ण स्थान है। दयानंद सरस्वती ने दो मुख्य संदेश दिए थे - वेदों की ओर लौटो और भारत भारतवासियों का है। उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' (1874) में लिखा है कि विदेशी राज कितना भी अच्छा क्यों न हो, वह स्वराज्य का स्थान कभी नहीं ले सकता। उनका अटल विश्वास था कि वेदों की पुनर्स्थापना से हिंदू धर्म कुरीतियों से मुक्त हो जाएगा।

रामकृष्ण परमहंस भी यही मानते थे कि सभी धर्म श्रेष्ठ होते हैं और उनमें आधारभूत एकता होती है। 1893 में शिकागो में 'धर्मों की विश्व कांग्रेस' में भाग लेकर विवेकानंद ने भारत के गौरव तथा हिंदू धर्म के प्रति सम्मान की भावना स्थापित की। हिंदू धर्म की महानता से विश्व को परिचित कराने का श्रेय थियोसोफिकाल सोसाइटी (एनी बेसेंट) को जाता है।

इस प्रकार उन्नीसवीं सदी में अनेक धार्मिक आंदोलन भी हुए। इनका सब का एक ही उद्देश्य था - जनता को धार्मिक कलह से दूर रखकर देश को गुलामी से मुक्त करना।

बोध प्रश्न

- राजा राम मोहन राय ने एकतावादी मिशन की स्थापना क्यों की?
- दयानंद सरस्वती ने वेदों की ओर लौटने का आह्वान क्यों किया?

1.3.2 प्रेमचंद की युगचेतना : समकालीन परिवेश का साहित्यिक प्रतिफलन

प्रिय छात्रो! ध्यान देने के बात है कि हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद के साहित्य को टर्निंग पाइंट के रूप में माना जाता है। प्रेमचंद ने साहित्य को काल्पनिक और जादुई लोक से निकालकर यथार्थ से जोड़ा। वास्तविक जीवन से जोड़ा। समाज से जोड़ा। उनका प्रमुख उद्देश्य था समाज और जीवन को समझना। उन्होंने जीवन के उन अनछुए पहलुओं की ओर सब का ध्यान आकर्षित किया जिस ओर कभी किसी ने देखने का प्रयास ही नहीं किया। यह इसलिए संभव हुआ क्योंकि उनके विचार प्रगतिशील थे। उन्होंने अपने प्रगतिशील विचारों से मनुष्य की संवेदना और चेतना को जगाने का प्रयास किया।

31 जुलाई, 1880 को बनारस के लमही गाँव में किसान परिवार जन्मे प्रेमचंद किसानों की व्यथा-कथा से बहाली भाँति परिचित थे। बचपन से उन्हें किताबें पढ़ने की रुचि थी। 'तिलिस्म होशरुबा', 'चंद्रकांता', 'भूतनाथ' आदि उपन्यास उनके दुखी बचपन के साथी थे। "वे मुसीबतों में उन्हें ढाँढ़स बँधाते थे और कुछ डेरे के लिए उन्हें ट्यूशनों, सौतेली माँओं और महाजनों की दुनिया से दूर उठा ले जाते थे। इन्हें पढ़ने से उनकी कल्पनाशक्ति प्रखर हुई और खुद भी लिखने की उन्हें प्रेरणा मिली।" (रामविलास शर्मा, प्रेमचंद और उनका युग, पृ.5)। उनका जीवन हिंदुस्तान के औसत गरीब विद्यार्थी का जीवन था। एक बार महाजन से उधार न मिलने पर रोटी का प्रबंध करने के लिए उन्हें अपनी किताबें तक बेचनी पड़ी थीं।

प्रेमचंद ने वास्तविक शिक्षा जहाँ से प्राप्त की वह विश्वविद्यालय दूसरे ही थे। उनके अध्यापक थे लमही गाँव के किसान, बनारस के महाजन और किताबों के नोट्स बिकवाने वाले बुकसेलर थे। भले ही वे गणित पढ़ने योग्य न हो, लेकिन हिंदुस्तानी समाज का बीज गणित अच्छी तरह से जानते थे। समझते थे। उन्होंने गरीबों के बीच जीवन यापन किया। महोबे में बिताए हुए छह साल तथा बस्ती के सरकारी स्कूल की तीन साल की नौकरी ने उन्हें पूर्वी और पश्चिमी हिंदी प्रदेश की जनता की स्थिति को जानने के लिए सहायक सिद्ध हुए। इसलिए जब वे पांडेपुर के किसानों का चित्रण करते हैं तो उनमें समूचे हिंदी प्रदेश के गरीब किसानों का दर्शन मिलता है।

प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को नई गति और नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया। वे साहित्य को जीवन का आधार मानते थे। इसके बारे में उन्होंने 'साहित्य का उद्देश्य' में स्पष्ट किया है। साहित्यकार भी समाज की ही अंग होता है। अतः समाज में जो स्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, उन से वे प्रभावित हुए नहीं रहते। प्रेमचंद पर भी युगीन सामाजिक परिवेश का प्रभाव दिखाई देता है। इसके संबंध उनका यह कथन द्रष्टव्य है - "साहित्यकार बहुधा अपने देश काल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है, तो

साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना असंभव हो जाता है और उसकी विशाल आत्मा अपने देश-बंधुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और इस तीव्र विकलता में वह रो उठता है, पर उसके रुदन में भी व्यापकता होती है। वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिक रहता है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ. 25)। साहित्य को प्रेमचंद उपयोगितावादी मानते थे।

प्रेमचंद औपनिवेशिक शासन से अकेले लड़ रहे थे। उन्होंने अपना साहित्यिक जीवन उपन्यासकार एवं आलोचक के रूप में शुरू किया था। 1905 में उन्होंने उर्दू पत्र 'ज़माना' में आलोचनात्मक लेख भेजा था। अपने लेखन के संबंध में उन्होंने 'मेरे पहली रचना' (हंस, दिसंबर 1935) शीर्षक लेख में लिखा था कि उन्होंने अपने मामा जी के प्रेम और उस प्रेम के कारण चमारों द्वारा हुई उनकी पिटाई को एक नाटक का रूप दिया था - 'होनहार बिरवार के चिकने-चिकने पात', जो अप्रकाशित है।

विश्व में जब महायुद्धों की तैयारियाँ हो रही थी, तब प्रेमचंद का पहला कहानी संग्रह 'सोजे वतन' प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में निहित पाँच कहानियों से अंग्रेज शासक घबरा उठे और इसे जब्त किया गया था। अंग्रेज शासन स्वाधीनता आंदोलन को ही नहीं बल्कि उसकी अगुवाई करने वाले साहित्य का भी गला घोंट देना चाहते थे। पर संभव नहीं हो पाया। युद्ध काल में ही 'सेवा सदन' लिखा गया और युद्ध समाप्त होने पर 'प्रेमाश्रम' पूरा किया। स्वाधीनता आंदोलन का साथ देने वाली जनवादी विचारों वाली पत्रिका की जरूरत प्रेमचंद को महसूस हुई। इसी के परिणाम स्वरूप 1930 में 'हंस' अस्तित्व में आया। प्रिय छात्रो! औपनिवेशिक षड्यंत्र को सबसे पहले भारतेंदु हरिश्चंद्र ने समझा और अपनी रचनाओं में इसका खुलासा किया। उनके बाद प्रेमचंद ने।

प्रेमचंद के लिए देशभक्ति और जनतंत्र दो विरोधी चीजें नहीं थीं। वह राष्ट्रीय और जनवादी भावनाओं के समर्थक थे। यह पहले ही कहा जा चुका है कि जमींदार, महाजन और अंग्रेजी पढ़े लिखे-लिखे लोग भारत में ब्रिटिश शासन के मुख्य स्तंभ थे। इस वर्ग ने धर्म और समाज सेवा के नाम पर धोखा ही देते थे। 'ममता' शीर्षक कहानी में प्रेमचंद ने औपनिवेशिक शासन की दाव-पेंच को उजागर किया है। अपने प्रथम उपन्यास 'देवस्थान रहस्य' (1903) में भी इसका खुलासा किया है। 'अंधेर', 'खून सफेद', 'नमक का दारोगा' जैसी कहानियाँ भी इसी परिदृश्य को उजागर करती हैं। 'अंधेर' में देवी-देवताओं की पूजा की ओट में पनपने वाले भ्रष्टाचार की ओर संकेत है। 'खून सफेद' की पृष्ठभूमि में 1900 में पड़े अकाल का चित्रण है। इसके परिणय स्वरूप हिंदू धर्म से संबद्ध बच्चा बचपन में ईसाई पादरी के साथ चला जाता है और ईसाई ब जाता है। बड़े होने के बाद जब वह अपना घर लौटा चाहता है, तो हिंदू धर्म के ठेकेदार उसे लौटने नहीं देते। इसमें प्रकारांतर से औपनिवेशिक शासन में ईसाई धर्मप्रचारकों की साधन संपन्नता की ओर इशारा है।

प्रेमचंद भारतीय पुनर्जागरण को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते थे। वे भली-भाँति जानते थे कि औपनिवेशिक गुलामी से तभी मुक्ति मिल सकती थी, जब पूरा देश सामाजिक दृष्टि से लिंग, जाति और धर्म के अंतर्विरोधों से मुक्त होगा। उनके संदर्भ में गोपाल राय का यह कथन उल्लेखनीय है - "गांधी जी का स्वराज चार पायों पर टिका वर्ग था जब कि प्रेमचंद और भगत

सिंह का स्वराज वृत्त था। वृत्त भी नहीं गोलक था जिसमें मात्र स्वशासन ही नहीं, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक शोषण से मुक्ति की कामना भी थी, जिसमें एक तरफ सुमन, निर्मला, धनिया, झुनीया, सिलिया जैसी नारियां थीं तो दूसरी ओर अछूत और अवर्ण थे।" (गोपाल राय, हिंदी कहानी का इतिहास -भाग 1, पृ.27)। प्रेमचंद ने मोटेराम शास्त्री, सवा सेर गेहूँ, सद्गति, ठाकुर का कुआँ, रंगभूमि, गोदान, कफन आदि रचनाओं में सवर्णों को बेनखाब किया और सूरदास जैसे दलित चरित्र को नायकत्व प्रदान किया।

प्रेमचंद के समय में स्त्रियों की दशा दयनीय थी। वे पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक सभी तरह से शोषित थीं। प्रेमचंद की अनेक कहानियाँ स्त्री विमर्श और दलित विमर्श की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। प्रेमचंद अपने समय से आगे के साहित्यकार थे। इसीलिए आज भी वे प्रासंगिक हैं।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद भारतीय नवजागरण को किस तरह से देखते थे?
- हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद के साहित्य को टर्निंग पाइंट क्यों माना जाता है?

1.3.3 साहित्यिक परिपथ : आदर्श और आदर्शोन्मुख यथार्थ से यथार्थ की ओर

प्रेमचंद पहले आदर्शवादी साहित्यकार थे। बाद में उन्होंने आदर्श और यथार्थ को जोड़कर रचनाएँ की। लेकिन परिस्थितियों के कारण अपने जीवन के अंतिम पड़ाव में वे पूरी तरह से यथार्थवादी रचनाकार बन गए। आइए! प्रेमचंद की इस साहित्यिक यात्रा के बारे में जानने की कोशिश करेंगे।

प्रेमचंद और आदर्श

आदर्शवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसमें जीवन को संचालित करने के लिए कुछ आदर्श और मूल्य निर्धारित किए जाते हैं। प्रेमचंद अपनी प्रारंभिक रचनाओं में आदर्शवाद का समर्थन करते नजर आते हैं। वे साहित्य में वस्तुतः जिस मूल्य को प्रतिष्ठित देखना चाहते थे वह जन-चेतना की उभरती हुई संवेदना थी। उनका आग्रह था कि लेखक जनता की तरफदारी करके दलितों और पीड़ितों की जीवन संवेदना को लेकर साहित्य का सृजन करें। उन्होंने कभी भी किसी भी कीमत पर अन्याय और अत्याचार का साथ नहीं दिया। वे अपने युग के लिए आदर्श स्थापित करना चाहते थे। प्रेमचंद जिस समय लिख रहे थे, उस समय कविता के क्षेत्र में छायावाद प्रवेश कर रहा था और गद्य के क्षेत्र में सुधारवादी संभावनाएँ अपने अभिव्यक्ति राह ढूँढ़ रही थीं। प्रेमचंद का समय सामंती परंपरा का समय था। प्रेमचंद पूर्व की कहानियों व उपन्यासों में नायक सामंत वर्ग के ही थे। प्रेमचंद ने जनता की दुख-दर्द को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया। उनकी रचनाओं के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि वे एक ऐसे समाज का निर्माण करना चाहते थे जहाँ ऊंच-नीच, अवर्ण-सवर्ण आदि का कोई भेद भाव न हो।

प्रेमचंद का उपन्यास 'सेवा सदन' इस वाक्य से शुरू होता है - "पश्चाताप के कड़वे फल कभी-न-कभी सभी को चखने पड़ते हैं, लेकिन और लोग बुराइयों पर पछताते हैं, दारोगा कृष्णचंद्र अपनी भलाइयों पर पछता रहे थे।" इस तरह का व्यंग्य भारतेंदु युग की अपनी विशेषता थी और प्रेमचंद सही अर्थों में उनके उत्तराधिकारी थे। ध्यान देने की बात है कि भारतेंदु

युग के निबंधों और उपन्यासों को पढ़ने वाले पाठक कम थे। पर चंद्रकांता और भूतनाथ तथा तिलिस्म होशरुबा पढ़ने वाले ज्यादा। प्रेमचंद ने इन पाठकों को 'सेवा सदन' का पाठक बनाया। उन्होंने जन-रुचि के नए मापदंड बनाए। इस उपन्यास को प्रेमचंद ने पहले उर्दू में लिखा था। उर्दू साहित्य को जनता तक पहुँचाना बहुत कठिन था, अतः वे हिंदी में लिखने लगे।

प्रेमचंद अपने प्रारंभिक उपन्यासों और कहानियों में आदर्श पात्रों का चित्रण किया था। 'रूठी रानि' एक ऐतिहासिक उपन्यास है। पहले यह उर्दू में लिखा गया। बाद में हिंदी में इसका रूपांतरण हुआ। यह उपन्यास 1907 में प्रकाशित है। यह जैसलमेर के रावल लूणकरण की पुत्री उमादे की कहानी है। उमादे का विवाह मारवाड़ के शक्तिशाली राव मालदेव के साथ होता है। वह एक पराक्रमी और शक्तिशाली राजा है। लेकिन उसका ऐब उसके पराक्रम पर हावी था। नशे की हालत में वे शादी के शुभ अवसर पर एक ऐसा कुकृत्य कर बैठते हैं जो एक राजा को शोभा नहीं देता। जब रानी उमादे को पता चलती है तो वह राव मालदेव से रूठ जाती है। वह ताउम्र उससे नाराज ही रहती है। यह कहानी मात्र रूठी रानी की नहीं है, यह राजस्थान के उस गौरवशाली अतीत का चित्रण करती है जहां योद्धा गरदन कटने के बाद भी युद्ध करते रहे। रानी शेरशाह से युद्ध करने के लिए भी पीछा नहीं हटती। वह अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करती है।

ज़माना पत्रिका में दिसंबर 1910 के अंक में 'बड़े घर की बेटी' प्रकाशित हुई। प्रेमचंद ने आनंदी के माध्यम से संयुक्त परिवार की समस्याओं का चित्रण किया है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि घर-परिवार की सुख-शांति बनाए रखने व बिगाड़ने में स्त्रियों की भूमिका होती है। 'बड़े घर की बेटी' शीर्षक कहानी की आनंदी घर की समस्या को सुलझा देती है और दोनों भाइयों के बीच सुलाह कर देती है। पारिवारिक मनोविज्ञान की दृष्टि से यह कहानी उल्लेखनीय है। इस कहानी में आनंदी को एक आदर्श बहू के रूप में चित्रित किया गया है।

दिसंबर 1915 के सरस्वती के अंक में 'सौत' शीर्षक कहानी प्रकाशित हुई। रजिया को एक आदर्श स्त्री के रूप में कहानीकार ने चित्रित किया है। रामू दूसरी शादी करके रजिया के सौत दासी (दसिया) को घर ले आता है। रजिया अपने स्वामित्व अधिकार को बचाने की लाख कोशिश करके जब असफल होती है, तो अंततः घर छोड़कर चली जाती है। लेकिन जब रामू की मृत्यु हो जाती है, तो वह दसिया और उसके बेटे को अपना लेती है। रजिया अपने स्त्री दायित्व का निर्वहन करते हुए दिखाई देती है।

1918 में प्रकाशित उपन्यास 'सेवासदन' भारतीय मध्यम वर्ग के बीच वेश्यावृत्ति और नैतिक भ्रष्टाचार से निपटता है। उर्दू भाषा में यही उपन्यास 'बाजार-ए- हुस्न' के नाम से 1919 में प्रकाशित हुआ था। स्त्री पराधीनता, वेश्या जीवन, दहेज प्रथा और मध्यवर्ग की आर्थिक-सामाजिक समस्याओं को प्रमुखता के साथ चित्रित करके प्रेमचंद ने उनका यथासंभव समाधान भी प्रस्तुत किया है। सुमन और शांता ईमानदार थानेदार कृष्णचंद्र की बेटियाँ हैं। सुमन की शादी के लिए दहेज जुटाने के लिए मजबूरी में कृष्णचंद्र रिश्वत लेता है। भेद खुलने पर थानेदार साहब को जेल हो जाती है और परिवार पर संकट आ जाता है। मजबूरी में सुमन का विवाह विधुर गजाधर से हो जाता है। अकेलापन, अपमान, तिरस्कार और विवशता के करण सुमन वेश्या बन जाती है। सुमन के पिता को जब यह पता चलता है तो वह आत्महत्या कर लेता है।

वेश्याओं के संबंध प्रेमचंद की यह टिप्पणी उल्लेखनीय है - "हमें उनसे घृणा करने का कोई अधिकार नहीं है। यह उनके साथ घोर अन्याय होगा। यह हमारी ही कुवासनाएँ, हमारे ही सामाजिक अत्याचार, हमारी ही कुप्रथाएँ हैं, जिन्होंने वेश्याओं का रूप धारण किया है।" 1918 में ही प्रेमचंद ने धर्म के ठेकेदारों का यह कहकर पोल खोला है कि "आजकल धर्म तो धूर्तों का अड्डा है। इस निर्मल सागर में एक से एक मगरमच्छ पड़े हुए हैं। भोले-भाले भक्तों को निगल जाना उनका काम है। लंबी-लंबी जटाएँ, लंबी-लंबी तिलक और लंबी-लंबी दाढ़ियाँ तो महज पाखंड हैं और लोगों को धोखा देने के लिए हैं।"

प्रायश्चित, कामना, रानी सारंधा, निर्मला आदि अनेक कहानियों एवं उपन्यासों के माध्यम से प्रेमचंद ने आदर्शवाद को स्थापित करने का प्रयास किया। लेकिन समय के साथ-साथ उनकी सोच में परिवर्तन आने लगा। वे आदर्श के साथ यथार्थ का मिश्रण करने लगे।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद के प्रारंभिक आदर्शपरक रचनाओं के बारे में बताइए।

प्रेमचंद और आदर्शोन्मुख यथार्थ

प्रिय छात्रो! समय के साथ-साथ प्रेमचंद के विचारों में भी परिवर्तन आने लगा। उनका मानना था कि साहित्यकार बनाया नहीं जा सकता, बल्कि वह पैदा होता है। उनके लिए साहित्य जीवन की आलोचना है। उन्होंने आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के सिद्धांत की स्थापना की। साहित्य में यदि यथार्थ शरीर है, तो आदर्श उसकी आत्मा। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि साहित्य में आदर्श और यथार्थ दोनों का सामंजस्य आवश्यक है। क्योंकि यथार्थ जीवन की सच्चाइयों को उजागर करता है और आदर्शवाद हमें जीवन की ऊँचाइयों तक ले जाता है। इसलिए उन्होंने कहा कि साहित्य का उद्देश्य केवल मनोरंजन न होकर, उपयोगिता है। वे दृढ़ राष्ट्रवादी थे। इसकी झलक उनकी रचनाओं में बखूबी देखने को मिलती है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में राष्ट्रवादी नेताओं की स्वार्थ लिप्सा एवं कमज़ोरियों को भी उजागर किया है। उन्होंने 'रंगभूमि' एवं 'कर्मभूमि' उपन्यास के ज़रिये शिक्षित राष्ट्रवादी नेताओं को उनकी कमजोरियों का एहसास कराते हुए उन्हें सुधारने का प्रयास भी किया है। प्रेमचंद 'रंगभूमि' उपन्यास में गांधी के प्रतिरूप के रूप में सूरदास की सृष्टि करते हैं। वह भी गांधी के समान सत्य, धर्म एवं न्याय की लड़ाई लड़ता है। वह भी गांधी के समान ही गोली से मर जाता है। कहना होगा कि 'रंगभूमि' की राजनैतिक चेतना का विस्तार 'कर्मभूमि' में होता है। उनकी अनेक कहानियाँ भी स्वाधीनता आंदोलन, देशभक्ति और राष्ट्रीयता के भाव को बढ़ाती हैं। उनका मत था की साहित्य राजनीति से आगे जलने वाली मशाल है।

'मैकू' कहानी आदर्श और यथार्थ का सुंदर समन्वय है। इसमें प्रेमचंद ने मैकू नामक एक शराबी और गुंडे के माध्यम से शराब की लत से जुड़े यथार्थ का चित्रण किया है। यह भी दर्शाया है कि स्वयंसेवक का आदर्श आचरण उसके मन को बदल देता है। उन्होंने प्रत्यक्ष रूप से इस कहानी में स्वतंत्रता आंदोलन के बारे में कुछ भी नहीं कहा, लेकिन इस ओर संकेत जरूर किया है कि शराब जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहेंगे तो जनता को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा जा

सकता है। इस कहानी में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक मुख्य द्वंद्व - हिंसावाद और अहिंसावाद - को दर्शाया है।

प्रेमचंद ने साहित्य को समाज से जोड़ा और युग की परिस्थितियों से संबद्ध किया। उन्होंने समाज के सभी वर्गों, सभी कुप्रथाओं व समस्याओं को केंद्र में रखकर साहित्य में उनका वास्तविक चित्र उकेरा है तथा उनके समाधान का रास्ता खोला। उनके साहित्य में स्त्री-दलित जैसे उत्तर-आधुनिक विमर्शों के व्यापक संसार को देखा जा सकता है।

'खुचड़', 'पत्नी से पति', 'नरक का मार्ग', 'बेटों वाली विधवा', 'कुसुम', 'जुलूस', 'अभिलाषा', 'बारात', 'बलिदान', 'वेश्या', 'आगा-पीछा', 'मंदिर', 'नैराश्य लीला' आदि कहानियाँ स्त्री-विमर्श की दृष्टि से उल्लेखनीय हैं, तो 'ठाकुर का कुआँ', 'सद्गति', 'मुक्ति-मार्ग', 'घासवाली', 'सौभाग्य के कोड़े', 'बाँका जमींदार', 'विध्वंस', 'सवा सेर गेहूँ', 'गुल्ली डंडा', 'दूध का दाम' आदि दलित-उत्थान की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

बोध प्रश्न

- आदर्शोन्मुख यथार्थवाद की कोटि में प्रेमचंद की किन रचनाओं को रखा जा सकता है?

प्रेमचंद और यथार्थ

प्रेमचंद धीरे-धीरे सामाजिक परिस्थितियों से विचलित होने लगे। वे स्वयं किसान का बेटा है। अतः किसान की व्यथा-कथा को वे नजदीक से पहचानते हैं। उन्होंने यह देखा कि देश में किसान सबसे अधिक शोषित, दलित एवं पीड़ित वर्ग है। अतः उनके साहित्य के कृषि-संस्कृति, ग्राम्य जीवन आदि का व्यापक चित्र देखा जा सकता है। 'वरदान' उपन्यास से लेकर 'गोदान' तक किसानों और गाँवों की दुर्दशा का चित्रण है। 'प्रेमाश्रम' में उन्होंने किसान और जमींदार के संघर्ष को दिखाया और किसानों को भूमि का अधिकार दिलाया। लेकिन उन्होंने यह महसूस किया कि यह महज एक सपना है। किसान अपने मूलभूत अधिकारों से वंचित है। उसी का परिणाम है 'गोदान' उपन्यास। इसमें उन्होंने यह दिखाया है कि किसान होरी जमींदार, पटवारी, महाजन आदि के जाल में फँस जाता है और अंततः मजदूरी करते हुए मर जाता है। 'मंदिर और मस्जिद', 'जिहाद', 'हिंसा परमो धर्मः', 'मुक्तिधन', 'नबी का नीति निर्वाह', 'कायाकल्प' आदि रचनाओं में प्रेमचंद ने सांप्रदायिकता के दोनों पक्षों को दिखाया है।

'कफन' में प्रेमचंद ने यथार्थ का चित्रण किया है। घीसू और माधव के माध्यम से कथाकार ने तत्कालीन समाज में पनप रही पर-जीविता के बारे में स्पष्ट किया है। प्रेमचंद ने समाज के उस व्यवस्था पर प्रहार किया जिसने घीसू और माधव को जन्म दिया। उन्होंने दोनों का अमानवीयकरण किया है। उनके सामने बुझे हुए अलाव है। उस अग्निशून्य अलाव की भाँति घीसू और माधव संवेदनशून्य हैं। इसी सवेदनहीनता के कारण ही दोनों प्रसव पीड़ा से तड़प रही बुधिया के दर्द को महसूस नहीं कर पाते। अमानवीयता की पराकाष्ठा को प्रेमचंद ने इस कहाने एमें दिखाया है। घीसू और माधव सामाजिक परिस्थितियों से त्रस्त होकर अपनी नैतिकता से समझौता करते हुए आलुओं के टुकड़ों के लिए एक-दूसरे से होड में रहते हैं। बुधिया सर्वहारा का प्रतीक है। घीसू और माधव कामचोरी की प्रवृत्ति के कारण बुधिया पर आश्रित हो जाते हैं और कहते हैं - "जिस समाज में एक दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी हालत से कुछ बहुत

अच्छी न थी और किसानों के मुकाबले में वे लोग जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा संपन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा हो जाना कोई अचरज की बात न थी।" कफन के पैसों से दोनों देसी शराब पीकर अपने आपको भूल जाते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि बाजार संस्कृति मनुष्य की आत्मा को बिकाऊ माल बना देती है। इस कहानी की संरचना के भीतर से यह ध्वनि उभरती है कि चारों ओर फैली हुई अमानवीयता का प्रतीकार होना चाहिए।

'मंगलसूत्र' प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास की शुरुआत 1936 में की थी। उनकी मृत्यु के कारण यह अधूरा रह गया। बाद में प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय ने इस उपन्यास को पूरा किया। 1948 में इसका प्रकाशन हुआ। यह उपन्यास साहित्यिक जीवन पर आधारित है। देवकुमार अपना जीवन साहित्य साधना में व्यतीत करता है। जातिवाद, सामाजिक असमानता, और स्त्रियों के ख़िलाफ़ भेदभाव जैसे मुद्दों को इस उपन्यास के माध्यम से उठाया गया है।

इस तरह प्रेमचंद की साहित्यिक यात्रा आदर्शवाद से होते हुए आदर्शोन्मुख यथार्थवाद तक पहुँचा और चरम परिणति यथार्थवाद में हुआ।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद ने 'कफन' के माध्यम से किस यथार्थवादी स्थिति को उजागर किया है?

1.4 पाठ सार

प्रिय छात्रो! आप इस अध्ययन यह जान ही चुके हैं कि प्रेमचंद औपनिवेशिक शासन से अकेले लड़ रहे थे। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को नई गति और नई दिशा प्रदान करने का प्रयास किया। प्रेमचंद ने वास्तविक शिक्षा जहाँ से प्राप्त की वह विश्वविद्यालय दूसरे ही थे। उनके अध्यापक थे लमही गाँव के किसान, बनारस के महाजन और किताबों के नोट्स बिकवाने वाले बुकसेलर थे। वे हिंदुस्तानी समाज का बीज गणित अच्छी तरह से जानते थे। समझते थे। प्रेमचंद जब लिख रहे थे, उस समय दो महायुद्धों का दौर था। उन परिस्थितियों का अंकन प्रेमचंद अपने साहित्य में बखूबी किया है।

प्रेमचंद के साहित्य का अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि उनकी कहानियों और उपन्यासों का ग्राफ नीचे से ऊपर की ओर जाता है। कहने का आशय है कि उनकी आरंभिक रचनाओं में पूरी तरह से आदर्श का चित्रण दिखाई देता है। 'सेवा सदन', 'निर्मला', 'रूठी रानी', 'बड़े घर की बेटी', 'सौत' आदि रचनाएँ इस आदर्श चित्रण के उदाहरण हैं। बाद में उन्होंने केवल आदर्श के स्थान पर आदर्शोन्मुख यथार्थ का चित्रण किया। आदर्श और यथार्थ का सम्मिश्रण 'रंगभूमि', 'कर्मभूमि', 'पत्नी से पति', 'नरक का मार्ग', 'बेटों वाली विधवा' आदि रचनाओं देखा जा सकता है। इन रचनाओं में प्रेमचंद ने समस्याओं को उजागर किया है और साथ ही उनका समाधान भी सुझाया है।

'गोदान' और 'कफन' तक आते-आते प्रेमचंद पूरी तरह से यथार्थ की ओर झुक गए। उन्हें यह समझ में आ चुका है कि लाख कोशिश करने के बावजूद मनुष्यों की मानसिकता को नहीं बदला जा सकता। इसीलिए वे 'कफन' में टिप्पणी करते हैं कि जब दिन-रात मेहनत करने वालों

की हालत भी वैसी ही है, तो मेहनत क्यों करें। समाज में चारों पनप रही संवेदनहीन मानसिकता की ओर उन्होंने इशारा किया। प्रेमचंद अपने समय से भी आगे थे। उन्होंने जिन समस्याओं और जिस मानसिकता की बात 1903 या 1918 में की थी, वह आज भी समाज में और विकराल रूप से विद्यमान हैं। इसीलिए प्रेमचंद प्रासंगिक हैं। प्रेमचंद सांप्रदायिक एकता, सद्भाव और सहिष्णुता पर बल देते हैं। वे साहित्य के माध्यम से सामंजस्य और एकता का वातावरण स्थापित करना चाहते हैं। उनके साहित्य को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ा जा सकता है।

1.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. प्रेमचंद का समय सक्रांति काल था। एक ओर दो महायुद्धों की भीषण स्थितियाँ थीं, तो दूसरी ओर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन। प्रेमचंद ने अपने साहित्य के माध्यम से इन स्थितियों को चित्रित किया है।
2. गांधी के स्वराज्य आंदोलन में पूरे देश में एक नई राजनीतिक चेतना उत्पन्न कर दी। प्रेमचंद इसी राजनीतिक चेतना, स्वराज्य कामना और देशभक्ति को साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया।
3. प्रेमचंद समाज में व्याप्त कट्टरता का विरोधी था। वे अपने साहित्य के माध्यम से समता, बंधुता और न्यायप्रियता को स्थापित करना चाहते थे। यदि प्रेमचंद के मार्ग पर चलते तो आज देश में सांप्रदायिक सद्भाव का वातावरण होता।
4. प्रेमचंद हिंसक क्रांति के विरुद्ध थे। उनके लिए देशभक्ति और जन-तंत्र दोनों विरोधी चीजें नहीं थीं। वे राष्ट्रीय और जनवादी भावनाओं के समर्थक थे।
5. प्रेमचंद के साहित्य में भारतीय जीवन का विराट रूप विद्यमान है। मानवता से पूर्ण भारतीयता और अस्मिता का शंखनाद है।

1.6 शब्द संपदा

1. अंतर्विरोध = आंतरिक विरोध या भीतरी झगड़ा
2. अंधविश्वास = बिना सोचे-समझे किसी बात को सच मान लेना
3. अमानवीयता = निर्दयता
4. अस्पृश्यता = छुआछूत
5. अहिंसा = किसी प्राणी या जीव को न मारना
6. आंदोलन = शोषण के खिलाफ सामूहिक संघर्ष
7. आदर्श = श्रेष्ठ
8. उदारवाद = व्यक्ति की स्वतंत्रता का सिद्धांत
9. औपनिवेशिक शासन = विदेशी राजनीतिक सत्ता द्वारा किसी देश की प्रभुसत्ता ग्रहण करना
10. जनवाद = जनतांत्रिक राजनितीक व्यवस्था
11. दमनकारी नीति = लोगों को नियंत्रित करने के लिए अपनाए जाने वाले तरीके

12.दलित = मसला हुआ, रौंदा हुआ
13.द्वंद्व = दो या अधिक समूहों के बीच मतभेद
14.बाजारवाद = हर वस्तु का मूल्यांकन केवल व्यक्तिगत लाभ की दृष्टि से ही देखना
15.यथार्थ = जैसा होना चाहिए ठीक वैसा
16.युगचेतना = काल विशेष की विशिष्ट प्रवृत्ति
17.संवेदनहीनता = क्रूरता, निर्ममता, कठोरता।
18.संवेदना = सहानुभूति
19.सर्वहारा = सबकुछ खोया हुआ
20.सांप्रदायिकता = सामुदायिक स्वामित्व के सिद्धांत या प्रथाएँ

1.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. प्रेमचंद कालीन युगीन परिस्थितियों का चित्रण कीजिए।
2. प्रेमचंद कालीन समाज के परिदृश्य पर प्रकाश डालिए।
3. 'प्रेमचंद हिंदुस्तान की नई राष्ट्रीय और जनवादी चेतना के प्रतिनिधि साहित्यकार हैं।' इस उक्ति से आप कहाँ तक सहमत है? तर्कपूर्ण विवेचन कीजिए।
4. प्रेमचंद कालीन सामाजिक एवं राजनैतिक परिवेश पर प्रकाश डालिए।
5. प्रेमचंद की साहित्यिक यात्रा को रेखांकित कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. प्रेमचंद जब लिख रहे थे, उस समय दो महायुद्धों का दौर था। इन परिस्थितियों का समावेश उनके साहित्य में कहाँ तक हुआ है? निरूपित कीजिए।
2. प्रेमचंद कालीन धार्मिक परिवेश पर टिप्पणी लिखिए।
3. प्रेमचंद औपनिवेशिक शासन से किस प्रकार लड़ रहे थे? उनकी साहित्यिक कृतियों के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।
4. हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रेमचंद के साहित्य को टर्निंग पाइंट क्यों माना जाता है?
5. समकालीन परिवेश के साहित्यिक प्रतिफलन के आधार पर निरूपित कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. प्रेमचंद कालीन समाज में किसका भोलाभाला था? ( )

(अ) दलाल (आ) पुलिस (इ) जनता (ई) स्वयंसेवक

2. औपनिवेशिक शासन से छुटकारा पाने के लिए किसकी आवश्यकता है? ( )

(अ) शासन (आ) जनशक्ति (इ) समता (ई) पूँजी

3. प्रेमचंद किसके विरुद्ध थे? ( )

(अ) हिंसक क्रांति (आ) अहिंसा (इ) समता (ई) सौहार्द

4. किस उपन्यास में प्रेमचंद ने औपनिवेशिक दाव-पेंच का चित्रण किया है? ( )

(अ) गोदान (आ) देवस्थान रहस्य (इ) निर्मला (ई) सेवासदन

5. 'कफन' की बुधिया किसकी प्रतीक है? ( )

(अ) पूँजीवाद (आ) सर्वहारा (इ) नवधनाढ्य (ई) सामंत

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. प्रेमचंद के समय में भारतीय जनता ..... की कामना कर रही थी।
2. प्रेमचंद ..... शासन से भारतीय जनता को मुक्ति दिलाने चाहते थे।
3. 'मैकू' में प्रेमचंद ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक मुख्य द्वंद्व ..... को दर्शाया है।
4. प्रेमचंद ने यह अनुभव कि देश को ..... शासन से छुटकारा मिलना अनिवार्य है।
5. उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में ..... आंदोलन के दबाव में शासन ने सती-प्रथा के विरुद्ध कानून बनाया।

III. सुमेल कीजिए

1. कफन	(अ) आदर्शवाद
2. कर्मभूमि	(आ) आदर्शोन्मुख यथार्थवाद
3. नैराश्य लीला	(इ) दलित उत्थान
4. बाँका जमींदार	(ई) स्त्री जीवन
5. रूठी रानी	(उ) यथार्थ

1.8 पठनीय पुस्तकें

1. प्रेमचंद - एक पुनर्मूल्यांकन : सं. डॉ. नगरत्न एँ. राव एवं डॉ. सुमा टी. आर.
2. प्रेमचंद - जीवन और साहित्य : रिया सिंह
3. प्रेमचंद और उनका युग : रामविलास शर्मा
4. प्रेमचंद के आयाम : ए. अरविंदाक्षन
5. हिंदी कहानी का इतिहास : गोपाल राय
6. हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास : रामस्वरूप चतुर्वेदी

इकाई 2 : प्रेमचंद युगीन परिदृश्य: राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना
2.2 उद्देश्य
2.3 मूल पाठ : प्रेमचंद युगीन परिदृश्य
2.3.1 परिदृश्य पर एक सरसरी नजर
2.3.2 राष्ट्र, राष्ट्रीय, और राष्ट्रीयता
2.3.3 प्रेमचंद और उनका युग
2.3.4 प्रेमचंद और किसान
2.3.5 प्रेमचंद और भाषाई सवाल
2.4 पाठ सार
2.5 पाठ की उपलब्धियां
2.6 शब्द संपदा
2.7 परीक्षार्थ प्रश्न
2.8 पठनीय पुस्तकें

2.1 : प्रस्तावना

प्रेमचंद किस कौम की तारीख बनाने वाले नगमा-निगार थे? वैसे तो उन्हें सारे देश में बेपनाह इज्जत मिली है , पर वह हिंदुस्तानी कौम की तारीख बनाने वाले साहित्यकार थे। उन्होंने हिंदी और उर्दू दोनों में ही लिखा। वे दोनों के प्रिय लेखक हैं। प्रेमचंद हिंदुस्तानी जनता के उज्ज्वल भविष्य की पेशगी थे। प्रेमचंद दुखी, गुलाम और परेशान हिंदुस्तान के गरीबों के लेखक थे। प्रेमचंद हिंदुस्तान की नई राष्ट्रीय चेतना के प्रतिनिधि साहित्यकार थे। जब उन्होंने लिखना शुरू किया तब संसार पर पहले महायुद्ध के बादल छाए हुए थे। और जब उनकी मृत्यु हुई तब दूसरे महायुद्ध की तैयारियाँ शुरू हो रही थीं। गांधी ने उनके सामने ही राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन की कमान संभाली। प्रेमचंद अपने युग के साक्षी थे। वे अपने समय के साथ भी थे और उससे आगे भी। पहले महायुद्ध में कांग्रेस के नेताओं ने अंग्रेजों का साथ दिया था, लेकिन प्रेमचंद से अपनी कहानियों और उपन्यासों में पहले से ही असहयोग आंदोलन की चर्चा शुरू कर दी थी। हिंदी साहित्य में आज जो कुछ भी अच्छा है उसमें प्रेमचंद का योगदान है। जो समस्याएं हैं, उन्हें हल करने में प्रेमचंद का अध्ययन बहुत सहायता करता है। स्वाधीनता आंदोलन के साथ जैसा संबंध प्रेमचंद ने बनाया था, वैसा ही आज के साहित्यकार को अपने युग के साथ बनाना चाहिए। प्रेमचंद ने जिस प्रकार अपने लेखन के द्वारा अपने युग का चित्रण किया, उसको देखना इस इकाई के पाठ का लक्ष्य है। यहाँ प्रेमचंद के युगीन परिदृश्य के खाके में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के चटख रंग पर आपको गौर करना है। । प्रेमचंद को अच्छी तरह से समझने के लिए कई बातों को समझना जरूरी है। प्रेमचंद के युग को समझना जरूरी है। उनके युग में बहुत से आंदोलन चल रहे थे। बहुत से संगठन काम कर रहे थे। उन सबका ज्ञान और उनकी समझ प्रेमचंद को थी। वे

कोई हवाई बातें नहीं कर रहे थे। लिख जरूर वे किस्से कहानियाँ और उपन्यास रहे थे,पर आधार उनका पुख्ता और सीधा समाज से जुड़ा हुआ था। इस इकाई में प्रेमचंद को सही ढंग से समझने और परखने के लिए कई महत्वपूर्ण और खास बातों में से केवल दो को लेकर कुछ फैलाव के साथ चर्चा की जानी है। ये दो बिन्दु हैं प्रेमचंद युगीन परिदृश्य और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन।

2.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन से आप :

- राष्ट्र,राष्ट्रीय और राष्ट्रीयता की अवधारणा का बोध कर सकेंगे ।
- एक राष्ट्र के रूप में भारत के भावी जन्म और विकास का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे ।
- प्रेमचंद युगीन परतंत्र भारत में भारतीयों की संघर्ष चेतना पर विचार कर सकेंगे ।
- भारतीय राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में प्रेमचंद युगीन लेखन के मद्दे नजर प्रेमचंद के योगदान को रेखांकित कर सकेंगे ।

2.3 : मूल पाठ : प्रेमचंद युगीन परिदृश्य

2.3.1 परिदृश्य पर एक सरसरी नजर

प्रेमचंद (1880) का जन्म भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस(1885) के जन्म से पाँच साल पहले हुआ था। पर उनका लगभग सारा लेखन 1906 से 1936 के बीच हुआ। इन तीस सालों में प्रेमचंद ने जो कुछ भी लिखा वह भारत के सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन का दस्तावेज़ है। इसमें उस दौर के समाज सुधार आन्दोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आन्दोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण है। उनमें दहेज, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छूआछूत, जाति भेद, विधवा विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता, आदि उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है।हिन्दी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के कालखण्ड को 'प्रेमचंद युग' कहा जाता है। राम विलास शर्मा ने 'प्रेमचंद और उनका युग' पुस्तक में लिखा है कि 'प्रेमचंद का महत्व दिन-पर दिन निखरेगा और उसको हम उतना ही ज्यादा समझ सकेंगे जितनी गहराई हिंदुस्तान के स्वाधीनता-आंदोलन में आएगी और उस आंदोलन से आलोचक का संबंध दृढ़ होगा।' इस एक पंक्ति में इस इकाई का सारांश भी मौजूद है। यह तो आप समझ ही गये होंगे कि शर्मा जी इस किताब को आजादी से पहले लिख रहे थे और वे तब साफ साफ देख रहे थे कि प्रेमचंद सही अर्थों में अपने युग की देन हैं। उनकी रचनाओं में युगीन परिदृश्य साफ साफ झलकता है। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन और उसका युगीन परिदृश्य प्रेमचंद की रचनाओं के पन्ने पन्ने बिखरा पड़ा है।

वैसे आप सोच रहे होंगे कि आखिर ये 'परिदृश्य' क्या होता है? युगीन से तो मतलब निकाल लिया जा सकता है कि यह युग या वक्त से जुड़ी कोई बात है। 'दृश्य' का अर्थ देखने से जुड़ा है। 'परि' का अर्थ 'चारों तरफ' है। सरल शब्दों में कहें तो जो हम सब अपनी आंखों से देखते हैं वह दृश्य है और जो अपने मन की आंखों से देखते हैं वह परिदृश्य है। किसी मामले से जुड़ी हुई तमाम संभावनाओं और योजनाओं के कल्पित और परिगणित खाके को ही परिदृश्य कहते हैं।

प्रेमचंद युगीन परिदृश्य का अर्थ हुआ – प्रेमचंद के वक्त का खाका या बयान। 'प्रेमचंद और उनका युग' पुस्तक राम विलास शर्मा ने संवत 2009 विक्रम (सन 1951)में लिख ली थी। इस किताब की भूमिका में एक वाक्य है,"प्रेमचंद का साहित्य अपने जमाने के हिंदुस्तान और उसके स्वाधीनता आंदोलन का प्रतिबिंब है।" और दूसरा वाक्य है, " उसमें उस जमाने के सामाजिक जीवन की और स्वाधीनता –आंदोलन की असंगतियाँ भी झलकती हैं।" साफ जाहिर हो जाता है कि प्रेमचंद के लेखन को बेहतर ढंग से समझने के लिए उनके युग के परिदृश्य को खास तौर से देखना होगा।

बोध प्रश्न

- परिदृश्य किसे कहते हैं?
- प्रेमचंद युगीन परिदृश्य से आप क्या समझते हैं?

2.3 .2 राष्ट्र, राष्ट्रीय और राष्ट्रीयता

इस इकाई में यही सब कुछ देखा जाना है-प्रेमचंद युगीन परिदृश्य को देखा जाना है। कुछ विस्तार से और कुछ समझदारी से देखते चलिए। समझदारी इसमें भी है कि साथ साथ ही 'राष्ट्र, राष्ट्रीय, राष्ट्रीयता' का अर्थ भी समझ लें। आंदोलन का अर्थ तो सब जानते ही हैं, हैं ना? यह भी देखना दिलचस्प होगा कि इस स्वाधीनता को 'मुक्ति' या आजादी क्यों कहा गया है। यह 'मुक्ति' केवल अंग्रेजी शासन से ही दरकार न थी, और भी कई तरह की रूढ़ियों से आजादी या मुक्ति की इच्छा थी। गरीबी से आजादी, कुप्रथाओं से आजादी, छुआछूत से आजादी, और छोटेपन से आजादी। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में इसलिए देश राजनीतिक मोर्चे पर ही आजादी की कोशिश नहीं कर रहा था, तमाम दूसरे मोर्चे खुले थे और बहुत से लोग इसके लिए सरफरोशी की तमन्ना लिए निकल पड़े थे।

'नेशन' केवल एक ही भाषा बोलने वाला समुदाय होता है किन्तु राष्ट्र में एक ही भूखंड के निवासी अनेक भाषाएँ बोलने वाले मानव-समुदाय हो सकते हैं। प्रेमचंद ने राष्ट्र के बारे में लिखा है, " राष्ट्र एक मानसिक प्रवृत्ति है।जब यह प्रवृति प्रबल हो जाती है तो किस प्रांत और देश के निवासियों में भ्रातृभाव पैदा हो जाता है। प्राचीन काल का भारत केवल इसी अर्थ में एक था कि उसकी संस्कृति एक थी , परंतु राजे सैकड़ों हजारों थे , उनमें बराबर लड़ाइयाँ होती रहती थीं । उनके स्वार्थ अलग थे। वर्तमान राष्ट्र का उदय न हुआ था। वर्तमान राष्ट्र योरोप की ईजाद है ।"

सही है, भारत के लोग यह सोचते रहे हैं कि हमारा देश अशोक महान और चंद्र गुप्त मौर्य के जमाने से एक 'राष्ट्र' रहा है। पर सच बात यह है कि आधुनिक भारत में राजा राम मोहन राय आदि समाज-सुधारकों ने देश में 'देश' और 'राष्ट्रीयता' की चर्चा की। इस चर्चा की नए ढंग से शुरुआत हुई। बंकिम चंद आदि ने 'सुजलाम सुफलाम'कहकर भारत माता का नक्शा खींचा। ऐसे बहुत से समाज सुधारकों, लेखकों और नेताओं ने देश भर में राष्ट्र और राष्ट्रीयता की खुलकर बात की। आज दुनिया भर के लोग मानते हैं कि राष्ट्र और राष्ट्रीयता की अवधारणा यूरोप की देन है। पहले इस तरह नहीं सोचा गया था। इटली में 'एक राज्य, एक राष्ट्र' (वन नेशन,वन स्टेट) की

अवधारणा की शुरुआत हुई। 'नेशन' लेटिन भाषा के 'नेशियों' शब्द से निकला है। इसका मूल अर्थ है – 'जाति'।उस जमाने में 'नेशन' शब्द किसी देश या राज्य की आबादी का सूचक था जिसमें जातीय एकता और समानता पाई जाती थी।

भारत को एक राष्ट्र के रूप में देखने की भावना का विस्तार राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के दौरान हुआ। राष्ट्रीय आंदोलन की स्थायी विरासतों में से एक भारतीय राष्ट्रवाद का उदय और भारतीय पहचान का निर्माण था। यह एक लम्बी प्रक्रिया थी जिसकी जड़ें प्राचीन युग से ली जा सकती हैं। लेकिन, आधुनिक अर्थों में राष्ट्रीय पहचान और राष्ट्रीय चेतना की अवधारणा 19वीं सदी में ही सामने आई। यह विकास राष्ट्रीय आंदोलन से गहराई से जुड़ा था। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों ने लोगों को अपनी राष्ट्रीय पहचान को परिभाषित करने और प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया था। लोगों ने औपनिवेशिक शासन के खिलाफ अपने संघर्ष की प्रक्रिया में अपनी एकता की खोज शुरू कर दी। सन 1857 से जो सिलसिला चला, वह फिर कभी थमा नहीं।

प्रेमचंद जब मुश्किल से पाँच बरस के थे तब 1885 में एक अंग्रेज ए ओ ह्यूम ने 'कॉंग्रेस' की स्थापना की जिसे बाद में गांधी जी ने संभाला। यहाँ आपको भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस का लंबा चौड़ा इतिहास पढ़ना जरूरी नहीं । यहाँ आपका यह जान लेना काफी होगा कि कॉंग्रेस की स्थापना क्यों हुई थी। 1857 के स्वाधीनता संग्राम को बड़ी बेदर्दी से कुचलकर कंपनी सरकार ने चैन नहीं पाया। ब्रिटिश हुक्मरानों ने अपनी दमनकारी नीतियों को जारी रखा। कॉंग्रेस का गठन स्वतंत्रता आंदोलन के स्वाभाविक विकास की बदौलत नहीं हुआ । यह तो अंग्रेजों की दखल थी। पहले 10-15 सालों तक कॉंग्रेस और उसके अपने उदार वादी नेता अंग्रेजों को खुश करने में लगी रही। 1915 तक कॉंग्रेस नरम दल के नेताओं की मानती रही। 1918 में गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत आए। 1920-21 के बाद कॉंग्रेस पर गांधी का प्रभाव रहा। अपनी तमाम खूबियों और कमजोरियों के साथ वे 15, अगस्त 1947 तक इस पार्टी के नेता रहे। उन्होंने आम जनता को कांग्रेस से जोड़ा। असहयोग की लहर सारे देश में दौड़ पड़ी। इसी लहर में प्रेमचंद ने इंस्पेक्टर ऑफ स्कूल्स के पद से इस्तीफा दे दिया। प्रेमचंद के युग में भारत का मुक्ति संघर्ष किसी एक दल का का कुछ गिने चुले नेताओं का ही संघर्ष नहीं था, इसमें देश के बहुत से किसान-मजदूर,और शोषित-उत्पीड़ित जनता की भागेदारी शुरू हो गई थी। प्रेमचंद ने 1930 में 'हंस' के पहले अंक में लिखा कि स्वराज आंदोलन गरीबों का आंदोलन है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में ब्रिटिश शासन और आम जनता, और कांग्रेस की आपसी कलह को अच्छी तरह पेश किया है। प्रेमचंद कांग्रेस और उसके नेता महात्मा गांधी से प्रभावित रहे। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को एक मुख्य विषय बनाया। प्रेमचंद ने स्वदेशी, असहयोग, सविनय अवज्ञा, सत्याग्रह के साथ साथ लगान बंदी, हड़ताल, सांप्रदायिक सद्भाव, नारी-मुक्ति आदि मुख्य हैं।

यहाँ यह ध्यान देने वाली बात है कि प्रेमचंद राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में लगे नेताओं का आँख मूंदकर अनुसरण करने वाले नहीं थे। वे राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को शोषित –उत्पीड़ित किसान-मजदूर की व्यापक सामाजिक मुक्ति के साथ जोड़कर देखते थे।

हमारा राष्ट्रीय आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम से कहीं अधिक था। यह एक राष्ट्र के निर्माण की ब्रिटिश प्रदान करने के लिए एक आंदोलन नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य प्रत्येक भारतीय के लिए सामाजिक और आर्थिक न्याय और सम्मान सुरक्षित करने के लिए उस शक्ति का उपयोग करना था। भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन राजनीतिक संगठनों, विचारकों, क्रांतिकारों को मिलाकर किए गए कुछ ऐसे आंदोलन थे जिनका एक ही लक्ष्य था भारत से ईस्ट इंडिया कंपनी को बाहर खदेड़ बाहर करना।

प्रेमचंद ने कांग्रेस के नेतृत्व में चल रहे राष्ट्रीय आंदोलन को मजबूत करने के लिए 'राष्ट्रवाद' को आगे बढ़ाने की वकालत की। वे सोचते थे कि कांग्रेस ने राष्ट्र के तत्वों की जो घोषणा की है उसमें हरेक भारतीय के समान अधिकार रखें हैं। वोट का अधिकार सबको दिया है। राजपद का भी सबको अधिकार है। तो सबको एक होकर अंग्रेजी शासन का विरोध करना चाहिए। प्रेमचंद ने 'हंस' पत्रिका के पहले अंक में लिखा था, " कुछ लोग स्वराज आंदोलन से इसलिए घबरा रहे हैं कि इससे उनके हितों की हत्या होगी। इसमें संदेह नहीं कि स्वराज आंदोलन गरीबों का आंदोलन है। गरीबों की छाती पर दुनिया ठहरी हुई है, यह कठोर सत्य है। आंदोलन में गरीब ही आगे बढ़ते हैं –यह भी अमर सत्य है। इस आंदोलन में भी गरीब आगे-आगे है और उन्हीं को रहना चाहिए।' प्रेमचंद जो 1930 में अपनी पत्रिका के पहले अंक में संपादक के रूप में लिख रहे थे उसे ही अपनी कहानियों और उपन्यासों में दिखा भी रहे थे।

बोध प्रश्न

- राष्ट्र, राष्ट्रीय और राष्ट्रीयता के बारे में आप क्या जानते समझते हैं?
- लोग स्वराज आंदोलन से क्यों घबरा रहे थे?

2.3. 3 प्रेमचंद और उनका युग

प्रेमचंद एक युग –निर्माता साहित्यकार थे, केवल साहित्य में युग को नाम देने वाले नहीं बल्कि अपने समय के सामाजिक जीवन को एक नई गति और नई दिशा प्रदान करने वाले। अपने शुरुआती उपन्यास 'वरदान'(1905-6) में प्रेमचंद किसान की गरीबी से हमारा परिचय कराते हैं।जिस समय विधवा-विवाह को भी एक क्रांतिकारी सुधार समझा जाता था उस समय नारी-मात्र की पराधीनता पर उन्होंने 'सेवा सदन' लिखा और वेश्या-वृत्ति के सामंती आधार को उभारकर पाठकों के सामने रख दिया। जिस समय जलिया वाला बाग और रौलट ऐक्ट से भारत का आत्म सम्मान जाग उठा था, उस समय प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम' लिखकर किसानों पर अंग्रेजी राज्य और उसके दलालों के अत्याचारों को दिखाकर बताया कि स्वाधीनता आंदोलन को पूरी ताकत इन समस्याओं को लेकर आगे बढ़ने से मिलेगी। प्रेमचंद के उपन्यास 'प्रेमाश्रम' में मनोहर, बलराज और कादिर मिया के रूप में बहुत से किसान नेताओं को देखा जा सकता है। अवध में किसानों ने एक संगठन बनाया था जिसका नाम उन्होंने 'एका' रखा था। ' प्रेमाश्रम' उपन्यास में इस 'एका' की झलक है। जिस समय देश में बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय आंदोलन चल रहा था , प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' में दिखलाया कि जनता अब भी लड़ रही है, वह हारी नहीं है, वह जीतेगी।

'गोदान' में उन्होंने पढे-लिखे नौजवानों और किसानों की एकता की तरफ संकेत किया। किसानों के उस महाजनी शोषण का चित्र खींचा जिसे किसान-आंदोलन में तब जगह नहीं दी गई थी। उन दिनों जब मंदिर प्रवेश को अछूत-समस्या हल करने का सबसे बड़ा साधन माना जाता था, उन्होंने 'कर्मभूमि' में अछूत, किसानों और खेत-मजदूरों की भूमि-समस्या पर दृष्टि केंद्रित की और उसमें लगान बंदी की लड़ाई को उनकी मुख्य लड़ाई बताया। निर्मला में प्रेमचंद ने अनमेल विवाह की समस्या को पेश किया। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में जो संघर्ष, स्वाधीनता-आंदोलन के जो रूप दिखाए, वे सब हमारे सामने आए।

प्रेमचंद केवल युग निर्माता ही न थे, वे भविष्य-दृष्टा भी थे। उन्होंने 'गबन,''कर्मभूमि', 'कायाकल्प', 'रंगभूमि', तथा 'गोदान' में ऐसे देश-भक्तों का रूप दिखाया जो वक्त आने पर जनता से विश्वासघात कर जाते थे, जिनके लिए अपना फायदा अपने मालिकों का फायदा जनता के हितों से बढ़ कर था। प्रेमचंद ने इन पात्रों के द्वारा जनता के महान शिक्षक का काम किया ; उसकी चेतना को निखारने में में बहुत बड़ा योग दिया।

प्रेमचंद किसी पार्टी के साथ न थे। वह मानो किसी आने वाली पार्टी का इंतजार कर रही थे जो जनता में नई राजनीतिक चेतना फैलाए। उन्होंने मुंशी दया नारायण निगम को एक बार लिखा था, " आपने मुझसे पूछा था कि मैं किस पार्टी के साथ हूँ , मैं किसी पार्टी में नहीं हूँ। इसलिए कि इस वक्त दोनों में से कोई पार्टी असली काम नहीं कर रही है। मैं उस आने वाली पार्टी का मेंबर हूँ, जो अवाम अलनास (जन साधारण) की सियासी तालीम को अपना दस्तूरुल-अमल (विधान) बनायेंगी। " (हंसराज 'रहबर' द्वारा "प्रेमचंद : जीवन और कृतित्व") यह पत्र उन्होंने सन 1923 में लिखा था।

प्रेमचंद समाज के बहाव को बहुत गहराई से देखते थे । इस जमाने में जब स्वराज का मतलब अंग्रेजी साम्राज्य के अंदर ही रहना था, प्रेमचंद ने लगान बंदी को स्वाधीनता-आंदोलन की रीढ़ बतलाया था। इस साम्य, जब लोग कर्ज की समस्या को किसान-आंदोलन की एक बुनियादी समस्या न समझते थे, प्रेमचंद ने उस पर तेज रोशनी डाली थी । वह बराबर कोशिश कर रहे थे कि आजादी का आंदोलन किसानों की बुनियादी समस्याओं को अपने अंदर समेट ले , वह अंग्रेजी राज के शोषण-चक्र पर वार्निश करने के बदले उसे जड़ से खोदकर फेंक दें।

तमाम कठिनाइयों और बाधाओं को पार करती हुई भारतीय जनता से प्रेमचंद कहते हैं –' यह अंत नहीं है, और आगे बढ़ो जब तक कि रंगभूमि में विजय न हो, जब तक कि देश का कायाकल्प न हो, जब तक की इस कर्म भूमि में गबन और गोदान से होरी और रमानाथ का त्रस्त होना बंद न हो और हमारा देश एक नई तरह का सेवा सदन , एक नई तरह का प्रेमाश्रम न बन जाए।

पूरनचंद्र जोशी ने सही लिखा है कि प्रेमचंद के उपन्यास और उनकी कहानियों का महत्व केवल औपनिवेशिक और अर्ध सामंती हिंदुस्तान के सामाजिक यथार्थ को प्रतिबिंबित-भर कर देने पर ही नहीं टिका हुआ है , बल्कि यह महत्व प्रेमचंद के उपन्यासों के क्रांतिकारी चरित्र के कारण है।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद किस राजनीतिक दल के साथ थे और क्यों?

- आजादी के आंदोलन को देखकर प्रेमचंद ने जनता से क्या कहा?

2.3. 4 प्रेमचंद और किसान

प्रेमचंद ने अपने वक्त के किसानों को बहुत नजदीक से देखा। उन्होंने देखा कि किसान को बड़े कष्ट हैं। यह तो सबको मालूम ही है कि वे आजादी की जंग में तलवार की जगह अपनी कलम से शिरकत कर रहे थे। वे चाहते थे कि उनके पढ़ने वाले गरीबों और मजबूर किसानों पर रहम करें। वे चाहते थे कि भारत से गोरे अंग्रेज साहब चले जाएं । पर वे यह नहीं चाहते थे कि उनकी जगह देशी साहब आकर हुक्म चलाएं। वह देश में नए ढंग की जम्हूरियत चाहते थे। इस लोकतंत्र में आम जनता के हाथ में सारी ताकत हो। इसलिए उन्होंने किसानों की समस्या को बड़े तीखे ढंग से उठाया था। बारदोली आंदोलन (1928) से पूर्व काँग्रेस का कोई उच्च स्तरीय नेता किसान आंदोलन से नहीं जुड़ा था, लेकिन प्रेमचंद 1918-1923 के किसान आंदोलन की मांगों का समर्थन करते हैं। प्रेमचंद लिखते हैं " भूमि उसकी है जो उसको जोते-किसी तीसरे वर्ग का समाज में कोई स्थान नहीं है"(प्रेमाश्रम)। प्रेमचंद ने जमीदारी को 'निरी दलाली' कहा है। अपनी रचनाओं में प्रेमचंद खुलकर किसानों के साथ खड़े दिखाई देते हैं। उन्होंने किसानों की लड़ाई को आजादी की लड़ाई से जोड़ा। मुल्क पूरी आजादी और नए लोकतंत्र को हासिल करने के लिए कैसे आगे बढ़े, किस तरह आजादी हासिल करे, यह सब कुछ आप प्रेमचंद के उपन्यासों और कहानियों में देख सकते हैं। 'गोदान' में प्रेमचंद की सूझबूझ की झलक आप देख सकते हैं। प्रेमचंद के आखिरी उपन्यास 'मंगलसूत्र' में दिखाया गया है कि संघर्ष के पुराने तरीके नाकाफ़ी हैं। विदेशी हुकूमत हिंदुस्तान की जनता को खूनी दहशतगर्दी के जरिये दबाती है। 'कर्मभूमि' में उन्होंने इस अंग्रेजी दहशतगर्दी को दिखाया है। अपने अधूरे उपन्यास 'मंगल सूत्र' में प्रेमचंद यही बताते हैं कि इस आतंक को कैसे खत्म किया जाए। प्रेमचंद ने यह चाहा था कि मुल्क के लोगों में एका हो। जनता एक दूसरे का साथ दे। सरकार के साथ सहयोग न किया जाए और उनके राज को खत्म किया जाए।

फिर भी प्रेमचंद के युग में सन 1936 तक हिंदुस्तान की जनता का एका काफी मजबूत नहीं हुआ था। आजादी के आंदोलन में बहुत सी खामियाँ थीं। मजदूर वर्ग जनता से अलग थलग था। वह आंदोलन की अगुवाई नहीं करता था। 'गोदान' का होरी अकेला जीवन-संग्राम में जूझकर मर जाता है। 'मंगल-सूत्र' का नायक भी बिल्कुल अकेला दिखाया गया है।

इसके साथ ही प्रेमचंद ने ग्रामीण किसानों की भलाई के लिए अपनी तरफ से भी सुधार योजनाएं पेश कीं। धार्मिक-सामाजिक रूढ़ियाँ, अंधविश्वास, अज्ञान आदि के खिलाफ प्रेमचंद ने एक व्यापक अभियान चलाया था। भूत –प्रेत, झाड-फूँक जैसी बुराइयों के साथ साथ गोदान, गोहत्या, तीर्थस्थान, दान, व्रत आदि मान्यताओं के पीछे की नासमझी को उभारा। प्रेमचंद ने राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन के लिए कांग्रेस के कामों को परख कर और उनके साथ अपने नुक्ते को भी पेश किया। कहा जा सकता है कि प्रेमचंद ने राष्ट्रीय मुक्ति संघर्ष को इस तरह पेश किया कि वे राजनीति के पिछलग्गू नहीं बने बल्कि उसके आले चलनी वाली मशाल बने।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद आजादी के बाद क्या नहीं चाहते थे?
- 1936 तक आजादी के आंदोलन में क्या खामियाँ थीं?
- प्रेमचंद ने समाज-सुधार को राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन से कैसे जोड़ा?

2.3.5 प्रेमचंद और भाषाई सवाल

प्रेमचंद भारत में बहुत सी भाषाओं का होना कौमी तरक्की के रास्ते में अड़चन मानते थे। वह सारे हिंदुस्तान में एक कौम और एक कौमी जबान का सपना देखते थे। वह हिंदुस्तान को एक मजबूत, स्वाधीन, और सुखी राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। भारत में बहुत सी भाषाएं हैं। एक साथ मिलकर और एक दूसरे की मदद करके ये सब हिंदुस्तान को एक मजबूत राष्ट्र बना सकती हैं। प्रेमचंद देश की भाषाओं की उन्नति चाहते थे, पर अंग्रेज़ी भाषा की प्रमुखता उन्हें अच्छी न लगती थी। प्रेमचंद ने अंग्रेजों की अंग्रेजी लादने की नीति के खिलाफ बगावत ही कर दी थी। वे कहा करते थे, " समाज की बुनियाद भाषा है। अंग्रेजी राजनीति का,व्यापार का, साम्राज्यवाद का, हमारे ऊपर जितना आतंक है , उससे कहीं ज्यादा अंग्रेजी भाषा का है।"

राष्ट्रीय आत्मसम्मान की खातिर वे अंग्रेजी से दूर रहने की सलाह देते हैं। प्रेमचंद ने अंग्रेजी-भक्तों की सबसे बड़ी कमजोरी पकड़ ली थी। वह थी जनता से उनकी दूरी। ये लोग जनता से दूर थे। हिंदी में राष्ट्र की ताकत है, यह उन्होंने सबको समझाया। और हाँ, हिंदी –उर्दू की बुनियादी एकता को वे भारतीय मुक्ति आंदोलन के लिए जरूरी से भी ज्यादा मानते थे।

प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अधिवेशन में सभापति पद से भाषण देते हुए प्रेमचंद ने कहा था कि 'वह देश भक्ति और राजनीति के पीछे चलने वाली सच्चाई भी नहीं, बल्कि उसके आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई हैं।" वास्तव में प्रेमचंद ऐसी ही सच्चाई हैं। उन्होंने अपने युग के मुक्तिसंघर्ष और स्वतंत्रता आंदोलन के जो रूप दिखाए, वे सब हमारे सामने आए। यह इस बात का सबूत है कि वे देशभक्ति और राजनीति के आगे मशाल दिखाती हुई सच्चाई थे। प्रेमचंद ने बहुत से किरदारों के द्वारा जनता के लिए महान शिक्षक का काम किया। प्रेमचंद जनता के सुख -दुख में भाग लेने वाले कलाकार थे, इसीलिए उनकी रचनाएं इतनी अच्छी हैं। प्रेमचंद का साहित्य बीसवीं सदी के हिंदुस्तान का सच्चा इतिहास है।

बोध प्रश्न

- हिंदी-उर्दू के संबंध में प्रेमचंद के विचार क्या हैं?
- कौमी भाषा किस प्रकार से देश के मुक्ति आंदोलन में सहायक हुई?
- अंग्रेजी भक्तों की सबसे बड़ी कमजोरी क्या थी?
- "प्रेमचंद कैसी सच्चाई हैं? स्पष्ट करें।

2.4 : पाठ सार

प्रेमचंद का सारा लेखन उनके अपने युग से जुड़ा हुआ है। वे भारत के स्वाधीनता आंदोलन से खास तौर से प्रभावित रहे। इस स्वाधीनता आंदोलन का मुख्य उद्देश्य देश को अंग्रेजी राज से मुक्ति या आजादी दिलाना था। इसका एक प्रयोजन यह भी था कि देश में देशी-विदेशी शोषण से आम आदमी को निजात मिले। इसमें जनता का संघर्ष एक साथ सामंतवाद, पूंजी वाद, और विदेशी साम्राज्यवाद से था। इस आंदोलन में भारत का गरीब किसान मजदूर

और आम आदमी तरह तरह से भाग लेता गया। कॉंग्रेस और गांधी ने भी योगदान दिया। प्रेमचंद ने इस यथार्थ को अपने लेखन से प्रस्तुत किया। प्रेमचंद युगीन परिदृश्य का एक पहलू यदि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन है तो दूसरा पहलू सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषाई एकता से भी जुड़ा है। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में ग्रामीण जीवन और किसान को केंद्र में रखा और उसके सरोकारों और समस्याओं को पेश किया। अपनी तरफ से सुझाव भी दिए। किसान –मजदूर के जीवन-संघर्ष और मुक्ति संघर्ष का चित्रण करते हुए उनकी जीत दिखाने की नीयत से लेखन करने वाले प्रेमचंद अपने युग के परिदृश्य को बखूबी पेश करते हैं। प्रेमचंद समाज और इतिहास में अपनी भूमिका पहचान रहे थे और शोषक व्यवस्था से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहे थे। प्रेमचंद ने सबके बीच 'एका' रहे, इस बात पर जोर दिया। प्रेमचंद ने मुल्क की आजादी के लिए मुल्की जबान या कौमी जबान की जरूरत पर जोर दिया। राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन या भारत की आजादी की जद्दोजहद में प्रेमचंद युग के तीस वर्ष बहुत महत्वपूर्ण हैं। प्रेमचंद ने अपने इर्द-गिर्द के समाज और उसकी दशा को समझा। देश के राजनीतिक माहौल को देखा। उसमें कलम के सिपाही की तरह भाग लिया। अपने लेखन से अपने युगीन परिदृश्य का खाका पेश किया।

2.5 : पाठ की उपलब्धियां

इस इकाई के पाठ से निम्नलिखित उपलब्धियां सुनिश्चित होती हैं-

1. प्रेमचंद के समय के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक माहौल उतार-चढ़ाव से भरा था।
2. भारत को आजाद कराने के लिए कॉंग्रेस और गांधी जी की मुहिम चल रही थी।
3. किसान और मजदूर बेहाल और बदहाल थे और उन पर ध्यान देने वाले नेता कम थे।
4. प्रेमचंद ने राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन का गहराई से जायजा लिया, सबको देखा और समझा।
5. अपने लेखन में इन सबका शुमार किया और आम आदमी के दुख दर्द का बयान पेश किया।
6. देश में 'एका' या एकता की जरूरत को समझाया और भाषाई एकता को कायम करके दिखाया।

2.6 : शब्द संपदा

1. असंगति - नामुनासिबत,बेमेल
2. सामंतवाद - वह शासन व्यवस्था जिसमें राज्य की भूमि बड़े बड़े जमींदारों के अधिकार में रहती थी।
3. पूंजीवाद - ऐसी आर्थिक प्रणाली जिसमें धनिक वर्ग उत्पादन साधनों पर अधिकार कर श्रमिकों का शोषण करता है, कैपिटलिज्म।

4. साम्राज्यवाद - वह दृष्टिकोण जिसके अनुसार कोई महत्त्वाकांक्षी राष्ट्र अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए अन्य देशों के प्राकृतिक और मानवीय संसाधनों पर अपना अधिकार जमा लेता है।
5. शोषित-उत्पीड़ित - जिसे पीड़ा या कष्ट पहुँचाया गया हो, सताया हुआ।

2.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए

1. राष्ट्र, राष्ट्रीय, और राष्ट्रीयता के अर्थ पर रोशनी डालते हुए प्रेमचंद युगीन परिदृश्य के शुरुआती दौर का परिचय दीजिए।
2. प्रेमचंद ने राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की कैसे मदद की? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
3. प्रेमचंद ने किसान की किन समस्याओं को देखा और कैसे उनका अपनी रचनाओं में चित्रण किया?
4. अंग्रेजी सरकार के अत्याचार और समाज में फैली बुराइयों पर प्रेमचंद कैसे अपना बयान पेश करते हैं?
5. प्रेमचंद के लेखन पर गांधी और कॉंग्रेस को उदाहरण देते हुए प्रस्तुत कीजिए।

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए

1. "प्रेमचंद आने वाले कल को देखने वाले थे।" इस कथन पर विचार कीजिए।
2. हिंदी-उर्दू-अंग्रेजी के संबंध में प्रेमचंद के विचार क्या थे?
3. समाज की बुनियाद भाषा कैसे है? प्रेमचंद के लेखन से उदाहरण देकर बताइए।
4. क्या आप प्रेमचंद को समाज सुधारक कह सकते हैं?
5. 'एका' से आप क्या समझते हैं? प्रेमचंद किस-किस तरह से 'एका' चाहते थे?

खंड- (स)

I. **सही विकल्प चुनिए**

1. निम्नलिखित में से किस पत्रिका का प्रेमचंद ने संपादन किया-

   क) हंस आ) फ़साना इ) मंगल सूत्र ई) रहबर

2. प्रेमचंद युगीन परिदृश्य का अर्थ हुआ –

   क) प्रेमचंद का जमाना ख) प्रेमचंद के वक्त का तकाजा
   ग) कलम का सिपाही घ) इनमें से कोई नहीं

3. इनमें से अनमेल व्यक्ति चुनिए

क) महात्मा गांधी ख) हंस राज रहबर ग) दया नारायण निगम घ) रमानाथ

4. इनमें से अनमेल विचारधारा चुनिए

   क) सामंतवाद ख) पूंजीवाद ग) राष्ट्रवाद घ) साम्राज्यवाद

II. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए

1. प्रेमचंद का जन्म _____ के जन्म से पाँच साल पहले हुआ था।
2. हिन्दी कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में 1918 से 1936 तक के कालखण्ड को _____ कहा जाता है।
3. एक अंग्रेज _____ ने 'कॉंग्रेस' की स्थापना की जिसे बाद में _____ ने संभाला।
4. प्रेमचंद ने _____ को स्वाधीनता-आंदोलन की रीढ़ बतलाया था।
5. प्रेमचंद युगीन परिदृश्य का एक पहलू यदि राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन है तो दूसरा पहलू _____ से भी जुड़ा है।
6. अपने अधूरे उपन्यास _____ में प्रेमचंद ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद का चित्रण किया है।

III. सुमेल कीजिए

1. सेवा सदन	(अ) किसानों पर अत्याचार
2. प्रेमाश्रम	(आ) राष्ट्रीय आंदोलन की झलक
3. रंगभूमि	(इ) नारी की पराधीनता
4. निर्मला	(ई) महाजनी शोषण का चित्र
5. कर्मभूमि	(उ) अछूत किसानों और खेत-मजदूरों की भूमि -समस्या
6. गोदान	(ऊ) अनमेल विवाह

2.8 : पठनीय पुस्तकें

1. डॉ राम विलास शर्मा : प्रेमचंद और उनका युग
2. कुँवर पाल सिंह : भूमि संबंध किसान आंदोलन और प्रेमचंद
3. जनार्दन झा द्विज: प्रेमचंद की उपन्यास कला

इकाई 3 : प्रेमचंद युगीन श्रम जीवी संगठन और आंदोलन

इकाई की रूपरेखा

3 .1 प्रस्तावना
3 .2 उद्देश्य
3 .3 मूल पाठ : प्रेमचंद युगीन श्रम जीवी संगठन और आंदोलन
3 .3.1 श्रम जीवी वर्ग और उसका संगठन
3. 3.2 नामकरण और पृष्ठभूमि
3 .3.3 प्रेमचंद और प्रगतिशील लेखक संघ
3 .3.4 उपजीवी वर्ग का विरोध
3.3.5 लगान बंदी और समाज सुधार आंदोलन
3. 4 पाठ सार
3.5 पाठ की उपलब्धियां
3 .6 शब्द संपदा
3 .7 परीक्षार्थ प्रश्न
3 .8 पठनीय पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

प्रेमचंद अपने युग के प्रतिनिधि लेखक हैं। वे जिस युग में पैदा हुए वह आंदोलनों का युग था। देश में आजादी की जद्दोजहद शुरू हो चुकी थी। प्रेमचंद ने जब लिखना शुरू किया तब देश में उथल पुथल हो रही थी। देश भर में अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठने लगी थी। ये बात जरूर थी कि अभी आवाज दबी हुई थी। प्रेमचंद देख रहे थे कि देश का किसान मजदूर चारो तरफ से मार खा रहा था। किसान और मजदूर देश और समाज की रीढ़ हैं। मेहनत-कश इंसान जिसे श्रम जीवी कहते हैं वह जब लगातार दबाया जाता है तो उसके तेवर बदल जाते हैं। वह आपस में मिल बैठकर अपने फायदे के लिए संगठन बनाता है। मिल जुलकर आगे बढ़ता है। आंदोलन करता है। वह अपनी मेहनत का ठीक मुआवजा न मिलने की वजह से साथ-साथ आता है। याद रखिए! "प्रेमचंद दुखी हिंदुस्तान के गरीबों के लेखक थे। उनका साहित्य तमाम मजलूमों का मानसिक संबल है।"

इस इकाई में प्रेमचंद के जमाने में उभरे श्रम जीवी संगठन के बारे में जानकारी मिलेगी। मेहनतकशों के द्वारा पूंजी वादी व्यवस्था के विरोध में जो आवाजें उठीं उनका सिलसिलेवार बयान पेश किया जाएगा। तभी तो प्रेमचंद की कहानियों और उपन्यासों की पृष्ठभूमि स्पष्ट होगी। कहते हैं न कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। प्रेमचंद के युग में श्रम जीवी संगठन और आंदोलन ने खासा प्रभावित किया। प्रेमचंद खुद प्रगतिशील लेखक संघ के संस्थापकों में से एक रहे। इसलिए इस इकाई को ध्यान से पढ़ने की जरूरत होगी। प्रेमचंद के युग में श्रम संगठन आंदोलन राष्ट्रवादियों और मानवतावादियों के असर से भरा रहा, यह ख्याल रखते हुए आपको आगे बढ़ना होगा।

3.2 : उद्देश्य

इस इकाई के पाठ से आप

- प्रेमचंद के युग का गहराई से अध्ययन करेंगे।
- इस गहराई में प्रेमचंद युगीन श्रम जीवी संगठन का जिक्र किया जाएगा।
- प्रेमचंद युगीन श्रम जीवी संगठन और उसके इर्द गिर्द उभरे आंदोलनों की चर्चा करेंगे।
- प्रेमचंद के लेखन में ये संगठन और आंदोलन किस प्रकार आते दिखाई देते हैं, इसका गंभीर अध्ययन करने का मौका प्राप्त कर सकेंगे।

3.3 : मूल पाठ: प्रेमचंद युगीन श्रम जीवी संगठन और आंदोलन

3.3.1 श्रम जीवी वर्ग और उसका संगठन

जब हम प्रेमचंद युगीन शब्द का इस्तेमाल करते हैं तो हम मोटे तौर पर 1880 से 1936 तक के वक्त को इसमें शामिल करते हैं। यह वह वक्त था जब पूरे हिंदुस्तान में बरतानिया सरकार के जड़ें मजबूती से जम गई थीं। 1885 में कांग्रेस का गठन हुआ। गांधी जी तो बहुत बाद में 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत आए और धीरे धीरे कांग्रेस के सर्वे-सर्वा जैसे बने। प्रेमचंद ने गांधी के विचारों की आहट को पहले ही पहचान लिया था। प्रेमचंद का लेखन भारत की दुर्दशा और आने वाले कल की आशा को एक साथ पेश करता है। 1904 में रूस- जापान युद्ध हुआ, इसकी समय के आसपास बंग-भंग आंदोलन प्रारंभ हुआ। इस आंदोलन से बंगालियों में बड़ी खलबली मची। यह खलबली सारे भारत में फैलती चली गई। बंगाल से रवींद्र नाथ ठाकुर ने अपनी कविताओं के द्वारा राष्ट्रीय चेतना को उभारने में मदद की। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों और उपन्यासों में इन्ही अहसासों को पेश किया। 1907 में मिंटो योजना सामने आई। इसने लोगों को बाँट कर रख दिया। इस तकसीम ने आग में घी का काम किया। दूसरी तरफ रूसी राज्य क्रांति का असर हिंदुस्तान के लोगों पर पड़ा।

डॉ. वीर भारत तलवार का मानना है- "प्रेमचंद राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के युग के लेखक थे। देश की शोषित-उत्पीड़ित जनता में अस्सी फीसदी संख्या किसानों की थी जो अंगरेजों द्वारा देश पर थोपी नई दलाल सामंती भूमि व्यवस्था के अधीन लूट और दमन के शिकार थे। इनके लिए स्वराज्य का क्या मतलब है ? शहरों के शिक्षित मध्यवर्ग के नेतृत्व में होने वाले स्वराज्य के आंदोलन में इन किसानों के लिए क्या स्थान है ? राष्ट्रीय स्वाधीनता के सवाल के साथ इन किसानों की मुक्ति के सवाल का संबंध कैसा होगा ? 1918-22 के दौर में इन सवालों को प्रेमचंद ने अपने साहित्य का केन्द्र बनाया।" कुँवर पाल सिंह के अनुसार प्रेमचंद युगीन वास्तविकता को जानने के लिए दो बातें खास ध्यान रखने वाली हैं – भारत में राष्ट्रीय बुर्जूवा का उद्भव, विकास तथा उसके अन्य वर्गों एवं ब्रिटिश साम्राज्यवाद से अंतःसंबंध 2. किसान समस्याएं, आंदोलन और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन पर इनका प्रभाव। इसे आसन भाषा में कह सकते हैं कि प्रेमचंद के युग को समझने के लिए किसान, मजदूर, पूँजीपति, जमीदार आदि के

जीवन को समझना होगा। यह भी समझना होगा कि किसान मजदूर क्यों आंदोलन करने पर उतारू हुए। देश में चल रहे आंदोलनों ने किसान मजदूरों की कितनी मदद की। किसान मजदूरों ने बदलें में राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन में कितना सहयोग दिया।

प्रेमचंद जिस देश-काल में रह रहे थे, वह बहुत उथल पुथल भरा वक्त था। उस समय देश आजादी के लिए कोशिश करने में लगा था। प्रेमचंद बड़ी चतुराई से अपने समय को अपनी रचनाओं में पेश करते हैं। वे बड़ी कुशलता से राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में अपनी कलम से शिरकत करते हैं। उनकी 'शतरंज के खिलाड़ी', 'जुलूस', 'आहुति', 'दो बैलों की कथा' आदि बहुत सी कहानियाँ और 'रंगभूमि' , 'कर्मभूमि'। 'प्रेमाश्रम' आदि उपन्यास स्वतंत्रता आंदोलन और श्रम जीवी संगठनों की कशमकश से भरे हैं। 'रंगभूमि' और 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में यह साफ दिखाई देता है।किसान-संघर्ष का पहला साहित्यिक दस्तावेज़ 'प्रेमाश्रम' अपने समय में असहयोग आंदोलन का प्रवक्ता बन गया था।प्रेमाश्रम जब लिखा गया उसके तुरंत बाद अवध का ऐतिहासिक किसान आन्दोलन बाबा रामचंद्र और मदारी पासी के नेतृत्व में हुआ था। अवध के किसान आन्दोलन में बेदखली एक बहुत बड़ा मुद्दा था। और इसी के खिलाफ किसान लड़े। एक साल के लंबे संघर्ष के बाद भी किसान अपनी जमीन मुक्त नहीं करा पाए।आज प्रेमाश्रम को कोई भी असहयोग आन्दोलन का दस्तावेज़ मानकर नहीं पढ़ता। आज प्रेमाश्रम, भारतीय किसान के संघर्ष के लिए पढ़ा जाता है।1917 में प्रेमचन्द किसान संघर्ष की ओर मुड़े। इसके पीछे चंपारण के किसान आन्दोलन व रूस की बोल्शेविक क्रान्ति की प्रेरणा थी। प्रेमचन्द ने महसूस किया कि राष्ट्रीय आंदोलन में किसानों के सवालों के लिए चिंता नहीं थी। पहले विश्वयुद्ध के बाद के पूर्वी उत्तर प्रदेश के किसानों के संघर्ष और आंदोलन का सच्चा दस्तावेज 'प्रेमाश्रम' उपन्यास है। वीर भारत तलवार अपने शोध प्रबंध में लिखते हैं कि रूसी क्रांति से पैदा हुई चेतना इन किसानों तक पहुंची तो थी ,लेकिन वह अब भी उनके लिए एक वास्तविक शक्ति न बन सकी थी। किसानों की हार पर राम विलास शर्मा लिखते हैं कि किसी दूसरे गाँव में जूँ तक नहीं रेंगती, क्योंकि अभी उनका कोई संगठन नहीं है। शहर से उन्हें कोई मदद नहीं मिलती, क्योंकि मजदूर से उनका एका नहीं है। सन 1920 में जब प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम' लिखा तब जमीनी हकीकत यही थी। यह जरूर कह सकते हैं कि इस उपन्यास के खास किरदार 'मनोहर' में उस बीज का पौधा है जो बीज रूसी मजदूर-किसानों की क्रांति ने सारी दुनिया की मेहनतकश जनता के बीच बिखेरे थे।

कहा जा सकता है कि प्रेमचंद के युग में आम आदमी बुरी तरह से परेशान था। एक तरफ सरकार परेशान करती थी, दूसरी तरफ साहूकार और जमीदार। किसान मजदूर होता जा रहा था। खेत से दूर जाकर कल-कारखानों में मेहनत करके पेट भरने को मजबूर था। जब मेहनत या श्रम की उचित मजदूरी नहीं मिलती, तब मजदूर एक जुट होता है और आंदोलन करता है। प्रेमचंद के युग में ऐसा ही हुआ।

श्रम का अर्थ है मेहनत। जो हाथ पैरों से मेहनत करके अपनी रोजी-रोटी कमाता है वह मेहनत-कश कहलाता है। इसी मेहनत-कश इंसान को शुद्ध हिंदी में 'श्रमजीवी' कहते हैं। श्रम

जीवी श्रम या परिश्रम से अपनी जीविका चलाता है। उसे जब अपनी उचित मजदूरी नहीं मिलती तब वह आंदोलन करने पर उतारू हो जाता है। प्रेमचंद का युग या वक्त एक ऐसा युग है जब दुनिया भर में मशीनों से काम होना शुरू हो गया था। गरीब किसान शहरों का रुख कर रहे थे। वे खेतीहर किसान से मिल मजदूर बन जाते थे। प्रेमचंद मजदूर के जीवन से इतने अधिक प्रभावित हुए, इतने दुखी हुए कि उन्होंने अपनी पहली और आखिरी फिल्म 'मजदूर' में एक मजदूर की भूमिका निभायी। प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' का एक महत्वपूर्ण पात्र 'गोबर' शहर जाकर मिल में मजदूरी करता है। ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जिन्हें यहाँ दिया जा सकता है। पर पहले आप श्रम जीवी संगठन और आंदोलन के बारे में तफ़सील से जान लें।

श्रमिक वर्ग क्या है? श्रम जीवी संगठन और आंदोलन के बारे में समझने के लिए 'श्रमिक वर्ग' को समझना होगा। श्रमिक या मजदूर ही तो श्रम जीवी होता है जो संगठन बनाता है और आंदोलन करता है।इसलिए शुरू से ही शुरू करते हैं। आदमी का सामाजिक जीवन उसके काम पर टिका है। बिना कुछ किये कुछ नहीं मिलता। वक्त वक्त की बात है । आजकल लड़के-लड़कियां सॉफ्टवेयर से जुड़े काम की तरफ दौड़ रहे हैं। आज कल के पढे लिखे लोगों के पास बहुत से काम हैं । पर आजादी से पहले शिक्षा कम होने की वजह से लोग या तो मेहनत मजदूरी करते थे या खेती किसानी। किसानों को जमीदार और साहूकार परेशान करता था। मजदूर को पूंजीपति का डर था। गरीब को कहीं भी चैन और आराम न था। जैसे जैसे मिल और कारखानों का जाल भारत में फैला, वैसे वैसे श्रमिकों का एक वर्ग पैदा होता गया । इसे श्रमिक वर्ग कहा गया।

बात और भी साफ हो जाएगी यदि आप जान लें कि कुछ लोग श्रम का क्रय करते हैं, खरीदते हैं। कुछ लोग उसका विक्रय करते हैं। जो विक्रेता हैं वे मजदूर और श्रम जीवी हैं। यह भी सच है कि श्रम जीवी एक साथ जुट कर अपनी सौदे बाजी की क्षमता को बढ़ा सकते हैं। उनके आपस में इस प्रकार मिलने को श्रम संघवाद कहा जाता है। आपको यह भी यहाँ समझ लेना अच्छा रहेगा कि दुनिया भर में श्रम संघ आंदोलन, औद्योगिक श्रमिक वर्ग, और पूँजीवाद का उदय साथ साथ हुआ। पूँजीवादी वर्ग का फायदा होता रहे,वे सौदेबाजी करके अपनी तिजोरी भरते रहें, इसलिए वे श्रमिक संगठनों पर रोक लगाने और श्रमिकों को काबू में रखने के लिए कानून बनवाते हैं। पूँजीवादी शुरुआत से ही श्रमिक संगठनों पर हावी रहने की कोशिश करते रहे हैं। श्रमिक वर्ग भी शुरू से ही समझ गए थे कि पूँजीवादियों का सामना अकेले नहीं एक जुट होकर किया जा सकेगा।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद के युग से क्या तात्पर्य है?
- मजदूर को ही श्रम जीवी कहते हैं। कुछ स्पष्ट कीजिए।
- पूंजीवादी क्यों मजदूरों का शोषण करते हैं?

3.3.2 भारतीय श्रमिक संघ आंदोलन

यह तो अब आपको समझ में आ ही गया होगा कि प्रेमचंद युगीन भारत गुलाम भारत था। अंग्रेजी राज में देश की जो हालत थी उसे दबी जुबान भारतेन्दु ने इस प्रकार बताया था-

"अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी।।"

आसान जुबान में कहें तो अंग्रेजी राज में सुख के सारे साधन उपलब्ध हैं।पर देश का धन विदेश चला जा रहा है यही सबसे बड़ी चिंता का विषय है।भारतेन्दु हरिश्चंद्र (1850-1885) कथाकार प्रेमचंद (1880-1936) से पहले के साहित्यकार हैं। प्रेमचंद से पहले वे भारत दुर्दशा को समझ-बूझ गए थे। यह सच है कि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य से भारत के रंग ढंग बदलते चले गए थे। एक नया औद्योगिक युग आगे बढा। बिचौलिए और दलाल पैसे वाले हो गए। किसान बदहाल होते चले गए और मिलों में जाकर मजदूरी करने को मजबूर हो गए। भारत सामंतवादी अर्थव्यवस्था से आजाद होकर पूँजीवाद की ओर बढ़ने लगा। पूंजीवादी विचारधारा से विकास से एक नए मध्य वर्ग का उदय हुआ। इस वर्ग ने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की। ये लोग आजादी और गुलामी के भेद को समझे। इन्हीं पढ़ें लिखे लोगों ने देश को जगाया। प्रेमचंद भी ऐसे ही मध्य वर्गीय युवक थे। उन्होंने कहानी-उपन्यासों में समकालीन यथार्थ का तल्ख चित्रण किया। इससे राष्ट्रीय आंदोलन की नीव मजबूत हुई। एक उदाहरण से आपको यह समझ में आ जाएगा कि वे भारतीय स्वाधीनता – आन्दोलन के कथाकार थे। कर्मभूमि(1932) उपन्यास में लगान के बोझ तले दबे किसानों द्वारा आरंभ किए गए लगानबंदी आंदोलन एवं इसके परिणामों की विस्तृत चर्चा है। बकौल प्रेमचंद-"बेचारे एक तो गरीब,ऋण के बोझ से दबे हुए, दूसरे मूर्ख,न कायदा जानें न कानून। महंतजी जितना चाहें इजाफा करें,जब चाहें बेदखल करें,किसी में बोलने का साहस न था। अक्सर खेतों का लगान इतना बढ़ गया था कि सारी उपज लगान के बराबर भी न पहुँचती थी, किंतु लोग भाग्य को रोकर, भूखे, नंगे रहकर, कुत्तों की मौत मर कर खेत जोतते थे।"प्रेमचंद की निगाह समाज के सभी वर्गों की जनता की तरफ जाती थी जो इस आन्दोलन के बहाव में बह रहे थे। इस उपन्यास के दो पात्र अमरकांत और आत्मानंद के नेतृत्व में कुछ भटकावों के साथ लगानबंदी आंदोलन जोरशोर से शुरू हुआ,किन्तु उसका अंजाम अच्छा न हुआ। पुलिस ने मार मार कर खाल उधेड़ दी।

प्रेमचंद का सम्पूर्ण साहित्य जनता की आवाज बन गया। देश की स्वतंत्रता के प्रति उनमें अगाध प्रेम था। यही वजह थी कि जब क्रांतिकारी खुदीराम बोस को अंग्रेज सरकार ने बड़ी बेदर्दी से फाँसी पर लटका दिया तो प्रेमचंद खुदीराम बोस की एक तस्वीर बाजार से खरीदकर अपने घर लाये और कमरे की दीवार पर टांग दी। खुदीराम बोस को फाँसी दिये जाने से एक साल पहले उन्होंने "दुनिया का सबसे अनमोल रतन " नाम से अपनी पहली कहानी लिखी थी। इस कहानी में बताया गया है कि खून का वह आख़िरी कतरा जो वतन की हिफाजत में गिरे दुनिया का सबसे अनमोल रतन है।

प्रेमचंद ने बचपन से ही हिंदुस्तान के आम आदमी के बुरे हालात देखने शुरू कर दिए थे। उनकी नजर से श्रम आंदोलन भी ओझल न हुए। गौर तलब है कि भारत में श्रम संगठन और श्रमिक संघ आंदोलन देर से आया। इस तरह इस आंदोलन की एक विशेषता इसका देरी से

विकास भी है। वास्तव में राष्ट्रीय स्तर पर यह आंदोलन प्रथम विश्व युद्ध के बाद ही शुरू हुआ। उद्योगों के देरी से पनपने की वजह यह भी रही कि यहाँ के शुरुआती मजदूर वे लाचार किसान थे जिनके पास अपनी जमीन कम थी। कल कारखाने और उद्योग हिंदुस्तानी किसानों के लिए नई बात थी। इस कल-युग की समझ उन्हें देर से आई। आमतौर से उस वक्त श्रमिक संगठन आजादी की लड़ाई में आगे आगे चलने वाले थे। यह भी भारत के श्रम संगठनों की दूसरी खासियत है।

यह जोर देकर कहना होगा कि प्रथम विश्व युद्ध से पहले भारत में श्रमिक संगठन न के बराबर था। आम तौर पर कुछ संगठन बने पर वे चल न सके। युद्ध के दौरान श्रमिकों ने 1920 में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस (ए. आई. टी. यू. सी.) का गठन किया गया। ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन काँग्रेस (ए. आई. टी. यू. सी.) के राष्ट्रीय आंदोलन के साथ खास रिश्ता था। इसके कई अध्यक्ष आंदोलन में जुटे थे। गांधी जी ने अपनी सर्वोदय की विचारधारा के आधार पर श्रमिक संगठन आंदोलन को आगे बढ़ाया। अहमदाबाद कपड़ा मिल की यूनियन या मजदूर महाजन सभा एक ऐसा ही श्रम संगठन था। यह संगठन गाँधीवादी विचारधारा से बहुत प्रभावित था।

बोध प्रश्न

- शुरुआती मजदूर कौन और कैसे थे?
- भारत में श्रम संगठन का देरी से विकास क्यों हुआ?

3.3.3 प्रेमचंद और प्रगतिशील लेखक संघ

प्रेमचंद प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अध्यक्ष भी हुए थे। शायद इसलिए नामवर सिंह प्रेमचंद को पहला प्रगतिशील लेखक मानते हैं। प्रेमचंद जो कुछ भी लिख रहे थे वह स्वराज के लिए लिख रहे थे। उपनिवेशवादी शासन से भारत को मुक्त करने के लिए लिख रहे थे। वे कहा करते थे कि केवल जॉन की जगह गोविंद को बैठा देना ही स्वराज्य नहीं है बल्कि सामाजिक स्वाधीनता भी होना चाहिए। सामाजिक स्वाधीनता से उनका तात्पर्य संप्रदायवाद, जातिवाद, छूआछूत और स्त्रियों की स्वाधीनता से भी था। इसलिए प्रेमचंद मेहनतकश के साथ खड़े थे। प्रेमचंद के 'महाजनी सभ्यता', 'पुराना जमाना : नया जमाना', 'राज्यवाद और साम्राज्यवाद', 'साहित्य का उद्देश्य' जैसे निबंधों, कुछ महत्वपूर्ण उपन्यासों,और पत्रों से आपको पता चल जाएगा कि वे अपने वक्त की नब्ज को बखूबी पहचानते थे। प्रगतिशील लेखक संघ के सदस्य के नाते भी प्रेमचंद ने एक नई आलमी ताकत को बखूबी पहचाना। भारत में तब आजादी के लिए मुक्ति आन्दोलन चल रहा था। प्रेमचंद ने देश की आजादी की लड़ाई के लिए प्रगतिशील लेखकों को उपयोगी समझा था। यह 1936 का साल था। कांग्रेसी नेता काले कानून के मातहत मंत्रि मंडल बनाने की कोशिश कर रहे थे। किसानों और मजदूरों के अपने संगठन अधिक सक्रिय होकर आगे आ रहे थे। हिंदी साहित्य छायावाद और खुद प्रेमचंद अपने युग की देहरी को पार करके एक नई मंजिल की तरफ कदम उठा रहा था। प्रेमचंद को जनता की ताकत और नए लेखकों की लगन में विश्वास था। इसलिए उन्होंने प्रगतिशील लेखक

संघ की स्थापना के अवसर को 'उपयुक्त' और 'शुभ' बतलाया था। 9 और 10 अप्रैल को लखनऊ में होने वाले अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघ के पहले अधिवेशन में सभापति पद से उन्होंने जो भाषण दिया था, उसे आज भी पढ़ा जाता है। इस भाषण में प्रेमचंद ने रीतिकालीन साहित्य, सामंती परंपराओं और दरबारों की संस्कृति पर कडा हमला किया। जनता के साहित्य की आवाज बुलंद की। उन्होंने नए साहित्य से मांग की कि उसमें "उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौन्दर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाईयों का प्रकाश हो, जो हममें गति और संघर्ष और बेचैनी पैदा करे,सुलाए नहीं ;क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है।" इसलिए प्रगतिशील लेखक संघ की जरूरत थी क्योंकि प्रेमचंद जैसे लेखक कम थे।

प्रेमचंद संगठन के महत्व को समझते थे। इसीलिए उन्होंने संगठित होकर नए रास्ते पर आगे बढ़ने का आदेश दिया था। वे चाहते थे कि लेखक ही नहीं किसान-मजदूर-शोषित-दलित-वंचित-स्त्री सभी संगठित हों। प्रेमचंद ने अपने उपन्यास 'गोदान' में बताया कि देश पूरी आजादी और नए जनतंत्र को हासिल करने के लिए किस रास्ते से आगे बढ़े। किन उपायों से काम ले। वह उस रास्ते की तरफ जाने के लिए कह रहे थे जिस पर जनता एक जुट होकर अपने हक के लिए खुद आगे बढ़ती है। उन्होंने किसान-मजदूरों के संयुक्त मोर्चे की शक्ति को समझा। 'गोदान' में मेहता के चरित्र की मार्फत वे सब कुछ साफ साफ बता देते हैं। मेहता मजदूरों के साथ है। वह किसानों के साथ है। अपने आखिरी किन्तु अधूरे उपन्यास 'मंगलसूत्र' में प्रेमचंद ने संघर्ष के पुराने तरीकों को नाकाफ़ी बताया और कहा कि बुद्धिजीवियों को जनता का साथ देना चाहिए। 'रंगभूमि' उपन्यास में प्रेमचंद ने दिखाया कि बिना किसी पार्टी की अगुवाई और मदद के हिंदुस्तान की जनता अंग्रेजों से लड़ने लगी है। अंग्रेज कहते थे कि देश में शांति है, फिर भी सूरदास लड़ रहा था और मरते मरते कह रहा था, " फिर खेलेंगे, जरा दम ले लेने दो।" यह भारत की श्रम जीवी जनता की पुकार थी। 'कर्मभूमि' में आजादी की लड़ाई में जनता और किसान –मजदूर सब आ मिलते हैं। 'प्रेमाश्रम' में किसान अकेले नहीं हैं। आंदोलन से नए नेता पैदा हो रहे हैं। प्रेमचंद ने यह उपन्यास सविनय अवज्ञा आंदोलन के दिनों में लिखा था। 'गोदान' में मुनाफे की दुनिया और मेहनत की दुनिया के बीच के फासले को बखूबी दिखाया गया है। होरी के लड़के गोबर में नए जमाने की रोशनी है। वह चाहे गाँव में खेती करे या शहर में नौकरी या मजदूरी, वह किसी से दबने वाला नहीं। उसने नेताओं की बातों को सुनकर समझा है कि अपनी किस्मत खुद बनानी होगी। हिम्मत पैदा करनी होगी।आंदोलन करने होंगे और मिलकर आगे बढ़ना होगा।

यहाँ यह भी याद रखना चाहिए कि प्रेमचंद 1936 में अचानक चल बसे थे। तब तक हिंदुस्तान की जनता का एका काफी मजबूत नहीं हुआ था। आजादी के आंदोलन में बहुत सी कमियाँ और खामियाँ थीं। तब तक श्रमिक वर्ग संगठित होकर तमाम जनता के आंदोलन की अगुवाई करने के लिए आगे नहीं आया था। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में इस कमजोरी को दिखाया है। 'मंगलसूत्र' का नायक लगभग अकेला है। 'गोदान' का नायक होरी परेशानियों से लड़-लड़ कर अपनी जान दे देता है। राम विलास शर्मा ने ठीक ही लिखा है कि प्रेमचंद के

विचारों पर जहाँ –तहाँ इस वैज्ञानिक विचार-धारा(मार्क्सवाद) की छाप दिखाई देती है लेकिन उसकी क्रांतिकारी भूमिका , उसका युगांतरकारी महत्व उनके सामने स्पष्ट नहीं था।

इस आंदोलन पर भरोसा करके प्रेमचंद ने प्रगतिशील बनकर योगदान दिया। इसकी मिसालें कई हैं।'स्वदेश' के 18 मार्च, 1928 के अंक में प्रकाशित एक लेख "राज्यवाद और साम्राज्यवाद' में प्रेमचंद के साम्यवाद के बारे में ये ख्यालात हैं, "एक समय था जब साम्यवाद निर्बल राष्ट्रों को आशा से आंदोलित कर देता था। सारे संसार में जब प्रजावाद की प्रधानता हो जाएगी, फिर दुख या पराधीनता या सामाजिक विषमता का कहीं नाम भी न रहेगा। साम्यवाद से ऐसी ही लंबी-चौड़ी आशाएं बांधी गई थीं; मगर अनुभव यह हो रहा है कि साम्यवाद केवल पूंजीपतियों पर मजूरों की विजय का आंदोलन है, न्याय के अन्याय पर, सत्य के मिथ्या पर, विजय पाने का नाम नहीं। यह सारी विषमता, सारा अन्याय, सारी स्वार्थपरता जो पूंजीवाद के नाम से प्रसिद्ध है, साम्यवाद के रूप में आकर अणु मात्र भी कम नहीं होगी, बल्कि उससे और भी भयंकर हो जाने की संभावना है।"गोदान में होरी बेचारा किसान का किसान ही रहता है। पर गोबर क्रांतिकारी है। मजदूरों की हड़ताल का नेतृत्त्व वही करता है। प्रेमचंद ने समझ लिया था कि भारत में साम्यवाद ज्यादा वक्त तक नहीं चल सकेगा।

प्रेमचन्द के सम्पूर्ण कृतित्व को भारतीय मुक्ति-आन्दोलन की महागाथा कहा जा सकता है। 1907 से लेकर 1936 तक के आम आदमी की जिंदगी का उनके द्वारा पेश किया गया रंग-बिरंगा खाका भारतीय जनता की आजादी की उम्मीद पर टिका है। सन् 1930 ई. में बनारसीदास चतुर्वेदी को लिखे पत्र में प्रेमचन्द ने अपनी सबसे बड़ी ख्वाहिश जाहिर की थी— "मेरी अभिलाषाएँ बहुत सीमित हैं। इस समय सबसे बड़ी अभिलाषा यही है कि हम अपने स्वतंत्रता-संग्राम में सफल हों।"

3.3.4 उपजीवी वर्ग का विरोध

प्रेमचंद के युग में एक तरफ तो श्रम जीवी वर्ग था जो मेहनत-मजदूरी करके रोजी रोटी कमाता था। दूसरी तरफ एक उपजीवी वर्ग था जो मालगुजारी वसूल करने का काम करता था। केवल लगान वसूल करने का काम करके रोजी कमाने वाला यह वर्ग किसान मजदूरों का शोषण करता था। वह मनमानी भी करता था और उनकी ज्यादतियों से बचने के लिए किसान आंदोलन करते थे। किसान ज्यादा लगान नहीं देना चाहते थे। गुस्से में आकर वे विद्रोह कर देते थे। पर उनके विद्रोह संगठित आंदोलन नहीं बन सके। किसान आंदोलनों में पंजाब का अकाली आंदोलन, मालाबार का मोपला विद्रोह, राजपूताना का भील आंदोलन, और संयुक्त प्रांत में जमींदार और साम्राज्यवाद के विरोध में आंदोलन प्रमुख हैं। मालाबार का मोपला विद्रोह आगे चलकर सांप्रदायिक बन गया। नतीजा बुरा ही होना था। हाँ , किसान-मजदूरों के आंदोलनों से उनके बहुत से संगठन बने। कई नेता पैदा हुए। ये नेता दलित और अल्पसंख्यक वर्गों में से भी थे। प्रेमचंद ने 'कर्म भूमि' और 'प्रेमाश्रम' उपन्यासों में श्रम जीवी संगठन और आंदोलनों का अच्छा

विवरण पेश किया है। इनमें सच्चाई भरी है। भील आंदोलन का प्रेमचंद ने अपने उपन्यास 'रंगभूमि' में जिक्र किया है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में भी इन आंदोलनों का खुलकर जिक्र किया है। पर वे इस बात से बहुत दुखी हुए थे कि गरीब की मदद करने बहुत कम लोग आते हैं। प्रेमचंद ने यह अनुभव किया कि बिना श्रम जीवी संगठन के किसान मजदूर का भला नहीं हो सकता। वे देख रहे थे कि आने वाला कल इन्हीं का होगा।

बोध प्रश्न

- उपजीवी वर्ग से किसकी तरफ इशारा किया गया है?
- प्रेमचंद किस बात से ज्यादा दुखी होते थे?

3.3.5 लगान बंदी और समाज सुधार आंदोलन

अब बात करते हैं – लगान बंदी आंदोलन की। भारत की आजादी के आंदोलन के इतिहास को पढ़ने वाला हर कोई जानता है कि लगान-बंदी आंदोलन स्वाधीनता संग्राम का खास हिस्सा था। प्रेमचंद के उपन्यासों में किसानों के इस संघर्ष का जिक्र बार बार होता है। प्रेमाश्रम, कायाकल्प, और कर्मभूमि के किसान और किसान-मजदूर, जमींदार द्वारा की गई लगान में बढ़ोतरी का विरोध करते हैं। वे एक जुट होकर लड़ते हैं। वे देखते हैं कि सरकार उनका नहीं बल्कि जमींदारों का साथ देती है। इन किसानों और मजदूरों के नेता गांधी जी को बहुत मानते हैं। वे ज्यादातर गांधी जी के बताए रास्ते पर चलते हैं। पर कभी कभी जब परेशानी हद से गुजर जाती है तब वे हिंसा और मार-काट पर उतारू हो जाते हैं। यह प्रेमचंद युगीन आंदोलन की सच्चाई है जो प्रेमचंद के उपन्यासों में आज भी देखी जा सकती है। अंग्रेजों के खिलाफ प्रेमचंद ने खुल कर नहीं लिखा। उनकी कुछ कहानियों में स्वदेशी आंदोलन, असहयोग, सविनय अवज्ञा, शराब बंदी आदि आंदोलनों का चित्रण ज्यादा किया गया है, बनिस्पत उपन्यासों के। रंगभूमि, कायाकल्प, और कर्मभूमि आदि में जो सेवा समितियाँ हैं उनका मकसद सरकार का तख्ता पलटना नहीं बल्कि सामाजिक सुधार करना और जमींदारों तथा सरकारी कर्मचारियों से मीठी बात करके और समझाते हुए अपनी बात रखना है। प्रेमचंद पढे-लिखे लोगों से शिकायत भरे अंदाज में बात करते हैं। किसानों के लिए संगठन की जरूरत को बार बार कहते हैं। प्रेमचंद ने लिखते हुए यह ध्यान रखा कि सरकारी अफसर नाहक ही उन्हें परेशान न करें। वे जिंदगी की तल्खियों को पेश करते रहे, ईमानदारी से पेश करते रहे। पर आजादी के साथ साथ उनकी निगाह समाज के हर तबके पर थी। औरतों की शिक्षा और उनका आगे बढ़ना प्रेमचंद ने जरूरी समझा। कर्मभूमि की सुखदा हरिजनों के 'मंदिर प्रवेश आंदोलन' के दौरान जेल जाती है। प्रेमचंद ने स्त्री के साथ ही दलित को भी आगे बढ़ाने के आंदोलनों का चित्रण किया। गांधी जी ने दलितों को 'हरिजन' कहा था। दलितों के लिए अछूतोद्धार आंदोलन ने प्रेमचंद को प्रेरित किया। प्रेमचंद के लेखन में दलित साहसी और निडर हैं। गोदान की सिलिया अपने अधिकारों के लिए जब उठ खड़ी होती है तो जमाना भी उसका साथ देता है। 'रंगभूमि' का सूरदास भी दलित वर्ग का है। प्रेमचंद ने सांप्रदायिकता के खिलाफ भी आवाज उठाई। उनके वक्त में देश में सांप्रदायिक तनाव बहुत था। अंग्रेज लोग आग में घी डालते थे। हिंदू मुसलमानों को लड़वाया करते थे। 1925 में तो दंगे तक हुए। प्रेमचंद ने इसका विरोध किया।'कायाकल्प' उपन्यास में उन्होंने अंग्रेजों की चाल

को बेनकाब करते हुए इस सच्चाई से पर्दा उठाया। वे किसी पर भी रियायत नहीं करते। उन्होंने दिखाया कि हिंदू-मुसलमान पहले इंसान हैं और बाद में कुछ ओर।

आपने ध्यान दिया होगा कि प्रेमचंद ने खुलकर अंग्रेजों का विरोध नहीं किया। यह बात गौरतलब है। कुछ लोग तो प्रेमचंद की इसके लिए आलोचना भी करते हैं। प्रेमचंद ने अपने युग के समाज, संगठनों और समस्याओं का चित्रण किया। पर कोई ऐसा तरीका पेश नहीं किया जिससे कुछ फायदा हो। कुछ समाधान दिए भी तो वे बनावटी और आदर्शवादी हैं। उनसे काम नहीं चल सकता था। प्रेमचंद के पास कोई समाधान था ही नहीं। हिंदुस्तान गुलाम था।

बोध प्रश्न

- लगान-बंदी आंदोलन से आप क्या समझते हैं?
- प्रेमचंद ने किन दो प्रमुख वर्गों की वकालत की?
- प्रेमचंद की कुछ लोग आलोचना क्यों करते थे?

3.4 : पाठ सार

प्रेमचंद अपने युग के प्रतिनिधि साहित्यकार हैं। उन्होंने पने जमाने के दस्तूर को देखा और समझा। वे समझ सके थे कि देश की गुलामी की बहुत सी वजह थीं। समाज ही अलग अलग हिस्सों में बँटा हुआ था। एक तरफ जमीदार , नेता, साहूकार, अंग्रेज हुक्मरान, पुलिस, और दूसरे सरकारी कारिंदे (तहसीलदार, पटवारी आदि) थे। दूसरी तरफ गरीब, किसान, मजदूर, श्रमिक और श्रम जीवी थे। पहला दूसरों का शोषण करता था। श्रम जीवी को उसके श्रम का – मेहनत कश को उसकी मेहनत का- सही मेहनताना नहीं मिलता था। बेगार प्रथा भी थी। बेगार का मतलब हैं, बिना मजदूरी दिए जबरन काम कराना। कोई सुनवाई भी न थी। ऐसी स्थिति में बहुत से किसानों और मजदूरों ने अपनी आवाज उठाई। आजादी की लड़ाई के नेताओं ने उनका पहले तो कोई साथ नहीं दिया। फिर उनको महसूस हुआ कि आम आदमी के बिना आजादी की लड़ाई नहीं जीती जा सकेगी। तब गरीब की कुछ सुनवाई हुई। मजदूरों के संगठन बनें। उनके आंदोलनों ने कुछ असर दिखलाया। श्रम जीवी वर्ग के संगठनों ने कई बार साम्यवाद, समाजवाद और मार्क्सवाद के विचारों को सुन सुनाकर और उनसे प्रभावित होकर आंदोलन किए। प्रेमचंद इन सबके चश्मदीद गवाह थे। उन्होंने अपने युग के श्रम जीवी आंदोलनों को अपनी तरह से समझा। फिर कुछ किरदारों के सहारे अपने उपन्यासों और कहानियों में इनका जिक्र किया। प्रेमचंद के कुछ उपन्यास जैसे ' रंगभूमि' और 'कर्मभूमि' में देश में चल रहे राजनीतिक आंदोलनों के साथ श्रम जीवी संगठन और आंदोलनों का भी जिक्र है। दलित और स्त्री के सरोकारों और उनके उत्थान के लिए चलाए जा रहे आंदोलनों पर भी प्रेमचंद ने खासा ध्यान दिया। तभी तो प्रेमचंद को 'कलम का सिपाही' कहते हैं क्योंकि उन्होंने अपनी कलम से इस लड़ाई में शिरकत की। आज लोग प्रेमचंद को इसलिए भी पढ़ते हैं क्योंकि उनमें उनके युग की छाप है।

3.5 : पाठ की उपलब्धियां

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित बिन्दु स्पष्ट हुए ।

- प्रेमचंद के युग में राजनीतिक आंदोलनों के अलावा भी बहुत से आंदोलन हुए।
- किसान जब मजदूर बनने के लिए मजबूर हुए तो उनका वहाँ भी शोषण हुआ।
- इस शोषण से बचने के लिए उन्होंने आंदोलन किये।
- श्रम जीवी वर्ग ने अनेक संगठन बनाए और कई आंदोलनों में भाग लिया।
- प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में दलित,स्त्री,शोषित और गरीब किसान-मजदूरों के सरोकारों को शुमार किया।
- प्रेमचंद युगीन श्रम जीवी संगठनों और आंदोलनों की समझ से हम प्रेमचंद के लेखन की बेहतर समझ पा सकते हैं।

3.6 : शब्द संपदा

1. सृजन - रचना करना, पैदा करना
2. पूंजीवाद - ऐसी आर्थिक प्रणाली जिसमें धनिक वर्ग उत्पादन साधनों पर अधिकार कर श्रमिकों का शोषण करता है, कैपिटलिज्म।
3. प्रगतिवाद - सामाजिक यथार्थवाद को प्रतिष्ठित करने वाला का सिद्धांत।
4. अछूतोद्धार - अछूतों या अस्पृश्य जातियों के उद्धार का काम, प्रयत्न या भाव, मानवमात्र में बंधुत्व और समानता के लिए होने वाला काम। गांधी जी ने अछूत के लिए हरिजन शब्द का प्रयोग चलाया था।
5. उत्थान - उठना, उठाना
6. तनकीद - आलोचना, जाँच, परीक्षण

3.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड –(अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए

1. 'प्रेमचंद का युग आंदोलनों का युग था" इस कथन की उदाहरण देते हुए समीक्षा कीजिए।
2. प्रेमचंद युगीन आंदोलनों की पृष्ठ भूमि पर विचार कीजिए ।
3. प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में श्रम जीवी आंदोलनों की किस कमी की ओर इशारा किया है?
4. प्रेमचंद और प्रगतिशील लेखक संघ के आपसी रिश्तों को उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए?

खंड –(ब)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए

1. प्रेमचंद युगीन वास्तविकता को समझने के लिए कौन सी दो बातें जरूरी बताई गई हैं?
2. प्रेमचंद युगीन हिंदुस्तान के क्या बड़े दुख थे?
3. समाज सुधार के किन दो पक्षों पर प्रेमचंद की पैनी नजर थी?
4. अपने युग के सांप्रदायिक तनाव को लेकर प्रेमचंद के क्या विचार थे?
5. कलम के सिपाही के रूप में प्रेमचंद ने किस तरह अपने वक्त के मिजाज को परख कर उस पर तनकीद की?

खंड- (स)

I. **सही विकल्प चुनिए**

क) प्रेमचंद की सबसे बड़ी अभिलाषा क्या थी?

1) दुनिया का सबसे अच्छा साहित्यकार बनना 2) स्वतंत्रता संग्राम में सफल होना
3) कलम का सिपाही बनकर नाम कमाना 4) किसान मजदूरों को संगठित करना

ख) प्रेमचंद का उपन्यास नहीं है-

1) रंगभूमि 2) दुनिया का अनमोल रतन 3) प्रेमाश्रम 4) गोदान

ग) यह कोई आंदोलन नहीं है-

1) मोपला विद्रोह 2) लगान बंदी 3) बारदोली आंदोलन 4) भील आंदोलन

घ) कौनसा जोड़ा यहाँ असंगत है?

1) किसान-मजदूर 2) धर्म-अधर्म 3) साम्यवाद-समाजवाद 4) आंदोलन-नेता

II. **रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए**

1. प्रेमचन्द के सम्पूर्ण कृतित्व को _____ की महागाथा कहा जा सकता है।
2. प्रेमचंद ने _____ की स्थापना के अवसर को 'उपयुक्त' और 'शुभ' बतलाया था।
3. श्रमिक या मजदूर ही तो _____ होता है जो संगठन बनाता है और आंदोलन करता है।
4. प्रेमचंद के युग में एक _____ था जो मालगुजारी वसूल करने का काम करता था।
5. प्रेमचंद ने यह अनुभव किया कि बिना _____ के किसान मजदूर का भला नहीं हो सकता।

III. सुमेल कीजिए

1. मालाबार	(अ) संगठन
2. ए. आई. टी. यू. सी.	(आ) भील आंदोलन
3. पंजाब	(इ) मोपला विद्रोह

4. राजपूताना (ई) अकाली आंदोलन

3.8 : पठनीय पुस्तकें

1. किसान, राष्ट्रीय आंदोलन और प्रेमचंद : 1918-22 , वीर भारत तलवार , वाणी प्रकाशन , 1990
2. भूमि संबंध, किसान-आंदोलन और प्रेमचंद : कुँवर पाल सिंह
3. प्रेमचंद और उनका युग (1952) : राम विलास शर्मा, मेहर चंद मुंशी राम, दिल्ली

इकाई 4. प्रेमचंद : एक परिचय

4.1 प्रस्तावना
4.2 उद्देश्य
4.3 मूल पाठ : प्रेमचंद : एक परिचय
4.3.1 प्रेमचंद का परिचय
4.3.1.1 जन्म
4.3.1.2 बचपन
4.3.1.3 शिक्षा
4.3.1.4 विवाह
4.3.1.5 आजीविका
4.3.1.6 देहावसान
4.3.2 प्रेमचंद का व्यक्तित्व
4.3.3 प्रेमचंद का कृतिव
4.4 पाठ सार
4.5 पाठ की उपलब्धियाँ
4.6 शब्द संपदा
4.7 परिक्षार्थ प्रश्न
4.8 पठनीय पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! हिन्दी कथा-साहित्य में प्रेमचंद का एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। जिस समय हिंदी कथा-साहित्य तिलिस्मों की भूलभुलैया में भटक रहा था, उस समय प्रेमचंद एक नए दृष्टिकोण को लेकर उपस्थित हुए। उन्होंने साहित्य के उद्देश्य को केवल मनोरंजन के रूप में न स्वीकार करते हुए जीवन की समालोचना के रूप में स्वीकार किया। प्रेमचंद ने अपने साहित्य में शोषित, पददलित तथा सर्वहारा वर्ग की अभिव्यक्ति अपनी लेखनी के माध्यम से प्रस्तुत किया। उनकी भाषा पात्रानुकूल है। यही उनके साहित्य की एक महत्वपूर्ण विशेषता है। उनके भाषा से सामान्य-मनुष्य की पहचान होती है। प्रेमचंद ने लगभग 300 कहानियाँ तथा 12 उपन्यास लिखकर हिंदी साहित्य में 'उपन्यास सम्राट' के रूप में जाने जाते हैं। हिंदी पाठक ऐसा कोई नहीं है जो प्रेमचंद को जानता नहीं है। लगभग सभी हिंदी पाठक उनके नाम से भलि-भांति परिचित है। प्रेमचंद ने कथा- साहित्य के क्षेत्र में सामान्य पाठक को प्रभावित किया। इस इकाई में प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं उनके साहित्य- संसार पर प्रकाश डाला गया है।

4.2 उद्देश्य

छात्रों! इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप –

- प्रेमचंद के जीवन संबंधित विविध पहलुओं से परिचित होंगे।
- उनके साहित्य संसार से परिचित होंगे।

- उनकी विचारधारा से परिचित हो सकेंगे।
- उनके साहित्य में निहित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक संदर्भों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

4.3 मूल पाठ : प्रेमचंद : एक परिचय

4.3.1 प्रेमचंद का जीवन परिचय –

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है जिसमें समाज की समस्त संवेदनाओं का समावेश होता है। साहित्य का आधार ही मानव-जीवन है। इसी मानवीय संवेदनाओं, वेदनाओं तथा संघर्ष आदि को प्रेमचंद ने अपनी कलम के द्वारा अभिव्यक्त किया है। साहित्यकार साहित्य सृजन की प्रक्रिया में अपने अनुभवों को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करता है। अर्थात साहित्यकार का व्यक्तित्व अपनी कृतियों के माध्यम से उजागर होता है। अतः प्रेमचंद के साहित्य-संसार और उनका जीवन को निम्नवत देखेंगे।

4.3.1.1 जन्म : -

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस शहर से करीब लमही नामक ग्राम में एक निम्न मध्य वर्गीय किसान परिवार में हुआ। उनके पिताजी का नाम अजयाबरय और माताजी का नाम आनंदीदेवी था। प्रेमचंद के बालपण में ही माता की मृत्यु हो गई। पिता ने दूसरा विवाह कर लिया। सौतेली माँ के व्यवहार की कटुता का अनुभव भी इन्हें प्राप्त हुआ। वर्ष होते-होते पिता अजायबराय की भी मृत्यु हो गयी थी। प्रेमचंद का बचपन का नाम धनपतराय था। उनके चाचा प्यार से उन्हें नवाबराय कहकर पुकारते थे। कई नामों से प्रेमचंद को पुकारा जाता था।

4.3.1.2 बचपन :-

प्रेमचंद एक गरीब निम्न परिवार से थे। उनका बचपन गाँव में बीता और संघर्षमय रहा है। उनके पिता अजायबराय ने किसानी से गुजरा नहीं होता तो डाक मुंशी की नौकरी कियी थी। इनका मासिक वेतन दस रुपये से शुरू होकर अवकाश-प्राप्ति के समय चालीस रुपये पहुँचा था। बड़ी मुश्किल से इनके परिवार का पोषण हो पाता था। बचपन से प्रेमचंद को एक किसानी-जीवन का वातावरण मिला। उनके साहित्य में स्वयं भोगे हुए क्षणों की मार्मिक अभिव्यक्ति है। प्रेमचंद का बचपन आर्थिक तंगी में गुजरा। बचपन में ज्यादातर माँ का प्यार नहीं मिला। माता की मृत्यु के पश्चात् उन्हें अधिक दुःख सहना पड़ा। सौतेली माँ से हमेशा ही तिरस्कार, दुर्व्यवहार होने लगा। सौतेली माँ उन्हें डांटती-झिड़कती रहती थी, इसलिए प्रेमचंद को घर के बहार ही रहना पसंद था। वे बचपन से ही शांत स्वाभाव के थे।

4.3.1.3 शिक्षा :-

प्रेमचंद की प्रारंभिक शिक्षा गाँव के मदरसे में हुई। उनकी आरंभिक शिक्षा उर्दू एवं फारसी में हुई। गाँव में रहते हुए उच्च पाठशाला की पढाई करने के लिए शहर जाते थे। बचपन से ही उन्हें अध्ययन करने की रूचि थी। वे तेरह वर्ष तक हिंदी बिलकुल ही नहीं जानते थे। प्रेमचंद ने उर्दू और फारसी एक मौलवी साहब से सीखी थी, जो पेशे से दर्जी थे, मगर साथ ही मदरसा भी चलाते थे। प्रेमचंद ने गोरखपुर के मिशन स्कूल से आठवीं पास की। नवाब जब नवीं कक्षा में

थे, तब उनका विवाह हुआ। अगले साल उन्हें मैट्रिक की परीक्षा देनी थी कि दुर्भाग्य से उनके पिता अजायबराय की लंबी बीमारी के कारण मृत्यु हो गई। इसी वजह से प्रेमचंद परीक्षा में न बैठ सके। उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा 1898 में सेकंड डिवीज़न में उत्तीर्ण की। नवाबराय का गणित में कमजोर होने के कारण उन्हें किसी 'इंटर' कॉलेज में दाखिला नहीं हो पाया। आर्थिक परिस्थिति बिकट होने के कारण स्थानीय विद्यालय में शिक्षक की नौकरी कर ली। प्रेमचंद को अध्ययन-अध्यापन की रूचि बचपन से ही थी इसलिए उन्होंने अध्यापन के साथ-साथ अपनी पढाई जारी रखी। सन् 1910 में उन्होंने अंग्रेजी, दर्शन, फारसी और इतिहास विषयों को लेकर इंटर उत्तीर्ण किया। सन् 1902 में इलाहबाद के ट्रेनिग की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। सन् 1919 में स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरांत शिक्षा-विभाग में इंस्पेक्टर पद पर नियुक्त हो गए।

4.3.1.4 विवाह :-

प्रेमचंद की शादी पंद्रह साल की उम्र में ही हो गई थी। उनके पिताजी के कहने पर विवाह कर लिया यहाँ तक कि उन्होंने शादी तक कभी लड़की को नहीं देखा था। जबकि प्रेमचंद उस समय नौवीं कक्षा में पढ़ रहे थे। जब प्रेमचंद ने अपनी बीवी को देखा तो वह सडी दुबली पतली और उम्र में उनसी बड़ी थी। रंग काला और बहुत ही बदसूरत थी। प्रेमचंद को जीतनी पसंद आनी थी उतनी नहीं थी इसलिए प्रेमचंद ने पत्नी को छोड़ दिया है। सन 1905 में प्रेमचंद की उम्र पच्चीस वर्ष से ऊपर चल रही थी, पर वे विवाहित होकर भी दांपत्य जीवन से वंचित थे। अंततः उन्होंने दूसरा विवाह करने का निश्चय किया, पर किसी विधवा युवती से। "सलीमपुर (जिला फतेहपुर) के मुंशी देवीप्रसाद की लड़की शिवरानी देवी ग्यारह साल की होकर विधवा हो गई थी। मुंशी दुखी थे और चाहते थे कि इस बेचारी का दूसरा विवाह हो। पंडितों से पूछा। समाचार पत्रों में इश्तिहार निकलवाया। इसके जवाब में कई पत्र आए। इनमें से एक प्रेमचंद का था। इसमें अपनी शिक्षा तथा नौकरी के बारे में लिखा था और कहा था कि पहली बीवी मर चुकी है. देवी प्रसाद ने उन्हें फतेहपुर बुलाया, पसंद किया, वर अच्छा दी और किराये के पैसे दिए। प्रेमचंद के घरवाले विधवा-विवाह के विरुद्ध थे, इसलिए प्रेमचंद ने उन्हें खबर तक न दी। विधवा से विवाह करना इनकी देलेरी थी।"(कलम का मजदूर : प्रेमचंद, मदन गोपाल, पृ. 28) सन 1906 में महाशिवरात्रि के दिन उनका दूसरा विवाह मुंशी देवीप्रसाद की बाल विधवा पुत्री शिवरानी देवी से संपन्न हुआ।

4.3.1.5 आजीविका :-

प्रेमचंद कम उम्र में ही घर संभालने की जिम्मेदारी ली। क्योंकि उनके पिताजी का देहांत हो गया था। पिताजी की मृत्यु के बाद घर चलाना मुश्किल था। इसलिए घर में आर्थिक तंगी बढ़ने लगी। प्रेमचंद को आर्थिक आभाव के कारण उन्हें नौकरी करनी पड़ी। प्रेमचंद ने एक वकील के बेटे को ट्यूशन पढ़ाने का मासिक वेतन पांच रूपए लिया करते थे। कुछ दिनों के बाद प्रेमचंद को चुनार के मिशन स्कूल में मास्टर की नौकरी मिल गयी। मासिक वेतन आठारह रूपए मिलने लगा। प्रेमचंद ने यहाँ की भी नौकरी छोड़कर बनारस लौटकर आ गए। बनारस में क्वींस कॉलेज के प्रिंसिपल बेकन साहब प्रेमचंद के परिवारों से अच्छे से परिचित थे। उन्हीं की सिफारिश से

प्रेमचंद नियुक्ति 2 जुलाई 1900 को बहराइच के जिला स्कूल में मास्टर की पद पर हुई । मासिक वेतन बीस रुपये थी। यहीं से क्रमवार सरकारी नौकरी प्रारंभ हुई।

प्रेमचंद को जैसे ही बहराइच में नौकरी लगी वैसे ही ढाई महीने में उनका तबादला प्रतापगढ़ के जिला स्कूल में हुआ। प्रति माह बीस रुपये वेतन में उनका परिवार की जरूरते पूरी न हो पारी थी तो इसके आलावा प्रेमचंद ने ठाकुर साहब के लड़कों को ट्यूशन पढाना शुरू किया। दो महीने के बाद प्रेमचंद ने दो साल की छुट्टी लेकर इलाहबाद में मास्टरी की ट्रेनिंग कॉलेज के प्रिंसिपल केम्प्स्टर को प्रेमचंद का चारित्रिक गुणों से प्रभावित होकर मॉडल स्कूल के मुख्याध्यापक बनाकर उन्हें इलाहाबाद बुला लिया है। सन् 1905 में उनका कानपुरमें तबादला हुआ। यहीं जमाना पत्रिका के संपादक दयानारायण निगम के संपर्क में आये और इसी पत्रिका में उनकी कहानियाँ और आलोचनाएँ छपने लगी। प्रेमचंद को पदोन्नति सन् 1909 में सहायक निरीक्षक के रूप में मिली। लेकिन यह पद उनके स्वास्थ्य के अनुरूप नहीं था। इसलिए लिए उन्होंने सन् 1915 में बस्ती के सरकारी विद्यालय में पुनः अध्यापक के रूप में नौकरी स्वीकारी है। फिर से उनका तबादला गोरखपुर में हुआ।

गोरखपुर एक प्रेमचंद का ऐतिहासिक घटना स्थल है। यहाँ पर एक बार महात्मा गांधी की सभा थी उसमें प्रेमचंद ने भी सिरकत की। गांधी जी भाषणों से प्रभावित हुए। तब से प्रेमचंद ने नौकरी से विरक्त होकर नौकरी छोड़ दी। नौकरी छोड़ने के बाद उदरनिर्वाह की चिंता होने लगी। इसलिए कानपुर के मारवाड़ी पाठशाला में नौकरी करने का निर्णय लिया है। यहाँ पर भी उनकी स्वाभिमानी वृत्ति आदि आयी। इस नौकरी को छोड़कर उन्होंने स्वत्रंत लेखन व्यवसाय की तरफ ध्यान दिया। आर्थिक स्वावलंबन के लिए सरस्वती प्रेस की स्थापना की और 'हंस' पत्रिका प्रकाशन प्रारंभ किया। 'हंस' में जनजागरण और राष्ट्र-प्रेम संबंधी रचनाओं को महत्त्व दिया, इसलिए आये दिन जमानते जब्त होती रहती थी। इसी दौर में कर्मचारियों द्वारा हड़ताल भी की गई। प्रेस की आर्थिक स्थिति काफी ख़राब हो गई। सन 1928 से 1931 तक वे लखनऊ से प्रकाशित 'माधुरी' पत्रिका का 200 रूपया मासिक पर संपादन करते रहे।

इसी समय सन 1934 में बम्बई के अजंता मूवीटोनसे 9000 रु वार्षिक पर आमंत्रण प्रेमचंद को मिला। वे सिनेमा के द्वारा अपनी विचारधारा को अधिकाधिक लोगों तक पहुंचा सकते थे। लेकिन मुंबई में उन्हें हाथ निराशा लगी। इसलिए वे बम्बई से लौट आए। प्रेस का घाटा उनके अंतर्मन पर घाव कर रही थी । स्वस्थ्य आए दिन गिरते जा रहा था। इसलिए प्रेस को 'भारतीय साहित्य परिषद्' को सौंप दिया। अंत में परिषद् ने भी उसका प्रकाशन बंद कर दिया। अपने गिरते स्वास्थ्य की स्थिति में भी प्रेमचंद ने सन 1935 में 'प्रगतिशील लेखक संघ' की स्थापना की। उसके लखनऊ में आयोजित प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता स्वीकार करके बड़ा सारगर्भित वक्तव्य देकर लेखकों का मार्ग-दर्शन किया।

4.3.1.6 देहावसान :-

सन 1926 के गर्मी के दिनों में प्रेमचंद को उल्टी और खून के दस्त हुए। उसके पश्चात् उनकी तबियत बिगड़ने लगी। 18 जून 1936 को गोर्की की मृत्यु हुई। उनकी शोक सभा में जाकर भी कमजोर के कारण वे भाषण न दे सके। धीरे-धीरे उनका स्वास्थ्य बिगड़ते गया। उन्हें

खून की उल्टियाँ होने लगी। पेट का दर्द असह्य होता जा रहा था। नीद नहीं आती थी। रात की रात जागते कटती थी। इन सबके बावजूद कलम का सिपाही अपनी रचना 'मंगलसूत्र' लिखने बैठ ही जाता था।

25 जुलाई, 1936 की रात मुंशी जी पुनः खून की उल्टियाँ होने लगीं। उनका इलाज शुरू हुआ। जाँच से पता चला कि उन्हें 'सिरोसिस ऑफ़ लीवर' है। स्वास्थ्य ठीक होने की उम्मीद कम होते गई, फिर भी कोशिश जारी थी। दो अन्य डॉक्टरों को भी दिखाया गया। धीरे-धीरे पैसा ख़त्म होने लगा। वे अपने मित्रों को बुलाकर मिलते रहे। उन्हें अपने जाने का गम न था, अपितु दोस्तों के बिछुड़ने का दर्द था। अब वे बहुत कमजोर हुए थे, इतने कमजोर कि बात करने में भी थकान होती थी।

अततः 8 अक्तूबर, 1936 को सरस्वती का सपूत, साहित्य का दृढ़ सेनानी, कलम का मजदूर, दीन-दलितों का बंधू और सर्वज हितैषी प्रेमचंद कठिनाइयों से लड़ते-लड़ते सदा के लिए अमर हो गए।

भीष्म साहनी प्रेमचंद के बारे में लिखते हैं "कुछ लेखक हैं जो अपने जीवन में तो बड़ी प्रसिद्धि प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन मरने के बाद उनका नाम उनके साथ मर जाता है। लेकिन प्रेमचंद जैसे कुछ लेखक होते हैं, जो मरने के बाद भी बड़े चाव और आग्रह से पढ़े जाते हैं। कहीं कोई भूख है जिसे प्रेमचंद की रचनाएँ आज भी शांत कर पाती हैं।"(प्रेमचंद : व्यक्तित्व और रचनादृष्टि, संपादक – दयानंद पाण्डेय, पृ.20)

4.3.2 प्रेमचंद का व्यक्तित्व :-

मनुष्य जीवन में व्यक्तित्व एक महत्वपूर्ण अंग है। किसी का भी व्यक्तित्व उसके जीवन तथ्यों से निर्धारित कर सकते हैं उसी प्रकार प्रेमचंद के व्यक्तित्व उनके जीवन के तथ्यों से होता है। उन्होंने परम्पराओं की बेड़ियों की जंजीर को विधवा से विवाह करके तोड़ा। यह एक प्रेमचंद के लिए साहसिक काम था। उन्होंने पहला कहानी संग्रह 'सोजे वतन' में ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध लिखकर अपना देशप्रेम का परिचय देते हुए अपनी बीस वर्ष की सरकारी नौकरी को त्याग दिया। प्रेमचंद का बाहरी तौर पर उनका स्वभाव बहुत सादा था, पर अन्दर उनमें क्रांतिकारी कूट-कूट कर भरी हुई थी।

'सादा जीवन उच्च विचार' यह उक्ति प्रेमचंद पर पूर्णतः लागू होती है। साहित्यकार जैनेंद्र ने उन्हें पहली बार देखा तो वे लिखते हैं "जीने के नीचे से ऊपर झांकने पर मुझे जो कुछ दिखा उससे मुझे बहुत धक्का लगा। जो सज्जन ऊपर खड़े थे, उनकी बढ़ी घनी मूंछे थी। पांच रुपये वाली काली, लाल इमली की चादर ओढ़े हुए थे जो काफी पुरानी और चिकनी थी। बालों ने आकर माथे को कुछ ढँक-सा लिया था और माथा छोटा मालुम होता था। सर जरुरत से छोटा प्रतीत होता था। वे मामूली धोती पहने हुए थे, जो घुटनों से जरा नीचे आ गयी थी। प्रेमचंद इन्हीं को जानकार कुछ सुख मेरे मन को नहीं हुआ। क्या जीते –जी प्रेमचंद इन्हीं को मानना होगा ? प्रेमचंद के नाम पर खड़ा वह व्यक्तित्व साधारण, इतना स्वल्प, इतना देहाती मालूम हुआ कि

उनके व्यक्तित्व संबंधी समस्त धारणाएँ छिन्न-भिन्न हो गयी" (प्रेमचंद : एक कृति व्यक्तित्व, जैनेन्द्र कुमार, पृ. 19)

प्रेमचंद सरल, सहज और सादगी के साकार प्रतिमा थे। वह बहुत सादे-सीधे थे उन्हें कोई पहलीबार देखने से कोई यह नहीं कह सकता था कि प्रेमचंद यही हैं। प्रेमचंद विनोदप्रिय व्यक्ति थे। इसी स्वभाव के कारण अपरिचित व्यक्ति अपना संकोच छोड़कर उनसे बातचीत करता था। इस बारे में जैनेंद्र कुमार प्रेमचंद की पहली मुलाक़ात के अनुभव से लिखते हैं – "मैंने इतनी खुली हँसी जीवन में शायद ही कभी सुनी थी।."(प्रेमचंद : एक कृति व्यक्तित्व, जैनेंद्र कुमार, पृ. 23) प्रेमचंद मनुष्य जीवन को एक रंगभूमि मानते थे। हँसी मजाक से आनेवाले सुख-दुखों का समानभाव से स्वीकार करना चाहिए। यही प्रेमचंद की धारणा थी।

प्रेमचंद ने स्त्री के प्रति सम्मान रखते थे । वे स्त्रियों को पुरुषों से बड़ा समझते थे और अपनी पत्नी के प्रति उनके मन में सहधर्मिणी ही नहीं, अपितु समानाधिकरिणी की भावना विद्यमान थी, उसके निवारण सक्रिय उदाहरण उन्होंने बाल-विधवा शिवरानी देवी से विवाह करके प्रस्तुत किया था।

प्रेमचंद परंपरागत वर्ण-व्यवस्था में आस्था न रखकर व्यक्ति विशेष को उसके आचरण की पवित्रता एवं दया-भाव के आधार पर ऊँची या अधम श्रेणी का प्राणी मानने के पक्षपाती थे। प्रेमचंद का मानना है कि हिन्दू-जाति का ह्रास ढोंगी पण्डे – पुजारियों की संकीर्ण मान्यताओं के कारण हुआ है। तीर्थ स्थानों में व्याप्त दुराचरण के भी वे घोर विरोधी थे- "हमारे तीर्थस्थान क्या है ? ठगों के अड्डे और पाखंडों के अखाड़े। जिधर देखिये धर्म के ढोंग का बाजार गर्म है।" (विविध प्रसंग, प्रेमचंद, पृ. 157)

प्रेमचंद पर गांधीवाद का प्रभाव था। गांधी जी ही उनके समकालीन राजनीतिक क्षितिज के प्रमुख सितारे थे। प्रेमचंद गांधी जी के विचारों का अनुमोदन करते थे। उन्होंने गांधी जी के भाषण से प्रभावित होकर अपनी बीस साल पुरानी सरकारी नौकरी त्याग दी वे कहते हैं- मामिन दुनिया में गांधी को सबसे बड़ा मानता हूँ। उनका भी उद्देश यही है कि मजदूर और काश्तकार सुखी हों, वह इन लोगों को आगे बढ़ाने के लिए आंदोलन मचा रहे हैं। मैं लिखकर उनको उत्साह दे रहा हूँ। महात्मा गांधी हिन्दू- मुस्लमानों की एकता चाहते हैं, तो मैं भी हिंदी और उर्दू को मिला करके हिंदुस्थानी बनाना चाहता हूँ।" (प्रेमचंद : घर में, शिवरानी देवी, पृ. 111)

प्रेमचंद का झुकाव एक ओर गांधीवाद से था, तो दूसरी ओर साम्यवाद एवं मार्क्सवाद से भी था। वे मजदूरों और काश्तकारों के हिमायती थे। परंतु यह कहा जा सकता है कि प्रेमचंद को न तो पूर्णतया कांग्रेस की गांधीवादी नीतियाँ स्वीकार थी, न तो वे साम्यवाद के क्रांति-सिद्धांत में पूर्ण आस्था रखते थे। प्रेमचंद के गांधीवादी तथा साम्यवादी होने के विषय में डॉ। राजेश्वर गुरु का मत दृष्टव्य है – "प्रेमचंद अपने को जितना कम्युनिस्ट समझते हैं, उससे अधिक कम्युनिस्ट और जितना गांधीवादी मानते, उससे कम गांधीवादी हैं। या यो कह लीजिए कि प्रेम्काह्न्द का आदि गांधीवाद है और अंत साम्यवाद।" (प्रेमचंद: एक अध्ययन, डॉ. राजेश्वर गुरु, पृ. 106)

प्रेमचंद हिन्दू-मुस्लिम एकता के घोर समर्थक थे। अपनी कहानियों, उपन्यासों, नाटकों तथा लेखों में उन्होंने उसका जबरदस्त समर्थन किया है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से सांप्रदायिक समस्या पर तर्कसंगत और मानवीय विवेक से संपन्न विचार प्रस्तुत किये हैं। अपने लेख' साम्प्रदायिकता और संस्कृति में वे लिखते हैं- "अब संसार में केवल एक संस्कृति है और वह है आर्थिक संस्कृति "

4.3.3 प्रेमचंद का कृतित्व

प्रेमचंद की कृतियां पूरे भारत ही नहीं कहीं विदेशों में भी सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियां हैं। उन्होंने कई विधाओं में जैसे उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण आदि में साहित्य की सृष्टि की, किन्तु प्रमुख रूप से प्रेमचंद कथाकार के रूप में माना गया है। उन्हें अपने जीवन काल में ही उपन्यास सम्राट की पदवी मिल गई थी।

जिस युग में प्रेमचंद ने कलम उठाई थी, उस समय उनके पीछे ऐसी कोई ठोस विरासत नहीं थी और न ही विचार और न ही प्रगतिशीलता का कोई मॉडल ही उनके सामने था सिवाय बांग्ला साहित्य के। उस समय बंकिम बाबू थे, शरतचंद्र थे और इसके अलावा टॉलस्टॉय जैसे रुसी साहित्यकार थे। लेकिन होते-होते उन्होंने गोदान जैसे कालजयी उपन्यास की रचना की जो कि एक आधुनिक क्लासिक माना जाता है। प्रेमचंद प्रारंभ में उर्दू के लेखक थे और बाद में हिन्दी में लिखने लगे। इनका पहला उपन्यास 'असरारे मुआविद' उर्फ़ 'देवस्थान रहस्य' रहा है।

प्रेमचंद कथा साहित्य में यथार्थ, नयी सोच, अर्थवत्ता व शिल्पगत आयाम को प्रतुत किया है। प्रेमचंद के पूर्व साहित्य में मानवीय दृष्टिकोण प्राय: न के बराबर रहा है। प्रेमचंद के साहित्य में यथार्थ का चित्रण के साथ साथ आदर्श मार्गदर्शन किया है। काल्पनिक घटनाओं एवं चरित्रों को दूर रखकर व्यवहारिक एवं अपने आस-पास के चरित्रों को उकेरा है। प्रेमचंद ने साहित्य, समाज और राजनीतिक एक शृंखला के रूप में देखते थे। उनकी रचनाओं में सामाजिक सुधारों अथवा राष्ट्रीय चेतना का सच्चा इतिहास मिलता है। सामाजिक व राजनीतिक घटनाओं के प्रति उनका स्वयं का विचार है कि "साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए उससे अविचलित रहना कठिन हो जाता है। उसकी विशाल आत्मा अपने देश बंधुओं के कष्टों से विकल हो उठती है और इस तीव्र विकलता में वह रो उठता है पर उसके रुदन में व्यापकता होती है। वह स्वदेशी होकर भी सार्वभौमिक होता है।" (कुछ विचार, प्रेमचंद, पृ. 95)

कहानी साहित्य –

प्रेमचंद ने लगभग 300 के आसपास कहानियाँ लिखी है। इन कहानियों में समाज का प्रतिबिम्ब है। जो भाव और विचार लोगों के हृदयों को स्पंदित करते हैं, वे ही साहित्य पर भी अपनी छाया डालते हैं। प्रेमचंद ने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक

घटनाओं को प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में काल्पनिक होते हुए भी उसमें सत्य स्थापित किया है। इसलिए तो उनकी कहानियां मनोरंजन के साथ साथ सार्थकता सिद्ध करती हैं। उनकी कहानी मनोरंजन ही नहीं बल्कि उससे एक शिक्षा प्रदान होती है।

मानसरोवर (एक-खंड)

अलग्योझा, ईदगाह, माँ, बेटों वाली विधवा, बड़े भाई साहब, शान्ति, नशा, स्वामिनी, ठाकुर का कुँआ, घरजमाई, पूस की रात, झाँकी, गुल्लीडंडा-, ज्योति, दिल की रानी, धिक्कार, कायर, शिकार, सुभागी, अनुभव, लांछन, आखिरी हीला, तावान, घासवाली, गिला, रसिक संपादक, मनोवृत्ति आदि ।

मानसरोवर (खंड – दो)

कुसुम, खुदाई फौजदार, वैश्या, चमत्कार, मोटर के छींटे, कैदी, मिस पद्मा, विद्रोही, उन्माद, न्याय, कुत्सा, दो बैलों की कथा, बालक, मुफ्त का यश, बासी भात में की कथा, दूध का दाम, बालक, जीवन का शाम, डामुल का कैदी, नेउर, गृहनीति-, क़ानूनी कुमार, लाटरी, नया विवाह, शूद्रा, जादू आदि ।

मानसरोवर (तीन - खंड)

विश्वास, नरक का मार्ग, स्त्री और पुरुष, उद्धार, निर्वासन्, नैराश्य –लीला, कौशल, स्वर्ग की देवी, आधार, एक आँच का कसर, माता का हृदय, परीक्षा, तेवर, नैराश्य, दंड, धिक्कार, लैला, मुक्तिधन , दीक्षा, क्षमा, मनुष्य का परम धर्म, गुरु मंत्र, सौभाग्य के कोड़े, विचित्र होली, मुक्तिमार्ग-, डिक्री में रुपये, शतरंज के खिलाड़ी, वज्रपात, सत्याग्रह, भाड़े का टट्टू, बाबा जी का भोग, विनोद आदि ।

मानसरोवर (चार - खंड)

प्रेरणा, सद्गति, तगादा, दो कब्रें, ढपोरशंख, डिमान्स्ट्रेशन, दरोगा जी, अभिलाषा, खुचड़, आगापीछा-, प्रेम का उदय, सती, मृतक – भोज, भूत, सवा सेर गेंहूँ, सभ्यता का रहस्य, समस्या, दो सखियाँ, मांगे की घडी, स्मृति का पुजारी आदि ।

मानसरोवर (खंड – पाँच)

सती, हिंसा परमो धर्मः, बहिष्कार, चोरी, लांछन, कजाकी, आंसुओं की होली, अग्नि – समाधि, सुजान –भगत, पिसन्हारी का कुँआ, सोहाग का शव, आत्मसंगीत-, एक्ट्रेस, ईश्वरीय न्याय, ममता, मंत्र, प्रयाश्चित, कप्तान साहब, इस्तीफा आदि ।

मानसरोवर (छह - खंड)

यह मेरी मातृभूमि है, राजा हरदौल, त्यागी का प्रेम, रानी सारंधा, शाप, मर्यादा की बेदी, मृत्यु के पीछे, पाप का अग्निकुण्ड, आभूषण, जुगनू की चमक, गृहदाह-, पछतावा, आप-बीती, राज्यभक्त-, अधिकार –चिंता, धोखा, लाग – डाट, अमावस्या की रात्री, चकमा, दुराशा आदि ।

मानसरोवर (सात - खंड)

जेल, पत्नी से पति, शराब की दुकान, जुलूस, मैकू, समरयात्रा-, शान्ति, बैठक का दिवाला, आत्माराम, दुर्गा का मंदिर, बड़े घर की बेटी, पंचपरमेश्वर-, शंखनाद, निहाद, फातिहा, बैर का अंत, दो भाई, महातीर्थ, विस्मृति, पारब्ध, सुहाग की साडी, लोकमत का सम्मान, गाग पूजा-आदि ।

मानसरोवर (आठ - खंड)

खून सफ़ेद, गरीब की हाय, बेटी का धन, धर्मसंकट-, सेवामार्ग-, शिकारी राजकुमार, बलिदान, बोध, सच्चाई का उपहार, ज्वालामुखी, पशु से मनुष्य, मूठ, ब्रह्मा का स्वांग, विमाता, बूढी काकी, हार की जीत, दफ्तरी, विध्वंस, स्वत्वरक्षा-, पूर्वसंस्कार-, दुस्साहस, बौड़म, गुप्त धन, आदर्श विरोध, विषम समस्या, अनिष्ट शंका, सौत, सज्जनता का दण्ड, नमक का दरोगा, उपदेश, परीक्षा आदि ।

प्रेमचंद के कहानियों का विषय ग्राम्य-जीवन यथार्थ रूप में प्रस्तुत है। उनके कहानियों में मानवतावादी चिंतनधारा से ओतप्रोत हैं। प्रेमचंद के कहानियों में प्रत्येक घर में घटनेवाली घटनाओं का चित्रांकन किया है। उनकी प्रारंभिक कहानियों में जमीनदार, किसान, देहाती, व्यापारी, इंजीनियर, ठेकेदार, वकील, मौलवी, नमक के दरोगा, जमादार, अदालत के कर्मचारी ऐसे कई पात्रों का वर्णन का विषय बना है। प्रेमचंद ने घटना, कथानक, चरित्र और संवेदना को ध्यान में रखकर कहानियाँ लिखी हैं।

उपन्यास :

प्रेमचंद ने पहले उर्दू में लेखन कार्य किया बादमें हिंदी में करने लगे। उन्होंने सर्वप्रथम उर्दू में असरारे माआबिद इसका प्रकाशन साप्ताहिक आवाज-ए-खल्क में 8 अक्टूबर,1903 से 1 फरवरी,1905 तक धारावाहिक रूप में हुआ था। इसका हिंदी संस्करण 'देवस्थान रहस्य' नाम से प्रकाशित हुआ। हमखुर्मा व हमसवाब(1907) इसका हिंदी संस्करण 'प्रेमा' नाम से हुआ। 'किशना'(1907) यह उर्दू उपन्यास उपलब्ध नहीं है। इसकी समीक्षा उर्दू पत्रिका 'ज़माना' में अक्टूबर-नवंबर 1907 में छपी थी। रूठी रानी (1907) जमाना पत्रिका में प्रकाशित हुआ था।

जलवए ईसार(1912),

प्रेमचंद का पहला हिंदी उपन्यास 'सेवासदन'(1918)है। इसका उर्दू संस्करण बाजरे-हुस्न' नाम से प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास स्त्री जीवन पर आधारित हैं , देहज-प्रथा, अनमेल विवाह, वेश्यावृति, स्त्री- पराधीनता आदि समस्याओं को प्रस्तुत किया है। 'प्रेमाश्रम' (1922) यह किसान जीवन पर आधारित पहला उपन्यास है। 'रंगभूमि' (1925) इस उपन्यास में नौकरशाही और अहिंसा के साथ जनसंघर्ष का तांडव, सत्य, निष्ठा और अहिंसा के प्रति आग्रह, ग्रामीण जीवन तथा स्त्री दुर्दशा का चित्रण हैं। इसमें अंधा सूरदास मुख्य पात्र है। इसमें राष्ट्रीय परिवेश को प्रस्तुत किया। 'निर्मला' (1927) यह उपन्यास चाँद पत्रिका में धारावाहिक रूप में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में भारतीय समाज में स्त्री की कारुणिक स्थिति का मार्मिक चित्रण किया गया है। 'कायाकल्प' (1926) यह उपन्यास पूर्वलिखित उपन्यासों से अलग हैं इसमें अध्यात्मिक पृष्ठभूमि को दिखाया गया है। दांपत्य प्रेम की पवित्रता की समस्या है। 'प्रतिज्ञा' (1927) इसमें विधवा समस्याओं को प्रस्तुत किया है। 'गबन' (1928) उपन्यास के केंद्र में सरकारी दफ्तर में गबन की घटना है, जिसके सहारे मुख्य पात्र रमानाथ तथा उसकी पत्नी जालपा के दाम्पत्य जीवन को प्रस्तुत किया गया है। 'कर्मभूमि'(1932) इस उपन्यास में अछूतों की समस्या, दलितों को मंदिर प्रवेश की समस्या, किसान समस्या और स्त्री समस्या को प्रस्तुत किया है। गांधी दर्शन पर आधारित हैं। 'गोदान' (1936) किसान जीवन पर आधारित उपन्यास है। इसमें होरी और धनिया के माध्यम से किसान जीवन के संघर्ष, तेजस्विता, निरीहता, करुणा और मर्यादा की मार्मिक अभिव्यक्ति है। 'मंगलसूत्र' (अपूर्ण)- 1948 में प्रकाशित 'मंगलसूत्र' प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास है, जिसे बाद में उनके पुत्र अमृतराय ने पूरा किया।

अन्य -

मुंशी जी ने तीन नाटक भी लिखे किन्तु नाटक के क्षेत्र में प्रेमचंद को कोई खास सफलता नहीं मिली। ये नाटक वस्तुतः संवादात्मक उपन्यास ही बन गए हैं। संग्राम (1923), कर्बला (1924), प्रेम की वेदी (1933)

अनुवाद, बाल-पुस्तकें तथा हज़ारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की।

4.4 पाठ का सार

हिंदी साहित्य के कथा सम्राट प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 में बनारस के पास लमही गाँव (उत्तर प्रदेश) में हुआ। उन्होंने पहले उर्दू में लेखन किया बादमें हिंदी में। उर्दू और हिंदी में प्रेमचंद का नाम प्रख्यात है। पिता ने उनका नाम धनपत राय रखा था, लेकिन स्कूल में प्रवेश के समय चाचा ने उनका नाम नवाब राय लिखवाया। आगे चलकर जब उनके लेखन पर ब्रिटिश सरकार के अधिकारियों ने देश द्रोह के आरोप लगाए, तो उन्होंने यह नाम भी छोड़ दिया और 'प्रेमचंद' नाम अपना लिया ।

प्रेमचंद ने अपने जीवन के कई अदभूत कृतियां लिखी हैं। उन्होंने से 300 खंडों में प्रकाशित हैं। उनके हिंदी उपन्यासों में 8 के 'मानसरोवर' अधिक कहानियाँ लिखीं जो गोदान और ,कर्मभूमि ,गबन ,प्रतिज्ञा ,कायाकल्प ,निर्मला ,रंगभूमि ,प्रेमाश्रम ,सेवासदन मंगलसूत्र शामिल है।अपने जीवन के अंतिम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर उनका पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुजरा, जहां उन्होंने अनेक पत्र - पत्रिकाओं का संपादन किया। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से उनका देहावसान हुआ।

4.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

1. हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है. वे कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से किसान जीवन और मध्यवर्ग की समस्याओं का प्रामाणिक चित्रण किया है।
2. प्रेमचंद के साहित्य में सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है। राष्ट्रीय चेतना भी उनके साहित्य में प्रबल थी।
3. प्रेमचंद दलित समाज का यथार्थ चित्रण किया।
4. प्रेमचंद ने शताब्दियों से पददलित, कृषक, गरीब को नायकत्व प्रदान किया।

4.6 शब्द संपदा

1. सम्राट	-	साम्राज्य का स्वामी या मालिक, शासक, राजाधिराज
2. प्रतिभाशाली	-	जिसमें प्रभाव उत्पन्न करने की शक्ति हो, प्रभावावाला
3. यथार्थवादी	–	यथार्थवाद का अनुयायी व्यक्ति
4. पराकाष्ठा	–	चरम सीमा, अंत, चरम कोटि
5. उत्कर्ष	-	ऊपर की ओर जाने या उठने की क्रिया या भाव
6. आदर्शवादी	–	आदर्श मान-मूल्यों को मानने वाला .

4.7 परिक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1. प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालिए ।
2. प्रेमचंद का कथा साहित्य पर प्रकाश डालिए ।
3. प्रेमचंद का हिंदी साहित्य में स्थान की चर्चा कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1. प्रेमचंद का व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।
2. प्रेमचंद का कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
3. प्रेमचंद के उपन्यास पर प्रकाश डालिए ।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए।

1. प्रेमचंद का जन्म कब हुआ ?
   (अ) 1870 (ब) 1880 (क) 1890 (ड) 1885
2. निम्नलिखित प्रेमचंद का उपन्यास नहीं है ?
   (अ) मंगलसूत्र (ब) कर्मभूमि (क) रंगभूमि (ड) मैला आँचल
3. गोदान किस की रचना है?
   (अ) प्रेमचंद (ब) कबीर (क) रहीम (ड) रसखान

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. प्रेमचंद का जन्म _____ वर्ष में हुई ।
2. प्रेमचंद के कफ़न कहानी में _____का वर्णन है।
3. प्रेमचंद _____और _____-वादी है।

III. सुमेल कीजिए।

1. गोदान	(अ)	1922
2. प्रेमाश्रय	(ब)	1936
3. रंगभूमि	(क)	1918
4. सेवासदन	(ड)	1925

4.8 पठनीय पुस्तकें

1. हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी
2. प्रेमचंद : कलम का सिपाही, अमृत राय
3. प्रेमचंद : एक कृति व्यक्तित्व, जैनेंद्र कुमार
4. प्रेमचंद : घर में, शिवरानी देवी

इकाई 5 : प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य : रचनात्मक और वैचारिक विकास प्रेमचंद की उपन्यासिक कला

इकाई की रूपरेखा:

5.1 प्रस्तावना
5.2 उद्देश्य
5.3 मूल पाठ : प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य : रचनात्मक और वैचारिक विकास प्रेमचंद की उपन्यासिक कला
5.3.1 रचनात्मक और वैचारिक विकास
5.3.2 प्रेमचंद की उपन्यास कला
5.4 पाठ का सार
5.5 पाठ की उपलब्धियाँ
5.6 शब्द संपदा
5.7 परिक्षार्थ प्रश्न
5.8 पठनीय पुस्तकें

5.1: प्रस्तावना

31 जुलाई 1880 में लमही में जन्में धनपतराय श्रीवास्तव हिंदी साहित्य जगत में प्रथम 'नवाबराय' और कालांतर से 'प्रेमचंद' के नाम से मशहूर हुए। हिंदी साहित्य जगत में प्रेमचंद एक 'सशक्त हस्ताक्षर' माने जाते हैं। तत्कालीन समय के प्रचलित ढर्रे से हटकर उन्होंने साहित्य को नई दशा और दिशा देने का कार्य किया। प्रेमचंद युग में ब्रिटिश शासन की तानाशाही, स्वतंत्रता आंदोलन, समाज में फैलेअंधविश्वास,कुरीतियां, कूप्रथाएं, सामान्य जन-मानस का आर्थिक और सामाजिक स्तर,अशिक्षा जैसे अनेक प्रश्नों का चक्रव्यूह बना हुआ था।इस चक्रव्यूह से समाज को बाहर निकालना आवश्यक था। यह कोई आसान कार्य न था। उन्होंने अपने कथा साहित्य के माध्यम से इन प्रश्नों को समाज के समक्ष रखा और उपायों को भी दर्शाया है।

'साहित्य समाज का दर्पण होता है' किंतु तत्कालीन साहित्य ऐय्यारी, तिलिस्मी,जासूसी घटनाओं के साथ-साथ विलासिता और आमोद-प्रमोद का साधन बना हुआ था। ऐसे में समाज को सच का आईना बताने का कार्य प्रेमचंद ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से किया। उन्होंने सामान्य वर्ग के लोगों को, पशु- पक्षियों को, हरिजनों को, महिलाओं को अपनी कथाओं का नायक या नायिका बनाया जो साहित्य के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी कदम साबित होता है।आम जन-मानस को कथा का नायक बनाना इतना आसान नहीं था किंतु प्रेमचंद ने अपने परिवेश के पात्रों को अपने साहित्य में महत्व दिया। प्रेमचंद ने अपने जीवन काल में लगभग 300 से अधिक कहानियां लिखी है।कूल15 उपन्यास, तीन नाटक, अनुवाद, अनेक लेख, पत्र आदि लिखे हैं। प्रेमचंद का समूचा साहित्य सुधारवादी रहा है। प्रेमचंद ने समाज की नब्ज को पहचाना

था।समाज में प्रचलित समस्याओं को निशाना बनाकर उन्होंने समस्या मूलक उपन्यास लिखे। तत्कालीन भारतीय समाज की निर्मम चीर-फाड़ कर के प्रेमचंद ने अपनी सारी शक्ति उन अंधविश्वासों और कुरीतियों के उन्मूलन में लगा दी जो जीवन के स्वस्थ विकास में बाधक बनी हुई थी।

एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य से पशु से भी बदत्तर व्यवहार था। क्या यह हमारी सभ्यता का गौरव है? अपने स्वार्थ के लिए समाज के एक हिस्से को अछूत करार देकर उसके साथ मानवीय व्यवहार करना यह कौन सी नीति है? ऐसे कई प्रश्नों को उन्होंने अपनी कहानी और उपन्यासों के माध्यम से समाज के समक्ष रख प्रश्न उपस्थित किए हैं। प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक प्रतिबद्धता का पालन करता है। उन्होंने समाज की हर कुरीति पर अपने साहित्य के माध्यम से प्रहार किया है। प्रेमचंद सामाजिक सरोकार के रचनाकार है। उनकी रचनाएं सामंती मूल्यों को जबर्दस्त चुनौती देती है।धर्म और सामाजिक व्यवस्था पर प्रश्न उपस्थित करती है। प्रेमचंद का रचना-संसार यथार्थ की धरतीपर खड़ा है। उनके पूर्ववर्ती और समसामयिक भी जिस यथार्थ से मुंह चुरा कर कल्पना की रंगीनियों में खो जाते थे ऐसे में प्रेमचंद दृढ़ता पूर्वक उसका सामना करते हैं। और एक हद तक समाधान का भी संकेत करते हैं। जिसे लेकर उन पर आदर्शवाद का आरोप लगता है।

5.2 : उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद -

1) प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य से परिचित कराना।
2) तत्कालीन सामाजिक स्थितियों पर प्रकाश डालना।
3) 'साहित्य समाज का दर्पण है' इस उक्ति का यथार्थ दिखलाना।
4) प्रेमचंद के उपन्यास तत्कालीन समस्याओं को दर्शाते हैं यह बतलाना।
5) सामाजिक जीवन के विकास में बाधक प्रश्नों से रू-ब-रू करना।
6) लेखकिय प्रतिबद्धता से परिचित कराना।

5.3 : मूल पाठ : प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य : रचनात्मक और वैचारिक विकास प्रेमचंद की उपन्यासिक कला

'कथा सम्राट' की उपाधि से सम्मानित 'प्रेमचंद' हिंदी साहित्य में अन्यय साधारण महत्व रखते हैं। प्रेमचंद ने शुरुआती दौर में उर्दू में साहित्य लेखन प्रारंभ किया। उर्दू में लिखे उपन्यास और कहानियों को उन्होंने ही हिंदी में रूपांतरित किया है।सर्वानुमते प्रथम प्रकाशित कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' कही जाती है। यह कहानी कानपुर से प्रकाशित होने वाली उर्दू पत्रिका 'जमाना' में सन1907 में प्रकाशित हुई थी। यह प्रेमचंद के कहानी संग्रह 'सोजे वतन' में संकलित है।सन1906 से लेकर 1936 के बीच लिखा गया प्रेमचंद का साहित्य इन 30 वर्षों का सामाजिक, सांस्कृतिक, दस्तावेज है।

प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य सोद्देश्यपूर्ण लिखा गया है। प्रेमचंद लेखन पर तत्कालीन समाज सुधार आंदोलन, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आंदोलनो के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण दिखाई देता है। इनमें दहेज प्रथा,अनमेल विवाह, स्त्रियों की पराधीनता,लगान, सामंती व्यवस्था, छुआछूत की समस्या, जाति-भेद, विधवा-विवाह, वेश्यावृत्ति और अशिक्षा, आधुनिकता,स्त्री-पुरुष समानता, धर्मांनता, आर्थिक शोषण आदि उस दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है।आदर्शोन्मुखी यथार्थ्रवाद उनके साहित्य की मुख्य विशेषता है।

5.3.1 रचनात्मक और वैचारिक विकास :

सन 1918 में उनका पहला हिंदी उपन्यास 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। इसकी अत्यधिक लोकप्रियता ने प्रेमचंद को उर्दू से हिंदी का कथाकार बना दिया। प्रसिद्ध आलोचक रामविलास शर्मा के अनुसार, "सेवासदन' की मुख्य समस्या भारतीय नारी की पराधीनता है। नारी समाज का सबसे दलित अंग राष्ट्रीय पराधीनता और घरेलू दासता, दोनों से पिसती हुई नारी, स्वाधीनता के लिए हाथ फैलाने लगी थी। प्रेमचंद ने सबसे पहले इस परिवर्तन को देखा था, उसका स्वागत किया और उसे बढ़ावा दिया।" सेवासदन के माध्यम से प्रेमचंद ने केवल सामाजिक कुरीतियों और आडंबरों से ही रू-ब-रू नहीं करते, बल्कि यथायोग्य तात्कालिक समाधान भी प्रस्तुत करते हैं।

'सेवासदन' में प्रमुख रूप से दहेज की समस्या, रिश्वतखोरी की समस्या, धार्मिक ठगी की समस्या, सांप्रदायिक द्वेष की समस्या, वेश्यावृत्ति की समस्या, मध्य वर्ग की आर्थिक सामाजिक समस्या को भी प्रमुखता दी गई है।

'प्रेमा' या 'दो सखियों का विवाह' यह उपन्यास उर्दू में 'हमखुर्मा व हमसवाब' के नाम से सन 1906 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास विधवा विवाह पर केंद्रित है। इसमें आर्थिक आडंबरों और मंदिरों में व्याप्त पाखंडों को उजागर किया गया है। प्रेमा और अमृतराय के कथानक के माध्यम से सामाजिक सुधार,उनका विरोध, स्त्रियों की दशा और पंडितों के बाह्याडम्बर और बाबाओं के नैतिक पतन एवं स्वार्थताको जीवंत रूप में चित्रित किया है।

प्रेमा उपन्यास में प्रेमचंद ने बाल-विधवा की समस्या को बढ़े ही सटीक ढंग से बयान किया है। बाल-विवाह हो जाने पर स्त्रियों की मानसिक दशा का विकास ही कितना हुआ रहता है पर उन्हें इस अपरिपक्वता के बावजूद घर-समाज के नियमों को मानना पड़ता है और वह अपने दायित्व को निभाते-निभाते कब बूढी हो जाती है,उन्हें स्वयं उसका आभास नहीं हो पाता। पर, दुर्भाग्यवश तत्कालीन समय में जो स्त्री विधवा हो जाती थी, उसका जीवन नर्क कहे जाने वाले स्थान से अलग नहीं होता होगा। जिसे प्रेमचंद 'प्रेमा' में रामकली नामक पत्र से कहलवाते हैं- "विधवा क्या हो गयी घर भर की लौंडी बना दी गयी। जो काम कोई ना करें वह मैं करूं,उस पर भी रोज उठते जूते और बैठतेलात। काजल मत लगाओ, बाल मत सवारों...पान मत खाओ। एक दिन गुलाबी साड़ी पहन ली तो चुड़ैल मारने लगी, जी में तो आया सर के बाल नोच लूँ!" इस तरह से विधवाओं को रोज नरक की आग में जलना पड़ता। इन सारी समस्याओं पर खुलकर उपन्यास में लिखा गया है।

सन 1921 में प्रकाशित उपन्यास 'वरदान' जो उर्दू में लिखित 'जलवा-ईसार' का हिंदी रूपांतरण है। यह उपन्यास भी प्रेमचंद का सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र 'प्रताप' है। प्रताप की माता 'सुवामा' ने देवी से वरदान मांगा था कि उसे एक ऐसा पुत्र चाहिए जो अपने देश का उपकार करें, दीन- दु:खियों की सेवा करें। और देवी के वरदान के अनुसार सुवामा के घर बेटे ने जन्म लिया। मुख्य रूप से यह दो प्रेमियों की दुखांत कथा लगती है। प्रताप और विरजन जो बचपन से ही साथ-साथ खेले-कूदें। जिन्होंने यौवन में भावी जीवन की सरल और कोमल कल्पनाएं संझोई थी किंतु प्रताप का मन हमेशा वैराग्य की ओर झुका रहा। इस उपन्यास में विरजन और प्रताप की प्रेमकथा भी है, विरजन तथा कमलाचरण के अनमेल विवाह का मार्मिक प्रसंग भी है। इसी तरह एक पात्र और है 'माधवी'। जो प्रताप के प्रति अनुराग रहती है। अंत में वह संन्यासी को मोहपाश में बांधने की जगह स्वयं योगिनी बनना पसंद करती हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचंद ने सामाजिक सुधार जैसे विषय को प्रमुखता दी है। महात्मा गांधी के विचारों का स्पष्ट रूप से प्रभाव इस उपन्यास पर दिखाई देता है।

सन 1922 में 'प्रेमाश्रम' उपन्यास प्रकाशित हुआ।जो 'गोशाए आफिमत' नाम से उर्दू में प्रकाशित हुआ। यह प्रेमचंद का प्रथम ग्रामीण उपन्यास है। राष्ट्रीय संघर्ष की पृष्ठभूमि पर लिखा गया है। महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन की विशिष्ट छाप इस उपन्यास पर दिखाई देती है। इस उपन्यास का नायक हर वह व्यक्ति है जो हल जोतता है, बेगार करता है,प्लेग और सरकार से मुकाबला करने वाला किसान ही इसका नायक है। रोलेट एक्ट, पंजाब में सैनिक शासन और जलियांवाला बाग का दिन इस उपन्यास के कथानक है। 'किसान समस्या' इस उपन्यास की प्रमुख समस्या रही है।प्रेमाश्रम जमींदारी शोषण को दर्शाने वाला उपन्यास है। प्रेमचंद केआदर्शोन्मुखी यथार्थवाद के दर्शन काफी मुखर रूप से हुए हैं। इस संबंध में चीनी विद्वान नेअपने लेख 'प्रेमाश्रम और प्रेमचंद का यथार्थवाद' में लिखा है,'धरती की ओर झांकता दर्पण, भारतीय जमीन में जमी जड़ों वाली जनोद्धार की भावना और प्रतिमा, सृजन की चिरफाड की तकनीक, यह तीनों प्रेमचंद के यथार्थवाद की मुख्य विशेषताएं हैं। यह तीन विलक्षणताएं उनकी सुप्रसिद्ध आरंभकालीन उपन्यास 'प्रेमाश्रम' में बहुत स्पष्ट रूप से व्यक्त हुई है। अतः 'प्रेमाश्रम' में प्रेमचंद ने उसे यथार्थवाद को रेखांकित किया है। जिसका संबंध जन-सामान्य के शोषण एवं उत्पीड़न से है।

प्रेमाश्रम का आधार है- किसान और जमींदार का संबंध। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में बहुत ही बारीकी से किसानों पर होने वाले अत्याचारों को रेखांकित किया है। जमींदार किसानों को कभी भी इंसान समझते ही नहीं थे। वह तो उन्हें गुलामों से भी बदतर जीवन जीने पर मजबूर करते थे। इस उपन्यास में एक और ज्ञानशंकर, प्रेमशंकर, गायत्री, कमलानंद आदि जमींदार वर्ग के पात्र है उनकी समस्याएँहै, उनकी कथा है, इसमें गांव का कृषक समाज उसकी समस्याएं, शोषण- तंत्र की विविध गतिविधि आदि को प्रेमचंद ने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है।

अतः 'प्रेमाश्रम' लिखने के पीछे प्रेमचंद का एकमात्र उद्देश्य था तत्कालीन समाज के दबे-कुचले-मजदूर-किसानों की समस्याओं को उद्घाटित करके उनका समाधान तलाशना। उपन्यास

में जमींदार,हाकिम,कारिंदा,चपरासी, पुलिस, वकील एवं डॉक्टर आदि सभी ने किसान का खुलकर शोषण किया है।

'रंगभूमि' उपन्यास की रचना सन 1925 में हुई। उर्दू में इस उपन्यास को 'चौगाने हस्ती' इस नाम से प्रकाशित किया गया है। प्रेमचंद ने उपन्यास लेखन के समय बहुत ही बारीकी से उपन्यास के विषय और पात्रों का चयन किया है।समाज में अनेक समस्याएं मुंह निकाले खड़ी थी। ब्रिटिश शासन था, स्वतंत्रता आंदोलन जोरों पर था। क्रांतिकारी पूरी तरह से जोश में थे। ऐसे में समाज कई प्रश्नों का सामना कर रहा था। इन्हीं प्रश्नों के समाधान के लिए प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समस्याओं का आईना समाज को दिखाया है।असहयोग आंदोलन की समाप्ति के बाद प्रेमचंद ने यह उपन्यास लिखा। इस उपन्यास का नायक अंधा भिखारी 'सूरदास' है।"वाराणसी में इस समय एक और विवाद भी चल रहा था। इसकी पृष्ठभूमि थी सरकार द्वारा शिवपुरी के पास खेती की जमीन को टकों के दाम लेकर उद्योगपतियों को देना। जिन लोगों की जमीन हथियाई गई थी उन्हें बड़ा क्रोध आया था। इसका प्रभाव जनता पर भी पड़ा। कुछ समलोचकोंका का विचार है कि इस वाद-विवाद को लेकर ही प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' लिखा।" निश्चय ही असहयोग आंदोलन का जबरदस्त प्रभाव इस उपन्यास की रचना पर पड़ा है। औद्योगीकरण जैसे आर्थिक प्रश्न के बावजूद यह एक राजनीतिक उपन्यास है। आकार की दृष्टि से इसे देखा जाए तो यह प्रेमचंद का सबसे बड़ा उपन्यास है।

रंगभूमि उपन्यास के सूरदास के आदर्शों को देख उस पर स्पष्ट रूप से गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है। प्रेमचंद जी ने ग्रामीण जीवन और पुराने मूल्यों में विघटन तथा पूंजीवाद के बढ़ते हुए प्रभाव का चित्रण किया है। पूंजीवाद के साथ जनसंघर्षऔर बदलाव की महान गाथा यह उपन्यास है।'रंगभूमि' की कथा भूमि 'पांडेपुर' ऐसी एक बस्ती है जहां सूरदास की पुश्तैनी जमीन के टुकड़े पर जॉन सेवक एक सिगरेट की फैक्ट्री लगवाना चाहता है। जिसे अंधे सूरदास का विरोध है। यह उपन्यास का मुख्य संघर्ष है। संपूर्ण उपन्यास को नियंत्रित करने का काम पांडेपुर की यह जमीन करती है। इसी जमीन को हासिल करने में सारे पात्रों का जीवन निकल जाता है। बड़ा भारी राजनीतिक संघर्ष होता है। अनेक व्यक्ति मारे जाते हैं। स्वयं सूरदास मर जाता है। विनय अपने आप को गोली मार देता है। प्रभु सेवक अमेरिका चला जाता है। सोफिया आत्महत्या कर लेती है। राजा महेंद्र प्रताप सूरदास की मूर्ति के नीचे दबकर मर जाता है।मिसेज सेवक अर्ध विक्षिप्तहो जाती है। जॉन सेवक अकेले रह जाते हैं। पांडेपुर की सारी बस्ती उजड़ जाती है।

प्रेमचंद अंग्रेजों की औद्योगीकरण की नीति को भली-भांति जानते थे। वह भारतीयों के विकास के लिए औद्योगीकरण को बढ़ावा नहीं दे रहे थे बल्कि अपने मतलब के लिए कुछ उद्योगों को शुरू कर रहे थे।उन्होंने दोनों और तैयार माल पहुंचाने के लिए रेल मार्ग को विकसित किया। भारतीय परंपरागत हस्त उद्योगों को नष्ट कर सामान्य जनता को गुलाम बनाया। इस प्रक्रिया में समाज में होने वाले परिवर्तनों की ओर बुद्धिजीवियों का ध्यान जाना स्वाभाविक था। प्रेमचंद ने इसी परिप्रेक्ष में उद्योगों की समस्याओं पर विस्तार से लिखा।

प्रेमचंद ने इस उपन्यास में नौकरशाही तथा पूंजीवाद के साथ जनसंघर्ष का तांडव, सत्य, निष्ठा और अहिंसा के प्रति आग्रह, ग्रामीण जीवन तथा स्त्री दुर्दशा का भयावह चित्र यहां अंकित किया है।

'कायाकल्प' सन 1926 में प्रकाशित प्रेमचंद का उपन्यास मूलत: सांप्रदायिक समस्या पर लिखा गया है। कायाकल्प में प्रेमचंद ने पूर्व जन्म की कथावस्तु को लेकर लिखा है। इस उपन्यास की पृष्ठभूमि आध्यात्मिक है। वासना और प्रेम का संघर्ष आध्यात्मिक फलक पर चित्रित किया गया है और अंत में प्रेम द्वारा ही मानसिक शांति का लोक प्रचलित आदर्शमार्ग बताया गया है। प्रेमचंद ने उपन्यास में राजकुमार और रानी देवप्रिया का 'कायाकल्प' प्रस्तुत किया गया है। राजकुमार पर्वतों में रहते हैं, योगाभ्यास करते हैं और ऐसे वायुयानों का आविष्कार करते हैं जो इच्छा अनुसार उड़ते हैं और भूमि पर उतरते हैं। ऐसे काल्पनिक कथानक को पूर्व जन्म के द्वारा प्रेमचंद ने इस तरह मोडा है कि सामाजिक और मानवीय तत्वों को गंभीर अभ्यास के लिए यह कृति प्रचुर सामग्री प्रस्तुत करती है।

आध्यात्मिकता के वातावरण से अलग होकर प्रेमचंद ने इस उपन्यास में सांप्रदायिकता के निर्मूलन का भी उद्देश्य रखा है। इस विषय पर गोपाल राय लिखते हैं कि,"प्रेमचंद के समय का एक ज्वलंत यथार्थ सांप्रदायिक तनाव से जुड़ा हुआ था। अंग्रेज शासक स्वाधीनता आंदोलन को कमजोर करने के लिए हिंदुओं, मुसलमानों की सांप्रदायिक भावनाओं को उभारने की और उन्हें एक दूसरे का विरोधी बनाए रखने की किसी भी प्रकार की कोशिश से बाज नहीं आते थे। कट्टरपंथी धार्मिक नेताओं और अपने स्वार्थ साधने वाले बुजुर्वा वर्ग का हित भी इसी बात में था कि नासमझ हिंदू और मुसलमान सांप्रदायिक झगड़े में उलझ कर अपनी वास्तविक समस्याओं को भूल रहे थे। इस मिली भगत के फल स्वरुप 1925 के बाद भारत के विभिन्न भागों में अनेक सांप्रदायिक दंगे हुए थे। जिनमें हत्या, आगजनी, बलात्कार आदि अमानवीय घटनाएं घटी। प्रेमचंद ने समकालीन जीवन की इस सच्चाई का चित्रण अपने उपन्यासों में विशेष रूप से 'कायाकल्प' में किया।"इस उपन्यास में सांप्रदायिकता की समस्या मूल है जिसका संबंध हिंदू-मुसलमान की वैमनस्य भावना है। इस विषय में प्रेमचंद का दृष्टिकोण हमेशा सुधारवादी रहा है। सांप्रदायिकता की इस समस्या को प्रेमचंद ने इस उपन्यास में राजनीतिक प्रश्न के रूप में उठाया है। जैसे आगरा में एक गाय की कुर्बानी हिंदू-मुसलमान के मध्य सांप्रदायिक व वैमनस्य का रूप ग्रहण कर लेती है। अन्य उपन्यासों के भांति उन्होंने इस उपन्यास में भी देशी रियासतों के संरक्षण में रहने वाली जनता की दुर्दशा तथा उस पर होने वाले अनेकों अत्याचार का चित्रण अंकित किया है।

उपन्यास में सांप्रदायिक दंगों को विश्लेषित करने वाले एक सटीक उदाहरण को हम देख सकते हैं,"आगरा की हिंदुओं और मुसलमान में आए दिन जूतियां चलती रहती थी। जरा-जरा सी बात पर दोनों दलों के सिरफिरे जमा हो जाते थे और दो-चार के अंग-भंग हो जाते। कहीं बनिए ने दांडी मार दी और मुसलमान ने उसकी दुकान पर धावा बोल दिया। कहीं किसी जुलाहेंने किसी हिंदू का घड़ा छू लिया और मोहल्ले में फौजदारी हो गयी। एकमोहल्ले में मोहन ने रहीम

का कनकौआ लूट लिया और इसी बात पर मोहल्ले भर के हिंदुओं के घर लूट गये; दूसरे मोहल्ले में दो कुत्तों की लड़ाई पर सैकड़ो आदमी घायल हुए क्योंकि एक सोहन का कुत्ता था दूसरा सईद का।" इस से साफ नजर आता है कि किस तरह हिंदू-मुस्लिम के मध्य नफरत तथा सांप्रदायिकता की भावना किस प्रकार जन्म लेती है। प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने यह बताने का प्रयास किया है। "ठाकुरद्वारे में ईश्वर कीर्तन की जगह नबियों की निंदा होती थी, मस्जिदों में नमाज की जगह देवताओं की दुर्गति।" इस तरह सामाजिक और राजनीतिक वातावरण तत्कालीन समय में बना रहा।

इस उपन्यास की केंद्रीय समस्या पृथ्वी पर न्याय की खोज है। उपन्यास में यत्र-तत्र ऐसे विचार सहज प्राप्त है... ईश्वर ने ऐसी सृष्टि की रचना ही क्योंकि, जहा इतना स्वार्थ,द्वेष, अन्याय है? क्या ऐसी पृथ्वी नहीं बन सकती थी जहां सभी मनुष्य, सभी जातियां प्रेम और आनंद के साथ संसार में रहती? वह कौन-सा इंसाफ है कि कोई तो दुनिया में मजे उड़ाए, और कोई धक्के खाए?

सन 1927 में प्रेमचंद का यथार्थवादी उपन्यास 'निर्मला' प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास में 'अनमेल विवाह' और 'दहेज' की समस्या को प्रमुख रूप से उजागर किया गया। महिलाओं की पत्रिका 'चांद' में नवंबर 1925 से दिसंबर 1926 तक यह किस्तों में प्रकाशित हुआ। नारी जीवन की समस्याओं पर केंद्रित यह उपन्यास है। महिला केंद्रित उपन्यासों में प्रेमचंद के निर्मला उपन्यास का विशेष स्थान है। प्रेमचंद की वैचारिकता यह रही कि जब भी हम समाज सुधार की बात करते हैं तो उसका केंद्र 'घर' है और केंद्र बिंदु 'स्त्री' है। स्त्रियों की स्थितियों में सुधार होना आवश्यक है। तभी समाज सुधार होगा। इस उपन्यास की कथा का केंद्र मुख्य पात्र 'निर्मला' नाम की 15 वर्षीय सुंदर और सुशील लड़की है। उसका विवाह बड़े ही धूमधाम से होने वाला होता है किंतु पिता की असमय हत्या के कारण संबंधी पर्याप्त दहेज न मिलने के कारण संबंध तोड़ देते हैं। निर्मला की मां पंडित मोटेराम से कहती है,"संतान किसको प्यारी नहीं होती? कौन उसे सुखी नहीं देखना चाहता? पर जब अपना काबू भी हो। आप भगवान का नाम लेकर वकील साहब को टीका कर आइए। उम्र कुछ ज्यादा है, लेकिन मरना जीना विधि के हाथ है। पैंतीस साल का आदमी बुड्ढा नहीं कहलाता। अगर लड़की के भाग्य में सुख भोगना बंदा है, तो जहां जाएंगी सुखी रहेगी, दु:ख भोगना है, तो जहां जाएंगी दु:ख ही झेलेंगी।" निर्मला की मां परिस्थितियों से विवश होकर निर्मला का विवाह एक अधेड़ उम्र के आदमी से कर देती है जो उसके पिता की उम्र का होता है। उस आदमी के पूर्व पत्नी से तीन बेटे हैं। बड़ा बेटा लगभग निर्मला की ही उम्र का है। दहेज की भीषण समस्या से हमारा समाज जूझ रहा है। अनगिनत लड़कियां इस दहेज की अग्नि की चपेट में आ रही है। उनका भविष्य दहेज के कारण स्वाह: हो रहा है।

दहेज न जुटा पानेके कारण लडकियाँ एक नई समस्या की शिकार हो रही है और वह है 'अनममेल विवाह' की समस्या। निर्मला उपन्यास में 'निर्मला' भी इसी समस्या से ग्रस्त है। विवाह पूर्ण मेल से किया जाए तभी दाम्पत्य संबंध मधुर रहता है। अपितु अनवमेल विवाह पति-पत्नी में अलगाव, शंका एवं संकोच को उत्पन्न कर दांपत्य संबंध की मधुरता को समाप्त कर

निरसता को जन्म देता है। जिससे धीरे-धीरे वह संबंध दोनों के जीवन की त्रासदी बन,उनके जीवन को समाप्त कर देता है। उसके पिता की उम्र के आदमी से वह कैसे प्रेम कर सकती है। ऐसी स्थिति में निर्मला का पति से कटे-कटे रहना या पति के रूप में तोताराम को स्वीकार न करना अनुचित नहीं बल्कि स्वाभाविक है। निर्मल बच्चों में अपना मन लगाने की कोशिश करती है। बड़े बेटे मंसाराम से घुल मिलने के कारण तोताराम उसके चरित्र पर शंका लेते हैं। हम उम्र होने के कारण दोनों में सहजता होना स्वाभाविक था। तोताराम उसे हॉस्टल भेज देते हैं। मंसाराम को मां पर लगे आरोप खाए जाते हैं। मृत्यु से पूर्व मंसाराम द्वारा निर्मला के पैरों पर गिर कर रोते हुए बोले गए शब्द–"अम्माजी इस अभागे के लिए आपको व्यर्थ इतना कष्ट हुआ। मैं आपका स्नेह कभी न भूलूंगा। ईश्वर से मेरी यही प्रार्थना है कि मेरा पुनर्जन्म आपके गर्भ से हो जिससे मैं आपके ऋण से उऋण हो सकूं। ईश्वर जानता है मैंने आपको विमाता नहीं समझा। मैं आपको अपनी माता समझता रहा। आपकी उम्र मुझसे ज्यादा ना हो लेकिन आप मेरी माता के स्थान पर थी और मैंने आपको सदैव इसी दृष्टि से देखा।" मंसाराम के पश्चात जियाराम की मृत्यु और सियाराम का घर छोड़कर भाग जाना इस कारण तोताराम का संपूर्ण परिवार बिखर जाता है।

इस अनमेल विवाह के कारण तोताराम के परिवार की समाप्ति को दिखाकर प्रेमचंद समाज को सचेत करते हैं कि दहेज की कमी के कारण नारी का जीवन नष्ट हो रहा है, सभी बेटियों वाले हैं इसलिए सबको उनके भविष्य के बारे में सोचना चाहिए। अन्यथा निर्मला के समान ही उनका जीवन नष्ट हो जाएगा। और पुरुष तोताराम की भांति बुढ़ापे में विवाह करके पछताते रहेंगे। अपनी बेटी को ननद रुकमणी के गोद में देते हुए निर्मला के मुख से जो अंतिम शब्द निकले हैं वह भी अनमोल विवाह के विरोध में ही कह गए हैं– "मैं तो इसके लिए अपने जीवन में कुछ ना कर सकी केवल जन्म देने भर की अपराधीनी हूं। चाहे क्वारी रखिएगा, चाहे जहर देकर मार डालिएगा पर बेमेल के गले न मढीएगा, इतनी ही आपसे मेरी विनती है।" अर्थात प्रेमचंद निर्मला के माध्यम से बताना चाहते हैं की बेटी को मार डालना अनमोल विवाह से कहीं उत्तम है।

प्रेमचंद ने निर्मला उपन्यास के माध्यम से समाज की कुप्रथाओं को मुखर रूप से समाज की सामने रखा है। असंख्य लड़कियां दहेज के कारण या अनमेल विवाह के कारण परिवारों में घुटती रहती है या फिर दम तोड़ देती है। प्रेमचंद ने समाज के नवयुवकों को यह संदेश दिया कि वह आगे आकर इस दहेज की को प्रथा का विरोध करें जिससे अनमेल विवाह पर रोक लगेगी। निर्मला की जैसी दुर्दशा किसी भी लकड़ी की ना हो यही संदेश हो अपने उपन्यास के माध्यम से देना चाहते थे।

सन 1931 में प्रकाशित 'गबन' उपन्यास यह यथार्थवादी उपन्यास की श्रेणी में आता है। यह एक सामाजिक समस्या को उजागर करने वाला उपन्यास है। इस उपन्यास की नायिका 'जालपा' को आभूषण प्रेम उसकी बाल्यावस्था से ही संबंध रखता है। क्योंकि वह ऐसे ही वातावरण में पली जहां गहने ही स्त्रियों के सर्वस्व है। उसके पिता उसे खेलने के लिए खिलौना न लाकर गहने ही लातें थे। बचपन में जब जालपा अपनी मां का चंद्रहार देखीती है तब अपने लिए भी बनवाने का आग्रह करती है। उस वक्त उसकी मां उसे,'तेरे लिए चंद्रहार तेरे ससुराल से

आएगा' कहकर संतोष दिलाती है। बचपन में ही मिले इस संस्कार के कारण ही जालपा ससुराल वालों से या अपने पति से गहनों की सदैव अपेक्षा करती रहती है। म्युनिसिपल ऑफिस में लगी मामूली सी नौकरी में अपने पति की आमदनी क्या होगी यह सोचना वह जरूरी नहीं समझती। रमानाथ भी अपनी सुंदर नवविवाहिता को प्रसन्न रखने के लिए ऊपरी आमदनी उस पर लुटाता रहता है। तथा अपनी सही स्थिति का ज्ञान जालपा को कभी नहीं होने देता। गबन उपन्यास का हर स्त्री पात्र गहनों की लालसा का शिकार है। जालपा बचपन से ही गहनों के साथ खेलती पली-बड़ी हुई है। खटीक देवीदिन की पत्नी 'जग्गो' का आभूषण प्रेम देवीदिन को मनी आर्डर का पैसा 'गबन' करने के लिए मजबूर बनाता है। पंडित नंददुलारे वाजपेई के अनुसार,"इसमें प्रेमचंद जी ने सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को साथ-साथ प्रदर्शित किया मध्यम वर्गीय परिवारों में जो दिखावा अथवा ढकोसला पाया जाता है वह 'गबन' के बड़े सुंदर ढंग से चित्रित किया गया है।

गृहस्थी में अपनी सीमित आय में अपने खर्चों को भी सीमित रखना अनिवार्य होता है। परंतु युवा वर्ग में मनोरंजन, फैशन तथा विलासी रहन-सहन पर अपनी हैसियत से अधिक खर्च करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। गबन में प्रेमचंद जी ने जालपा और रमानाथ के द्वारा इसी विवेकहीन प्रकृति पर प्रकाश डाला है। आमदनी अठन्नी और खर्चा रुपय्या अर्थात आए से अधिक व्यय करेंगे तो यह फर्क पूरा करने के लिए गबन का सहारा लेना पड़ेगा। रमानाथ कोई पेशेवर मुजरिम नहीं था। इसलिए पहली बार गबन करते हुए भी वह गांव छोड़कर भाग जाता है।

रमाकांत का पुलिस के चंगुल में फंसना, झूठी गवाही देना, जालपा का कोलकाता आना, रमाकांत की विवेक बुद्धि जागृत कर उसे झूठी गवाही न देकर सच्ची गवाही देने के लिए बाध्य करना, पुलिस के चंगुल से छुड़ाने की कोशिश करना आदि महाभारत 'गबन' के उत्तरार्ध में है। यह पढ़ते वक्त पाठक के मन में बार-बार यह बात आती है-काश! अगर रमानाथ ने अपनी पत्नी के सामने पहले अपनी स्थिति का सही बयान किया होता और अपनी आय देखकर ही खर्च किए होते तो इतनी सारी परेशानी उठाने की नौबत ही ना आती। उपन्यास पढ़ते हुए ऐसे विचार मन में आना, यही इस उपन्यास की सफलता है। मध्यम वर्ग की अपनी झूठी शान दिखाने का दंभ, उसका खोखलापन यही दर्शाना प्रेमचंद जी चाहते थे।

गबन में इस प्रकार के खोकले दंभ का शिकार केवल रमानाथ ही नहीं है उसके माता-पिता भी इसी व्यवस्था के शिकार है। रमानाथ की शादी के समय उधार ले हुए गहने चढ़ावे में देना तथा उधारी चुकाने का कोई मार्ग नहीं है। यह देखकर अपनी ही बहू के गहने चोरी होने का स्वांग रचा कर गहने लौटा देना। उनके यह कारनामे भी कुछ कम नहीं है। उनके चरित्र से भी प्रेमचंद जी अपनी दाम्भिक परंपराओं तथा कुरीतियों पर व्यंग्य करते हैं। देवीदिन जैसे समझदार वृद्धके मुंह से इन गहनों की लालच पर मार्मिक वक्तव्य रचते हैं। -"जहां देखो-हाय गहने, हाय गहने, गहने के पीछे जान दे दे, घर के आदमियों को भूखे मारे, घर की चीजें और कहां तक कहूँ अपनी आबरू तक बेंच दे। छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सबको यही रोना लगा हुआ है।"

प्रेमचंद ने लगभग नब्बेसाल पहले लिखा यह उपन्यास जिस समस्या का उद्घाटन करता है, उसे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रखकर देखे तो यही समस्या आज भी उसी प्रकार चुभती नजर

आती है। आजकल घर, मोटर तथा घर की आरामदायी वस्तुओं के लिए बड़ी सहजता से कर्ज मिलता है। लेकिन कर्ज की किश्तें और ब्याज चुकाते वक्त आदमी बेहाल हो जाता है। आराम की चीजों के लिए सुख-चैन हराम हो जाता है। स्थल-काल की सीमा से परे होकर भी अपना प्रभाव कायम रखें तो वह कलाकृति महान कहलाती है। इसलिए गबन जैसा उपन्यास पाठक को आज भी प्रभावित करता है।

'कर्मभूमि' में अछूतों और किसानों की समस्या को मुख्य रूप से उठाया गया है। समाज और धर्म के ठेकेदार पुजारी और पंडित किस तरह धर्म की आड़ में अधर्म कर रहे हैं, इसका यथार्थ चित्रण किया गया है। प्रेमचंद का उपन्यास 'कर्मभूमि' उस समय प्रकाशित हुआ जब स्वतंत्रता आंदोलन पूरे जोर पर था। गांधी जी के नेतृत्व में आजादी के लिए देश प्रयासरत था। प्रेमचंद भी गांधी जी से प्रेरित थे। मैनेजर पांडे ने लिखा है,"प्रेमचंद सांप्रदायिक सद्भाव के बारे में गांधीजी के दृष्टिकोण के ही समर्थक नहीं, उसके प्रतिक और प्रभाव थे। उन्होंने 'हंस' और 'जागरण' में सांप्रदायिक एकता के लिए टिप्पणियां और लेख ही नहीं 'कर्बला' जैसा नाटक भी लिखा था। उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में हिंदू और मुस्लिम समाज के जीवन का यथार्थ चित्रण करते हुए दोनों को एक दूसरे की जिंदगी को जानने और दोनों के बीच बढ़ते हुए अजनबी पन को मिटाने का प्रयत्न किया साथही उन्होंने कर्मभूमि के माध्यम से भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में मुसलमान की महत्वपूर्ण भूमिका का प्रभावशाली चित्रीकरण भी किया है।" प्रेमचंद देश की अखंडता एकता में धार्मिक सद्भाव को आवश्यक मानते थे। इसीलिए उन्होंने कर्मभूमि में अपने पात्रों अमरकांत, सलीम, सकीना, समरकांत एवं हाफिज के मैत्रीपूर्ण संबंध और आवश्यकताओं को चित्रित किया है। इसी के साथ प्रेमचंद ने रंगभूमि और कर्मभूमि दोनों ही उपन्यासों में अंतरजातीय प्रेम को उभारते हैं और विवाह में परिणत करना चाहते हैं। परंतु तदयुगीन समाज में ऐसा संभव नहीं था। फिर भी प्रेमचंद प्रयत्न करते दिखाई देते हैं जिसके मूल में उनकी एकता की भावना व्याप्त थी।

यह उपन्यास राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों से प्रभावित है। प्रेमचंद का मानना था कि राजनीतिक आंदोलन की सफलता के लिए सामाजिक सुधार अपेक्षित है और स्वराज प्राप्ति के लिए जनता का शक्ति संपन्न होना आवश्यक है। सामाजिक जागृति के लिए उन्होंने सभी कुरीतियों के अंत पर जोर दिया। इसके लिए वह सुधारवादी तरीकों को अधिक उपयुक्त मानते थे। कर्मभूमि के कथानक निर्माण में प्रेमचंद को पर्याप्त सफलता मिली है। लेखक ने बड़ी कुशलता से कथानक की दो विभिन्न धाराओं को मिला दिया। देश सेवा के विशाल रंगमंच पर सभी पात्रों का सुखद मिलन होता है। प्रेमचंद के विचारों का प्रत्यक्ष प्रतिपादन कर्मभूमि में हुआ है। यहां यह उल्लेख करना अप्रासंगिक नहीं होगा कि विशंभरनाथ उपाध्याय का निम्नलिखित कथन 'कर्मभूमि' के संदर्भ में भी अक्षरशः सत्य प्रतीत होता है– "सामाजिक सच्चाइयों का जो विवरण और चित्रण प्रेमचंद के उपन्यासों में मिलता है, उनकी विशेषताएं यह है कि वह हमारे राष्ट्रीय आंदोलन का कलात्मक प्रतिबिंब है और इसलिए इसका स्थाई महत्व है।"

कृषक जीवन का महाकाव्य कहे जाने वाला उपन्यास 'गोदान' सन 1936 में प्रकाशित हुआ। यह प्रेमचंद की सर्वोत्तम कृति मानी जाती है। यथार्थवादी उपन्यासों की श्रेणी में यह उपन्यास आता है। गोदान में प्रेमचंद ने दो अलग-अलग स्तर पर कथाओं को दर्शाया है। एक ग्रामीण कथा- जिसमें होरी, धनिया, गोबर, रूपा, सोना, शोभा, हीरा,भोला,झुनियाँ, पंडित मातादीन, दादातीन आदि की कथा है तो दूसरी ओर शहर में राय साहब, खन्ना, मेहता,मालती,रुद्रपाल,सरोज,कुँवर दिग्विजय,मीनाक्षी आदि की कथा है। जो पश्चिमी तौर तरीके से जिंदगी जीते हैं। दो अलग-अलग स्तर पर जिंदगियों की कथा से हमें स्पष्ट रूप से शोषक और शोषित वर्ग का फर्क दिखाई देता है।

यथार्थ को प्रेमचंद ने साहित्य की कसौटी स्वीकार किया है। अनुभूति की यथार्थता और ईमानदारी पर भी पर्याप्त बल दिया है। उनका मंतव्य है कि 'साहित्य उसी रचना को कहेंगे, जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो। जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित और सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो और साहित्य में यह गुण इस उसी अवस्था में उत्पन्न होता है जब उसमें जीवन की सच्चाईयां और अनुभूतियां व्यक्त की गई हों।

प्रेमचंद ने अपनी अंतिम एवं सर्वोत्कृष्ट औपन्यासिक कृति 'गोदान' में कृषकों की समस्याओं को यथार्थ की कठोर भूमि पर चित्रित किया है। इसमें वह आदर्शवाद के मोह सेपूर्णरूपेण मुक्त जान पड़ते हैं। वह समझ चुके थे कि कृषक की स्थिति में सुधार होना संभव नहीं है। होरी के चरित्र निर्माण में लेखक ने अपनी समस्त कला उंडेल दी है। होरी जीवन पर भर कष्ट भोगता रहा, पिसता रहा, व्यवस्था का शोषण तंत्र से वह बाहर न आसका। मरते दम तक उसकी जीवन की एक ही लालसा थी वह थी 'गाय 'पालने की। उसका कृषक परिवार बिखर जाता है। जब वह जीवन यात्रा समाप्त करता है तब उसकी पत्नी के पास गोदान करने के लिए पैसे है, न बछिया और न ही गाय। यह भारतीय कृषक की दारून स्थिति का सूचक है।'गोदान' में होरी एवं धनिया का जीवन-व्यापी संघर्ष भारतीय कृषक की करुण गाथा को सजीव करता है। होरी एवं धनिया के जीवन भर के संघर्ष एवं परिश्रम का अत्यंत कारुणिक परिणाम मिलता है। वह जीवन भर परिश्रम करने के उपरांत भी समृद्ध नहीं हो पाते और अंत में कृषक मृत पड़ा हुआ है। कोई धर्म के नाम पर कोई न्याय के नाम पर उनका शोषण करता ही आया है। अंत में इस किसान परिवार को मजदूर बनना ही पड़ता है।

'गोदान' तक आते-आते प्रेमचंद का दृष्टिकोण एकदम परिवर्तित हो गया था। समस्याओं, कठिनाइयों से लोहा लेने वाले प्रेमचंद स्वयं होरी के रूप में पिसते गए। जीवन संग्राम में हार होने पर भी होरी अपना विजय पर्व मनाता रहा। होरी निरंतर संघर्षरत रहा। इस कारण भारत का जितना वास्तविक चित्रण इस कृति में अंकित हुआ है उतना अन्य किसी उपन्यास में नहीं उपलब्ध होता।

उपन्यास के मूल पात्र होरी की सभी समस्याओं का मूल 'अर्थ' है। उसी के कारण वह साहूकार का कर्ज नहीं चुका पाता। खेतों को बचा नहीं पाता। बेटी रूपा ब्याह योग्य हो गई है। पर दहेज की रकम जुटा नहीं पाने के कारण उसे योग्यवर नहीं मिल रहा है। ऐसे में अपने ही उम्र

के 'दुहाजू' प्रौढ़ रामसेवक से ब्याह करवाना पड़ता है क्योंकि वह किसी दहेज की मांग नहीं करता। बल्कि होरी के खेत छुड़वाता है और ब्याह का खर्चा भी खुद ही उठता है। होरी जानता है यह अनमेल ब्याह है पर परिस्थितियों के आगे विवश है। भोला का ब्याह भी अनमेल ब्याह है। ढलती उम्र में जवान स्त्री को ब्याह कर लाता है। जिससे न वह स्त्री सुखी है और ना भोला। 'अर्थ' के कारण इन अनमेल विवाहकी समस्या को भी प्रेमचंद ने बड़ी सूक्ष्मरीति से उजागर किया है।

गोदान पूर्ण रूप से यथार्थवादी उपन्यास है। इस उपन्यास में होरी के जीवन की विडंबना दिखाना ही प्रेमचंद का उद्देश्य है। होरी एक किसान है-'भारतीय किसान!' गाय की लालसा भारतीय किसान की स्वाभाविक लालसा है। वह गाय को माता कहता है।'गऊ से ही तो द्वारा की शोभा है। सवेरे-सवेरे गाय के दर्शन हो जाए तो क्या कहना' जीवन की विडंबना है। वह आजीवन अपनी यह छोटी सी साध ही पूरी नहीं कर पाता। वह लालसा उसके मन में ही रह गई। अंत में कई "आवाज आई, हां, गोदान कर दो, अब यही समय है।" और धनिया ने आज जो सूतली बेची थी, उसके बीस आने लाकरपति के ठंडे हाथ में रख, सामने खड़े दादादिन को दे दिए और कहा,'महाराज, घर में ना गाय हैं, न बछिया, ना पैसा। यही पैसे है। यही इनका गोदान है।" और पछाड़ खाकर गिर पडी। यह गोदान की अंतिम झांकी है। आरंभ होता है लालसा से। मध्य है लालसा। पूर्ति का असफल और करूंन संघर्ष। लालसा भी कितनी तुच्छ है एक गाय पालने की।

प्रेमचंद का अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' है जो उनकी मृत्यु के कारण अपूर्ण रह गया। 8 अक्टूबर 1936 में उनके निधन के बाद उनके सुपुत्र अमृतराय ने इस उपन्यास को पूर्ण किया है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास में साहित्य जीवन की समस्या का वर्णन किया गया है। इसी दृष्टि से यह उपन्यास प्रेमचंद के उपन्यासों से भिन्न है। यह उपन्यास चार अध्यायों में बंटा है। मुख्य पात्र 'देवकुमार' है जो साहित्य साधना में अपना समय व्यतीत करते हैं। वह कुछ व्यसनों से ग्रस्त है। दो बेटे हैं 'संतकुमार' और 'मधुकुमार'। बड़ा बेटा जीवन में ऐश्वर्या और सुख चाहता है। तो छोटा बेटा पिता के जीवन दर्शन और आदर्शों पर चलना चाहता है। ऐसा कहा जाता है कि प्रेमचंद ने इस उपन्यास को अपनी आत्मकथा के रूप में लिखना प्रारंभ किया था। यह भी एक सामाजिक उपन्यास की श्रेणी में आने वाला उपन्यास है।

प्रेमचंद ने अपने औपन्यासिक साहित्य के माध्यम से सामाजिक प्रश्नों को समाज के सामने पुन: उपस्थित कर सोचने पर मजबूर किया। यह सामाजिक प्रश्न दिन-ब-दिन नासूर बनते जा रहे हैं और समाज मूक दर्शक बन तमाशा देख रहा है। इन नासूर बनती समस्याओं को सुलझाना आवश्यक है। केवल आदर्शवाद के भरोसे जिंदगी नहीं जी जाती। जिंदगी तो यथार्थ की वह उबड-खाबड जमीन है जिस पर रोज नंगे पांव चलना पड़ता है। हम ऐसे ही इन समस्याओं से मुंह नहीं मोड सकते। उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से इन समस्याओं के दुष्परिणामों को दिखाया है। इसी के साथ समस्याओं से बाहर आने के उपाय को भी दर्शाया है।

5.3.2 प्रेमचंद की उपन्यास कला :

प्रेमचंद ने हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में उपन्यास लिखे हैं। उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद का हिंदी में पदार्पण 'सेवासदन'(1918)से हुआ। जब प्रेमचंद ने उर्दू में उपन्यास और कहानियाँ लिखना आरंभ किया था उसे समय हिंदी में देवकीनंदन खत्री के अय्यारी-तिलिस्म प्रधान उपन्यासों की धूम मची हुई थी परंतु प्रेमचंद इनके प्रभाव में नहीं आए। 'देवस्थान रहस्य' में उन्होंने मंदिर और तीर्थस्थान में फैले भ्रष्टाचार, पाखंड और प्रवंचना, वेश्याओं और चरित्रहीन स्त्रियों का चित्रण किया है। प्रेमचंद पर आर्य समाज का प्रभाव था। वह समाज को आधुनिक रूप में देखना चाहते थे और समानता के पक्षधर थे। जिसमें अमीर-गरीब, स्त्री-पुरुष, जमींदार-किसान में कोई फर्क ना हो। इसी से प्रभावित हो प्रेमचंद ने प्रारंभिक उर्दू उपन्यास लिखे थे। बाद में इन्हीं उपन्यासों का हिंदी रूपांतरण खुद प्रेमचंद ने ही किया है।

सेवासदन में प्रेमचंद ने वेश्या जीवन से जुड़ी समस्याओं का चित्रण किया है। सेवासदन उपन्यास में स्त्रियों का वेश्यावृत्ति स्वीकार करने का मूल कारण तिलक-दहेज की प्रथा,पति द्वारा पत्नी की उपेक्षा, उसके प्रति अविश्वास और क्रूर व्यवहार तथा समाज की उपेक्षा माना गया है। भाषा और शिल्प की दृष्टि से प्रेमचंद के लेखन में नए परिवर्तन आए। उर्दू उपन्यासों की भाषा जो फारसी गद्य से प्रभावित थी वह हिंदी रूपांतरण में पूर्णता: हिंदी की ओर झुकी नजर आई।

'प्रेमाश्रम' में प्रेमचंद ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत किसानों और जमींदारों के संबंधों का चित्रण किया है। प्रेमचंद के पूर्ववर्ती उपन्यासकार अपने उपन्यासों में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लिखने से डरते थे। किंतु प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में 'राष्ट्रीय चेतना' को व्यक्त किया। जिसके कारण उनका 'सोजे वतन' सरकार द्वारा जप्त कर लिया गया। ब्रिटिश शासन के लिए उनके मन में घृणा भाव था।'प्रेमाश्रम' और उसके बाद के उपन्यासों में प्रेमचंद ने देश की पराधीनता के यथार्थ को चित्रित किया है। ब्रिटिश शासन की शोषण नीति से बढ़ती किसानों की निर्धनता, उनकी दयनिय स्थिति तथा अमानवीय परिस्थितियों का चित्रण प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि, गोदान आदि उपन्यासों में मिलता है। आर्थिक शोषण का प्रमुख आधार ब्रिटिश शासन द्वारा लगाया गया भूमि कर था। जिसे निर्दयतापूर्वकवसूला जाता था। जिसके कारण किसान कर्ज में डूबे रहते थे। इसी का चित्रण प्रेमचंद के उपन्यास कर्मभूमि, गोदान, कायाकल्प आदि में मिलता है। लगानबंदी आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम का महत्वपूर्ण हिस्सा था। किसानों के संघर्ष का चित्रण इन उपन्यासों में मिलता है।

प्रेमचंद महात्मा गांधी से प्रभावित थे। भारतीय स्वाधीनता संग्राम की लड़ाई में प्रेमचंद ने खुले रूप में हिस्सा नहीं लिया था। उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से स्वदेशीआंदोलन, असहयोग, सविनय अवज्ञा आंदोलन, शराब बंदी आंदोलन आदि को पाठकों के समक्ष रख 'जन-मानस' में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का भरसक प्रयास किया है। समाज में जागृति लाने का अन्यन साधारण कार्य अपनी रचनाओं के माध्यम से किया है। रंगभूमि, कायाकल्प, कर्मभूमि उपन्यासों में जो सेवा समितियां है, उनका उद्देश्य सरकार का तख्ता पलटना नहीं बल्कि सामाजिक सुधार करना और जमींदारों तथा सरकारी कर्मचारियों से

अनुनय-विनय करते हुए किसानों की दु:ख-तकलीफों को दूर करने का प्रयास करना है। प्रेमचंद ने सरकारी दमन का प्रभावशाली चित्रण किया है। साथ ही उस शिक्षित वर्ग की आलोचना की है जो अपने स्वार्थ के लिए सरकार का समर्थन करता है और जनता का शोषण। कर्मभूमि में अछूतों के मंदिर प्रवेश और निम्न वर्ग के लोगों के आवास की समस्या को तत्कालीन जन-आंदोलन का विषय बनाया है। प्रेमचंद का संपूर्ण साहित्य अंग्रेजों के औपनिवेशिक शासन का विरोध करता है। देशी राजाओं, महाजनों, पूंजीपतियों, जमींदारों, सरकारी अमलदारों का विरोध ब्रिटिश शासन का विरोध था। किसानों, मजदूरों, दलितों,स्त्रियों, वेश्याओं, सांप्रदायिकता की शिकार जनता आदि के प्रति गहरी सहानुभूति भी मुक्ति आंदोलन का विस्तार था। कायाकल्प, गबन और कर्मभूमि में कई ऐसे प्रसंग है जो स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े हुए हैं। इसी तरह अप्रत्यक्ष रूप से सरकार से बचते हुए आजादी की लड़ाई जो उस समय की सबसे बड़ी सच्चाई थी इसी को अपने उपन्यासों में चित्रित किया है।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में नारी पात्रों के द्वारा उनकी सामाजिक स्थिति को दर्शाया है। उनके पात्र सामाजिक स्थिति के प्रति आकर्षित है परंतु विद्रोह करने की स्थिति में नहीं है। सन 1930 में गांधीजी ने विदेशी वस्तुओं की दुकानों, शराबघरों, सरकारी संस्थानों पर धरना देने का संदेश दिया जिसमें महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और जेल गई। प्रेमचंद की पत्नी शिवरानी देवी भी जेल गई थी। इसका प्रभाव प्रेमचंद के उपन्यासों के नारी पात्रों पर भी दिखाई देता है। गबन की 'जालपा' का चरित्र नारी जागरण को स्पष्ट करता है। कर्मभूमि की सुखदा हरिजनों के 'मंदिर प्रवेश आंदोलन' का नेतृत्व करती हुई जेल जाती है। सुखदा के अलावा सकीना, बुढ़िया पठानीन,रेणुका देवी, मुन्नी आदि ब्रिटिश सरकार का विरोध करती हुई जेल जाती है। नैना जुलूस का नेतृत्व करते हुए शहीद हो जाती है। निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं की हिंदी के किसी अन्य उपन्यासकार की रचना में भारतीय नारी का ऐसा रूप दिखाई नहीं देता।

प्रेमचंद युग में सांप्रदायिक दंगे एक ज्वलंत समस्या थी। अंग्रेजों की नीति थी 'फूट डालो और राज करो' इसी के चलते भारतीय जन-मानस एक संघ होने से रोकने के लिए वह सांप्रदायिकता का सहारा लेने लगे। अंग्रेज सरकार स्वतंत्रता आंदोलन को कमजोर करने के लिए चंद कट्टरपंथी स्वार्थी नेताओं को लालच दिखाकर सांप्रदायिक दंगे भड़कते रहे। इस षड्यंत्र के चलते 1925 के बाद भारत के विभिन्न भागों में अनेक सांप्रदायिक दंगे हुए थे। प्रेमचंद ने अपने समय की इस सच्चाई का चित्रण अपने उपन्यास कायाकल्प में किया। प्रेमचंद सांप्रदायिकता के विरोधी थे। उन्होंने अपने उपन्याससाहित्य द्वारा धार्मिक उन्माद, स्वार्थ साधने के लिए रचे धार्मिक पाखंड, सांप्रदायिकता पर प्रखर प्रहार किए हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों के पात्र हिंदू और मुसलमान होने से पहले मनुष्य होते हैं और संघर्ष को रोकने के लिए अपने आप को कुर्बान कर देते हैं।

प्रेमचंद का प्रमुख उद्देश्य अपने समय के जीवन को उसकी समस्याओं और संघर्षों के साथ प्रस्तुत करना है। उनके उपन्यास के विविध पात्र और नायक यथार्थ की जमीन से जुड़े हुए हैं

और वास्तविक जीवन के पात्र लगते हैं। यह पात्र सामान्य से अति सामान्य है। अंधे, भिखारी, दलित, अनपढ़, मजदूर, किसान आदि वर्ग से आते हैं। 'नायक' की प्रचलित धारणा को प्रेमचंद ने अपने उपन्यास साहित्य द्वारा तोड़ने की शुरुआत की है। हिंदी उपन्यास के इतिहास में प्रेमचंद की शिल्प विषयक उपलब्धि यह है कि उन्होंने अन्य उपन्यासकारों की तरह पाठकों को संबोधित करने की परंपरा को त्याग किया है। इसी के साथ प्रेमचंद ने कथा प्रस्तुति की दृश्यात्मक, परिदृश्यात्मक प्रविधि को अपने उपन्यासों में विशेष रूप से 'गोदान' में शिखर पर पहुंचा दिया है।

प्रेमचंद की भाषा हिंदी उपन्यास की भाषिक परंपरा का सहज पर सृजनात्मक विकास है। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के लिए बोलचाल की गद्य शैली का प्रयोग किया है उर्दू में कहानी और उपन्यास लिखने के अभ्यास ने उन्हें भाषिक सृजनात्मकता की दिशा में अग्रसर कर दिया था। उनकी भाषिक सृजनशीलता की जड़े आम जनता की सजीव भाषिक परंपरा में ही है। इसी कारण उनमें मौलिकता और ताजगी मिलती है। प्रेमचंद अपने कथा संसार को सजीव बनाने के लिए भाषा का प्रयोग बहुत सावधानी से करते हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों के पात्र आर्थिक-सामाजिक स्थिति अनुसार भाषा का प्रयोग करते हैं। प्रेमचंद की भाषा में शब्द और अर्थ का सर्वोत्तम सामंजस्य, अर्थों की सांकेतिक संभावनाओं, लक्षणा और व्यंजना की समृद्धि,शैलिय उपकरणों का सार्थक प्रयोग बिम्ब निर्माण की क्षमता आदि मिलाकर एक अद्‌भुत प्रभाव पैदा करते हैं।

निष्कर्षत: हम यह कह सकते हैं कि कथानक की विविधता, दूरदृष्टि, चरित्र-चित्रण, शिल्प और भाषा सभी दृष्टियों से प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को एक ऐसे शिखर पर पहुंचा दिया जो आज भी एक मंजिल के मानदंड के रूप में मान्य है।

बोध प्रश्न :

- प्रेमचंद के उपन्यास की विकास-यात्रा को स्पष्ट कीजिए ।
- प्रेमचंद के उपन्यासों में चित्रित स्त्री समस्याएँ ।

5.4 : पाठ सार

साहित्य सम्राट मुंशी प्रेमचंद का साहित्य हिंदी साहित्य की एक अन्यय साधारण धरोहर है। प्रचलित अवधारणाओं से परे उन्होंने अपने साहित्य के विषय चुने हैं। सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक स्थितियों को अपने साहित्य के माध्यम से जन-मानस के समक्ष प्रस्तुत किया है। अपने उपन्यास के पात्र और विषय कल्पनाओं से ना लेकर यथार्थ की पृष्ठभूमि से लिए है।तत्कालीन समय की वेश्यावृत्ति, अनमेल विवाह, दहेज़, विधवा पुनर्विवाह जैसी सामाजिक समस्याएं को अपने उपन्यासों के विषय बनाकर जन-मानस को जागृत करने का कार्य किया है।साथ ही कई समस्याओं के समाधान भी सुझाए हैं। सेवासदन, रंगभूमि,कर्मभूमि, कायाकल्प, निर्मला आदि उपन्यास इसके उदाहरण है। अंग्रेजों की 'फोडो और राज करो' की नीति से उत्पन्न हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिकता का प्रेमचंद जी ने अपने औपन्यासिक साहित्य के माध्यम से विरोध किया है। प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यासों में हिंदू-मुस्लिम पात्रों की संयोजना

कर उनमें भाईचारे का, एकता का, एक दूसरें के लिए कुर्बानियां देनेवाले भाई-भाई का चरित्र निर्माण कर समाज के सामने आदर्श की स्थापना की है।

तत्कालीन समय स्वतंत्रता आंदोलन का समय था। महात्मा गांधी के आंदोलन और विचारों का स्पष्ट रूप से प्रभाव प्रेमचंद के उपन्यासों में देखने को मिलता है। प्रेमचंद ने स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को अपने उपन्यासों के माध्यम से दर्शाया है। दहेज, बालविवाह,अनमेल विवाह, वेश्यावृति और शिक्षा जैसे समस्याओं से जूझती स्त्रियों को अपने साहित्य के माध्यम से जन-मानस तक उनके सत्य स्थिति को दिखलाने का कार्य भी किया है। दुर्बल, अबला स्त्री को आधुनिक समाज की एक समझदार और 'राष्ट्रीय चेतना' से ओतप्रोत स्त्री के परिवर्तन को भी बड़ी ही बारीकी से दिखाने का प्रयास किया है। गबन की 'जालपा' एक लोभी स्त्री से राष्ट्र नायिका में जालपा की परिणिति प्रेमचंद की कलम की कलात्मक की पराकाष्ठा है। कर्मभूमि की सुखदा, नैना। वरदान की माधवी आदि अनेक स्त्री पात्रों के परिवर्तन ही नारी जीवन की सशक्तता है।

प्रेमचंद ने हरिजनों के 'मंदिर प्रवेश' की समस्या और छुआ-छूत की समस्या की अनेक घटनाओं को अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रकट कर गांधी जी के और मानवतावाद के पक्षधर रहे हैं। प्रेमचंद का अंतिम उपन्यास 'गोदान' उनकी साहित्यिक जीवन की सर्वोत्तम कृति है।'गोदान' कृषक जीवन का महाकाव्य कहा जाता है। अंग्रेज शासन, सामंती पूंजीवाद और शोषक- शोषित का संबंध, धार्मिक पाखंड, आर्थिक दरिद्रता, महाजनी सभ्यता के दमन चक्र के एक आम भारतीय किसान की 'गाय' पालने की एक छोटी सी लालसा का किस तरह दमन होता है इसका चित्रण 'होरी' का जीवन है। महाजनी शोषण एक कृषक से 'होरी'को किस तरह मजदूर में तब्दील करता है इसका सटीक चित्रण प्रेमचंद ने गोदान में किया है।

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से प्रचलित ढर्रे को तोड़कर एक नई सोंच को समाज को दिया है। 'आम आदमी भी उपन्यास का नायक हो सकता है।' यह उन्होंने अपनी कथाओं के माध्यम से कर दिखाया। उनके उपन्यास केवल मनोरंजन के लिए नहीं थे बल्कि वह समाज को आईना दिखाने का कार्य कर रहे थे। समस्याओं की दाहकता से सचेत कर रहे थे। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का संदेश जन-मानस तक पहुंचा रहे थे।

5.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं–

1) हिंदी साहित्य में प्रेमचंद का उपन्यास साहित्य अपना अन्यय साधारण महत्व रखता है।
2) प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य से भली-भांति परिचित हुए।
3) प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिकस्थितियों को उजागर किया है।
4) प्रेमचंद ने उपन्यासों के माध्यम से केवल समस्याओं को उजागर ही नहीं किया तो उनके उपाय को भी दर्शाया है।
5) प्रेमचंद उपन्यासों पर महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव दिखाई देता है।

6) भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को प्रेमचंद ने अपनी कृतियों के माध्यम से जनमानस में पहुंचाया था।

7) राष्ट्रीय चेतना, सांप्रदायिक एकता, आपसी सामंजस्य जैसे यह प्रेमचंद के उपन्यासों का निचोड़ है।

8) अंग्रेज शासन के विरोध में आम जन-जीवन में जागृति लाने का कार्य अपने उपन्यासों के माध्यम से किया है।

9) भारतीय सामाजिक जीवन के विकास में बाधक बने प्रश्नों को स्पष्ट रूप से समाज के समक्ष रखा।

10) प्रेमचंद ने साहित्य के माध्यम से लेखकिय प्रतिबद्धता को निभाया है।

5.6 : शब्द संपदा

1) यथार्थवाद	-	वास्तविक, जैसा होना चाहिए ठीक वैसा ही।
2)आदर्शवाद	-	उच्च या महान सिधांत, ऐसा होना चाहिए।
3) दुहाजू	-	दूसरी बार शादी करने वाला।
4) नासूर	-	ऐसा घाव जिससे बराबर मवाद निकलता हो।
5) एय्यारी	-	धूर्तता, चालाकी।
6) तिलिस्म	-	जादू, मायाजाल, भ्रम
7) रिश्वत	-	घुस, लाच।
8) कनकौवा	-	पतंग।
9) गबन	-	किसी और की धन- संपत्ति को अपने लिए।
10) सत्याग्रह	–	सत्य हेतु किया गया हठ।
11) वायुयान	-	हवाई जहाज,वायु में उडनेवाला जहाज।
12) ऋण	-	कर्ज, उधार लिया गया धन।

5.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न -

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1) प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य का विश्लेषण कीजिए।

2) प्रेमचंद के उपन्यासों में कौन-कौन सी स्त्री समस्याओं का चित्रण हुआ है स्पष्ट कीजिए।

3) प्रेमचंद केउपन्यासों में चित्रित पूंजीपति-सामंतवाद का विश्लेषण कीजिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न–

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए।

1) प्रेमचंद के उपन्यास और स्वाधीनता आंदोलन को स्पष्ट कीजिए।
2) प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' को 'कृषक जीवन का महाकाव्य' कहा जाता है स्पष्ट कीजिए।
3) प्रेमचंद के उपन्यासों में 'राष्ट्रीय चेतना' को जागृत किया गया है स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I] सही विकल्प चुनिए –

1) 'निर्मला' उपन्यास में तोताराम का व्यवसाय क्या था?

अ) वकील ब) डॉक्टर क) अध्यापक ड) मुनीम

2) 'गोदान' के नायक का नाम क्या है?

अ) गोबर ब) मिस्टर खन्ना क) होरी ड) शोभा

3)अमरकांत किस उपन्यास का पात्र हैं?

अ) निर्मला ब) रंगभूमि क) गबन ड) कर्मभूमि

4) प्रेमचंद की सर्वप्रथम प्रकाशित कहानी कौन-सी है?

अ) दुनिया का सबसे अनमोल रतन ब) पंच परमेश्वर
क) बड़े घर की बेटी ड) बूढी काकी

II] रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1) प्रेमचंद का जन्म ------ गांव में हुआ था।
2) जालपा ------ उपन्यास की स्त्री पात्र है।
3) निर्मला उपन्यास में ------- विवाह की समस्या को उठाया है।
4) प्रेमचंद का अधूरा उपन्यास --------- है।

III] सुमेल कीजिए -

1) गोदान ------- पत्रिका
2) चाँद ------- धनपत राय श्रीवास्तव
3) सूरदास ------- गबन
4) 31 जुलाई 1980 ------- सन 1936
5) आभूषण प्रेम ------- कर्मभूमि

5.8 : पठनीय पुस्तकें

1) हिंदी उपन्यास का इतिहास – गोपालराय
2) प्रेमचंद एक विवेचन – इंद्रनाथ मदान
3) गबन - प्रेमचंद
4) गोदान - प्रेमचंद
5) रंगभूमि - प्रेमचंद
6) कर्मभूमि - प्रेमचंद
7) कायाकल्प - प्रेमचंद
8) सेवासदन - प्रेमचं
9) निर्मला - प्रेमचंद
10) प्रेमाश्रम - प्रेमचंद
11)प्रेमचंद : जीवन, कला और कृतित्व – हंसराज रहबर
12) प्रेमचंद और उनकी उपन्यास कला – डॉ. रघुवर दयाल वार्ष्णेय
13) प्रेमचंद– स. सत्येन्द्र
14) कलम का सिपाही – अमृतराय
15) कलम का मजदूर : प्रेमचंद – मदन गोपाल

इकाई 6: गोदान का तात्विक विवेचन

इकाई की रूपरेखा

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 मूल पाठ: गोदान का तात्विक विवेचन

6.3.1 कथावस्तु

6.3.2 पात्रों का चरित्र चित्रण

6.3.3 देशकाल अथवा वातावरण

6.3.4 संवाद योजना

6.3.5 भाषा शैली

6.3.6 शीर्षकौचित्य

6.4 पाठ सार

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

6.6 शब्द संपदा

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

6.8 पठनीय पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

गोदान की रचना 1936 ई. में हुई। गोदान तक आते-आते प्रेमचंद विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन लक्षित होते हैं। यह उपन्यास उनकी पूर्ण विकसित जीवन दृष्टि का परिणाम है। यहाँ तक आते-आते प्रेमचंद का आदर्शान्मुख यथार्थवाद, यथार्थोन्मुख आदर्शवाद बन जाता है। 'गोदान' को भारतीय कृषक की जीवन गाथा का महाकाव्य कहा गया है। उक्त उपन्यास में भारतीय ग्रामीण जीवन के परिवेश को पूर्ण जीवन्तता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इसमें मानवता के सभी प्रेरणा सूत्र मौजूद हैं। 'गोदान' का कथानक ग्रामीण जीवन पर आधारित कथानक है। उपन्यास का नायक होरी एक भारतीय किसान है। गोदान में भारतीय ग्रामीण परिवेश के अनेकमुखी दर्शन होते हैं। भारतीय किसानों के जीवन के समस्त संस्कारों से युक्त उसकी वर्तमान स्थिति का चित्रण उपन्यास में मिलता है। आरंभ में अपने घर गाय रखने की होरी की तीव्र इच्छा दिखाई देती है। वह किसी तरह गाय लेकर भी आता है। लेकिन वह उस गाय को रख सकने में असमर्थ हो जाता है। उसे अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

और अंत में जब वह मरता है, तब परिवार के पास न गाय होती है, न पैसा। उसकी पत्नी धनिया आने का 'गोदान' करती है। इस तरह उपन्यास के आरंभ और अंत में भारतीय किसानों की दयनीय स्थिति उजागर होती है।

1.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रों ! इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप-

- 'गोदान' उपन्यास की कथा वस्तु तथा वातावरण से परिचित हो सकेंगे।
- हिंदी साहित्य की एक सर्वात्कृष्ठ रचना से परिचित हो जाएँगे।
- गोदान में चित्रित सामंती मनोवृति के बीच फँसे निम्न-वर्गीय समाज की स्थिति को जान सकेंगे।
- गोदान के कथानक के केंद्र में होने वाले भारतीय किसानों के जीवन संघर्ष से परीचित होंगे।
- गोदान में चित्रित पात्रों के विशेषताओं को जान सकेंगे।

6.3 मूल पाठ: गोदान का तात्विक विवेचन

6.3.1 कथावस्तु

- अमर उपन्यास गोदान के लेखक 'प्रेमचंद' है। इनका जन्म 31 जुलाई, 1880 ई. को बनारस से कुछ दूर स्थित लमही नामक गाँव में हुआ था। उन्होंने संघर्षरत जीवन जीते हुए अध्यापक की नौकरी प्राप्त की लेकिन गांधीजी के विचारों से प्रभावित होकर 1921 ई. में उसे छोड़ दिया।
- प्रेमचंद ने बनारस से 'मर्यादा' और 'हंस' तथा लखउऊ से 'माधुरी' पत्रिका का संपादन किया। हिंदी साहित्य के इस कथा सम्राट का 8 अक्टूबर, 1936 ई. को निधन हो गया।
- गोदान की रचना 1936 ई. में हुई। गोदान तक आते-आते प्रेमचंद विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन लक्षित होते हैं। यह उपन्यास उनकी पूर्ण विकसित जीवन दृष्टि का परिणाम है। यहाँ तक आते-आते प्रेमचंद का आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, यथार्थोन्मुख आदर्शवाद बन जाता है। 'गोदान' को भारतीय कृषक की जीवन गाथा का महाकाव्य कहा गया है। उक्त उपन्यास में भारतीय ग्रामीण जीवन के परिवेश को पूर्ण जीवन्तता के साथ प्रस्तुत किया गया है। इसमें मानवता के सभी प्रेरणा सूत्र मौजूद है।
- 'गोदान' उपन्यास प्रेमचंद की कीर्ति का आधार स्तम्भ है। रामचन्द्र तिवारी के अनुसार ''यह उनकी प्रौढ़तम कृति है। 'गोदान' में प्रेमचंद का सम्पूर्ण जीवन-अनुभव सिमट कर केन्द्रीभूत हो गया है।

- इसकी कथा के दो प्रमुख सूत्र हैं। होरी, गोबर, धनिया, झुनियाँ तथा अन्य ग्रामीण व्यक्तियों-मातादीन, नोखेराम, पटेश्वरी, झिंगुरी सिंह को लेकर चलने वाला कथासूत्र ग्राम्य जीवन के साथ विकसित होता है। नागरिक जीवन को लेकर चलने वाला दूसरा कथासूत्र है।
- इसमें पण्डित ओंकारनाथ (संपादक), श्याम बिहारी तंखा (बीमा कंपनी के दलाल), मिस्टर खन्ना (उद्योगपति), मिस्टर मेहता (दर्शन शास्त्र के अध्यापक), मिस्टर मिर्जा (जूते के दुकानदार) और मिस मालती (लेडी डाॅक्टर) प्रधान पात्र हैं।
- दोनों कथा सूत्रों को जोड़ने वाले इलाके के जमींदार रायसाहब अमरपाल सिंह है। होरी की कथा आधिकारिक है और नागरिकों की कथा प्रासंगिक, किन्तु प्रासंगिक कथा प्रमुख कथा के विकास में अनिवार्य नहीं है, आवश्यक भी नहीं है। उसकी उपादेयता ग्रामीण जीवन और नागरिक जीवन की विषमता प्रत्यक्ष करने में ही है।''
- 'गोदान' उपन्यास की कथा के केंद्र बिन्दु अवध प्रान्त के दो गाँव 'सेमरी' और 'बेलारी' है। 'गोदान' उपन्यास का नायक 'होरी' है। उपन्यास का कथानक उसके संघर्ष से प्रारम्भ होता है और उसकी मृत्यु पर समाप्त होता है।
- होरीराम और धनिया दोनों पति-पत्नी अपने खेत में कड़ी मेहनत कर अपना जीवन यापन करते हैं। उनका बेटा 'गोबर' और दो बेटियाँ 'सोना' और 'रूपा' है। होरी का एक सपना है कि उसके घर के द्वार पर भी एक गाय बंधी हुई होनी चाहिए।
- वह अपने 'मित्र' भोला' से एक गाय खरीद लेता है। अभी उसकी कीमत अदा भी नहीं होती कि ईष्यावश होरी का छोटा भाई 'हीरा' गाय को ज़हर खिलाकर मार देता है। यहीं से होरी के बुरे दिन शुरू हो जाते हैं।
- होरी सेमरी गाँव में रायसाहब अमरपालसिंह से मिलने जाता रहता है। वह रायसाहब की कृपा का पात्र है और उनकी बहुत इज्जत करता है। रायसाहब का बाहरी आवरण मानवीय है लेकिन उनके भीतर जमींदारों के गुण-अवगुण भी मौजूद है।
- गोबर इस बात पर क्रोधित होता है कि होरी रायसाहब की चापलूसी क्यों करता है, जबकि होरी उसे समझता है कि बड़े लोगों से मेल मिलाप बनाये रखना बहुत जरूरी होता है। गाँव में जमींदार और महाजन लोग किसानों का बहुत शोषण करते हैं।
- रायसाहब के यहाँ पण्डित ओंकारनाथ, श्यामबिहारी तंखा, मिस्टर खन्ना, मिर्ज़ा खुर्शेद, मिस मालती आदि मित्रगण आते रहते हैं। कहने को ये सभी रायसाहब के मित्र हैं लेकिन सभी अपने-अपने स्वार्थ को साधने वाले हैं। सबसे अलग चरित्र मिस्टर मेहता का है।
- मिस्टर मेहता के चरित्र में कहीं-न-कहीं प्रेमचंद के व्यक्तित्व की झलक दृष्टिगोचर होती है। रायसाहब और उनके मित्रगण शिकार खेलने जाते हैं। मिस्टर मेहता और मिस मालती साथ-साथ चलते हैं।

- मालती, मिस्टर मेहता से प्रभावित होकर उन्हें प्रेम करने लग जाती है। लेकिन मेहता का प्रेम को देखने समझने का अलग दृष्टिकोण है अतः वे मालती से दूर-दूर रहने की कोशिश करते हैं।
- होरी पर महाजनों का सूद चढ़ता जाता है और वह अनेक समस्याओं से घिरता जाता है। होरी की गाय को ज़हर देकर उसका भाई हीरा गाँव से भाग जाता है।
- हीरा की पत्नी दुनिया या पुन्नी अबला हो जाती है। धनिया उसे अपने घर में शरण दे देती है। गोबर, भोला की विधवा बेटी 'झुनिया' से प्रेम करता है, वह उसे घर से भगा लेता है लेकिन रास्ते में ही अकेला छोड़, इसके परिणाम के भय से स्वयं शहर भाग जाता है।
- गाँव में कोहराम मच जाता है। झुनिया होरी के घर आकर बैठ जाती है और अंत में धनिया उसे स्वीकार कर लेती है। इस घटना के कारण होरी और भोला की मित्रता शत्रुता में बदल जाती है।
- भोला की गाय के दाम न चुका पाने के कारण क्रोधित होकर भोला होरी के दोनों बैलों को खोलकर ले जाता है और होरी किसान से मज़दूर बन जाता है। झुनिया की वजह से होरी की सारी फसल डाँड (दण्ड) की भेंट हो जाती है। जब रायसाहब को होरी की इस दुर्दशा का पता चलता है तो वे गाँव के पंचों को फटकारते हैं लेकिन होरी पंचों को देवतुल्य समझता है अतः उनके सारे फैसलों को स्वीकार कर लेता है।
- मिल की हड़ताल में गोबर लड़ते हुए घायल हो जाता है। झुनिया को उस पर दया आ जाती है। मिस्टर मेहता के साथ रहते मालती को जीवन और प्रेम का रहस्य समझ आ जाता है।
- वह गरीबों की सेवा करती है। अब मेहता उसकी ओर आकर्षित होते हैं लेकिन वह शादी के बंधन में बंधने और उन्हें बाँधने से इंकार कर देती है। चुनाव, बेटी की शादी और बेटे के विद्रोह के कारण रायसाहब की स्थिति भी खराब हो जाती है।
- सिलिया और मातादीन का पुनः मिलन हो जाता है। मातादीन सच्चे हृदय से उसे स्वीकार कर लेता है। होरी की स्थिति दिन-दिन खराब होती जाती है और एक दिन जीवन की जंग से हारकर वह अपने प्राण त्याग देता है।
- उपन्यास इस चरम व्यंग्य पर समाप्त होता है कि जो होरी जीते जी अपने घर गाय नहीं ला सका, नहीं पाल सका उसे मृत्यु शैया पर गोदान करने के लिए कहा जाता है।
- संपूर्ण उपन्यास 36 खण्डों में विभक्त है। उपन्यास में ग्रामीण कथा और शहरी कथा एक-दूसरे को जोड़ते हुए चलती है। उपन्यास में गाँव और शहर के प्रत्येक प्रतिनिधि चरित्र का चित्रण अत्यन्त गहराई से किया गया है। हर व्यक्ति अपनी खूबियों और कमियों के साथ यहाँ मौजूद है।
- प्रेमचंद ने तत्कालीन परिवेश में कृषक जीवन की समस्याओं और उसके साथ ग्रामीण जीवन की सामाजिक-आर्थिक विविध समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है।

- 'गोदान' एक समक्षम किसान के विवश मज़दूर बन जाने की करुण गाथा है। प्रेमचंद ने सामाजिक शोषण के चित्र को पूरी सच्चाई के साथ उभारा है। उपन्यास की भाषा सरल एवं सहज है। स्थान-स्थान पर उर्दू शब्दों का प्रयोग किया गया है।

बोध प्रश्न

(1) 'गोदान' उपन्यास की कथा के केन्द्र में कौन-कौन से दो गाँव हैं।

(2) 'गोदान' उपन्यास कितने खण्डों में विभक्त है।

6.3.2 पात्रों का चरित्र चित्रण

वस्तु योजना के अनुरूप ही उपन्यास के पात्रों का संबंध भी ग्राम एवं नगरीय जीवन से है दोनों के बीच की कड़ी रायसाहब, अमरपाल सिंह और गोबर है। गोदान वास्तव में चरित्र प्रधान यथार्थवादी उपन्यास है, सभी पात्र जीवन के जीते जागते भोगते गए या भोगे जा रहे परिवेश से ही लिए गए हैं। प्रायः सभी पात्र वर्ग और अपनी पीढ़ियों का प्रतिनिधि करते हैं पर उनका निश्चय ही अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है।

होरी

होरी योगदान उपन्यास का मुख्य पात्र एव ंनायक है। उपन्यास आरंभ से लेकर अंत तक होरी की दयनीय और 'संघर्षपूर्ण' कथा कही गई है होरी भारतीय किसान का भूतिमान सजीव रूप है। भारतीय किसान की समस्त विषमताओं का वह जीवंत प्रतिनिधि है। महाजनों का एक पूरा दल दातादिन झिंगुरी सिंह, राय साहब, पुलिस, पंच आदि सभी उसे चूसते हैं। होरी हमेशा शोषक वर्ग के हाथों यातना सहने को मजबूर है। होरी हमेशा परिस्थितियों के सामने नतमस्तक होता दिखाई देता है। वह कभी विद्रोह नहीं करता। सरलता, ईमानदारी और उदारता जैसे गुण उसके चरित्र की सबसे बड़ी पूँजी है। लेकिन जीवनभर संघर्ष करनेवाले होरी के बारे में स्वयं लेखक ने लिखा है ''ऐसे प्राणी की मृत्यु पर एक गौ भी दान करने को न हो, इससे अधिक जीवन की विडंबना और क्या हो सकती है?''

धनिया

होरी की पत्नी धनिया ऊपर से बादाम की तरह कठोर पर हृदय से मक्खन के समान कोमल है। वह एक सच्ची भारतीय नारी का रूप है जो जीवन-भर अपने पति के कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। परंतु होरी की तरह अन्याय और अत्याचार को विरोध किए रह नहीं सकती। उसके बाह्य व्यक्तित्व को लेकर लेखक ने लिखा है, ''उसकी अवस्था छत्तीस वर्ष की है पर सारे बाल पक गए थे, चेहरे पर झुरियां पड़ गई थी। सारी देल ढल गई थी, सुंदर गेहूँआ रंग सांवला हो गया और आँखों से कम सुझने लगा था। इस चित्स्यायी जीर्णावस्था ने उसके आत्मसम्मान को उदासीनता का रूप दे दिया था'' एक भारतीय नारी की तरह धनिया हर सुख-दुःख् में, संकट की घड़ी में हमेशा अपने पति का साथ देती ळै।

अन्य पात्रों में झुनियाँ सिलिया, आदि आकर्षक है सिलिया समाज की दुव्र्यवहार की शिकार है जाति से चमार होने पर भी आदर्श सती है। मिसेज़ खन्ना प्राचीन आदर्शों वाली नारी है मालती प्रेमचंद के शब्दो में नवयुग की साक्षात प्रतिमा है।

अन्य पुरूष पात्रों में प्रोफ़ेसर मेहता का चरित्र विशेष आकर्षक है। उनके चरित्र द्वारा प्रेमचंद ने यह दिखाया है कि किस तरह के लोगों की जनता की सेवा के क्षेत्रों में आगे बढ़ना चाहिए। स्त्री आंदोलन विषयक उनके विचार रूढ़िवादी है।

गोबर

गोबर एक अल्हड़ और उग्र विचारों वाला एक 16 वर्षीय युवक है। वह अत्याचार को सहन न कर सकने के कारण नगर से भाग जाता है। किनतु वहाँ से भी निराश होकर अंत में गांव लौट आता है। वह वहाँ से अनेक बुराइयाँ भी सीख जाता है परंतु नगर में रहने से उसमें एक नवीन राजनीतिक चेतना आ जाती है। वह भाग्य और रूढ़ियों पर विश्वास करना छोड़ देता है।

दातादिन का चरित्र कला की दृष्टि से बड़ा सुंदर है वह निर्मम कठोर स्वार्थी लोलुप युवक हैं जो धीरे-धीरे खुद को बदल देता है।

राय साहब और खन्ना ढोंगी देशभक्तों के ज्वलंत प्रतीक है। उनके चरित्रों में धनी व्यक्तियों की सारी बुराइयाँ आ गई हैं। तंखा गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले रईसों का एजेंट है।

ग्रामीण पात्रों में बिसरूसाह, दुलारी, मंगरूसाह, झीगुरीसाह, दातादिन, नोखेराम आदि है।

बोध प्रश्न

गोबर किस तरह का युवक है।

6.3.4 संवाद योजना

गोदान में संवाद योजना का बहुत ही अच्छा चित्रण देखने को मिलता है। संवाद की दृष्टि से यह एक उत्कृष्ट कलाकृति है। उसके संवाद सर्वत्र सजीव, पात्रानुकुल चरित्र को स्पष्ट करने वाले और कथा को गति देने वाले हैं। सोना और झूनियाँ के ननद भाभी के मज़ाक तथा झिंगुरी सिंह की नकल के संवाद काफी मनोरंजक है।

6.3.5 भाषा शैली

प्रेमचंद को भाषा का सम्राट कहा जाता है। भाषा के क्षेत्र में वह अपना एक अलग ही स्थान रखते हैं। उनकी भाषा सरल, सुंदर व्यंग और प्रवाह के कारण आदर्श मानी जाती है। यह तीखी पैनी और मर्म पर प्रभाव डालने वाली होती है। वह जनसाधारण के जीवन से शब्द चित्र बनाती है। गोदान की भाषा में एक नया रस और लचक है। यह अधिक परिष्कृत और साहित्यिक कही जा सकती है। शैली प्रोढ़ है और पात्र सच्चे और सजीव है।

6.3.6 शीर्षकौचित्य

प्रस्तुत उपन्यास का शीर्षक 'गोदान' बहुत ही औचित्य पूर्ण कहा जा सकता है। किसी भी लेखक का यह उद्देश्य होता है कि वह अपनी रचना का शीर्षक ऐसा रखता है कि पाठक जब उसे देखे तो रचना का उद्देश्य उसे बहुत हद तक समझ में आ जाए। 'गोदान' उपन्यास में प्रेमचंद मूलतः कृषक जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है। भारतीय किसान जीवन का बहुत ही सूक्ष्मता से अंकन प्रस्तुत उपन्यास में दिखाई देता है। 'गोदान' का शाब्दिक अर्थ होता है गाय का दान करना और यहाँ पर इस उपन्यास का शीर्षक बहुत ही उचित दिखाई पड़ता है। इसमें नायक होरी की पीड़ा, दुःख और वेदना पाठक के मन में उसके प्रति गहरी संवेदनाा उत्पन्न करती है। आजीवन निरंतर कई स्तरों पर संघर्ष करने के बाद भी होरी की एक गाय की आकांक्षा पूरी नहीं हो पाती है, वह इस इच्छा को मन में लिए ही इस दुनियाँ से विदा लेता है।

प्रस्तुत उपन्यास में तत्कालिन भारतीय परिवेश का तथा देश-काल की परिस्थितियों का सजीव एवं यर्थाथ चित्रण किया गया है। अतः विचारकों का मानना है कि, अगर हमें तत्कालिन भारतीय परिदृश्य को समझना है, तो हमें गोदान को पढ़ना चाहिए। लेखन ने होरी और धनिया के परिवार के माध्यम से भारत की ग्रामीण संस्कृति को सजीव और साकार किया है। यह एक ऐसी कथा है, जिसमें महाजनी तथा साहकारी व्यवस्था में किसान के निरंतर होने वाले शोषण और उससे उत्पन्न त्रासद स्थितियों को बड़े ही यथार्थ रूप में उजागर किया है।

इस उपन्यास के शीर्षक की बात करें तो हम देखते हैं कि 'गोदान' इस उपन्यास का प्राण है। तथा गाय का दान ही इस उपन्यास का प्राण तत्व है।

बोध प्रश्न

- 'गोदान' का क्या अर्थ है।

6.4 पाठ सार

यह कहानी होरी और धनिया नामक एक कृषि दंपति के जीवन के इर्द-गिर्द घूमती हैं। किसी भी ग्रामीण की भाँति होरी की भी हार्दिक अभिलाषा है कि उसके पास भी एक पालतू गाय हो जिसकी वह सेवा करे। इसकी दिशा में किए गए होरी के प्रयासों से आरंभ होकर यह कहानी कई सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात करती हुई आगे बढ़ती है। गोदान ज़मींदारों और स्थानीय साहूकारों के हाथों गरीब किसानों का शोषण और उनके अत्याचार की सजीव व्याख्या है।

अवध प्रांत में पांच मील के फासले पर दो गाँव हैं: सेमरी और बेलारी। होरी बेलारी में रहता है और राय साहब अमर पाल सिंह सेमरी में रहते हैं। खन्ना, मालती और डा. मेहता लखनऊ में रहते हैं।

गोदान का आरंभ ग्रामीण परिवेश से होता है। धनिया के मना करने पर भी होरी रायसाहब से मिलने बेलारी से सेमरी जाता है। उसे लगता है कि रायसाहब से मिलते रहने से कुछ सामाजिक मर्यादा बढ़ जाती है। वह कता है, "यह इसी मिलते-जुलते रहने का परसाद है कि अब तक जान बची हुई है।" वह समझता है कि इनके पाँवों तले अपनी गर्दन दबी हुई है। इसलिए उन पाँवों के सहलाने में ही कुशल है।

वास्तव में 'गोदान' में साहूकारों द्वारा किसान के शोषण की ही कहानी है। ये साहूकार कई प्रकार के हैं, जिनमें झिंगुरीसिंह, पंडित दातादीन, लाला पटेश्वरी, दुलारी सहुआइन आदि। साहूकार के अतिरिक्त जमींदार और सरकार के अत्याचार का भी गोदान में साधारण दिग्दर्शन कराया गया है, किन्तु साहूकार, जमींदार और सरकार सबसे बढ़कर किसानों के सिर पर बिरादरी का भूत होता है।

बिरादरी से अलग जीवन की वह कोई कल्पना ही नहीं कर सकता है। शादी-ब्याह, मुंडन-छेदन, जन्म-मरण सब कुछ बिरादरी के हाथ में है। आप बड़े से बड़े पाप कर्म करते जाए, किन्तु बिरादरी तब तक सिर न उठाएगी जब आप उसके द्वारा निर्धारित कृत्रिम मर्यादा का पालन करते जा रहे हैं। जो इन कृत्रिम सामाजिक बन्धनों के निर्वाह में चुका है उसके लिए वह ग्रामीण समाज कठोर से कठोर दण्ड- व्यवस्था अपनाता है।

हमारे किसानों ने धर्म का एक बड़ा ही विकृत रूप अपनाया है, किन्तु धीरे-धीरे गाँवों में भी उष्ण रक्त इन कृत्रिमताओं का विरोध करने लगा है। 'गोदान' में गोबर, मालादीन, सिलिया, झुनिया आदि इसके उदाहरण हैं।

प्रेमचन्द का स्पष्ट कथन है कि 'मेरे उपन्यास का उद्देश्य है धन के आधार पर दुश्मनी'। प्रेमचन्द ने अपनी सहानुभूति का बहुत बड़ा भाग शोषित वर्ग को समर्पित किया है। उन्होंने जमींदारों, पूँजीपतियों, महाजनों, धार्मिक पाखण्डियों के दोषों पर तीखे प्रहार किए हैं।

उन्होंने उपन्यास में प्रतिपादित किया है कि किसान को सबसे अधिक महाजनी सभ्यता से गुजरना पड़ता है। महाजनी सभ्यता क्रूरता तथा शोषण पर आधारित है।

6.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हुई -

- किसानों और मज़दूरों के होने वाले शोषण को उजागर करने के लिए प्रेमचंद ने इस उपन्यास में ग्रामीण एवं नागरी जीवन की कहानी को प्रस्तुत की है।
- प्रेमचंद का 'गोदान' उपन्यास स्वतंत्रता-पूर्व भारत का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता है।
- यह उपन्यास ग्रामीण भारतीय जीवन की कठोर वास्तविकताओं को उजागर करता है।

- गरीब, निर्धन किसानों, मज़दूरों को अपनी आजीविका के लिए कितने स्तरों पर संघर्ष करना पड़ता है, इसका चित्रण भी उपन्यास में हुआ है।
- गोदान न केवल उपन्यास है, बल्कि समस्त भारतीय किसान जीवन का महाकाव्य है।

6.6 शब्द संपदा

1.	डींगे हाँकना	-	बड़ी-बड़ी बातें करना
2.	ईख	-	गन्ना, ऊख
3.	महाजन	-	धनिक, दूसरों को ब्याज पर पैसे देने वाला
4.	तहकीकात	-	जाँच-पड़ताल
5.	आगबबुला होना	-	अत्याधिक क्रोधित हो जाना
6.	संकीर्ण	-	संकुचित
7.	ढिंढ़ोरा पीटना	-	ऐलान करना अथवा बड़ी आवाज़ में किसी बात को सभी लोगों तक पहुँचाना
8.	खूँखार	-	हिंसक
9.	विपन्नावस्था	-	मुसीबत या संकट की स्थिति
10.	पटवारी	-	ग्रामस्तर का प्रशासन अधिकारी, लेखापाल
11.	बेगार	-	बिना मज़दूरी के बलपूर्वक करवाया जानेवाला काम

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. गोदान की कथावस्तु को अपने शब्दों में लिखिए।
2. उपन्यास के तत्वों के आधार पर 'गोदान' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।
3. 'गोदान' के मुख्य पात्रों का परिचय देते हुए, गोदान उपन्यास के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. विषय तथा समस्या की दृष्टि से प्रेमचंद के उपन्यासों का संक्षेप में परिचय दीजिए।

2. गोबर के चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. होरी का चरित्र चित्रण कीजिए।

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. 'गोदान' उपन्यास के लेखक हैं?

(क) प्रेमचंद (ख) यशपाल (ग) जैनेन्द्र (घ) जयशंकर प्रसाद

2. प्रेमचंद किस प्रकार के उपन्यासकार हैं?

(क) आदर्शवादी (ख) यथार्थवादी

(ग) आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी (घ) मनोवैज्ञानिक

3. होरी की पत्नी का नाम क्या है?

(क) धनिया (ख) पुनिया (ग) मालती (घ) सिलिया

।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. गोदान उपन्यास में ..... जीवन की करूण त्रासदी का चित्रण है।

2. गोदान की कथा ..... गाँव की है।

3. गोदान उपन्यास का नायक ..... है।

।।। सुमेल कीजिए

(1) दातादीन	(क) हीरा की पत्नी
(2) सिलिया	(ख) गोबर की पत्नी
(3) झुनिया	(ग) गाँव का महाजन
(4) पुनिया	(ग) गाँव की चमारिन

6.8 पठनीय पुस्तकें

(1) डॉ० नगेन्द्र - हिंदी साहित्य का इतिहास

(2) इन्द्रनाथ मदान - गोदान: मूल्यांकन और मूल्यांकन

(3) गोदान (उपन्यास मूल पुस्तक) - प्रेमचंद

(4) हिंदी का गद्य साहित्य - डॉ० रामचन्द्र तिवारी

इकाई 7: गोदान : कृषक जीवन का महाकाव्य

इकाई की रूपरेखा

7.1 प्रस्तावना
7.2 उद्देश्य
7.3 मूल पाठ : गोदान : कृषक जीवन का महाकाव्य
7.3.1 भारत में किसान
7.3.2 ऋण-ग्रस्त किसान
7.3.3 शोषण के शिकार
7.3.4 मर्यादा के रक्षक
7.3.5 गाय की अभिलाषा
7.3.6 भाग्यवादी और परिश्रमी
7.3.7 अभिशप्त जीवन
7.4 पाठ का सार
7.5 पाठ की उपलब्धियाँ
7.6 शब्द संपदा
7.7 परीक्षार्थ प्रश्न
7.8 पठनीय पुस्तकें

7.1 प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है. हिंदी साहित्यकारों ने कविता, कहानी, उपन्यास और निबंध अनेक विधाओं के माध्यम से किसान समस्याओं को अपने रचनाओं में प्रस्तुत किया है. जैसे निराला की कविता 'बादल राग', मैथिलीशरण गुप्त की कविता 'किसान', शिव मूर्ति का उपन्यास 'आखरि छलांग', संजीव का उपन्यास 'फांस', पंकज सुबीर का उपन्यास 'अकाल में उत्सव' आदि. प्रेमचंद ने ही सर्वप्रथम हिंदी में किसान समस्या को अभिव्यक्त किया है. इन्होंने कथा साहित्य के माध्यम से किसान का दयनीय चित्रण प्रस्तुत किया है. उनका सबसे पहले किसान का चित्रण 'प्रेमाश्रम' उपन्यास में हुआ है. यह हिंदी का किसान पर आधारित पहला उपन्यास है. जिसमें किसानों का संघर्ष एवं समस्या को प्रस्तुत करता है. इसके पश्चात् 'कर्मभूमि', 'गोदान' के साथ-साथ कहानी जैसे 'कफ़न', 'पूस की रात', 'सवा सेर गेहूँ' आदि कहानियों में किसान जीवन प्रस्तुत किया है. इस इकाई के अंतर्गत हम गोदान में किसान की चर्चा करेंगे.

7.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के बाद आप –

- प्रेमचंद के विचारधारा से परिचित हो सकेंगे.
- प्रेमचंद के उपन्यास लेखन के बारे में जान सकेंगे.
- गोदान उपन्यास के कथा वस्तु के बारे में जानेंगे.

- गोदान भारत के किसान समस्या से परिचित हो सकेंगे.
- किसान जीवन से संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकेंगे.

7.3 मूल पाठ : कृषक जीवन का महाकाव्य

7.3.1 भारत में किसान

भारत देश एक ऐसा देश है जिसमें लगभग 75 प्रतिशत किसान रहते हैं. भारत की जनता अधिकांश गाँवों में निवास करती है और प्राचीन काल से उनका कृषि कार्य प्रदान रहा है. लेकिन तब से लेकर अभीतक किसान की स्थिति ठीक नहीं है क्यों कि वे जब खेत में दिन रात, धूप-बारिश, कीचड़ में लगातार मेहनत करने के बावजूद भी स्वयं अपने माल(उत्पाद) का मूल्य निर्धारित नहीं कर सकते हैं या प्रकृति आपदाओं से फसल का नुकसान होने से किसान हमेशा नुकसान या हानी में रहता है. वह गरीबी का जीवन जीता है. किसान की आर्थिक स्थिति इतनी बिकट होती है कि वह पहले ही ऋण से खेत में बीज और खाद डालकर फसल उगाता है. उस फसल से उसका ऋण भी पूर्ण नहीं कर सकता है. इसलिए वह ऋण के बोज से हमेशा परेशान रहता है. अततः वह आत्महत्या करने के लिए मजबूर हो जाता है. किसान आत्महत्या करने के कारण दो ही है जैसे – एक ऋण से और दूसरा प्रकृति आपदाओं से फसल का नुकसान है. यह दर्द भरी स्थिति भारत के किसान की रही है. इसलिए इनकी चर्चा लेखन के माध्यम से किया जा रहा है.

बोध प्रश्न –

- किसान आत्महत्या करने कारण कौनसे हैं ?

7.3.2 ऋण-ग्रस्त किसान

भारतीय किसान की सबसे बड़ी समस्या ऋण की है. जब वह अपने खेत में बीज एवं खाद डालने के लिए किसी महाजन से ऋण लेता है. प्राकृतिक आपदा के कारण फसल नष्ट हो जाती है या उसके फसल को बेचने के लिए सही दाम नहीं मिलता है तो वह ऋण चुकाने में असमर्थ रहता है. और उसके ऋण का ब्याज बढ़ते ही जाता है. ऐसी स्थिति में किसान आत्महत्या करने को बाध्य हो जाता है. नहीं तो अपने कर्ज को पूरा करने के लिए बेगारी करना पड़ता है. ऐसी ही स्थिति प्रेमचंद ने गोदान उपन्यास में प्रस्तुत किया है.

गोदान में होरी जैसे किसानों का जमींदार राय साहब ने शोषण करता है, ऐसा ही पूरे उपन्यास में होरी एकेला नहीं है उसके जैसे गाँव के अनेक किसान है. राय साहब जैसे जमींदार दातादिन, झिंगुरी सिंह, दुलारी, नोखे राम आदि अनेक हैं. उपन्यास में होरी का भाई हीरा, होरी से अलग होकर तीन साल हो गए हैं फिर भी दोनों पर चार सौ – चार सौ का कर्ज था. झींगुर भी दो हल की खेती करता है मगर उस पर भी एक हजार का ऋण था. ऐसे ही कई किसान ऋण ग्रस्त थे. ऋण चुकाने की चिंता केवल होरी की नहीं उस जैसे अनेक किसान की है. प्रेमचंद होरी के बारे में कहते हैं कि "उसे संतोष था यही कि यह विपत्ति अकेले उसी के सिर पर न थी. प्रायः सभी किसानों का यही हाल था." यह कहा जाता है कि कर्ज मेहमान है जो एक बार

आ जाए फिर जाने का नाम नहीं लेता. होरी महसूस करता है कि इसी तरह उस पर कर्ज का सूद बढ़ता जाएगा और एक दिन उसका घर द्वार सब नीलाम हो जाएगा और उसके बच्चे निराश्रित होकर भीख माँगते फिरेंगे.

होरी दातादीन से बैल खरीदता है और उसे साठ रूपये दे देता है लेकिन और साठ रुपये बाकी रह जाता है. इतना होने पर भी होरी ने गाय खरीदना जिंदादिली का प्रतीक है. होरी का कर्ज इतना बोझ हो गया था कि जीवन जीना मुश्किल बन गया था.

प्रेमचंद ने किसानों की ऋण समस्या होरी के माध्यम से स्पष्ट किया है. होरी ऋण से इतना दब जाता है कि अपने ही बेटी रूपा का विवाह एक प्रौढ़ व्यक्ति रामसेवक से विवाह कर देता है और उससे 200 (दो सौ) रुपये लेता है. वह अपनी ही बेटी को बेचने लिए बाध्य हो जाता है. ऐसी ही दयनीय स्थिति सभी किसानों की है. सभी किसान ऋण ग्रस्त हैं और महाजनों, साहूकारों और जमींदारों के चंगुल फंसे नारकीय जीवन जीने को मजबूर हैं.

बोध प्रश्न –

- होरी और हिरा पर कितना कर्ज है ?
- प्रेमचंद ने अपने बेटी रूपा का विवाह प्रोढ़ व्यक्ति से क्यों करता है?

7.3.3 शोषण के शिकार

गोदान उपन्यास में होरी की आर्थिक स्थिति बिकट होने के कारण वह किसान से मजदूर बन जाता है. होरी किसान और मजदूर के रूप में शोषित हैं. जमीनदार, पटवारी, सूदखोर, महाजन, पुलिस, बिरादरी तथा धर्म के ठेकेदार यह सभी लोग होरी का शोषण करते हैं. इनके शोषण से होरी एक किसान से मजदूर बनने के लिए विवश करते हैं. गोदान उपन्यास में होरी के अतिरिक्त धनिया, हिरा, शोभा और सिलिया आदि सभी किसी न किसी प्रकार से शोषित होते रहते हैं. इसका मूल कारण धर्मांधता व मर्यादा का बंधन है. गोदान में गाँव और शहर में शोषण की प्रक्रिया समान्तर रूप से चलती है. गाँव में जमीनदार किसान का शोषण करता है तो शहर में मिल मालिक और पूंजीपति वर्ग मजदूर का शोषण करके अपने प्रभुत्व स्थापित करते हैं.

7.3.4 मर्यादा के रक्षक

आज भी आप गावों में चले जाए किसान आपको मान-सम्मान देगा. क्योंकि वह मर्यादा का रक्षक है. समाज के नियम, जाति-बिरादरी के नियम, बड़ों का मान-सम्मान, जमीनदार की जी-हुजूरी आदि मर्यादाएं की रक्षा करना उनका कर्तव्य समझते है. ऐसी ही गोदान में होरी अपने कर्त्तव्य के साथ न्याय करता है लेकिन उसके साथ कोई न्याय नहीं बल्कि शोषण करते हैं. गोदान में एक जगह रामसेवक कहता है –"थाना पुलिस कचहरी सब हैं हमारी रक्षा के लिए लेकिन कोई रक्षा नहीं करता. चारों तरफ से लूट है. जो गरीब है, बेबस है, उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं"

किसान खेती को सम्मानजनक कार्य समझता है. होरी भी एक किसान है इसलिए वह खेती करना सम्मानजनक मानता है. सब उसका शोषण करते हैं. वह खेतिहर मजदूर बनकर रह जाता है. दाने दाने को मोहताज हो जाता है परंतु खेती छोड़कर मजदूरी नहीं करना चाहता.

एक बार विवश होकर वह मजदूरी करना चाहता है तो उसकी पत्नी धनिया कहती है – "कौन मुंह लेकर मजूरी करोगे, महतो नहीं कहलाओगे." वह बेचारा फिर खेती की मर्यादा का पालन करने लगता है. गोदान उपन्यास के सभी किसान उसी मर्यादा का पालन कर रहे हैं.

बोध प्रश्न –

- होरी के अलावा और कौन कौन शोषित हैं ?
- मर्यादा का रक्षक कौन होता है ?

7.3.5 गाय की अभिलाषा

गाँव में किसान जीवन में एक गाय होना प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है. ऐसे ही होरी की एक इच्छा होती है कि अपने घर के सामने भी एक गाय बंधी हो. जब बेटे के ब्याह वाले आएगें और लोग पूछेगे कि यह किसका घर है. होरी गाय से अपने को मान सम्मान को बढ़ाना चाहता है. इसलिए उन्होंने गाय को खरीदना चाहता है. जिससे वह दूसरे किसानों से अलग पहचान बन सके. संयोग से भोला ने उधार पर गाय देता है. जब होरी के घर गाय आई थी तो होरी ने कहा था कि "आज मेरे मन की बड़ी भरी लालसा पूरी हो गई." लेकिन होरी का भाई हिरा की इर्ष्या भड़क उठती है और वह गाय को जहर देता है. गाय की मृत्यु से होरी का दुःख और बढ़ता है. इस गाय ने उसके जीवन को कई रूप में प्रभावित किया था. उधार पर लायी गयी गाय से होरी कर्जदार बनता है. इसी बीच बेटा गोबर और झुनिया का मेल हुआ इससे सामाजिक दंड भी भुगतना पड़ा. होरी ने भोला के पैसे नहीं दे सका इसलिए भोला ने उसके बैल ले जाता है. दुबारा बैल खरीद नहीं सका. होरी किसान से मजदूर बनना पड़ा. मजदूरी करते करते एक दिन होरी की मृत्यु हो जाती है और वह अंत तक गाय को खरीदने की इच्छा पूर्ति नहीं कर सका. लेकिन मृत्यु के बाद 'गोदान' की अपेक्षा कर रहें हैं. धनिया को आज मजदूरी में मिले पैसे होरी के ठण्ड हाथों पर रखकर मातादीन से कहती है- "महाराज घर में गाय है न बछिया, न पैसा. यही पैसे हैं, यही इनका गोदान है"

बोध प्रश्न –

- प्रेमचंद ने प्रतिष्ठा का प्रतीक किसे माना है ?

7.3.6 भाग्यवादी और परिश्रमी

किसान कार्य ऐसा है कि मेहनत के साथ साथ भाग्य भी होना चाहिए. क्योंकि बारिश आधारित पानी होने के कारण या अनावृष्टि तो कभी ओलावृष्टि के कारण उसकी फसल नष्ट हो जाती है. इसलिए किसान कितनी भी मेहनत कर ले उसे प्रकृति साथ देना जरुरी है. लेकिन गोदान में होरी खूब मेहनत करता है लेकिन उसके मेहनत का फल उसे प्राप्त नहीं होता है तब अपने आपको भाग्य मान लेता है. सब कुछ ईश्वर के भरोसे छोड़ देता है. जब गोबर जमीनदार राय साहब को कोसने लगत है तो होरी कहता है कि यह सब कर्मों का फल है. वहा कहता है कि रायसाहब ने पूर्व जन्म में अच्छे कर्म किए होंगे जिसके कारण उन्हें राजयोग मिला है. यह बातें पूरी तरह से भाग्यवादी के अनुकूल हैं. गोदान उपन्यास में भी होरी आरंभ से लेकर अंत तक

परिश्रम व भाग्य का राग अलापता है. बार-बार परिश्रम करता है और जब उसकी मेहनत का फल उसे नहीं मिलता तो उसे ही अपना भाग्य मान लेता है.

7.3.7 अभिशप्त जीवन

किसान जीवन एक अभिशप्त है. क्योंकि दिनरात खेत में मेहनत करने पर भी उसके मेहनत का हिस्सा न के बराबर मिलता है. किसान सबसे पहले तो खाद और बीज किसी महाजन से उधार लाता है. महाजन ने उस उधार को चक्र ब्याज लगता है. वह कर्ज बढ़ते ही जाता है. कर्ज मिठाने के चक्कर में किसान के पास कुछ नहीं होता है. ऐसी ही व्यवस्था गोदान उपन्यास में प्रेमचंद ने दिखाया है. इस उपन्यास में होरी दिनरात मेहनत करके फसल उगाता है परन्तु अन्न जैसे ही उगता है वैसे ही अन्न उठा लिया जाता है. होरी लिए घर में दाना तक नहीं मिलता. साहूकार, पंडित, पंच, दारोगा आदि सभी उन्हें लूटते हैं. लगान के अलावा नजराना, शगुन आदि न जाने कितनी परम्पराएं हैं जो किसान का शोषण करने के लिए बनाई गई है. किसान को कई बार बिना बैल का किसानी करनी पड़ती है. साहूकार कभी उनके बैलों को कुर्क कर लेता है, कभी उनकी गाय को . शुभ-अशुभ आदि सभी अवसरों पर ब्राह्मणों को दान देना पड़ता है. इसके अतिरिक्त कुछ ऐसी परंपरा भी गढ़ी गई हैं जो उन्हें दान देने के लिए बाध्य कर देती हैं. इतना कुछ होते हुए भी उन्हें सम्मान नहीं मिलता. अपमान व मार मिलता है. वास्तव में ही उनका जीवन अभिशप्त प्रतीत होता है.

बोध प्रश्न –

- शुभ-अशुभ पर किसे दान देना पड़ता है ?

7.4 पाठ सार

प्रेमचंद ने गोदान उपन्यास में भारतीय किसान की व्यथा को चित्रित किया है. गोदान में होरी की जो स्थिति है यह सभी भारतीय किसानों की है. किसान एक मेहनती, इमानदार, मर्यादा के रक्षक होते हुए, फिर भी उनके साथ जमीनदार, महाजन, दरोगा, पटवारी ,सूदखोर , बिरादरी तथा धर्म के ठेकेदार ,पुलिस आदि ने शोषण करते हैं. एक आम किसान अपनी इच्छा पूर्ति नहीं कर सकता है. होरी की इच्छा यही थी कि एक गाय घर के सामने बंधी हो इससे एक किसान का मान-सम्मान होगा. लेकिन यह भी नशीब नहीं है. होरी अपने ऋण से परेशान था. वह एक किसान से मजदूर बनने में विवश हो गया.

किसान अपने खेतों में मेहनत करता है लेकिन उसका फल देना भाग्य का खेल है. उसे किसी प्रकृति आपदा के कारण फसल का नष्ट होना या न होना यह उसका भाग्य है. किसान कर्ज लेकर ही कृषि करता है क्योंकि उसके पास पैसा न के बराबर होता है. जब कर्ज लेकर किसानी करता है तो उसके कर्ज बढ़ते जाता है और उस पर चक्र ब्याज लगाया जाता है. यह अपना कर्ज मिठाने के लिए ही पूरा जीवन लगा देता है.

प्रेमचंद ने गोदान में उपनिवेशवादी नीतियों से बर्बाद होते किसान का जीवन इसके लिए जिम्मेदार ताकतों की जो पहचान आज के 75साल पहले की थी वह आज भी समाज में उसी रूप में उपस्थित है. कृषकों की हालत में फर्क नहीं आया है बल्कि किसान का दरिद्रीकरण तेज ही हुआ है. किसानों खेती से सिर्फ कपड़ा और खाना नसीब हो जाए वहीं बहुत है.

7.5 पाठ की उपलब्धियां

इस इकाई का अध्ययन करने से निम्नलिखित उपलब्धियाँ प्राप्त हुए-

- भारतीय किसान की दयनीय व्यथा से परिचित हो चुकें हैं.
- गोदान में भारतीय किसान होरी की मेहनत और इमानदारी के प्रति लगन की जानकारी प्राप्त हुई.
- भारतीय किसान के शोषण के बारे में जानकारी से परिचित हो चुकें है.
- होरी का जीवन कर्ज के कारण कष्टमय बन जाता है. वह एक जमीनदार से मजदूर बनने में विवश हो जाना से परिचित हो चुकें है.
- किसान मेहनती और ईमानदार होने के बावजूद भी अपनी इच्छा पूर्ति नहीं कर सकता है.

7.6 शब्द संपदा

1. आपदाओं - विपदा, संकट, आफ़त, मुशीबत
2. ऋण - कर्ज, उधार, देनदारी, किसी से ब्याज पर लिया गया धन
2. बेगारी - वह व्यक्ति जिससे मुफ्त में और ज़बरदस्तीकाम लिया जाए.
3. प्रतीक - वह गोचर या दृश्य वस्तु जो किसी अगोचर या अदृश्य वस्तु के बहुत कुछ अनुरूप होने के कारण उसके गुण, रूप आदि का परिचय कराने के लिए उसका प्रतिनिधित्व करती हो, चिह्न, लक्षण
4. चंगुल - पकड़, गिरफ़्त, किसी व्यक्ति, मत या विचारधारा के प्रभाव में होने की वह अवस्था जिससे निकलना आसान न हो.
5. धर्मांधता - धर्म का अंधे की तरह अनुकरण करने का भाव, अज्ञानता
6. बिरादरी - एक जाति या समुदाय वाले लोग, रिश्तेदारी
7. कचहरी - न्यायालय, अदालत
8. बेबस - जिसका कोई वश न चले, असहाय, लाचार
9. विवश - लाचार, बेबस, मजबूर, जिसका परिस्थिति पर कोई वश न हो
10. अभिलाषा - इच्छा, कमाना, चाह आदि
11. शगुन - शुभ परिणाम सूचित करने वाले लक्षण
12. कुर्क - न्यायालय के आदेशानुसार अथवा राज्य या शासन द्वारा जब्त किया हुआ (माल या संपति)

7.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'गोदान' उपन्यास में किसान जीवन को विस्तृत रूप में वर्णन कीजिए ।
2. 'गोदान' कृषक जीवन का महाकाव्य है स्पष्ट कीजिए।
3. 'गोदान' में किसान जीवन की व्यथा अपने शब्दों में लिखिए।
4. प्रेमचंद का परिचय देते हुए उनका कृषक जीवन के प्रति विचार बताइए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'गोदान' में ऋण ग्रस्त किसान के बारे में लिखिए ।
2. होरी को किसान से मजदूर बनने को विवश क्यों होना पड़ा ?
3. प्रेमचंद का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
4. 'गोदान' में किसान का अभिशप्त जीवन बताइए ।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. गोदान में मुख्य किसान पात्र कौन है ? ( )

   (अ) होरी (आ) मेहता

   (इ) राय साहब (ई) कोई नहीं

2. 'गोदान' उपन्यास कब लिखा गया ? ( )

   (अ) 1922 (आ) 1932 (इ) 1936 (ई) 1938

3. 'गोदान' उपन्यास में होरी कौन है ? ( )

   (अ) अध्यापक (आ) डॉक्टर (इ) वकील (ई) किसान

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. प्रेमचंद का जन्म _____ वर्ष में हुआ है।
2. गोदान में किसान _____से ग्रस्त है।
3. होरी की एक इच्छा _____ खरदीने की थी।

III. सुमेल कीजिए

1. होरी	(अ) होरी का दामाद
2. राय साहेब	(आ) दार्शनिक
3. मेहता	(इ) जमीनदार

4. राम किशन (ई) किसान

7.8 पठनीय पुस्तकें

1. गोदान (उपन्यास) – प्रेमचंद
2. प्रेमचंद और उनका युग – डॉ. रामविलास शर्मा
3. उपन्यासकार प्रेमचंद की सामाजिक चिंता- सरिता राय

इकाई 8: गोदान: पात्र एवं चरित्र चित्रण

इकाई की रूपरेखा

8.1 प्रस्तावना

8.2 उद्देश्य

8.3 मूल पाठ: गोदान: पात्र एवं चरित्र चित्रण

8.3.1 पात्र परिचय

8.3.2 मुख्य पात्र होरी

8.3.3 होरी का चरित्र चित्रण

8.3.8 धनिया का चरित्र चित्रण

8.3.5 गौण पात्रों का चरित्र चित्रण

8.3.6 गौण पात्रों का चरित्र चित्रण

8.4 पाठ सार

8.5 पाठ की उपलब्धियाँ

8.6 शब्द संपदा

8.7 परीक्षार्थ प्रश्न

8.8 पठनीय पुस्तकें

8.1 प्रस्तावना

समाचार नई-नई घटनाअ हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद जी का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने हिंदी उपन्यास साहित्य को एक नई दृष्टि और यथार्थ की नई भूमि प्रदान की हिंदी उपन्यास की विकासयात्रा में प्रेमचंद जी के बहुमूल्य योगदान को देखते हुए आलोचकों ने उन्हें 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि से अलंकृत किया है। बहुआयामी प्रतिभा के धनी प्रेमचंद जी ने कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना, बाल-साहित्य आदि विधाओं में साहित्य लेखन किया। उनका रचना संसार बहुत बड़ा और समृद्ध है। हिंदी कहानी और उपन्यास की चर्चा प्रेमचंद जी के बिना अधूरी है। प्रेमचंद जी का साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने समय में रहा है। उनके कथा साहित्य में समकालीन परिस्थितियों का जो सूक्ष्म अंकन हुआ है, वह साहित्य की उत्कृष्टता का उत्तम उदाहरण है। हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकारों द्वारा अनेक उपन्यासों की रचना हुई है। इन उपन्यासों में कुछ उपन्यास अधिक चर्चित और प्रसिद्ध भी रहे हैं। लेकिन इन सभी उपन्यासों में प्रेमचंद जी का 'गोदान' सर्वाधिक

प्रसिद्ध, चर्चित एवं सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इसे कृषक जीवन का महाकाव्य भी कहा गया है। उपन्यास में यह कृषक जीवन होरी के माध्यम से चित्रित हुआ है। होरी पूरे भारतीय किसानों का प्रतिनिधित्व करता हुआ दिखाई देता है। अर्थात गोदान की कथा केवल अकेले होरी की कथा नहीं हैं, बल्कि पूरे भारतीय किसानों की कथा-व्यथा है।

उपन्यास में प्रेमचंद जी ने जमींदारी प्रथा का विरोध करते हुए छुआछूत, सामाजिक असमानता और भेदभाव जैसी समस्याओं को उजागर करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत उपन्यास मूलतः कृषक जीवन की समस्याओं को केंद्र में रखकर लिखा गया है। किसान जीवन के अलग-अलग पहलुओं को प्रेमचंद जी ने बारीकी से उपन्यास में उजागर किया है। वैसे तो इस उपन्यास में किसानों की ऋण-समस्या को केंद्र में रखा गया है। लेकिन उसी के साथ-साथ अन्य समस्याओं को भी प्रेमचंद जी ने रेखांकित किया है। गाँव की प्रकृति और वहाँ के जनजीवन का वास्तविक चित्रण उपन्यास में दिखाई देता है। कृषक जीवन की दुःखभरी कहानी को प्रेमचंद जी ने इतनी तल्लीनता और आत्मीयता से प्रस्तुत किया है कि ऐसा चित्रण हमें अन्य जगहों पर बहुत कम दिखाई देता है।

8.2 उद्देश्य

छात्रों ! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- प्रेमचंद के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होंगे।
- गोदान में चित्रित सामंती मनोवृति के बीच फँसे निम्न-वर्गीय समाज की स्थिति को जान सकेंगे।
- गोदान में चित्रित पात्रों को तथा उनकी चारित्रिक विशेषताओं को जान सकेंगे।
- गोदान में चित्रित समस्याओं से अवगत होंगे।

8.3 मूल पाठ: गोदान: पात्र एवं चरित्र चित्रण

8.3.1 पात्र परिचय

प्रस्तुत उपन्यास में पात्रों की भरमार है। उपन्यास में गाँव तथा शहर की दो कथाएँ एक साथ चलती हैं। अतः दोनों कथाओं से जुड़े अनेक ग्रामीण तथा शहरी पात्र उपन्यास में दिखाई देते हैं। लेखक प्रेमचंद ने कथा से ज्यादा चरित्र के विकास पर अधिक बल दिया है। इसलिए उपन्यास में इन सभी पात्रों का विस्तार से चित्रण हुआ है। गाँव के पात्रों में - होरी (नायक), धनिया (नायिका), गोबर (होरी का बेटा), झुनिया (गोबर की पत्नी), सोना और रूपा (होरी के पुत्री), रायसाहब (जमींदार), हीरा और शोभा (होरी के भाई), भोला (झुनिया के पिता), सिलिया (चमारिन स्त्री), मातादीन और दातादीन (ब्राह्मण बाप बेटे), दुलारी सहुआइन (दुकान की मालकिन), झिंगुरीसिंह, पटेश्वरीलाल (गाँव के साहूकार) आदि पात्र हैं। शहरी पात्रों में मेहता (दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर), मालती (डाॅक्टर एवं आधुनिक नारी), खन्ना (मिल मालिक),

गोविंदी (खन्ना की पत्नी), ओंकारनाथ (संपादक), मिर्ज़ा खुर्शीद, तंखा आदि पात्र हैं। इन पात्रों में से कुछ प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण एवं उनकी चारीत्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

8.3.2 मुख्य पात्र होरी

होरी गोदान उपन्यास का मुख्य पात्र एव ंनायक है। उपन्यास में आरंभ से लेकर अंत तक होरी की दयनीय और संघर्षपूर्ण कथा कही गई है। होरी भारतीय किसान वर्ग का प्रतिनिधि है। भारतीय किसान की समस्त विषमता को लेखक ने होरी के माध्यम से उजागर किया है। होरी हमेशा शोषक वर्ग के हाथों यातना सहने को मजबूर है। महाजनों की एक पूरी टोली सदैव उसका शोषण करती है। होरी हमेशा परिस्थितियों के सामने नतमस्तक होता दिखाई देता है। वह कभी विद्रोह नहीं करता। सरलता, ईमानदारी और उदारता जैसे गुण उसके चरित्र की सबसे बड़ी पूँजी है। लेकिन जीवनभर संघर्ष करनेवाले होरी के बारे में स्वयं लेखक ने लिखा है, "ऐसे प्राण की मृत्यु पर एक गौ भी दान करने को न हो, इससे अधिक जीवन की विडंबना और क्या हो सकती है?" उपन्यास में होरी की चरित्र जिस रूप में चित्रित हुआ है, उससे उसकी जो चारित्रिक विशेषताएँ उजागर होती हैं, वे निम्नांकित हैं।

8.3.3 होरी का चरित्र चित्रण

(1) परिवार के मुखिया की जिम्मेदारी निभानेवाला:-

बेलारी गाँव में रहनेवाला होरी अपने परिवार का मुखिया है। उसकी अपनी पाँच बीघा ज़मीन है। उसके परिवार में बेटा गोबर, दो बेटियाँ - सोना और रूपा तथा पत्नी धनिया आदि सदस्य हैं। वह कड़ी मेहनत करके फसल उगाता है, फिर भी उसे दो वक्त की भरपेट रोटी भी नसीब नहीं होती। अपनी ज़िंदगी की छोटी-छोटी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए उसे हमेशा महाजनों से कर्ज़ लेना पड़ता है। वह जानता है कि इस जीवन संघर्ष से छुटकारा पाना मुश्किल है। परिस्थितियों के सामने वह विवश बन जाता है। वह सोचता है कि अगर दोनों भाई अलग नहीं होते, तो आज उसके खेत में भी हलच ल रहे होते। उसके बच्चों को भी दूध नसीब होता। धनिया जब गौ हत्या का मुकदमा हीरा पर दायर करना चाहती है, तो परिवार की इज्जत बचाने के लिए होरी बेटे के सिर पर हाथ रखकर झूठी सौगंध खाता है। पुलिस द्वारा घर की तलाशी को घर की बेइज्जती समझता है। इसलिए कर्ज़ा लेकर दरोगा को रिश्वत देने को तैयार हो जाता है। हीरा गाँव छोड़कर भाग जाता है। हीरा की खेती करना वह अपना धर्म मानता है। बेटे गोबर के भाग जाने पर भी बहू झुनिया को अपने घर में रखता है। उसके कारण घर पर आए संकट का सामना करता है। वह अपनी बेटी सोना की शादी के लिए दो सौ रुपए का कर्जा लेता है। कर्ज के पैसों को ईमानदारी से चुकाने की मानसिकता भी रखता है। गोबर के बेटे के दूध का इंतज़ाम हो इसलिए एक गाय खरीदना चाहता है। इसलिए वह पत्थर तोड़ने का काम भी करता है। भाइयों के अलग होने पर भी होरी उनके प्रति पहले की तरह सद्भावना

रखता है। हीरा की पत्नी पूनिया का स्वभाव झगड़ालू होने पर भी उसे बहू मानता है। दमड़ी बंसौर चैधरी जब पूनिया को धक्का देता है तो होरी अत्यधिक गुस्से में आकर चैधरी को एक लात जमाकर कहता है, ''अब अपना भला चाहते हो चैधरी तो यहाँ से चले जाओ, नहीं तो तुम्हारी लाश उठेगी। तुमने अपने को समझा क्या है? तुम्हारी इतनी मजाल कि मेरी बहू पर हाथ उठाओ?'' भाइयों से अलग होने पर भी खून के रिश्ते के कारण वह पूनिया का अपमान अपना अपमान समझता है। वह भाई हीरा की मदद के लिए पत्नी धनिया को भी छोड़ने को तैयार हो जाता है वह सोचता है, ''धनिया से मेरा कोई संबंध नहीं जहाँ चाहे जाए वह जब इज्जत बिगड़ने पर आ गई तो इस घर में कैसे रह सकती है?'' खेती में पूनिया की सहायता करने पर भी होरी की बदनामी होती है। लोग कहते हैं कि उसने सारी उपज अपने लिए रखी एहसान के बदले चरित्र पर कलंक लगे जाने पर भी होरी अपना सरल और उदार स्वभाव नहीं छोड़ता। घर का मुखिया होने का अपना कर्तव्य वह निभाता जाता है।

बोध प्रश्न

- होरी की कितना बीघा अपनी ज़मीन थी?

(2) व्यवहार-कुशल:-

होरी रायसाहब के यहाँ निरंतर आता-जाता रहता है। इसका कारण है रायसाहब की कृपा-दृष्टि उस पर बनी रहे। उसका मानना है कि मालिकों से मिलते-जुलते रहने के कारण ही सब उसका आदर करते हैं। नही ंतो पाँच बीघे ज़मीन वाले किसान की क्या औकात है? किसी भी समय पैसे की एवं कर्ज़ लेने की ज़रूरत पड़ जाने पर कर्ज़ मिल सके, इसलिए वह महाजनों से अच्छे संबंध बनाए रखना चाहता है। होरी साहूकारों से हँसी-मज़ाक करके उनसे कर्ज़ लेना भी अच्छी तरह जानता है। जब वह पटेश्वरी और साहूकार की खुशामद करता है, तो उनकी वसूली के तकाज़े कम हो जाते हैं। साथ ही पुराना कर्ज़ बाकी होने पर भी नया कर्ज़ मिलता है। होरी रायसाहब के नाटक 'धनुष यज्ञ' में माली की भूमिका से सबको खुश कर देता है। वह पठान भेस में आए मेहता को अपने काबू में इसलिए करता है कि, वह रायसाहब को सुरक्षा दे सके तथा उन्हें प्रभावित कर सके।

(3) गरीबी तथा आर्थिक अभारों से भरा जीवन:-

होरी बहुत ही गरीब है। गरीबी तथा आर्थिक अभावों ने उसे पूरी तरह असहाय एवं लाचार बना दिया है। पैसे के अभाव में बच्चों के लिए दवा-दारू का इलाज न होने के कारण उसके तीन लड़के बचपन में ही मर गए थें। उसके लड़के गोबर के लिए दूध तक नसीब नहीं हुआ था। चालीस साल की उम्र में उसके गिरते स्वास्थ्य की ओर संकेत देते हुए धनिया कहती है ''तुम्हारी दशा देखकर मैं सुखी जाती हूँ कि भगवान यह बुढ़ापा कैसे कटेगा? किसके द्वार पर भीख माँगेंगे?'' होरी कहता है, ''साठ तक पहुँचने की नौबत न आ पाएगी धनिया। इसके पहले ही

चल देंगे।'' जाड़ों की रातों में खेत की रखवाली करने जाने पर सर्दी से बचने के लिए उसके पास जन्म के पहले के कंबल और पाँच साल पहले बनवाई गई फटी मिर्जई है। कड़ाके की सर्दी से बचने की यही साधन उसके पास हैं। पैरों को पेट में डालकर और हाथों को जांघों के बीच में दबाकर और कंबल से मुँह छुपाकर अपनी गर्म साँस से अपने को गर्म करने की वह चेष्टा करता है। किसान से मज़दूर बन जाना यह उसके जीवन की सबसे बड़ी दर्दनाक मजबूरी है। मातादिन के यहाँ मजदूरी करते समय उसे उसकी झिड़कियाँ सहनी पड़ती है। अन्याय सहना और परिस्थितियों से समझौता करना मानो उसकी नियति है। मजदूर बनकर अत्यधिक काम करने से वह बेहोश भी हो जाता है। ठेकेदार के यहाँ पत्थर की खुदाई करते समय उसे लू लग जाती है और वही उसके जीवन का अंत कर देती है। जीवन संघर्ष करते हुए बार-बार हारने पर भी वह हिम्मत नहीं हारता, बल्कि भाग्य से लड़ता रहता है।

(4) खेती की मर्यादा का पालन करनेवाला:-

होरी बहुत ही मेहनती और अपने काम के प्रति निष्ठा रखनेवाला किसान है। परिस्थिति चाहे जैसी भी हो वह हर हाल में किसानी को मर्यादाजनक कार्य मानता है। होरी अच्छी तरह जानता है कि, खेती करने से उसके एक दिन की मज़दूरी एक आने से भी कम है। फिर भी अपनी मर्यादा को बनाए रखने के लिए वह खेती में डटकर काम करना चाहता है। उसके लिए निरंतर संघर्ष करता रहता है। वह अपने बेटे गोबर से कहता है, ''खेती में जो मरजाद है, वह नौकरी में नहीं है।''

(5) भाइयों की प्रति प्रेम तथा अपनत्व रखनेवाला:-

अपने भाईयों से अलग होने पर भी होरी अपने दोनों भाई हीरा और शोभा से प्रेमपूर्ण व्यवहार बनाए रखता है। गाँव के सभी लोग जब उसकी गाय देखने आते हैं, तो उसे लगता है कि उसके भाई भी गाय देखने आ जाए। अतः वह उन्हें बुलाने उनके घर चला जाता है। वह यह भी जानता है कि हीरा ने ही गाय को ज़हर खिला दिया है, फिर भी भाई को बचाने के लिए वह कता है, ''मेरा सुबहा किसी पर नहीं है। सरकार गाय अपनी मौत से मरी है। बूढ़ी हो गई थी'' भाई हीरा को बचाने के लिए वह अपने बेटे की झूठी सौगंध खाता है। हीरा के भाग जाने से वह दुःखी होता है। उसके परिवार का आधार बनता है। हीरा लौटकर जब अपनी कहानी सुनाकर होरी से माफी माँगता है तब होरी को बहुत खुशी होती है।

(6) पिता होने का कर्तव्य निभानेवाला:-

उपन्यास में होरी एक अच्छे पिता के रूप में अपने कर्तव्यों को निभाने के लिए प्रयत्नशील दिखाया गया है। वह हमेशा अपने बच्चों का ख्याल रखता है। गोबर को बचपन में दूध न मिलने की बात उसे हमेशा कचोटती रहती है। उसका मानना है कि गोबर को यदि बचपन में दूध पीने को मिलता तो ताकतवर जवान बन जाता। गोबर के घर छोड़कर चले जाने पर भी वह अपने मन में बेटे के प्रति कोई दुर्भावना नहीं रखता। वह दो सौ रुपए का कर्ज़ा लेकर अपनी बेटी सोना

की शादी करता है। उसे मजबूरी में दो सौ रुपए लेकर रामसेवक से अपनी दूसरी बेटी रूपा की शादी करनी पड़ती है। इस बात से उसका मन बहुत दुःखी हो जाता है।

(7) सीधा-सादा मानवता प्रेमी किसान:-

होरी का स्वभाव बहुत ही सरल, भोला और निश्छल है। वह छल कपट करना नहीं जानता। उसकी कथनी और करनी में प्रायः समानता रहती है। परंतु कभी-कभी समय पड़ने पर थोड़े से स्वार्थ के लिए झूठ बोलना वह पाप नहीं समझता। समस्त मानव जाति के लिए उसके दिन में ममत्व और सहानुभूति है। किसी दूसरे की असहायता का फायदा उठाना वह नहीं जानता। भोले के पास भूसा ना होने का फायदा उठाकर वह तुरंत उसकी गाय अपने लिए ले सकता था। परंतु गाय की रस्सी भोला को लौटाते हुए वह कहता है, "रुपया तो दादा मेरे पास नहीं। हाँ, थोड़ा-सा भूसा बचा है, वह तुम्हें दूँगा। चलकर उठा लो। भूसे के लिए तुम गाय बेचोगे और मैं लूँगा। मेरे हाथ न कट जाएँगे।" अपने घर में भूसे की कमी होने पर भी वह भोले को तीन खौंचा भूसा उसे देता है।

(8) यथार्थ चरित्र के रूप में प्रस्तुत:-

उपन्यास में होरी अपने समस्त गुण-दोषों को लेकर एक यथार्थ चरित्र के रूप में हमारे सामने आता है। कुछ फायदे के लिए होरी आम आदमियों की तरह झूठ भी बोलता है। वह भोले को सगाई का झूठा आश्वासन देकर उससे गाय लेना चाहता है। लेकिन उसी वक्त उसकी अंतरात्मा उसे धिक्कारती है। वह कहता है, "किसी भाई का नीलाम पर चढ़ा हुआ बैल लेने में जो पाप है, वह इस समय तुम्हारी गाय लेने में है।

बोध प्रश्न

- होरी को गाय कौन देता है?

"वह सोचता है कि अगर वह भोले के पैसे समय पर नहीं लौटाता तो भोला पैसे माँगने आएगा, गुस्सा करेगा, गालियाँ देगा, तो इसमें शर्म करने की कोई बात नहीं। उसका मानना है कि कभी कभी थोड़ा-सा छल करना जायज है। वह यह भी मानता है कि अपने पास कुछ आने पर भी महाजन से झूठ कहना, बेचते समय सन को गिला करके बेचना, रूई में बिनौले भरना गरीबी तथा दरिद्रता की मजबूरियाँ है और यह कोई बुरी बातें नहीं हैं। होरी बाँस बेचते समय भी अपने भाई से ढाई रुपए की बेईमानी करने का प्रयत्न करता है। इससे होरी को अपने आप पर बहुत पछतावा होता है। खलियान में जब सारा अनाज तुल जाने पर जमींदार और महाजन अपना हक ले जाने के बाद उसके पास केवल पाँच शेर अनाज बचता है। अतः वह चुपके से रातों-रात भूसा छिपाता है। पुनिया पर हाथ उठानेवाले चैधरी को लात मारता है, परंतु खुद सभी के सामने धनिया की पिटाई करता है। पर इस बात का भी उसे पश्चाताप होता है। इसलिए

तो वह मरते समय धनिया से माफी माँगता है। भोला की गाय के रुपए देने में देर करता है और फिर सोचता है जो आदमी हम पर इतना विश्वास करें, उसके साथ धोखा करना नीचता है।

(9) धार्मिक विश्वास में पूर्ण आस्थावान एवं भाग्यवादी:-

होरी का भाग्यवाद और कर्मवाद पर पूरा विश्वास है। समाज में प्रचलित सभी धार्मिक विश्वासों में होरी की पूरी तरह से आस्था है। प्राकृतिक आपदाओं और ईश्वर के रौद्र रूप से वह सदा आशंकित रहता है। उधार लिए पैसों को चुकाना वह अपना धर्म मानता है। उसका मानना है कि उसकी गरीबी और दु:ख-दर्द की स्थिति यह सब उसके पूर्व जन्म के पाप का फल है और सब प्रकार का सुख भोग रहे। रायसाहब उनके पूर्व जन्म के पुण्य का फल है। एक स्थान पर वह गोबर से कहता है "बेटा छोटे-बड़े भगवान के घर से बनकर आते हैं। संपत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है। उन्होंने पूर्व-जन्म में जैसे कर्म किए हैं, उसका आनंद, भोग रहे हैं। हमने कुछ संचा नहीं तो भोगे क्या?" वह ब्राह्मण और पंचों को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता है। इसीलिए उनके अनुचित निर्णय को भी सर झुकाकर स्वीकार कर लेता है। जब भोला बैल खोलकर ले जाने के लिए आता है तो होरी उससे कहता है अगर तुम्हारा धर्म कहे तो बैल खोलकर ले जाओ जब भोला सचमुच बैल ले जाता है, तो होरी इसे भाग्य का विधान मानता है।

(10) कर्ज़ के शोषण का शिकार:-

आर्थिक अभाव के कारण होरी को निरंतर कर्ज़ा लेना पड़ता है। इसी कर्ज के कारण उसके जिंदगी की परेशानियाँ बढ़ती जाती हैं। दातादीन जैसे पाखंडी ब्याज का अधिक दर लगाते हैं, यह जानते हुए भी होरी उनके रुपए चुकाता है। बिरादरी में अपनी इज्जत बनी रहे इसलिए अपनी औकात के हिसाब से होरी सामाजिक कार्यों में खर्च करता है। चाहे उसके लिए कर्ज भी क्यों न लेना पड़े भाईयों से अलग होते समय उसने जो कर्जा लिया था वह बढ़ता ही जाता है, जो उसे ही चुकाना पड़ता है। होरी आलू बोने के लिए दातादीन से तीस रुपए का कर्ज़ा लेता है। आलू तो चोर ले जाते हैं, लेकिन तीस रुपए का कर्ज़ा ब्याज सहित दो सौ रुपए हो जाता है। होरी सोचता है कि इस तरह ब्याज बढ़ता जाएगा तो एक दिन उसके घर द्वार की नीलामी निश्चित हो जाएगी।

(11) धर्म मर्यादा की रक्षा करनेवाला:-

होरी धर्म की मर्यादा की रक्षा करने के लिए बिरादरी का विरोध होने के बावजूद बहू झुनिया को घर में रखकर सारी परेशानियों का सामना करता है। बिरादरी का दंड भरने के लिए वह अपना मकान गिरवी रखता है। मातादिन जब सिलिया का परित्याग करता है, होरी उसे अपने घर में शरण देता है। वह हमेशा मानवता धर्म का पालन करता है। चाहे उसके लिए उसे कितनी ही विपत्ति का सामना करना पड़े। होरी धनिया की फटकार सहता है। पुत्र के व्यंग्य वचन सहता है। महाजन की गालियाँ, मालिक की धमकियाँ आदि सभी को सहते हुए एक वीर

योद्धा की तरह अंत तक जीवन संघर्ष करता रहता है। अंत में वह मिट जाता है, लेकिन उसका इस तरह मिटना हार नहीं है, बल्कि कर्म के लिए एक प्रकार की प्रेरणा है। उसका मर जाना केवल मरना नहीं है, बल्कि मर कर भी अमर हो जाना है। एक किसान के रूप में अपना अस्तित्व बनाए रखने का वह अंत तक प्रयास करता है। स्वयं लेखक के शब्दों में, ''जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ मानो उसके चरणों पर लोट रही थी। कौन कहता जीवन संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह हर्ष, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इसी हार में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे वस्त्र उसकी विजय पताकाएँ हैं।''

8.3.4 धनिया का चरित्र चित्रण

धनिया होरी की पत्नी है। वह उपन्यास की नायिका है। होरी के साथ गृहस्थी चलाते हुए और आनेवाली परेशानियों का सामना करते-करते छत्तीस साल की उम्र में ही वह बूढ़ी बन चुकी है, उसके बाह्य व्यंितव को लेकर लेखक ने लिखा है, ''उसकी अवस्था छत्तीस वर्ष की है पर सारे बाल पक गए थे, चेहरे पर झुर्रियां पड़ गई थीं। सारी देह ढल गई थी, सुंदर गेहूँआ रंग सांवला हो गया और आँखों से कम सुझने लगा था। इस चिरस्थायी जीर्णावस्था ने उसके आत्मसम्मान को उदासीनता का रूप दे दिया था।'' एक भारतीय नारी की तरह धनिया हर सुख-दुःख में, संकट की घड़ी में हमेशा अपने पति का साथ देती है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

(1) ऊपर से कठोर लेकिन हृदय से कोमल:-

धनिया होरी के सीधे-सादे व्यंितव पर गुस्सा करती रहती है। वह इस बात को लेकर होरी को फटकारती भी है। उसके व्यवहार कुशल न होने कारण उसकी अन्य लोगों से ज्यादा बनती नहीं है। डाॅ. रामविलास शर्मा के शब्दों में, ''वह ऊपर से कठोर है, लेकिन हृदय से बहुत कोमल है। प्रेमचंद के नारी पात्रों में वह अन्यतम है। उसके बराबर न कोई परिश्रम करनेवाली है, न और किसी पर सरस्वती की ऐसी कृपा है।'' धनिया पूरे गाँव में अपने झगड़ालू स्वभाव के कारण प्रसद्धि है। अतः गाँव के महाजन उसका सामना करने से डरते हैं। परंतु हृदय से वह कोमल एवं दयालु है। दीन और दुःखियों के प्रति सहानुभूति होने से वह उन्हें अपने घर में आश्रय भी देती है। पूरे गाँव तथा बिरादरी का विरोध होने के बावजूद भी वह पाँच महीने की गर्भवती झुनिया को अपने घर में रखती है। साथ ही घर से निकाली गई सिलिया को अपने घर में आश्रय देती है।

बोध प्रश्न

- धनिया स्वभाव से किस प्रकार की नारी है?

(2) मातृ स्नेही व्यक्तित्व:-

पाँच महीने की गर्भवती झुनिया जब घर आती है, तो इस बात की होरी को खबर देने वह खेत में जाती है। होरी इस बात को सुनकर अत्यधिक क्रोध में आता है। गुस्से में ही वह घर की ओर निकल पड़ता है और धनिया से कहता है, वह झुनिया का झोटा पकड़कर घर से बाहर निकल देगा। होरी का यह क्रोधित रूप देखकर धनिया का मातृत्व जाग उठता है। वह होरी से प्रार्थना करती है कि, ''देखो, तुम्हें मेरी सौंह उस पर हाथ न उठाना। वह तो आप ही रो रही है। भाग की खोटी न होती तो वह दि नही क्यों आता?'' प्रेमचंद जी के शब्दों में, ''धनिया का मातृ-स्नेह उस अँधेरे में भी जैसे दीपक के समान उसकी चिंता आकृति को शोभा प्रदान करने लगा। होरी को इस बीते यौवन में भी वही कोमल हृदय बालिका नज़र आई, जिसने पच्चीस साल पहले उसके जीवन में प्रवेश किया था। उस आलिंगन में कितना अगाध वात्सल्य था, जो सारे कलंक, सारी बाधाओं और सारी मूलबद्ध परंपराओं को अपने अंदर समेट लेता था।'' घर आकर दोनों पति-पत्नी झुनिया को सांत्वना देते हैं। धनिया की यही मातृत्व भावना हमेशा झुनिया की रक्षा करती है। पूरा गाँव धनिया से झुनिया को घर में रखने के कारण टोकता है, उसे घर से निकाल देने को कहते हैं। लेकिन धनिया सबको मुँह तोड़ जवाब देती है। जब सिलिया दातादीन और स्वयं उसके माँ-बाप द्वारा ठुकराने पर निराश्रित हो जाती है तब धनिया उसके प्रति करुणा प्रकट करते हुए कहती है, ''जगह की कौन कमी है बेटी? तू चल मेरे घर।''

(3) अन्याय का विरोध करनेवाली:-

उपन्यास में धनिया हमेशा अन्याय का विरोध करती दिखाई देती है। इस कारण वह अपने पति होरी से भी उलझती है। झुनिया को लेकर उसके घर पर बड़ी विपदा आ जाती है। होरी का हुक्का पानी बंद कर उस पर जुर्माना लगाया जाता है। होरी सर झुकाकर बिरादरी और पंचों के इस अन्याय को स्वीकार कर लेता है। परंतु धनिया इस अन्याय का विरोध करती हुई कहती है, ''पंचों गरीब को सताकर सुख न पाओगे। इतना समझ लेना हम तो मिट जाएँगे, कौन जाने इस गाँव में रहें या न रहें लेकिन मेरा सराप तुमको जरूर से जरूर लगेगा। मुझसे इतना बड़ा जरीमाना इसलिए लिया जा रहा है, कि मैंने अपनी बहु को क्यों अपने घर में रखा? क्यों उसको घर से निकाल कर सड़क की भिखारिन नहीं बना दिया? यही न्याय है?'' सिलिया को घर में रखने से दातादीन के बिगड़ने की बात होरी धनिया से कहता है। इस पर धनिया कहती है, ''बिगड़ेंगे तो एक रोटी बेसी खाँ लेंगे और क्या करेंगे? कोई उनकी दबैल हूँ। उसकी इज्जत ली, बिरादरी से निकलवाया, अब कहते हैं मेरा तुमसे कोई वास्ता नहीं। आदमी है कि कसाई'' इसी प्रकार भोला जब झुनिया को घर से निकालने के लिए आता है तो धनिया उसे भी फटकारती है। वह अन्याय को किसी भी तरह सहन करने के लिए तैयार नहीं होती। जब होरी हीरा के घर की

तलाशी बचाने के लिए दरोगा को रिश्वत देने जाता है तो धनिया बिना कोई परवाह किए उससे रुपए छिन लेती है और दरोगा से कहती है, " देख लिया तुम्हारा न्याय और अक्ल की दौड़। गरीबों का गला काटना दूसरी बात है, दूध का दूध और पानी का पानी करना दूसरी।" गाँव के पंचों और साहूकारों को सुनाते हुए कहती है, "ये हमारे गाँव के मुखिया हैं। गरीबों का खून चूसनेवाले। सूद, ब्याज, नजर-नजराना, घूस-घास जैसे भी हो गरीबों को लूटो उस पर सूराज चाहिए। जेल जाने से सूराज नहीं मिलेगा, सुराज मिलेगा धर्म से, न्याय से।" इस तरह धनिया अन्याय के खिलाफ आवाज़ हुई दिखाई देती है।

(4) स्वाभिमानी तथा दृढ़ चरित्र-वाली नारी:-

किसान से मज़दूर बनने के लिए विवश होने पर होरी और धनिया दातादीन के यहाँ मजदूर बनकर काम करना शुरू करते हैं। परंतु धनिया का स्वाभिमान एवं आत्मसम्मान थोड़ा भी कम नहीं होता। एक दिन दातादीन काम करते वक्त हाँफती हुई देखकर धनिया को डांटता है और कहता है, "अगर यही हाल है तो भीख भी माँगोगे।" इस पर धनिया तुरंत उत्तर देती है, "भीख माँगो तुम, जो भिखमंगों की जात हो। हम तो मजूर ठहरे, जहाँ काम करेंगे, वहीं चार पैसे पायेंगे।" विपदा की परिस्थिति में भी धनिया का यह उत्तर उसके स्वाभिमान और दृढ़ चरित्र को ही उजागर करता है। बेटी सोना के विवाह के समय में भी जब समधी दान-दहेज संबंधी चिंता न करने की बात करते हैं, तो धनिया का स्वाभिमान जाग जाता है और वह कहती है, "लेकिन हमें भी तो मरजाद का निर्वाह करना है। संसार क्या कहेगा? रुपया का मैल है। उसके लिए कुल-मरजादा नहीं छोड़ी जाती। जो कुछ हमसे हो सकेगा, देंगे और गौरी को लेना पड़ेगा।"

(5) सत्यवादिनी नारी:-

धनिया सत्यवादिनी नारी है। झूठ और दांभिकता से उसे घृणा है। धार्मिक आडंबरों को तथा थोथी मर्यादा को वह निस्सार मानती है। उसकी दृष्टि में मानवता ही मनुष्य का सबसे बड़ा गुण है। उसके संपूर्ण चरित्र का आधार सत्य और यथार्थ है। वह सत्य और करुणा की मूर्ति है। सत्य के लिए वह अपने पति होरी से भी उलझती है। वह होरी की तरह छल-फरेब करना नहीं जानती। कभी भी झूठ नहीं बोलती।

(6) संघर्षशील नारी:-

धनिया उपन्यास में निरंतर जीवन संघर्ष करती हुई दिखाई देती है। उसके जीवन का संघर्ष कभी ख़त्म नहीं होता। विवाह के बाद के दिन देवरों के पालन-पोषण में निकल जाते हैं। बाद में आर्थिक अभाव भरी स्थिति में उसे होरी की गृहस्थी चलानी पड़ती है। परिवार तथा बच्चों की चिंता में और निरंतर आनेवाली परेशानियों के कारण वह समय से पहले बूढ़ी हो जाती है। एक के बाद एक आनेवाली विपदाओं का धनिया डटकर सामना करती है। एक वीर और कर्मठ नारी के समान वह आनेवाले संकटों से कभी हार नहीं मानती। किसान से मजदूर बनने

पर धनिया पति के साथ मिलकर मजदूरी भी करती है। जीवन संघर्ष में वह अपने पति का साथ कभी नहीं छोड़ती। जिनकी उसने सहायता की वे भी उसे सताते एवं दुःख पहुँचाते हैं। उनके इस प्रकार के व्यवहार से उसका मन बहुत दुखी होता है। परंतु धनिया इन सभी बातों को स्वीकार कर अपनी ज़िंदगी जीती रहती है।

(7) होरी की जीवनसंगिनी और पतिव्रता नारी:-

धनिया के बारे में लेखक ने लिखा है, "कभी किसी ने उसे किसी दूसरे की ओर ताकते नहीं देखा।" एक बार पटेश्वरी ने उसके साथ छेड़-छाड़ करने का प्रयास किया था। धनिया ने उसका ऐसा मुँहतोड़ जवाब दिया था कि वह उसे भूल नहीं पाता। वह पति के कंधे से कंधा मिलाकर जीवन संघर्ष करती है।

परंतु हीरा के प्रसंग में जब होरी सभी के सामने उसे पिटता है, तो उसे वह सहन नहीं कर पाती और पति से बोलना छोड़ देती है। लेकिन जब होरी बीमार पड़ता है, तब धनिया अपने सारे मान-अपमान को भूलकर पति की सेवा करती है। उस समय वह कहती है, "पति जब मर रहा है तो उससे कैसे बैर। ऐसी दशा में तो बैरियों से बैर नहीं रहता, वह तो अपना पति है। लाख बुरा हो, पर उसी के साथ जीवन के पच्चीस साल कटे हैं। सुख लिया है तो उसी के साथ, दुःख भोगा है तो उसी के साथ। अब तो चाहे अच्छा हो या बुरा, अपना है।"

(8) ग्रामीण नारी समाज का प्रतिनिधि पात्र:-

उपन्यास में धनिया का अत्यंत स्वाभाविक रूप में चित्रण मिलता है। वह ग्रामीण नारी समाज के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है, जो अपने स्वाभिमान को बनाए रखते हुए जीवनभर गरीबी, दरिद्रता और शोषण के खिलाफ संघर्ष करते रहते हैं। वह जीवन में कभी हार नहीं मानती। उसमें नारी सुलभ अन्य गुण भी दिखाई देते हैं, जैसे अपनी प्रशंसा सुनकर खुश हो उठना, अपनों का ही विरोध देखकर चुप हो जाना। धनिया संकटों का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहती है। जिस तरह होरी जीवन भर संघर्ष करते हुए मर जाता है, उसी तरह धनिया भी संघर्षरत रहती है। वह बड़े साहस, धैर्य के साथ गृहस्थी की जिम्मेदारी को निभाती है।

(9) साहसी तथा निर्भीक नारी:-

धनिया गरीब है, परंतु किसी से डरती नहीं। जो उसके मन में है, उसे बेबाकी से बोल देती है। झुनिया और सिलिया के प्रसंग में पूरे गाँव का और बिरादरी का विरोध होते हुए भी उन दोनों को अपने घर में रखने का साहस दिखाती है। दरोगा को होरी जब रिश्वत दे रहा होता है, तब धनिया रिश्वत के पैसे छिन लेने का प्रयास करती है और दरोगा से ललकार से कहती है, "मैं

दमड़ी भी नहीं दूँगी, चाहे मुझे हाकिम के इजलास तक ही चढ़ना पड़े।'' धनिया वहाँ उपस्थित मुखिया, साहूकार, पटवारी किसी की भी परवाह न करते हुए सभी को सुनाती है। पंचों के अन्याय और दंड का विरोध करते हुए वह कहती है, ''पंचों, गरीब को सताकर सुख न पाओगे। इतना समझ लेना हम तो मिट जाएँगे, कौन जाने इस गाँव में रहें या न रहें, लेकिन मेरा सराप तुमको जरूर से जरूर लगेगा। मुझसे इतना बड़ा जरीमाना इसलिए लिया जा रहा है, कि मैंने अपनी बहु को क्यों अपने घर में रखा? क्यों उसको घर से निकाल कर सड़क की भिखारिन नहीं बना दिया? यही न्याय है?'' बिरादरी से निकाल दिए जाने की धमकी की उस पर कोई असर नहीं होता। वह कहती है, ''बिरादरी में रहकर हमारी मुकुत नहीं हो जाएगी। अब भी अपने पसीने की कमाई खाते हैं, तब भी अपने पसीने की कमाई खाएँगे।'' इस तरह सत्य की शक्ति धनिया को साहसी बना देती है। वह अपने निर्णय पर अटल रहती है।

(10) सहनशील नारी:-

धनिया दूसरों के लिए कष्ट सहती है। विवाह के उपरांत संयुक्त परिवार में देवर-देवरानियों के लिए कष्ट उठाती है। आराम की रोटी कभी नसीब नहीं होती, फिर भी अपने कर्तव्य से कभी मुँह नहीं मुखरती होरी उसके बारे में कहता है, ''बेचारी जब से घर में आई है, कभी भी आराम से नहीं बैठी। डोली से उतरते ही सारा काम सर के ऊपर ले लिया। तब देवरों के लिए मरती थी, अब बच्चों के लिए मरती है।'' अभावग्रस्त जीवन के कारण कई बार उसे सभी को खिलाकर पानी पीकर सोना पड़ा है। पति द्वारा पिटे जाने पर उसे भी सहन करती है। गाय खरीदने की लालसा से पति के साथ देर रात तक सुतली कातती है। होरी की सहधर्मिणी और सहकर्मिनी बनकर हमेशा साथ देती है। होरी जब भी संकट में होता है, तो उसका पक्ष लेकर उसकी रक्षा के लिए हमेशा तैयार रहती है। वह अपने माध्यम से होरी के चरित्र को पूर्णता प्रदान करती है। उसके बिना होरी का जीवन अधूरा लगता है।

8.3.5 गौण पात्रों का चरित्र चित्रण

(1) गोबर:-

गोबर होरी और धनिया का बेटा है। उसका स्वभाव अपने पिता से बिल्कुल विपरीत है। वह अन्याय को सहन नहीं करना चाहता, अतः उसका विरोध करता है। नई पीढ़ी का असंतोष उसीके माध्यम से प्रकट होता है। अभावग्रस्त जीवन और कर्ज के शोषण के कारण अपने पिता की असहायता देखकर गोबर का स्वभाव विद्रोही बन जाता है। उसे किसानी में कोई मर्यादा दिखाई नहीं देती। उसका मानना है कि पैसा ही सब-कुछ है। पैसा ही हमें समाज में प्रतिष्ठा

दिलाता है। उसके अनुसार, ''जिसके साथ चार पैसे गम खाओ, वही अपना खाली हाथ माँ-बाप भी नहीं पूछते।'' गोबर की चारित्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

(1) विद्रोही स्वभाव:-

गोबर भले ही होरी का पुत्र है, लेकिन उसका स्वभाव अपने पिता से बिल्कुल भिन्न है। उसने बचपन से अपने पिता को कड़ी मेहनत करते देखा है। छोटी-छोटी आकांक्षाओं की पूर्ति न होने से दुःखी होते देखा है। अतः जमींदार, महाजन आदि के अन्याय को देखकर वह विद्रोह करना चाहता है। लेकिन होरी उसे ऐसा करने से रोकता है। समाज में वह देखता है कि धन से ही व्यक्ति का सम्मान होता है। जिसके पास धन है, चाहे फिर वह चरित्रहीन हो, शोषक क्यों न हो समाज में उसकी ओर आदर की दृष्टि से देखा जाता है। गोबर इन सभी बातों को अच्छी तरह से समझता है। उसे होरी का बार-बार रायसाहब के यहाँ जाना पसंद नहीं, इसलिए वह कहता है, ''यह तुम रोज-रोज मालिकों की खुशामद करने क्यों जाते हो? बाकी न चुके तो प्यादा आकर गालियाँ सुनाता है, बेगार देनी पड़ती है, नजर-नजराना सभी तो हमसे भराया जाता है, फिर किसी को क्यों सलामी करें?'' गोबर के अनुसार, ''यहाँ जिसके हाथ लाठी है, गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।'' इसलिए वह किसी का भी अन्याय सहने के लिए तैयार नहीं होता। उसका कर्मकांड और भाग्यवाद पर भी विश्वास नहीं है।

(2) प्रोफेसर मेहता:-

प्रस्तुत उपन्यास में प्रोफेसर मेहता दर्शनशास्त्र के अध्यापक के रूप् में चित्रित हुए हैं। समाज में व्याप्त सभी समस्याओं पर वे अपने विचार व्यक्त करते हैं। शहरी बुद्धिजीवी लोगों की मानसिकता मेहता के माध्यम से उजागर होती है। उनकी चारीत्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

(1) स्पष्टवादी व्यक्तित्व:-

मेहता स्पष्टवादी व्यक्ति हैं। हमेशा सच बोलते हैं। वे किसी की भी निरर्थक प्रशंसा नहीं करते। शिकार के वक्त जंगली लड़की संबंधी डाॅ. मालती से निःसंकोच अपनी टिप्पणी देते हुए वे कहते हैं, ''कुछ बातें तो उसमें ऐसी है कि अगर तुममें होती तो तुम सचमुच देवी हो जाती।'' स्वयं लेखक ने उनके स्पष्टवादी स्वभाव के बारे में लिखा है, ''मेहता को कटु सत्य कहने में संकोच नहीं होता था। मेहता साहब स्त्रियों की सभा में जो भाषण देते हैं और स्त्रियों के सामने जो उनकी कटु और निष्ठुर आलोचना करते हैं, वह भी उनकी स्पष्टवादिता का ही प्रमाण है।''

मेहता शादी संबंधी अपना मत रायसाहब को सुनाते हुए कहते हैं, ''क्षमा कीजिएगा, आप ऐसा प्रश्न लेकर आए हैं कि, उस पर गंभीर विचार करना मैं हास्यास्पद समझता हूँ। आप अपनी शादी के ज़िम्मेदार हो सकते हैं। लड़के की शादी का दायित्व क्यों अपने ऊपर लेते हैं?

खासकर जब आपका लड़का बालिक है। और अपना नफा-नुकसान समझता है। कम से कम मैं तो शादी जैसे महत्व के मुकाबले में प्रतिष्ठा का कोई स्थान नहीं समझता।''

(6) जीवन संबंधी विचार:-

मेहता ने जीवन के दो मार्ग - प्रवृत्ति और निवृत्ति में से बीच के एक मार्ग को महत्व दिया है और वह मार्ग है - सेवा मार्ग। मेहता के अनुसार जीवन की सार्थकता इसी मार्ग को अपनाने में है। मेहता जीवन संबंधी अपनी धारणा गोविंदी को बताते हुए कहते हैं, ''जीवन मेरे लिए आनंदमय क्रीड़ा है। सरल, स्वच्छंद, जहाँ ईष्या और जलन के लिए कोई स्थान नहीं। मैं भूत की चिंता नहीं करता, भविष्य की परवाह नहीं करता, मेरे लिए वर्तमान सब कुछ है।'' मेहता के अनुसार मनुष्य को वर्तमान में जीना चाहिए। जीवन का आनंद लेते हुए हमें जीना आना चाहिए। हम निरर्थक बातों में उलझकर जीवन के आनंद में वंचित रहते हैं।

(14) शोषकों के प्रति घृणा का भाव:-

मेहता शोषण करनेवालों से घृणा करते हैं। इसीलिए, वे मिल मालिक मिस्टर खन्ना की ओर सम्मान की दृष्टि से कभी नहीं देखते। परंतु खन्ना के मिल में आग लगने के बाद खन्ना को अपने किए पर पश्चाताप होता है, तब मेहता खन्ना की इज्जत करते हैं। इस प्रकार मेहता एक आदर्श पात्र के रूप में उपन्यास में चित्रित हुए हैं। अपने चरित्र के माध्यम से पाठकों को प्रभावित करते हैं। उनके इस चरित्र से पाठकों को उनका अनुसरण करने की एक प्रेरणा मिलती है।

(3) रायसाहब:-

रायसाहब अमरपाल सिंह ज़मींदार है। वे सेमरी गाँव में रहते हैं। रायसाहब अपने समय के जमींदारों के प्रतिनिधि हैं। उनके चरित्र में दोहरापन दिखाई देता है। वे वास्तव में किसानों और मजदूरों का शोषण करते हैं। परंतु दिखाते हैं कि मुझे इन गरीब, दीन लोगों की कितनी चिंता है। मैं ही इन लोगों का हितचिंतक हूँ। समाज सेवक होने का वे केवल दिखावा करते हैं। उनकी चारीत्रिक विशेषताएँ निम्नांकित हैं।

(1) अपने फायदे के लिए भोले-भाले लोगों को अपने पक्ष में करना:-

रायसाहब हर समय अपना फायदा देखते हैं। किसान और मजदूरों की परेशानियों से उन्हें कोई लेना-देना नहीं है। उन्हें तो केवल अपनी पड़ी है। इसीलिए तो किसान होरी को अपने पक्ष में रखकर अपना स्वार्थ सिद्ध करना उनका मकसद है। वे अच्छी तरह जानते हैं कि होरी जैसे भोले-भाले लोग ही उनकी चिकनी चुपड़ी बातों से प्रभावित होकर उनकी प्रशंसा करेंगे। साथ ही अपने भाग्य की सराहना भी करेंगे। उनका मानना है कि इन लोगों के माध्यम से ही लगान वसूल करने के लिए एक प्रकार से मदद ही होगी। एक दिन वे होरी से बहुत ही आत्मीयता से बातें कर रहे होते हैं। परंतु उसी वक्त उनका एक नौकर आकर बताता है कि,

मजदूर बिना मजदूरी के काम करना नहीं चाहते। रायसाहब अत्यधिक क्रोधित हो जाते हैं और मज़दूरों को धमकाने के लिए चले जाते हैं। रायसाहब के परिवर्तित रूप को देखकर होरी भी सोचता है कि अभी-अभी तो रायसाहब कैसी नीति और धर्म की बातें कर रहे थें और अचानक इतने क्रोधित कैसे हो गए?

(2) देशप्रेमी होने का दिखावा करनेवाले:-

रायसाहब देशप्रेमी होने का केवल दिखावा करते हैं। सत्याग्रह आंदोलन में उनका सहभाग भी अपने स्वार्थ के लिए है। वे सत्याग्रह संग्राम में सहभाग लेकर यश एवं प्रसिद्धी प्राप्त करते हैं। कौंसिल की मेंबरी छोड़कर जेल जाते हैं। इससे लोगों की उन पर बड़ी श्रद्धा बनती है। लेकिन उनके इलाके में किसानों और मज़दूरों के लिए कोई छूट नहीं दी जाती। डांड और बेगार की सक्ती भी कम नहीं होती। परंतु बदनामी मुख्तारों के जिम्मे आती है। सब कुछ नही ंके कहने पर होता है। लेकिन लोगों को लगता है रायसाहब बहुत अच्छे हैं। चारों ओर उनकी अच्छाई की बातें होती है। वे गरीब किसानों और मज़दूरों से हँस कर बोल लेते हैं, तो लोग कृतकृत्य हो जाते हैं।

(4) डा. मालती:-

प्रस्तुत उपन्यास में मालती एक विकसनशील चरित्र है। उपन्यास के आरंभ से लेकर अंत तक वह एक कुतूहल के रूप में दिखाई देती है। मालती एक शहरी पात्र है। वह इंग्लैंड से डाॅक्टरी पढ़कर आई है। लखनऊ में वह प्रैक्टिस कर रही है। उसके रहन-सहन पर पश्चिमी प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। वह बाहर से फैशन वाली लगने पर भी भीतर से उसका चरित्र उदारता से युक्त है। उसकी चारीत्रिक विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

(1) पारिवारिक जिम्मेदारी को निभानेवाली:-

मालती के पिता शराबी हैं। वे हमेशा बीमार रहते हैं। मालती को दो बहने हैं। पिताजी पर पच्चीस हजार रुपयों का कर्ज़ होने पर भी वे उसके प्रति लापरवाह हैं। मालती अविवाहित है। वह खुद परिवार का सारा बोझ उठाती है। यह जिम्मेदारी उसे विवाह पर सोचने ही नहीं देती।

(2) पुरुष मनोविज्ञान की जानकार:-

मालती को पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकारी है। वह आमोद-प्रमोद के जीवन का सार-तत्व समझती है। वह पुरुषों को लुभाने और रिझाने में माहिर है। पुरुषों की भाँति घूमने-फिरने में वह कोई संकोच महसूस नहीं करती। विवाहित जीवन की अपेक्षा मालती अविवाहित जीवन में सफलता की किरणें देखती है। गोविंदी उसके आचरण से नाराज़ होकर रहती है, ''ऐसी औरतें समाज में हैं, तो पुरुषों के कान तो गर्म करती हैं।''

(6) विवाह बंधन में बंध जाना नहीं चाहती:-

मालती मेहता की सेवा, निस्वार्थ भावना, वीरता, आदर और आदर्श से प्रभावित होकर उनके प्रति आकर्षित होती है। परंतु शुरू में मेहता के मन में मालती के प्रति ऐसी कोई भावना

नहीं है। वे मालती के बारे में अपना मत स्पष्ट करते हुए उससे कहते हैं, "तुम सब कुछ कर सकती हो। बुद्धिमानी हो, चतुर हो, प्रतिभावान हो, दयालु हो, चंचल हो, स्वाभिमानी हो, त्याग कर सकती हो, लेकिन प्रेम नहीं कर सकती।" परंतु मेहता जब मालती को स्वीकार करना चाहते हैं, तब मालती विवाह बंधन में बंध जाना नहीं चाहती। वह लोकहित के लिए व्यापक क्षेत्र में बंधन-मुक्त होकर काम करना चाहती है। अपने संपूर्ण जीवन को समाज के लिए समर्पित कर देने के लिए वह विवाह के सीमित और स्वार्थपूर्ण दायरे को ठुकरा देती है।

8.4 : पाठ सार

प्रस्तुत उपन्यास के माध्यम से प्रेमचंद यह बताना चाहते हैं कि महाजनी युग में किसान के लिए अपने अस्तित्व को बनाये रखना असंभव हो गया था। उपन्यास का नायक होरी जीवनभर अपने अस्तित्व के लिए जीवन संघर्ष करता रहता है लेकिन अंततः उसे मज़दूर बनना पड़ता है। उपन्यास में लेखक ने समस्या से ज़्यादा चरित्र के विकास पर बल दिया है। इसीलिए होरी भारतीय किसान के मूर्तिमान सजीव रूप में हमारे सामने उपस्थित होता है।

उपन्यास के माध्यम से लेखक प्रेमचंद ने तत्कालिन समाज में पूँजीपति, ज़मींदार और साहुकार आदि के द्वारा शोषित, पीड़ित किसानों की करूण त्रासदी का चित्रण किया है। वह तत्कालिन समय में जितना प्रासंगिक था, आज भी उतना ही प्रासंगिक है। 'गोदान' आज भी नए परिप्रेक्ष्य में विचार के लिए प्रेरित करता है। यह औपनिवेशिक युग में किसानों के शोषण की कथा ही नहीं, समकालीन नव उपनिवेशवाद, भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ और उसके विमर्शों से सामना करनेवाली सच्ची रचना भी है।

8.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष उपलब्ध हुए हैं।

- गोदान उपन्यास में महाजनी सभ्यता का विरोध हुआ है।
- होरी का मेहनतकश कृषक जीवन और उसका गाय खरीदने का स्वप्न
- होरी द्वारा पंचों और साहूकारों का सम्मान करना जबकि धनिया और गोबर का स्वभाव विरोध और विद्रोह वाला होना।
- गांव से साहूकारों द्वारा किसानों और मज़दूरों का शोषण किया जाना।
- यह उपन्यास ग्रामीण भारतीय जीवन की कठोर वास्तविकताओं को उजागर करता है।
- 'गोदान' न केवल उपन्यास है, बल्कि समस्त भारतीय किसान जीवन का महाकाव्य है।

8.6 शब्द संपदा

1. साँझा - मेलजोल, समझौता
2. खूँखार - हिंसक

3. विपन्नावस्था - मुसीबत या संकट की स्थिति

4. अल्हड़ - उन्मुक्त, नियंत्रण रहित

5. पूँजीपति - धनिक, विभिन्न उद्योग - व्यवसाय में पैसे लगानेवाला

6. सामंतवाद - एक ऐसी शासन व्यवस्था जिसमें राज्य की ज़मीन ज़मींदारों

7. जायदाद - संपत्ति, धन-दौलत

8. आडंबर - झूठा दिखावा

9. ईट का जवाब पत्थर से देना - क्रिया के जवाब में कड़ी प्रतिक्रिया देना।

10. बेगार - बिना मज़दूरी के बलपूर्वक करवाया जानेवाला काम

6.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खण्ड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'गोदान' का नायक होरी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए

2. 'धनिया' के चरित्र में भारतीय नारी की विशेषताएँ उजागर होती है। विवेचन कीजिए।

3. 'गोदान' के गौण पात्रों का परिचय दीजिए।

खण्ड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. गोबर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

2. रायसाहब का चरित्र-चित्रण कीजिए।

3. डा. मालती का चरित्र-चित्रण कीजिए।

खण्ड (स)

। सही विकल्प चुनिए

1. प्रेमचंद का जन्म दिन इनमें से कौन सा है?

(क) 31 जुलाई 1880 (ख) 25 जुलाई 1881

(ग) 25 जुलाई 1882 (घ) 20 जुलाई 1880

2. 'गोदान' उपन्यास में किसके जीवन की करूण त्रासदी का चित्रण है?

(क) किसान (ख) ज़मींदार (ग) पूँजीवादी (घ) मध्य वर्ग

3. होरी के बेटे का नाम क्या है?

(क) गोबर (ख) रमेश (ग) सुरेश (घ) रामनाथ

।। रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. प्रोफेसर मेहता ..... विषय के अध्यापक थे।

2. गोबर एक ..... का युवक है।

3. गोदान ..... करना चाहता है।

।।। सुमेल कीजिए

(1) होरी	(क) मिल मालिक
(2) गोबर	(ख) होरी का भाई
(3) हीरा	(ग) होरी का पुत्र
(4) मिस्टर खन्ना	(घ) गोदान का नायक

8.8 पठनीय पुस्तकें

1. डा. नगेन्द्र - हिंदी साहित्य का इतिहास

2. प्रेमचंद - गोदान

3. इन्द्रनाथ मदान - गोदान मूल्यांकन और मुल्यांकन

4. डा. रामचन्द्र तिवारी - हिंदी का गद्य साहित्य

9. कफ़न: सारांश एवं पात्रों का विवेचन

इकाई की रुपरेखा

9.1 प्रस्तावना
9.2 उद्देश्य
9.3 मूल पाठ : कफ़न : सारांश एवं पात्रों का विवेचन
9.3.1 सारांश
9.3.2 कथावस्तु
9.3.3 पात्रों का विवेचन
9.3.4संवाद योजना
9.3.5 भाषा शैली
9.3.6 उद्देश्य
9.4 पाठ सार
9.5 पाठ की उपलब्धियाँ
9.6 शब्द संपदा
9.7 परिक्षार्थ प्रश्न
9.8 पठनीय पुस्तकें

9.1 प्रस्तावना

हिंदी कथा साहित्य में कथा सम्राट प्रेमचंद का बड़ा योगदान रहा है। वे समाज की समस्याओं को लेखन के माध्यम से प्रस्तुत किया है। लगभग 300 कहानियाँ तथा दर्जन भर उपन्यास लिखकर हिंदी साहित्य संसार में 'उपन्यास सम्राट' के रूप में जाने जाते हैं। उनके उपन्यास स्वयं में युग-जीवन के सजीव चित्र हैं। हिंदी का सामान्य से सामान्य पाठक भी उनके नाम से भलि-भांति परिचित है। जिस प्रकार काव्य के क्षेत्र में तुलसीदास जी ने जनसाधारण को प्रभावित किया, उसी प्रकार प्रेमचंद ने कथा- साहित्य के क्षेत्र में सामान्य पाठक को प्रभावित किया। इस इकाई में प्रेमचंद के जीवनवृत्त तथा उनके साहित्य- संसार पर दृष्टिपात करेंगे।

प्रेमचंद का किसान पर आधारित 'गोदान' उपन्यास हिंदी साहित्य में ख्याति प्राप्त किया है। प्रेमचंद की अंतिम कहानी 'कफ़न' हैं। इस कहानी के माध्यम से निम्न वर्ग के आलसी या कामचोर बेरोजगार की कहानी हैं। जो निम्न वर्ग से संबंधित है।

9.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने से आप –

- प्रेमचंद के लेखन के बारे में परिचित होंगे।
- 'कफ़न' कहानी के मूल संवेदना को जानेंगे।
- समाज में निम्न वर्ग से परिचित होंगे।
- प्रेमचंद के कहानी लेखन को जानेंगे।

9.3 मूल पाठ – कफ़न : सारांश एवं पात्रों का विवेचन

प्रेमचंद हिंदी साहित्य महत्वपूर्ण नाम हैं। उन्होंने सर्वप्रथम उर्दू में लेखन कार्य किया बादमें हिंदी में लेखन का प्रारंभ किया है। प्रेमचंद के कहानी संग्रह मानसरोवर नाम से आठ भागों में संकलित किया गया है। साहित्य अपने काल का प्रतिबिम्ब होता है। जो भाव और विचार लोगों के हृदयों को स्पंदित करते हैं, वही साहित्य पर भी अपनी छाया डालते हैं। प्रेमचंद के समग्र साहित्य पर दृष्टिपात किया जाए, तो उनके साहित्य की पृष्ठभूमि सामजिक ही रही है, जिनमें धार्मिक, साँस्कृतिक, आर्थिक तथा ऐतिहासिक घटनाओं का समावेश वहा है। उनका मानना था कि कथा-साहित्य काल्पनिक होते हुए भी सत्य है। यही वजह है कि उनकी कहानियां मनोरजन के बाबजूद भी अपनी सार्थकता सिद्ध करती थी। उनकी कहानियों का उद्देश्यों सदैव शिक्षा प्रदान करना था। प्रेमचंद ने तीन सौ (300) से अधिक कहानियाँ लिखी। उनकी लगभग सभी कहानियाँ मानसरोवर (आठ खंड) में संकलित हैं। प्रेमचंद के कहानियों में एक कफ़न कहानी भी बहुत महत्वपूर्ण है। 'कफ़न : सारांश एवं पात्रों का विवेचन' इकाई के अंतर्गत सारांश को देखेंगे।

प्रेमचंद की कहानियाँ ग्राम्य-जीवन की यथार्थवादी कहानियाँ हैं . उनमें निहित आदर्शवाद और कहानियों से निकलने वाला संदेश मानवतावादी चिंतनधारा से ओत-प्रोत है. प्रत्येक घर में घटनेवाली घटनाओं को प्रेमचंद ने अपने कहानी-साहित्य में चित्रांकित किया है. कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि प्रेमचंद की कहानियाँ समकालीन जीवन की प्रति-सृष्टि है. प्रेमचंद ने घटना, कथानक, चरित्र और संवेदना को ध्यान में रखकर कहानियाँ लिखी हैं. उन्होंने अपने सभी कहानियों को सबसे अधिक जीवन व्यापी, जनव्यापी और देशव्यापी बनाया है. प्रेमचंद की आरंभिक कहानियों में जमीनदार, किसान, देहाती, व्यापारी, इंजीनीयर, ठेकेदार, वकील, मौलवी, नमक के दरोगा, जमादार, अदालत के कर्मचारी, डिप्टी मैजिस्ट्रेट, देशसेवी, वकील के मोहर्रिर, कारिन्दा, पुलिस के दरोगा, चौकीदार आदि पात्र वर्णन का विषय बने हैं. इन कहानियों के अधिकतर पात्र पतोंमुख, अनैतिक तथा जर्जर दिखाई पड़ते हैं. इन पात्रों को 'कर्तव्य' से अधिक 'धन' प्रिय है. धनप्राप्ति के लिए वे सबकुछ करने के लिए व्यग्र प्रतीत होते हैं. धन भी वी अनुचित साधनों से प्राप्त करना चाहते हैं. इसप्रकार उन्होंने अपनी कहानियों में समाज की विभिन्न प्रकार की कपट-लीलाओं का चित्र उपस्थित किया है, परंतु कहानियों का अंत 'आदर्शात्मक' ही था.

9.3.1 'कफ़न': सारांश

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद एक महत्वपूर्ण कथाकार हैं इनकी कहानी 'कफ़न' में निम्न समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी का प्रारंभ चमार के कुनबे में एक झोपड़े के द्वारा पर बाप और बेटा(घीसू और माधव) दोनों बुझे हुए अलाव के सामने भूने-हुए आलू खाते हुए बैठे हैं और अंदर जवान बेटे(माधव) की पत्नी बुधियाँ प्रसव वेदना से तड़प रही थी, चीख रही थी कभी-कभी तो दिल हिला देने वाली आवाज निकलती थी उससे कलेजा थाम लेता था। फिर भी किसीने भी उठने की कोशिस नहीं की। जाड़ों की रात थी, पूरा गाँव सन्नाटा और

अंधकार में डूबा हुआ था। बुधियाँ की चीख सुनकर घीसू ने अपने बेटे को बुधियाँ के पास जाने के लिए कहा, लेकिन माधव के मन में यह चल रहा था कि अगर मैं बुधियाँ के पास जाऊँगा तो यह सारे आलू पिताजी खा लेंगे। यही विचार एक दूसरे के प्रति बाप बेटे के मन में चल रहा था। इसलिए वे कोई बुधियाँ के पास जाने को तैयार नहीं हैं । माधव कहता है 'मरना है तो जल्दी ही क्यों नहीं मर जाती।' प्रेमचंद ने यहाँ अमानवीयता को दिखाने का प्रयास किया है। उन दोनों को कितने दिनों से खाना नहीं मिला होगा वह खाने के लाले पड़े हैं।

घीसू और माधव दोनों बाप –बेटे आलसी, कामचोर, निठल्ले, अकर्मण्य, गरीब और निम्न वर्ग के हैं । घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम करता, माधव आधा घंटा काम करता है तो एक घंटा चिलम पीता इसलिए इन्हें कोई मजदूरी के लिए बुलाते नहीं नहीं। यह दोनों किसी दूसरों के खेतों से आलू-मटर चुराकर लाते हैं और उसे भुनकर खाते हैं। कभी-कभी जंगल से घीसू लकड़ी तोड़कर लाता है और उसे माधव बेच देता है ऐसा इनका निर्वाह चलता है। जब से बुधिया घर में आयी है तब से घीसू और माधव दोनों और आलसी बन गए थे। बुधिया ने घर में बड़ी मेहनत करके घर में व्यवस्था बनायीं रखी थी लेकिन जब से वह गर्भधारण की है तब से घर की परिस्थिति ख़राब होने लगी।

अंततः बुधियाँ की प्रसव वेदना से मृत्यु हो जाती है तो घीसू और माधव दोनों संवेदन हीन चीख-पुकार करने लगते हैं। घीसू गाँव के पूंजीवादी मुखिया के पास जाकर अपनी बहु की मृत्यु की खबर देता देता है और अपना रोना दोना करता है। बुधियाँ की मृत्यु हो जाती हैं तो उनके पास कफ़न के लिए भी पैसे नहीं होते हैं।अतः गांव वालों ने चंदा एकटा करके घीसू को देते हैं। घीसू और माधव दोनों कफ़न लेने बाजार जाकर कफ़न के बजाय शराब और पुड़ी सब्जी का सेवन करते हैं। होटल के सामने खड़ा भिकारी को बची हुई पूरी सब्जी देकर अपने आपको बहुत पुण्य का काम किया है समझते हैं। नशे में ही बुधिया को आशीर्वाद देते हैं झूमते हुए गिर पड़ते हैं।

बोध प्रश्न -

- कफ़न कहानी का सारांश संक्षिप्त बताइए।

9.3.2 पात्रों का विवेचन

9.3.2.1 घीसू-

हिंदी कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखित यथार्थवादी कहानी 'कफ़न' में घीसू एक महत्वपूर्ण पात्र है तथा कहानी में प्रारंभ से अंत तक रहता है। प्रेमचंद ने निम्न वर्ग के पात्र घीसू को लेकर उसके मन की कुप्रवृतियों को प्रस्तुत किया गया है। घीसू एक आरामतलब, अकर्मण्य, निठल्ले, निर्मम-निष्ठुर व कठोर व्यक्तित्व का है। घीसू कामचोर, आरामतलब होने के कारण उसमें चोरी करने की प्रुवृति विद्यमान थी। जब वह गाँव के लोग राम एमिन सो जाते हैं तो दूसरों के खेतों से आलू-मटर लाकर उसे भुनकर खाते थे। दस पांच उख भी चोरी करके उसे रात में चूस लेते थे। जमींदारों ने भी उसे चोरी करते हुए पकडे पर बहुत पीटा था। वह एक निम्न वर्ग से हैं, गरीब, आलसी और कामचोर भी है। घीसू एक दिन काम करता है तो तीन दिन आराम

करता है। इसलिए उसे कोई मजदूरी के लिए भी नहीं बुलाते। कभी –कभी घर में तीन चार दिन का फांका पड़ जाता है तो वह जंगल में जाकर लकड़ी तोड़कर लाता है और उसे माधव बेच देता है। यही कार्य करने में घीसू के साठ साल पुरे हुए। जब से बुधियाँ घर में आयी तब से तो बहुत ही आलसी बन गया है।

घीसू का निर्मम निष्ठुर व कठोर व्यक्तित्व का व्यक्ति था क्योंकि उसके पुत्र की पत्नी बुधियाँ प्रसव पीड़ा से तड़प रही है फिर भी यह बाहर आराम के साथ आलू खाते रहा। घीसू ने कोई जल्द बाजी नहीं की, न उसके लिए किसी प्रकार की दवा-दारु और न दाई की व्यवस्था की। वह अंधर तड़पती रही और मृत्यु के मुख तक पुहँच गई थी। लेकिन घीसू ने आलू खाने में ही मग्न रहा है। बुधियाँ को देख कर आने के लिए घीसू माधव से कहता है लकिन माधव मना कर देता है। इसलिए किसी न किसी रूप में घीसू भी बुधियाँ की मृत्यु का जिम्मेदार ठहरता है। और घीसू कहता है – "मेरी औरत जब मरी थी, तो मैं तीन दिन उसके पास से हिला तक नहीं।" घीसू की निर्ममता- निष्ठुरता उस समय चरम सीमा को छू जाती है जब वह बुधिया की मृत्यु होने पर उसके कफ़न लाने के लिए जाते हैं तो कफ़न के बजाय शराब पिता है और पूरी- सब्जी खाता है। इसलिए वह निष्ठुर, निर्मम व कठोर व्यक्ति के रूप में चित्रित हुआ है।

प्रेमचंद ने घीसू को एक विचारवान व्यक्ति के रूप में भी स्वीकार करते हैं – "घीसू किसानों से कहीं ज्यादा विचारवान था और किसानों के विचारशून्य समूह में शामिल होने के बदले बैठकबाजों की कुत्सित मंडली में जा मिला था। हाँ उसमें वह शक्ति न थी कि बैठकबाजों के नियम और नीति का पालन करता। इसलिए जहाँ उसकी मंडली के और लोग सरगना और मुखिया बने हुए थे, उस पर सारा गाँव उंगली उठाता था। फिर भी उसे यह तसकी न होती थी कि अगर वह फाटे हाल है तो कम से कम उसे किसानों की सी तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती और उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेवजह फायदे तो नहीं उठाते।" घीसू सामाजिक रुढियों का घोर विरोध करता है और उसकी धज्जियाँ भी उड़ाता है इसी के साथ पूंजीपतियों के धन-संग्रह पर व्यंग भी करता है, उनकी धजियाँ उड़ाते हुए कहता "अब तो सबको किफायत सूझती है। शादी-ब्याह में मत खर्च करो, क्रिया-कर्म में मत खर्च करो। पूछो गरीबों का माल बटोर-बटोरकर कहाँ रखोगे ? बटोरने में तो कोई कमी नहीं है। हाँ खर्च में किफ़ायत सूझती है।" इसी प्रकार से रूढी रीति-रिवाजों पर भी व्यंग्य करता है। कफ़न के अस्तित्व के बारे में स्पष्ट कहता है "कैसा बुरा रिवाज है कि जिसे जीते जी तन ढकने को चिथड़ा भी न मिले, उसे मरने पर नया कफ़न चाहिए।"

घीसू एक दार्शानिक की तरह अपने विचार को अभिव्यक्त करता है। घीसू मोह माया की बात करते हुए बुधिया को स्वर्ग निवासी मानता है और अपने बेटे को कहता है "हाँ बेटा, बैकुंठ में जाएगी। किसी को सताया नहीं किसी को दबाया नहीं। मरते-मरते हमारी जिंदगी की सबसे बड़ी लालसा पूरी कर गई। वह बैकुंठ में न जाएगी तो क्या वे मोटे-मोटे लोग जायेंगे, जो गरीबों को दोनों हाथों से लुटते हैं और अपने पाप को धोने के लिए गंगा में नहाते हैं और मंदिरों में जल चढाते हैं।"

इस प्रकार से घीसू एक गरीब, निठल्ला, कामचोर, झूठा, आलसी ब्यक्ति हैं न उसे मान-मर्यादा की चिंता हैं और न जवाबदेही का अपनी बहु सारी रात प्रसव पीड़ा से तड़पती रही लेकिन उसने उसके लिए कुछ नहीं किया न दवा-दारू, न डॉक्टर, न किसी दाई की व्यवस्था किया अतः वह चल बसी लेकिन घीसू आलू की दावत में ही लीन रहा। और बहु के ही कफ़न के पैसों से ही नशा की। उसमें बुधिया के प्रति किसी प्रकार की संवेदना नहीं जताई।

बोध प्रश्न -

- घीसू का व्यक्तित्व कैसा है ?
- घीसू के विचार पर प्रकाश डालिए।

9।3.2.2 माधव –

हिंदी कथा सम्राट प्रेमचंद द्वारा रचित कहानी 'कफ़न' में माधव एक महत्वपूर्ण पात्र हैं, क्योंकि वह बुधिया का पति और घीसू का बेटा हैं। माधव का भी अपने पिता के जैसा ही व्यक्तित्व हैं। वह आलसी, कामचोर, आरामतलब, निठल्ला और निष्ठुर हैं। जब उसकी पत्नी बुधिया प्रसव वेदना से तड़प रही है और वह माधव आलू खाने में मग्न था। उसे अपनी पत्नी की कोई चिंता नहीं थी इस से अधिक आलू खाने की थी। वह किसी प्रकार के दवा-दारू की व्यवस्था के लिए क्रियाशील नहीं था। जबकि वह बुधिया मरने की कमाना करता है। प्रेमचंद लिखते हैं –

"घीसू – मालुम होता है, बचेगी नहीं। सारा दिन दौड़ते हो गया, जा देख तो आ।

माधव – चिढ़कर बोला – मरना ही है तो जल्दी मर क्यों नहीं जाती ? देखकर क्या करूँ ?

घीसू – तू बड़ा बेदर्द है। वे साल भर जिसके साथ सुख-चैन से रहा, उसी के साह इतनी बेवफाई।"

माधव ने बुधिया के तड़पन को नहीं देख सकता है इसलिए वह बुधिया के पास जाने से मना कर देता है। लेकिन उसके अंतर्मन की बात तो यह है कि अगर मैं अंधर चले जाता हूँ तो यहाँ आलू नहीं रहेंगे। अपने पिताजी पर उसका विश्वास नहीं था। माधव का विवाह बुधिया के साथ एक साल पहले ही हुआ था । जब से बुधिया इस घर में आयी तब से इस घर में व्यवस्था स्थापित हुई। वह बहुत मेहनती थी। परिश्रम करके अपने पति और ससुर का पेट भरती थी। उसके आने से ही माधव और आलसी बन गया। अगर कोई माधव को काम के लिए बुलाता है तो उसे निर्लज्ज से दुगुनी मजदूरी मांगता हैं ।

माधव इतना कामचोर था कि वह आधा घंटा काम करता तो घंटे भर चिलम पीता था। इसलिए इसे गाँव के लोग मजदूरी को नहीं बुलाते थे। माधव ने अपने जीवन में कभी सम्पति बटोरने की चिंता नहीं किया, नहीं कभी अपने सुख-सुविधाओं के साधनों का संग्रह किया। प्रेमचंद उनके परिस्थिति का जीक्र करते हैं । "इनका घर में मिट्टी के दो-चार बर्तनों के सिवा कोई सम्पति न थी। फटे चीथड़ों में अपनी नग्नता को धाके हुए जिए जाते थे" माधव भी दूसरों के खेतों से आलू-मटर चुरा कर लाता और उसे भूनकर खाता था या किसी के खेत से पांच – दस

ऊख उखाड़ कर रात में चूसता था। ऐसे ही करने में घीसू ने साठ साल की जिंदगी काट दी और माधव भी अपने पिता के पद चिन्हों पर चल रहा था।

माधव ने घर में उपलब्ध सामग्री का आभाव का चिंता करता है "मैं सोचता हूँ कोई बाल-बच्चा हुआ, तो क्या होगा? सोंठ, गुड, तेल कुछ भी तो नहीं है घर में" घर में कुछ भी नहीं दो तीन फूटे हुए बर्तन और चीथड़ों से अपनी नग्नता को ढाँप लेता है।

कहानी में घीसू जैसा ही माधव भी विचारशील व चिंतनशील व्यक्ति है। वह भी रुढियों पाखंडों, ब्राह्मणों का खंडन करता है. माधव कहता है कि दुनिया का दस्तूर है, नहीं, लोग बेईमनों को हजारों रूपए क्यों देते हैं, कौन देखता है, परलोक में मिलता है या नहीं." ऐसी ही दूसरी जगह जहाँ कफ़न के पैसे खर्च कर देने पर सोचता है कि "कौन देगा ? रूपए तो तुमने चाट कर दिए। वह तो मुझसे पूछेगी। उसकी मांग में तो सिंदूर मैंने डाला था।" आगे और असमान की तरफ़ा देखकर कहता है "वह बैकुंठ में जाएगी दादा, बैकुंठ की रानी बनेगी।" नशे के दूंध में बडबडाता है "मगर दादा बेचारी ने जिन्दगी में बड़ा दुःख भोगा। कितना दुःख झेलकर मरी।"

कफ़न के लिए संकलित किया गया चंदा की राशी से शराब पीता है , कालेजिया खाता है तथा अचार चटनी के साथ पुरियां स्वाद का भोजन करता है। कफ़न के बजाय खा पीकर मस्त नशा करता है और बुधिया को आर्शीवाद देता है "जरुर-से जरुर होगा । भगवान रम अंतर्यामी हो। उसे बैकुंठ ले जाना। हम दोनों ह्रदय से आशीर्वाद दे रहे हैं।" माधव के लिए ऐसा भोजन जिंदंगी में पहली बार मिला है। ऐसा खाना कभी नहीं खाया वह भर पेट भोजन करके बची हुई पूरियां का पत्तल उठाकर एक भिकारी को देकर गौरव, आनंद और उल्लास का अपने जीवन में पहली बार प्राप्त किया।

इस प्रकार से प्रेमचंद ने कफ़न कहानी में माधव का चरित्र चित्रण प्रस्तुत किया है। माधव एक निम्न वर्ग, अकर्मण्य, कामचोर, आराम-तलब, निठल्ला, चोर और झूठा व्यक्ति है।इसी के साथ कहीं कहीं उसके विचार भी अच्छे प्रस्तुत किए हैं वह एक विचारक के रूप में उभरकर सामने आता है। कफ़न के पैसों से स्वादिष्ट भोजन और शराब का सेवन करके करता है।इस कहानी में बाप-बेटे दोनों में भी साम्य प्रवृति की पहचान दिखायी देती हैं।

बोध प्रश्न -

- माधव का व्यक्तित्व कैसा है ?
- माधव किसका बेटा हैं ?

9.3.4 संवाद योजना

माधव का अनुभव परिपक्व नहीं है। अतः वह घीसू के सामनें शंका करता है कि स्वर्ग में जाने पर बुधिया यदि कफ़न के बारे में पूछेगी तो वह क्या कहेगा ? इस पर घीसू जवाब देता है – "तू कैसे जानता है कि उसे कफ़न न मिलेगा ? तू मुझे गधा समझता है साठ साल दुनिया ममें घास खोदता रहा हूँ। उसको कफ़न मिलेगा और बहुत अच्छा मिलेगा। माधव को विश्वास न आया । बोला – कौन देगा? रुपये तो हमने चट कर दिये । वह तो मुझसे पूछेगी। उसकी मांग में सिंदूर तो मैंने डाला था।"

घीसू गर्म होकर बोला – मैं कहता हूँ, उसके कफ़न मिलेगा मानता क्यों नहीं?
कौन देगा बताते क्यों नहीं ?
वहीँ लोग देंगे, जिन्होंने कि अब की दिया। हाँ, अबकी रुपये हमारे हाथ न आएँगे।
संवाद की यह प्रकृति घीसू और माधव के अंतर को स्पष्ट कर देती है। सम्पूर्ण कफ़न कहानी में घीसू और माधव का दृष्टिकोण पूर्ण जैसा लगता है, अपनी अमानवीयता में भी वह पूर्ण ही है। यह पूर्णता अनुभव सिद्ध है।

बोध प्रश्न -

- किस दोनों में संवाद हैं ?

9.3.5 भाषा शैली

कफ़न कहानी का शिल्प अत्याधुनिक है और इसी के अनुरूप इसकी भाषा भी काफी सहज, विकसित एवं समृद्ध है। प्रेमचंद हिंदी के सफलतम कथाकार थे और विवरण की भाषा का उपयोग वे के विश्वजनित कथाकार की तरह कर सकते थे। कफ़न कहानी की भाषा में परिस्थिति की विडम्बना को और चारित्रिक विसंगतियों की सूक्षमता को अभिव्यक्त करने की पूरी क्षमता मौजूद है।

9.3.6 उद्देश्य

कफ़न कहानी का अध्ययन करने का उद्देश्य यह है कि समाज में रूढी परंपरा का खंडन करके मानवता की और ध्यान आकर्षित करने का है। कफ़न कहानी एक यथार्थवादी कहानी है। इसमें समाज में व्याप्त शोषण व्यवस्था व उनके दुष्परिणामों को सशक्त ढंग से अभिव्यक्त किया जाता है। भूखे पेट ने बुधिया के कफ़न के पैसों से घीसू और माधव शराब और खाने में उड़ा देते हैं। इस लिए यह कहानी सामजिक लगती हैं।

इस कहानी में शोषण व्यवस्था का भी चित्रण हैं। इसमें घीसू और माधव काम न करने के वजह से भूखे रह रहे हैं लेकिन काम करने वाले के भी स्थिति उतनी अछी नहीं है। पूंजीवाद और साम्यवादी व्यवस्था ने मनुष्यता को पशुता की ओर धकेल दिया है। लेखक के अनुसार रात दिन मेहनत करने वाले की स्थिति कुछ अधिक ठीक नहीं थी। इसमें पूंजीवादी व्यवस्था का फर्दाफाश किया है।

भारतीय समाज एक अंधविश्वासों का मकडजाल में फंसा हुआ है। इस कहानी के माध्यम से इस अन्धविश्वास के मकडजाल को ख़त्म करने की कोशिश हैं।

9.4 पाठ सार

हिंदी साहित्य में प्रेमचंद एक महत्वपूर्ण कथाकार हैं इनकी कहानी 'कफ़न' में निम्न समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया गया है। इस कहानी का प्रारंभ चमार के कुनबे में एक झोपड़े के द्वारा पर बाप और बेटा(घीसू और माधव) दोनों बुझे हुए अलाव के सामने भूने-हुए आलू खाते हुए बैठे हैं और अंदर जवान बेटे(माधव) की पत्नी बुधियाँ प्रसव वेदना से तड़प रही थी, चीख रही थी कभी-कभी तो दिल हिला देने वाली आवाज निकलती थी उससे कलेजा थाम लेता था। बुधियाँ की चीख सुनकर घीसू ने अपने बेटे को बुधियाँ के पास जाने के लिए कहा, लेकिन माधव

के मन में यह चल रहा था कि अगर मैं बुधियाँ के पास जाऊँगा तो यह सारे आलू पिताजी खा लेंगे। यही विचार एक दूसरे के प्रति बाप बेटे के मन में चल रहा था। इसलिए वे कोई बुधियाँ के पास जाने को तैयार नहीं हैं । माधव कहता है 'मरना है तो जल्दी ही क्यों नहीं मर जाती।' प्रेमचंद ने यहाँ अमानवीयता को दिखाने का प्रयास किया है। उन दोनों को कितने दिनों से खाना नहीं मिला होगा वह खाने के लाले पड़े हैं।

घीसू और माधव दोनों बाप –बेटे आलसी, कामचोर, निठल्ले, अकर्मण्य, गरीब और निम्न वर्ग के हैं । दोनों एक गरीब, निठल्ला, कामचोर, झूठा, आलसी ब्यक्ति हैं न उसे मान-मर्यादा की चिंता हैं और न जवाबदेही का अपनी बहु सारी रात प्रसव पीड़ा से तड़पती रही लेकिन उसने उसके लिए कुछ नहीं किया न दवा-दारू, न डॉक्टर, न किसी दाई की व्यवस्था किया अतः वह चल बसी लेकिन घीसू आलू की दावत में ही लीन रहा। और बहु के ही कफ़न के पैसों से ही नशा की। उसमें बुधिया के प्रति किसी प्रकार की संवेदना नहीं जताई। माधव इतना कामचोर था कि वह आधा घंटा काम करता तो घंटे भर चिलम पीता था। इसलिए इसे गाँव के लोग मजदूरी को नहीं बुलाते थे।

9.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ –

- प्रेमचंद ने कहानी लेखन के माध्यम समाज का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।
- प्रेमचंद की कफ़न कहानी के माध्यम से निम्न वर्ग की परिस्थिति का ज्ञान प्राप्त हुआ।
- 'कफ़न' कहानी के माध्यम से पूंजीवादी व्यवस्था से परिचित हुए।
- इस कहानी के माध्यम से अमानवीयता को प्रस्तुत किया गया।
- सामाजिक रुढियों से परिचित हुए

9.6 शब्द संपदा

1. प्रसव	=	बच्चा जनने की क्रिया, बच्चे को जन्म देने की क्रिया
2. वेदना	=	असह्य कष्ट, पीड़ा
3. अकर्मण्य	=	आलसी, कामचोर
4. निठल्ला	=	जिसके पास कोई काम-धंधा न हो, बेरोजगार
5. कुत्सित	=	गंदा, घिनौना
6. चंदा	=	किसी की सहायतार्थ या किसी अच्छे काम के लिए इकट्ठी की गई रकम या कोई वास्तु, दान, भेंट

7. सिंदूर = एक प्रकार का लाल रंग का चूर्ण जिसे विवाहित हिंदू स्त्रियाँ अपनी माँग में भारती हैं.

8. बैकुंठ = विष्णुलोक, स्वर्ग

9. पाखंड = समाज के विरुद्ध किया जाने वाल धुर्तापूर्ण व्यवहार, छल-कपट, दिखावटी, आडंबर, ढोंग

10. निर्ममता = निर्मम होने की अवस्था या ममता का अभाव, निष्ठुरता

11. पूंजीपति = धनी, धनवान

12. बेदर्द = दूसरों की पीड़ा या कष्ट का अनुभव न करने वाला , निर्दय

9.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए ।

1. कहानी के तत्वों के आधार पर कफ़न कहानी का विश्लेषण कीजिए।
2. प्रेमचंद ने कफ़न कहानी के माध्यम से समाज क्या संदेश दे रहे हैं स्पष्ट कीजिए।
3. कफ़न कहानी की समीक्षा कीजिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए ।

1. कफ़न कहानी का सारांश लिखिए ।
2. कफ़न कहानी की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।
3. घीसू का चरित्र-चित्रण कीजिए ।
4. माधव का चरित्र चित्रण कीजिए।

खंड (स)

I. **सही विकल्प चुनिए।**

1. कफ़न कहानी कब लिखी गई?
   (अ) 1935 (ब) 1936 (क) 1835 (ड) 1836
2. घीसू किस कहानी का पात्र हैं ?
   (अ) कफ़न (ब) मंत्र (क) पंच परमेश्वर (ड) ईदगाह
3. माधव किस कहानी का पात्र हैं ?
   (अ) ईदगाह (ब) पंच परमेश्वर (क) मंत्र (ड) कफ़न
4. बुधिया किस कहानी की पात्र हैं ?
   (अ) ईदगाह (ब) पंच परमेश्वर (क) कफ़न (ड) मंत्र

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. प्रेमचंद का जन्म _____ वर्ष में हुई ।
2. प्रेमचंद के कफ़न कहानी में _____का वर्णन है।
3. प्रेमचंद के कफ़न कहानी के मुख्य पात्र _____और _____- है।
4. कफ़न कहानी का प्रकाशन वर्ष _____हैं ।

III. सुमेल कीजिए।

1. कफ़न	(अ)	1933
2. ईदगाह	(ब)	1936
3. रंगभूमि	(क)	1918
4. सेवासदन	(ड)	1925

9.8 पठनीय पुस्तकें

1. प्रेमचंद की प्रतिनिधि कहानियाँ-
2. प्रेमचंद : कलम का सिपाही, अमृत राय
3. प्रेमचंद : एक कृति व्यक्तित्व, जैनेंद्र कुमार
4. प्रेमचंद : घर में, शिवरानी देवी

इकाई 10 : शतरंज के खिलाडी : सारांश एवं पात्रों का विवेचन

इकाई की रूपरेखा

10.1 प्रस्तावना

10.2 उद्देश्य

10.3 मूल पाठ : शतरंज के खिलाड़ी : सारांश एवं पात्रों का विवेचन

10.3.1 पाठ की विषय वस्तु :

10.3.2 शतरंज के खिलाडी कहानी का प्रयोजन :

10.3.3 शतरंज के खिलाड़ी में व्यक्त वैचारिकता :

10.3.4 कहानी का भाषा सौष्ठव :

10.3.5 कहानी का शैली सौंदर्य :

10.4 पाठ सार

10.5 पाठ की उपलब्धियाँ

10.6 शब्द संपदा

10.7 परीक्षार्थ प्रश्न

10.8 पठनीय पुस्तकें

10.1 : प्रस्तावना

कथा सम्राट प्रेमचंद ने अपने जीवनकाल में लगभग 300 से अधिक कहानियाँ लिखी हैं। प्रेमचंद ने अपने समय में लिक से हटकर आम जन-जीवन को अपनी कहानियों का हिस्सा बनाया। उनकी सभी कहानियाँ तत्कालीन समाज का सत्य उजागर करती है। प्रेमचंद की अनेक कहानियाँ कालजयी कहानियों की कोटि में आती हैं। ऐसी कालजयी कहानियों में से कुछ कहानियों का अध्ययन हम करनेवाले है।

आज के पाठ में हम 'शतरंज के खिलाड़ी' इस कहानी को देखेगें। प्रेमचंद जी ने इस कहानी की रचना अक्तूबर 1924 में की थी और वह 'माधुरी' पत्रिका में छपी थी। सन् 1977 में मशहूर फिल्म निर्माता सत्यजीत राय ने इस कहानी पर आधारित इसी नाम से क हिंदी फिल्म बनायी है।

प्रेमचंद ने इस कहानी का परिवेश सन् 1857 के संग्राम के पूर्व का लिया। कंपनी सरकार का अत्याचार और शासन बढ़ता जा रहा था। भारत के एक छत्र न होने का फायदा अंग्रेज शासन बड़ी आसानी से ले रहा था। प्रस्तुत कहानी में भी प्रेमचंद ने ऐतिहासिक वातावरण को बड़ी खूबी के साथ चित्रित किया है। अंग्रेजों का नवाब 'वाजिद अली शाह' को कैद करना यह अकरमण्यता को दर्शाता है।

शतरंज के खिलाडी में प्रेमचंद ने मिरजा सज्जाद अली और मीर रोशनअली के माध्यम से सामंती व्यवस्था के पतन की चरमसीमा को दिखाया है। यह कहानी पढ़ते समय पाठक को लगता है कि वह कोई चित्र या फिल्म ही देख रहा है। कहानी चित्रात्मक शैली में लिखी हुई है।

10.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

- प्रेमचंद के साहित्य की सामाजिक यर्थाथता को समझा सकेंगे।
- कहानी की कथावस्तु को समझ सकेंगे।
- कहानी के पात्रों की विशेषता बता सकेगें।
- तत्कालीन परिवेश की जानकारी प्राप्त कर सकेगें।
- कहानी के शीर्षक की उपयुक्तता जान पायेगें।
- कहानी की भाषा, शैली और संवादों को समझ पायेंगे।

10.3 : मूल पाठ : शतरंज के खिलाड़ी : सारांश एवं पात्रों का विवेचन

'शतरंज के खिलाडी' यह कहानी सामंतवाद का सच्चा चित्रण करनेवाली कहानी है। लखनऊ का परिवेश और नवाब वाजिदअली शाह का समय थी। तत्कालीन समाज विलासपूर्ण वातावरण में जी रहा है। उन्हें दुनिया की कोई खबर नहीं है। अपने में ही मगन आत्मकेंद्रित बन गया था। 'राजा से लेकर रंग तक' इसी नशे में डूब गऐ थे।

पूरा शहर भोग - विलास से लिप्त है। सामाजिक और राजनीतिक चेतना से शुन्य है। हर जगह शतरंज की चौसर बिछी है। समाज ये मानने लगा है की इस खेल को खेलने से बुद्धि कुशाग्र होती है और पेंचीदा मसलों को सुलझाने की आदत पड़ती है।

10.3.1 पाठ की विषय वस्तु :

इस कहानी के प्रमुख दो पात्र है। एक मिरजा सज्जाद अली और दूसरे मीर रौशन अली। साथ ही दोनों की बेगमें, एक बादशाही घुडस्वार और नौकर-चाकर ऐसे कुछ गौण पात्र भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते है। दोनों प्रमुख पात्र नवाब वाजिदअली शाह के जहागीरदार है।

इस कारण उदर निर्वाह की कोई चिंता नहीं। सामंतीय जीवनशैली में जिंदगी गुजर रही है। दोनों अच्छे मित्र है और शतरंज खेलना उनका मुख्य कारोबार है। गृहस्थ होने के बावजूद जिम्मेदारियों से परे है। शतरंज की बाजिया लगाते वक्त नौकर-चाकर समय-समय पर हुक्का, पान-तंम्बाकू, नाश्ता और खाना हुक्म के मुताबिक दे जाते है । और भला जिंदगी से चाहिए ही क्या?

मिरजा सज्जादअली के घर में कोई बड़ा-बूढा न था, इसीलिए उन्हीं के दिवानखाने में बाजियाँ होती थी। सुबह-सवेरे दोनों मित्र नाश्ता कर बिसात बिछा कर बैठ जाते, मुहरें सजती और लड़ाई के दाव पेंच होने लगते। फिर दिन-दुनिया की कोई सुध न रहती। मिरजा साहब की बेगम अक्सर उनसे नाराज रहिती की इस मनहूस खेल के कारण उन्हें मिरजा साहब के साहचर्य से दूर रहना पड़ता है। वह अवसर खोज-खोजकर पति को लताड़ते रहती थी।

एक दिन की घटना है की मिरजा साहब की बेगम के सिर में दर्द होने लगा। लौंडी को बार-बार मिरजा साहब के पास भेजती है की वह जाकर हकिम से दवा ले आए। किंतु मिरजा साहब शतरंज के खेल में डूबे हुए थे। उन्हें लग रहा था की यह रही आखरी किश्त और बाजी उनके हाथ। ऐसे में बेगम साहबा को गुस्सा आता है और वह मिरजा साबह को खूब खरी-खोटी सुनाती है और शतरंज की मुहरों को ड्योढी से बाहर फेंक दिया। उका यह रौद्र रुप देख परिणाम यह होता है की अब शतरंज की बाजी मिरजा के घर से मीर के दीवानखाने में जा बैठती है।

शुरू-शुरू में मीर साब की बीवी कुछ न कहती किंतु बाद में उन्हें लग रहा था की उनकी स्वाधीनता में बाधा आने लगी। जब बात हद से आगे बढ़ने लगती है तब इन दोनों खिलाडियों को मात देने के लिए वह एक नायाब तरकीब निकालती है। दोनों मित्र शतरंज की बाजियों में खोए हुए थे की बादशाही फौज का एक अफसर मीर साहब के दरवाजे आ खड़ा होता है उसे देखते ही मीर साहब के होश उड जाते है। वह शाही घुडस्वार मीर साहब के नौकरो पर खूब रौब डालता है और मीर के घर न होने की बात पर घुस्सा हो अगले दिन फिर आने की बात करता है। दोनों मित्र इस घटना को लेकर बहुत चिंतित है। इसका क्या हल निकाला जाए।

मीर और मिरजा भी शतरंज के मंझे हुए खिलाडी थे। इस समस्या का हल यह निकला की न रहेगा बाँस ना बजेगी बाँसरी। वह घर पर न होंगे तो शाही अफसर से मुलाकात ही न होंगी। पुन स्थान परिवर्तन होता है। नया स्थान शहर से दूर गोमती के किनारे एक विरान मस्जीद। जहाँ शायद ही कभी कोई आता-जाता हो। इधर बेगम आजाद हुई। क्योंकि मीर के घर पर रहने से उनकी ताका-झाँकी में बाधा आ गयी थी। उसी ने जुगाड़ लगा कर यह शाही फौज के असफर वाली तरकीब निकाली थी।

इस नई वीरान जगह पर मीर और मिरजा शहर के राजनैतिक हालात से बेखबर अपने शतरंज के खेल में मस्त थे। सुबह मुँह-अंधेरे ही चिलम, दरि जैसा जरुरत का साजों - सामान लिए गली - मुहल्लों में से छुपते-छुपाते निकल पडते। 'कोई योगी भी समाधि में इतना एकाग्र न होता होगा जितना यह दोनों इस खेल में थे।'

शहर के हालात खराब हो रहे थे किंतु इन्हें किसी प्रकार की कोई चिंता न थी। एक दिन अचानक मीर साहब ने देखा की अंग्रेजी फौज गोमती के किनारे - किनारे चली आ रही है। मीर साहब बाजी हाथ में होने के कारण बेखबर थे। कुछ देर बाद फौज लौटी 'नवाब वाजिदअली शाह' कैद कर लिए गए थे। यह दोनों नवाब के जगीरदार थे। बात आयी और गयी। इन्हें इससे क्या? थोड़ी देर में ही दोनों मित्र पुन शतरंज के बाजी में उलझ गए। खेल-खेल में तकरार हुई और बात खानदान और रईसी तक पहुँच गयी। गाली-गलौज होने लगी। 'नवाबी' जमाना था। सभी तलवार पेशकब्ज, कटार वगैरह रखते थे। दोनों विलासी थे पर कायर न थे। शतरंज के वजीरों के लिए दोनों ने खून की आखरी बूँद तक लढाई की और वीरगती को प्राप्त हुए।

• बोध प्रश्न :

1. 'शतरंज के खिलाडी', कहानी की शैली चित्रात्मक है स्पष्ट कीजिए।
2. 'शतरंज के लिखडी' प्रतिकात्मक रुप में लिया गया शीर्षक है स्पष्ट कीजिए।
3. शतरंज के खिलाडी का देश, काल और वातावरण समझाइए।

10.3.2 शतरंज के खिलाडी कहानी का प्रयोजन :

प्रेमचंद द्वारा लिखित कहानी 'शतरंज के खिलाडी' को लिखने का प्रयोजन भारतीय जनमानस को जागृत कर उसमें नई चेतना लाना था। साहित्य समाज का दर्पण है। यही दर्पण दिखलाने का कार्य लेखक ने किया है। स्वतंत्रता पूर्व समय की ऐतिहासिक वातावरण की पृष्ठभूमि को आधार बनाकर लिखी यह कहानी तत्कालीन समाज का सच उजागर करती है। जिस तरह नवाब के जागीरदार विलासता में डूबकर राजनैतिक गतिविधियों से अलिप्त रहते है और यह मानकर चलते है की 'मेरा क्या वास्ता?' किंतु समय और समाज दोनों से व्यक्ति अलग-अलग नहीं रह सकता। अंग्रेज शासन के विरुद्ध एकजूट होकर लढ़ने के बजाय विलासता में डूबकर 'शतरंज' की बाजिया लगाते है। ऐसे खोए हुए समाज को जगाने के लिए प्रेमचंद ने प्रतिक रुप से मिरजा और मीर जैसे पात्रों की निर्मिती की है जो कायर नहीं है। किंतु अपनी वीरता का प्रदर्शन वह अपने राजा के लिए, अपने देश के लिए नहीं करते। वह व्यक्तिगत रंजीशों के लिए एक-दुसरे के सिनों पर तलवारे ताने खड़े रहते है। यह तलवारें उन्हें अंग्रेज शासन के खिलाफ उठानी चाहिए थी।

प्रेमचंद आम आदमी में इस कहानी के माध्यम से चेतना जागृत कर उसे देश की आजादी के लड़ाई में अपनी वीरता के प्रदर्शन के लिए प्रेरित करते है। देश की युवा शक्ति को जागृत कर एक संघ करना चाहते है।

10.3.3 शतरंज के खिलाड़ी में व्यक्त वैचारिकता :

प्रेमचंद ने कहानी के माध्यम से तत्कालीन समाज का सामाजिक और राजनीतिक अध:पतन को दर्शाया है। सामंती समाज माने उच्चभ्रू वर्ग विलासता का जीवन जी रहा है। उन्हें आम जन-जीवन और जनता से कोई सरोकार नहीं। देश के हालात नाजूक है। ऐसे में देश पर आए संकट का मुकाबला कर सकते हैं इसके बजाए वह अपनी विलासतापूर्ण दिनचर्या में व्यस्त है।

कहानी में मीर और मिरजा उन सामंतों का प्रतिक है जो केवल अपनी रियासतें या जागीरे बचाने में लगे रहे। यदि समय सुचकता दिखाकर यह सारी रियासतें अंग्रेज कंपनी शासन के विरोध में खड़ी रहती तो अंग्रेजों का हिंदुस्तान में रहना मुश्कील होता। आपसी मनमुटाव और रंजिशों के कारण इन रियासतों में इंग्रेजों ने 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनायी।

कहानी में जब अंग्रेजी फौजे गोमती के किनारे से चली जा रही थी तब मीर और मिरजा हालात से बेखबर शतरंज की चाले चल रहे थे। बिना किसी मार काट और विरोध के अवध जैसे विशाल देश के नवाब वाजिदअली शाह बंदी बना लिए गए थे। यह अहिंसा नहीं थी। यह कायरपन था। इतनी बड़ी घटना हो गयी और लखनऊ ऐश की नींद में मस्त था। यह राजनीतिक अध:पतन की चरमसीमा थी। किसी भी प्रकार का विद्रोह या विरोध प्रकट नहीं हुआ। मीर और मिरजा जैसे सामंत नवाब की रक्षा में जान की बाजी लगाने के बजाय अपने में मस्त शतरंज की बाजियाँ लढ़ रहे थे। "दोनों विलासी थे पर कायर न थे। उनमें राजनीतिक भावों का अध:पतन हो गया था। बादशाह के लिए, बादशाहत के लिए क्यों मरें; पर व्यक्तिगत वीरता का अभाव न था। दोनों जख्म खाकर गिरे, और दोनों ने वही तड़प-तड़प के जाने दे दी। अपने बादशाह के लिए जिनकी आँखों से एक बूँद आँसू न निकला, उन्हीं दोनों प्राणियों ने शतरंज के वजीर की रक्षा में प्राण दे दिये।" यही वीरता अगर नवाब के पक्ष में और अंग्रेज शासन के प्रतिपक्ष में होती तो निश्चित ही चित्र कुछ और ही होता।

इस कहानी में प्रेमचंदजी ने अपने पूर्णरूप से लेखकीय सरोकार निभाते हुए कहानी के माध्यम से जनमानस में जागृति लाने का कार्य किया है। राजनीतिक हालातों से बेखबर वर्ग को नींद से जगाने का कार्य किया है।

10.3.4 कहानी का भाषा सौष्ठव :

'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी का परिवेश ऐतिहासिक है। 'नवाब वाजिद अली का समय इस कहानी में दर्शाया गया है।' प्रेमचंद ने समय के अनुसार कहानी में उर्दू भाषा की बहुलता दिखायी है। लेखक की अपनी भाषा होती है और दूसरी कहानी की। देश, काल, वातावरण के अनुरूप। लखनऊ और उसके आसपास के क्षेत्रों में उच्च वर्गीय मुस्लिम परिवारों की भाषा उर्दू थी। इसी भाषा का उपयोग लेखक ने अपनी कहानी के वातावरण के अनुरूप बनाने के लिए किया। उदाहरण के रुप में - "यह कहकर बेगम साहिबा झल्लाई हुई दिवानखाने की तरफ चली। मिरजा बेचारे का रंग उड़ गया। बीबी के मिन्नते करने लगे... खुदा के लिए, तुम्हें हजरत हुसैन की कसम है। मेरी ही मैय्यत देखें, जो उधर जाए। लेकिन बेगम ने एक न मानी। दीवानखाने के द्वार तक गयी, पर एकाएक पर-पुरूष के सामने जाते हुए पाँव-बाँध से गये।" कुल मिलाकर प्रेमचंद की भाषा प्रभावी और बोलचाल की दिखाई देती है। वातावरण और परिवेश के अनुसार उर्दू बहुल शब्द, देशज और तत्सम शब्दों का उपयोग दिखाई देता है।

साथ ही भाषा सौष्ठव को निखारने के लिए तत्कालीन समया नुसार लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग किया गया है। जैसे - 'रानी रूठेंगी, अपना सुहाग लेंगी', 'कमली दिन-दिन भीगकर भारी होना', पैरों में छाले पड़ना', 'आटे-दाल का भाव मालूम होना', 'नशे में चूर रहना', तथा 'कानों पर जूँ न रेंगना' आदि बहुत से मुहावरों का प्रयोग किया गया है जिससे भाषा का सौंदर्य और भी निखर कर आया है।

प्रेमचंद ने कहानी में संवादों की रचना कर कहानी की भाषा को ज्यादा प्रभावी बनाया है। छोटे-छोटे वाक्यों से भाषा का सौंदर्य प्रगल्भ दिखाई देता है। उदाहरण स्वरूप -

"मीर - क्या! घास आपके अब्बाजान छीलते होंगे।

यहाँ तो पीढ़ियों से शतरंज खेलते चले आ रहे हैं।

मिरजा - अजी जाइए, भी गाजीउद्दिन हैदर के यहाँ

बावरची का काम करते-करते उम्र गुजर गई

आज रईस बनने चले है। रईस बना कुछ दिल्लगी नहीं है।

मीर-क्यों अपने बुजुर्गों के मुँह में कालिख लगाते हो

वे ही बावरची का काम करते होगें। यहाँ तो हमेशा

बादशाह के दस्तरखान पर खाना खाते चले आये है।"

इन संवादों में उर्दू भाषा का अधिक प्रभाव दिखाई देता है। कहानी के परिवेश और वातावरण के अनुरूप ही भाषा का चुनाव किया गया है। जिससे कहानी की भाषा सहज और प्रभावशाली दिखाई देती है।

10.3.5 कहानी का शैली सौंदर्य :

'शतरंज के खिलाड़ी' इस कहानी की शैली ऐतिहासिक है। यानी कहानीकार ने एक इतिहासकार की शैली में स्वयं कहानी कहीं है। इस शैली की विशेषता यह है की लेखक सर्वज्ञानी होता है और वह स्वयं कहानी कहता है। आत्मकथात्मक शैली का उपयोग तो होता है किंतु कहानी पात्रों के द्वारा सुनायी जाती है।

कहानी में लेखक ने अपने समय से पूर्व सन् 1857 के स्वाधिनता संग्राम के समय के वातावरण को अपनी कहानी से चित्रित किया है। लखनऊ का परिवेश और तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक और भोग-विलासी जीवनशैली का चित्रण दर्शाया है। लेखक इसी वातावरण में अपने कहानी के दो पात्रों का चयन कर कहानी कहता है।

कहानी कहने की विविध शैलियाँ होती है जैसे कुछ कहानियाँ वर्णन प्रधान होती है, कुछ चित्रात्मक तो कुछ में नाटकियता प्रमुख होती है। वैसे तो प्रेमचंद की अधिक तर कहानियाँ वर्णन प्रधान होती है। प्रस्तुत कहानी में भी वर्णन शैली की प्रमुखता है। यद्यपि चित्रात्मकता और नाटकियता, संवाद शैली बीच-बीच में कहानी को प्रभावी और सहज बनाने के लिए आती है। इस कहानी की शुरुआत में लेखक वर्णनात्मक शैली का उपयोग कर प्रथमत: लखनऊ के परिवेश, वातावरण का शतरंज की चालों का उनके बीच होनेवाली नोक-झोंक का स्वयं वर्णन करता है। इसी के साथ निर्णायक की तरह बीच-बीच में टिप्पणियाँ भी करता है।

कहानी में यह टिप्पणियाँ चित्रात्मक शैली का रूप धारण करती है - "अंधेरा हो चला था। बाजी बिछी हुई थी। दोनों बादशाह अपने-अपने सिंहासनों पर बैठे हुए मानो इन दोनों वीरों की मृत्यू पर रो रहे थे। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ था। खंडहर की टूटी हुई मेहराबें, गिरी हुई दीवारों और धूल - धूसरित मीनारें इन लाशों को देखती और सिर धुनती थी।" इस तरह से चित्रात्मक शैली में वर्णन किया गया है जैसे हम कहानी पढ़ नही रहें मानों उसे चलचित्र के भाँति देख रहे। उस मनस्थिति को महसूस कर रहे है। यह कहानी का शैली सौंदर्य है।

10.4 : पाठ सार

हमने इस अध्याय में प्रेमचंद कृत 'शतरंज के खिलाड़ी' इस कहानी का अध्ययन किया है। प्रस्तुत कहानी सन् 1857 के स्वाधिनता संग्राम के पूर्व समय को केंद्र में रख ऐतिहासिक शैली में लिखी गयी कहानी है। लखनऊ और उसके आस-पास के परिवेश का चित्रण कहानी में किया गया है। सामाजिक और राजनीतिक अध:पतन सामंतो को भोग - विलासपूर्ण जीवन, सामान्य जन-जीवन को अनदेखा करनेवाले शासक आदि वातावरण का चित्रण किया गया है।

इस सामंती परिवेश के दो पात्रों को प्रतिक रुप में मीर और मिरजा को गढ़ा गया है जो समय और परिवेश की माँग में फिट बैठते है। वह अपने समय के विलासपूर्ण सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व करते है। शतरंज के यह खिलाडी दिन-दुनिया से बेखबर शतरंज के दाव-पेंच और बाजियाँ लढ़ाने में व्यस्त रहते है। शहर के राजनीतिक हालात और सामाजिकता से पूर्णत: अलिप्त रहते है। इसी स्थितियों के कारण अंग्रेज शासन हिंदुस्तान में अपने पैर फैलाता गया। आपसी रंजिशे और राजनीतिक उदासिनता अंग्रेज शासन के लिए लाभकारी रही।

जिस नवाब के यह जागीरदार है उस की कैद पर यह उदासिन रहते है। बादशाह कैद होता है यह केवल दर्शक की भूमिका निभाते है किंतु शतरंज की बिसात के बादशाह और वजीर के मात खाने पर एक दूसरे पर तलवारे ताने युद्ध करते है। शतरंज के वजीर को बचाने के लिए एक-दूसरे का खून कर देते हैं। यही विरोध वह अंग्रेज शासन से करते तो चित्र निश्चित अलग होता। जिस वीरता का प्रदर्शन मीर और मिरजा ने शतरंज के प्यादों के लिए किया अगर वही वीरता वह अपने बादशाह के पक्ष में करते तो शायद इतिहास अलग होता।

10.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. कहानी साहित्य में मुंशी प्रेमचंद की 'शतरंज के खिलाडी' यह कहानी अपना अनन्यसाधारण महत्व रखती है। जो इस पाठ से स्पष्ट होता है।
2. 'शतरंज के खिलाडी' यह कहानी तत्कालीन समाज का दर्पण है।
3. कहानी के माध्यम से प्रेमचंद जी ने समय और सच से रू-ब-रू कराया है।
4. कहानी के दो मुख्य पात्रों द्वारा यह दर्शाया गया की सामाजिक और राजनीतिक स्थितियों से अलिप्त रह अपने में मगन होने का एक महत्वपूर्ण कारण है भारत की पराधिनता का।
5. जो शुरता आपस में लढ़ने में दिखाई यदि वही अंग्रेज शासन के खिलाफ होती तो भारत गुलाम न होता।

6. असंघटीत समाज का चित्रण दिखाया है जो हमें संघटीत रहने की सिख देता है।
7. 'व्यक्ती समाजशील प्राणी है' वह समाज से अलिप्त रह जी नहीं सकता यह उक्ति सच साबित होती है।

10.6 : शब्द संपदा

1.	निखट्टू	-	कही न टिकनेवाला, निकम्मा, आलसी।
2.	दुत्कार	-	अपमान, तिरस्कार, फटकार
3.	सफाया	-	समाप्ति, विनाश, तबाही, बर्बादी
4.	मुलाहिजा	-	पक्ष लेना, ध्यान देना, निरीक्षण
5.	मिन्नतें	-	चापलूसी खुशामद, विनती, याचना
6.	किवाड	-	दरवाजा
7.	ताम्मूल	-	धैर्य, सब्र, सहनशीलता
8.	फरियाद	-	याचना, बिनती
9.	तदबीर	-	युक्ति, उपाय
10.	वीराना	-	निर्जन प्रदेश
11.	मुलाजिम	-	नौकर
12.	सालाना	-	वार्षिक
13.	मरसिया	-	शोकगीत, मृत व्यक्ति का गुणगाण ।
14.	दस्तरखान	-	भोजन के थाली के नीचे रखा जानेवाला कपडा ।
15.	मेहराब	-	दरवाजे के उपर बना अर्धमंडलाकार भाग।
16.	मीनारें	-	उँचा स्तंभ, मुस्लिम मस्जिदों के साथ लगे होतें है।
17.	बुजुर्ग	-	बड़ा बुढ़ा व्यक्ति।
18.	मजलिस	-	सभा, महफिल, बैठने की जगह
19.	मलाल	-	दु:ख, रंज, पश्चाताप।

20. हकीम - वैद, चिकित्सक।

21. जलील - अपमानित, बेईज्जत

22. दीवानखाना - बडे लोगों की बैठने की जगह, बैठक

23. मुनासिब - उचित, योग्य।

24. इंतजाम - प्रबंध, बंदोबस्त, व्यवस्था।

10.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न :

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'शतरंज के खिलाड़ी' कहानी की वैचारिकता को स्पष्ट कीजिए।

2. 'शतरंज के खिलाडी' कहानी तत्कालीन समाज का चित्रण है स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'मीर और मिरजा' का चरित - चित्रण कीजिए।

2. 'शतरंज के खिलाडी' क भाषा सौंदर्य को स्पष्ट कीजिए।

3. 'शतरंज खिलाडी' कहानी के सामंती परिवेश का चित्रण कीजिए।

खण्ड (स)

I) सही विकल्प चुनिए -

1. शतरंज के खिलाडी कहानी में किस शहर का वर्णन अया है।

अ) दिल्ली ब) कलकत्ता क) लखनऊ ड) इलाहाबाद

2. मीर और मिरजा कौनसा खेल खेला करते थे?

अ) शतरंज ब) गुल्ली- डंडा क) क्रिकेट ड) घुडस्वारी

3. मिरजा का नाम क्या था?

अ) करामत अली ब) अकबर अली क) सज्जाद अली ड)गुलाम अली

4. कहानी में किस नदी का उल्लेख आया है?

अ) गंगा ब) जमुना क) झेलम ड) गोमती

II) रिक्त स्थानो की पूर्ति कीजिए।

1. रानी रूठेंगी, अपना ..... लेगी।
2. इतनी लौ खुदा से लगाते, तो ..... हो जाते।
3. दोनों विलासी थे, पर ..... न थे।
4. अवध के नवाब ..... थे।

III) सुमेल कीजिए।

1. गुलाम	-	(अ) नवाब
2. अंग्रेज	-	(आ) रसोईय्या
3.अवध	-	(इ) बादशाही फौज का अफसर
4. बावरची	-	(ई) दास
5. घुडस्वार	-	(उ) रेजीडेंट

10.8 : पठनीय पुस्तकें

1. प्रेमचंद एक विवेचन - इंद्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
2. प्रेमचंद और उनका युग - रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. मानसरोवर - प्रेमचंद
4. प्रेमचंद घर में - शिवरानी देवी
5. कलम का सिपाई - अमृतराय

इकाई 11 : जुलूस : सारांश एवं पात्रों का विवेचन

इकाई की रूपरेखा

11.1 प्रस्तावना
11.2 उद्देश्य
11.3 मूल पाठ : जुलूस : सारांश एवं पात्रों का विवेचन
11.3.1 जुलूस कहानी का प्रयोजन
11.3.2 जुलूस में व्यक्त वैचारिकता
11.3.3 जुलूस कहानी का भाषा सौष्ठव
11.3.4 जुलूस कहानी का शैली सौंदर्य
11.4 पाठ का सार
11.5 पाठ की उपलब्धियाँ
11.6 शब्द संपदा
11.7 परिक्षार्थ प्रश्न
11.8 पठनीय पुस्तकें

11.1 : प्रस्तावना

हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद कहानी के शलाका पुरुष माने जाते हैं। उन्होंने कहानी को एक नई ऊंचाई प्रदान की है। 1907 में 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' से अपने कहानी साहित्य की शुरुआत कर धीरे-धीरे हिमालय की ऊंचाई छूने वाली चोटी पर विराजमान हो गए। प्रेमचंद ने कहानी की कथावस्तु को आम जन-जीवन से जोड़ा। उनका यही प्रयास उनके कहानी साहित्य को यथार्थवादी साहित्य से जोड़ता है। उनकी कहानी मौलिकता, मार्मिकता,सोदेश्यता और शिल्प के दृष्टि से मानक साबित हुई है।

प्रेमचंद की अधिकांश कहानी मानसरोवर के आठ खंडो में संकलित है। प्रेमचंद ने लेखकिय प्रतिबद्धता को स्वीकार करते हुए सामाजिक स्थितियों पर अपनी लेखनी चलाई। प्राय: कहानियों के विषय में प्रचलित समाज की रीति-रिवाज, प्रथाएं, परंपराएं और गलत रिवाजों पर कहानी में प्रश्न उपस्थित कर उन उपायों को भी दर्शाया है। साहित्य के माध्यम से जन-जागृति की मशाल को सदा ही प्रज्वलित रखा। उनकी अधिकांश कहानियां साहित्य जगत में मिल का पत्थर साबित हुई है। ऐसी ही एक कहानी है 'जुलूस'।

'जुलूस' भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखी गई राजनीतिक कहानी है। यह कहानी 'हंस' पत्रिका के मार्च, 1930 के अंक में प्रकाशित हुई थी। यह वर्ष भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अत्यंत महत्वपूर्ण वर्ष है। यह वही वर्ष है जिसमें कांग्रेस के अधिवेशन में 'पूर्ण स्वराज' की मांग की गई थी। गांधी जी ने फिर से कांग्रेस का नेतृत्व संभाल लिया था। प्रेमचंद की 'जुलूस' कहानी में भारत के स्वाधीनता आंदोलन में गांधीजी के अहिंसक और शांतिपूर्ण आंदोलन की भूमिका और इसे व्यापक जन समर्थन मिलने का सत्य रेखांकित है। सही माने में

भारत के आजादी का संघर्ष 'जन संघर्ष' था। यह राष्ट्रीय और धर्मनिरपेक्ष था। जुलूस कहानी के अध्ययन से यह समझा जा सकता है कि प्रेमचंद स्वयं 'पूर्ण स्वराज' की नीति के कट्टर समर्थक थे। प्रेमचंद पर गांधी जी के विचारों की छाप को हम खुले रूप में देख सकते हैं। जुलूस कहानी गांधी जी के स्वाधीनता संग्राम की सच्ची घटनाओं से प्रेरित जान पड़ती है। प्रेमचंद हमेशा किसी न किसी समस्या को लेकर कहानियां लिखते थे। उनकी कहानियों में मुख्यता धार्मिक आडंबर, छुआछूत, विधवा समस्या, सौतेली मां, किसानों की समस्या, अंधविश्वास, जमींदारी व्यवस्था, सांप्रदायिकता आदि कहानियों के विषय रहे हैं। साथ ही साथ राजनीतिक विषयों को लेकर भी कहानियां लिखी है। 'जुलूस' यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर लिखी कालजयी कहानियों में से एक है।

11.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को जान पाएंगे।
- इस कहानी द्वारा लेखक की प्रतिबद्धता को समझ पाएंगे।
- आंदोलन में विजय का अर्थ जनता की मनोवृत्ति में परिवर्तन था।
- मिट्ठन बाई के चरित्र के माध्यम से भारतीय नारी के त्याग, नैतिक बल और उसके व्यक्तित्व की दृढ़ता से परिचित हो सकेंगे।
- इब्राहिम अली के व्यक्तित्व की उदारता को जान पाएंगे।
- 'पूर्ण स्वराज' के लिए सांप्रदायिक सौहार्द महत्वपूर्ण है यह समझ पाएंगे।
- भारतीय स्वाधीनता संघर्ष यह एक व्यापक जन आंदोलन था समझ पाएंगे।
- कहानी में हर पात्र अपनी क्षमता के अनुसार देशभक्ति प्रकट करता है।
- अहिंसा का हिंसा पर विजय स्पष्ट रूप से देख सकेंगे।

11.3 : मूल पाठ : जुलूस : सारांश एवं पात्रों का विवेचन

प्रेमचंद ने अपने समय से प्रतिबद्धता निभाते हुए कहानियां लिखी है। सन 1920 बाद गांधी पर्व की शुरुआत हुई। भारत के राजनीतिक हालातों में उथल-पुथल हो रही थी। चौरी-चौरा घटना के बाद गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन की शुरुआत की थी। प्रेमचंद जी भी गांधी जी के विचारों से और उनके आंदोलन से प्रेरित थे। इस प्रेरणा को मद्दे नजर रखते हुए उन्होंने अपने कहानी साहित्य में कुछ कहानियों की रचना की जिनमें से एक प्रमुख कहानी 'जुलूस' है।

'जुलूस' कहानी पर गांधी जी के विचारों और राष्ट्रीय सविनय अवज्ञा आंदोलन की पूर्णत: छाप दिखाई देती है। यह कहानी शुरू होती है जुलूस के निकलने से। पहले जुलूस यह 'पूर्ण स्वराज' की प्राप्ति के लिए निकलता है। यह एक बुजुर्ग नेता इब्राहिम अली के नेतृत्व में और दूसरा जुलूस इब्राहिम अली के मृत्यु के बाद उनके 'शव यात्रा' के रूप में निकलता है। इन्हीं दो जुलूस के मध्य प्रेमचंद ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के स्वरूप, उसकी प्रकृति, आंदोलन में

सम्मिलित शक्तियों की पहचान, जनता का उत्साह, सरकारी दमन चक्र, नेतृत्व की प्रमाणिकता आदि को कहानी के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

इब्राहिम अली नामक एक बुजुर्ग आदमी के नेतृत्व में जुलूस निकलता है। यह जुलूस शांतिपूर्ण होता है। इसमें बड़ी संख्या में लोग शामिल होते हैं। आम देश भक्तों का यह जुलूस माल के सामने से होकर चौरस्ते की और बढ़ रहा था। शंभूनाथ और दीनदयाल जैसे लोग तमाशाई बन जुलूस को निहारत हैं। दीनदयाल कहता है- "जुलूस निकालने से स्वराज मिल जाता तो अब तक कब काम मिल गया होता। और जुलूस में है कौन लोग, देखो –लौंडे, लफंगे,सिरफिरे। शहर का कोई बड़ा आदमी नहीं।"

इस बात पर मैकू जैसे आम जनता के आदमी को गुस्सा आ जाता है और वह हंसता है। शंभू के पूछने पर कि वह क्यों हंसा? तो वह कहता है – "तुमने कहां की कोई बड़ा आदमी जुलूस में नहीं है। बडे आदमी जुलूस में नहीं है बड़े आदमी क्यों जुलूस में आने लगे, उन्हें इस राज्य में कौन आराम नहीं है? बंगलों और महलों में रहते हैं, मोटरों पर घूमते हैं, साहबों के साथ दावतें खाते हैं, कौन तकलीफ है! मर तो हम लोग रहे हैं जिन्हें रोटियों का ठिकाना नहीं। इस बखत कोई टेनिस खेलता होगा, कोई ग्रामोफोन लिए गाना सुनता होगा, कोई पारीक की सैर करता होगा, यहां आए पुलिस के कोड़े खाने के लिए? तुमने भी भली कही?"

इन बड़े लोगों की अवसरवादीता पर मैकू द्वारा प्रेमचंद ने अवहेलना की है। जिन्हें राष्ट्रभक्ति से ज्यादा अपना एशों- आराम महत्वपूर्ण है। और इस आराम तलब जिंदगी के लिए वह अंग्रेजों की भक्ति और राष्ट्र से गद्दारी कर रहे है।

जुलूस आगे बढ़ रहा था और इस जुलूस को रोकने के लिए दरोगा बीरबल सिंह अपने सैनिकों के साथ तैनात है। इब्राहिम अली दरोगा से जुलूस को आगे बढ़ाने की अनुमति मांगते हैं। पर अनुमति देने के बजाय वह डी.एस.पी. के घोड़े को आता देख अपनी कारगुजरी दिखाने के लिए इन निहत्थे, शांतिपूर्ण ढंग से आगे बढ़ते हुए जुलूस के बुजुर्ग नेता इब्राहिम अली के सर पर बेटन से वार करते हैं। उसी के साथ उन पर घोड़ा भी चढ़ाते हैं। यह दस्ते के सिपाही भी अपने घोड़े जुलूस के निरीह लोगों पर चढ़ते हैं। इब्राहिम अली अचेत हो जाते हैं। उनके घायल होने का समाचार बाजार पहुंचता है। तो बाजार बंद हो जाता है और लोग क्रुद्ध भाव से जुलूस की जगह पहुंचते हैं। भीड़ पुलिस के इस अत्याचार का बदला लेना चाहती है। इब्राहिम अली के कानों पर जैसे ही यह आवाज सुनाई देती है तभी वह 'जुलूस' को वापस मुड़ ने का आदेश देते हैं। वह कहते हैं, "हमें अपने भाइयों से लड़ाई नहीं करनी है।" हमें उनसे बदला नहीं लेना है, उनकी मनोवृत्ति में परिवर्तन करना है और यही असली विजय है, जिसमें हम कामयाब हो गए।

तीन दिन बाद इब्राहिम अली की मौत हो जाती है। उनके शव को लेकर फिर से जुलूस निकलता है। और इस जुलूस की जिम्मेदारी भी बीरबल सिंह को ही सौंपी जाती है।

बीरबल सिंह की पत्नी मिट्ठन बाई सच्ची देशभक्त है। वह अपने पति की कारगुजारी पर उसे धिक्कारती है। महात्मा गांधी के आदेश पर आधी आबादी कहे जाने वाली महिलाओं ने

भी स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी अहम भूमिका निभाई थी। मिट्ठन बाई पति के इस कार्य पर घृणा व्यक्त करते हुए कहती है, "क्या तुम समझते हो, उस दल में कोई भला आदमी न था? उसमें कितने आदमी ऐसे थे, जो तुम्हारे जैसों को नौकर रख सकते हैं। विद्या में तो शायद अधिकांश तुमसे बड़े हुए होंगे। मगर तुम उन पर डंडे चला रहे थे और उन्हें घोड़े से कुचल रहे थे, वह री जवांमर्दी!" मिट्ठन बाई के इस कहे से बीरबल सिंह को ग्लानि होती है।

इब्राहिम अली ने मरते समय वसीयत की थी कि, "मेरी लाश को गंगा में नहला कर दफन किया जाए और मेरे मजार पर स्वराज का झंडा खड़ा किया जाए।" और यही वसीयत पूरी करने के लिए शव के साथ जुलूस निकाला था गंगा की ओर। बीरबल सिंह अपने दस्ते के साथ जुलूस के साथ-साथ चल रहे थे। पिछली सफों में कोई पचास गज तक महिलाएं थी। पहली ही कतार में मिट्ठन बाई भी थी। बीरबल सिंह ने जब उसकी ओर ताका तो उसकी नजरों में तिरस्कार, घृणा और क्रोध उन्हें नजर आया।

बीरबल सिंह के मन में विचारों के तूफान उमड़ पड़ते हैं। उन्हें जुलूस के साथ किए कार्य पर ग्लानी होती है। मिट्ठन बाई के धिक्कार और उल्हानों से उनकी आंखें खुलती है। वह राजभक्ति छोड़ देते है। प्रायश्चित स्वरूप इब्राहिम अली के घर जाकर उनकी विधवा से क्षमा-याचना करते हैं। कहानी यहीं समाप्त होती है।

प्रेमचंद लेखकीय सरोकार निभाते हुए यही मार्मिक संदेश देते हैं कि स्व:हित से कहीं बढ़कर राष्ट्रहित है। देश भक्ति है। देश भक्ति के लिए किया गया सर्वोत्तम बलिदान भी कम है। भारत मां के सपूतों ने ऐसी ही बलिदानों से देश का सर हमेशा ऊंचा रखा है।

बोध प्रश्न :-

- जुलूस कहानी के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन को स्पष्ट कीजिए।
- स्वाधीनता आंदोलन में स्त्रियों की अहम भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

11.3.1 जुलूस कहानी का प्रयोजन:-

प्रेमचंद दृष्टा कहानीकार थे। समाज की स्थितियों को खूब पहचानते थे। उन्होंने हमेशा अपने साहित्य के माध्यम से समबद्धता और प्रतिबद्धता के सरोकारों का निर्वहन किया है। साहित्य वह माध्यम है जो मुर्दा समाज में भी जान डालने का कार्य करता है। 1930 के समय में प्रेमचंद ने जब 'जुलूस' कहानी की रचना की तब भारतीय जन-मानस महात्मा गांधी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन की ओर चल पड़ा था। ऐसे में आम जनता में महात्मा गांधी के मूल्यों को रुजाने के लिए उन्होंने अपने लेखकिय सरकारों के जरिए 'जुलूस' जैसी कहानी की रचना की। इस कहानी के द्वारा आम जनता में देशभक्ति के आदर्श रखें। बलिदान ही सर्वश्रेष्ठ है। देश की आजादी एकमात्र लक्ष्य है। हमें अपने ही लोगों से लड़ना नहीं है बल्कि शांतिपूर्ण ढंग से आंदोलन कर अंग्रेजों से 'संपूर्ण स्वराज' लेना है। इसी के साथ भारत जैसे विशाल देश को एकजुट करने के लिए आपस में सांप्रदायिक सौहार्द कायम रखना भी जरूरी है। यह कहानी भारतीय समाज की एकता की कहानी है। बुजुर्ग इब्राहिम अली इस जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे। प्रेमचंद ने इब्राहिम अली का व्यक्तित्व गढ़ते समय सामुदायिक विकृतियों को केंद्र में रखकर चलते है। प्रेमचंद को यह बात अच्छी तरह से पता थी कि हम जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र आदि

संकीर्णताओं के आधार पर बंटे हुए न हो। इब्राहिम अली का चरित्र नितांत हिंदुस्तानी है। वह हिंदू और मुसलमान से ऊपर एक आम हिंदुस्तानी चरित्र है। जो आकर्षित करता है। महात्मा गांधी जाति, धर्म, समुदाय, भाषा, प्रांत आदि जटिलताओं में उलझे हुए भारत का स्वप्न नहीं देख रहे थे और यही दृष्टि प्रेमचंद की भी है। और यही सपना प्रेमचंद का भी था। क्योंकि सांप्रदायिक दुर्भावना, वैमनस्य भारतवासियों में तेजी से फैल रही थी। जिससे हमारा राष्ट्रीय आंदोलन कमजोर हो रहा था। और यह हमारे स्वराज के हित में ना था। प्रेमचंद 'एक भारत' के पक्षधर थे। वह किसी भी सूरत में यह स्वीकार करने के लिए तैयार न थे कि सांप्रदायिक विवाद के चलते भारत की अखंडता में फूट पड़े। इसीलिए उन्होंने अपने लेखों, भाषणों और कथा साहित्य के माध्यम से सांप्रदायिक सौहार्द के लिए अथक प्रयत्न किए।

11.3.2 जुलूस कहानी में व्यक्त वैचारिकता :

भारत की स्वाधीनता के लिए चलाए जाने वाले विभिन्न आंदोलनों का लक्ष्य, जन-जागरण था। पराधीनता की बेडियों में जकड़े हुए समाज को झकझोर कर जगाना और स्वयं में इतनी हिम्मत पैदा करना कि वह गुलामी की जंजीरों को खुद उखाड़ फेके। किसी दैवी चमत्कार के इंतजार में बैठे रहना अक्रमन्यता है। स्वयंम् को ही स्वयंम् के लिए आवाज उठानी होगी। जब तक हम अंदरुनी रूप से तैयार होकर आवाज नहीं लगाते तब तक किसी और के कंधों पर कब तक अपने आप को ढोते रहेंगे। इसीलिए सभी नेता गन प्रयासरत थे कि धर्म, जाति, संप्रदाय, क्षेत्रीयता की सीमाओं से परे मुक्त और जागृत भारतीय तैयार हो। इसके पीछे दूर दृष्टिता थी। स्वतंत्रता आंदोलन की लड़ाई ना तो एक दिन में लड़ी जाने वाली थी ना ही अकेले लड़ी जा सकती थी। और ना तो उसका मूल उद्देश्य किसी व्यक्ति, जाति, संप्रदाय विशेष से मुक्ति था।

'जुलूस' कहानी में हम देख सकते हैं कि इब्राहिम अली के नेतृत्व में निकले जुलूस पर दीनदयाल तथा शंभूनाथ जैसे व्यवसायी हंसते हैं पर जैसे ही उन्हें पता चलता है कि निहत्थे आंदोलनकारियों पर पुलिस डंडे बरसा रही है तो वह स्वयं प्रेरणा से दुकानें बंद कर हजारों की संख्या में जुलूस के समर्थन में और पुलिस के विरोध में उमड़ पड़ते हैं। यह जनता किसी के कहने से नहीं तो स्वयं प्रेरणा से आंदोलन में शामिल हो रही थी। यह एक वैचारिक क्रांति थी। यह केवल जन-जागरण से ही प्राप्त हो रही थी।

स्वाधीनता आंदोलन में स्त्रियों ने भी अहम भूमिका निभाई थी। देश की आधी आबादी कहे जाने वाला स्त्री वर्ग पूरी सशक्तता के साथ गांधीजी के आव्हान पर आंदोलन में उतर पड़ा था ।घर की चार दीवारियों में ही अपना जीवन बितानेवाली स्त्रियाँ अब पूरे दम-खम के साथ पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर अपना अतुलनीय सहयोग दे रही थी। प्रत्येक कार्य में क्षमता से अधिक काम यह स्त्रियाँ कर रही थी। जैसे- चरखें पर सूत कातना हो, विदेशी कपड़ों की होली जलानी हो, आंदोलनकारीयों के लिए रोटियां बनानी हो, सभाओं में भाषण देना हो, साहित्य पत्रिकाओं में लेखन, समाचार पत्र निकालना, आंदोलनकारीयों की सेवा-श्रुषा करना, मलम-पट्टी करना या फिर पति को आंदोलन को समर्पित करने पर उसके पश्चात घर की बागडोर संभालना ऐसी अनेक राजनीतिक सरगर्मियों में बढ़-चढ़कर हिस्सा महिलाएं ले रही

थी। इन सभी कार्यों में वह शामिल रही। समय-समय पर कहीं स्त्रियों ने अपने पिता,पति या पुत्र को देशभक्ति में बलिदान के लिए प्रेरित भी किया है। यह आंदोलन केवल पुरुषों का आंदोलन नहीं था, अपितु यह पढ़ी-लिखी, अनपढ़, युवा और वृद्ध सभी तरह की स्त्रियों का भी आंदोलन था।

प्रेमचंद ने 'जुलूस' में मिट्ठन बाई का पात्र जो एक परंपरागत भारतीय नारी के रूप में दर्शाया है। जो पति को परमेश्वर मानती है किंतु बात जब देशभक्ति की आती है तब वह पति प्रेम से अधिक महत्व देशप्रेम को देती है। वह अपने पति की गलती पर उसे उपदेश देती है कि राजभक्ति से सर्वश्रेष्ठ देशभक्ति है। इब्राहिम अली पर डंडे बरसाने पर वह पति को उल्हाना देते हुए कहती है, "बेगुनाहों के खून से हाथ रंग कर तरक्की पायी, तो क्या पायी। यह तुम्हारी कारगुजारी का इनाम नहीं, तुम्हारे देशद्रोह की कीमत है। तुम्हारी कारगुजरी का इनाम तो तब मिलेगा, जब तुम किसी खूनी को खोज निकालोगे, किसी डूबते हुए आदमी को बचा लोंगे।" तब तुम इनाम के हकदार हो सकते हो। प्रेमचंद ने मिट्ठन बाई के माध्यम से स्वाधीनता आंदोलन के स्त्री पक्ष को उजागर किया है। मिट्ठन सभी आंदोलनकारी स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है। जिन्होंने 'स्वराज' के लिए घर-संसार, पति, बच्चे और सभी सांसारिक सुखों को त्याग कर आजादी के इस महासंग्राम में कमर कस कर हिस्सा लिया था।

मिट्ठन बाई भी इब्राहिम अली के शव यात्रा के जुलूस में स्त्रियों के जत्थें में पहली कतार में चल रही है। युवतियों के दल ने जब दरोगा बीरबल सिंह पर ताने कसना शुरू कर दिया था तब एक स्त्री कहती है, "कोतवाल साहब, कहीं हम लोगों पर डंडे ना चला दीजिएगा। आपको देख कर भय हो रहा है।

दूसरी बोली - आप ही के कोई भाई तो थे, जिन्होंने उसे माल के चौरस्ते पर इस पुरुष पर आघात किए थे।

मिट्ठन ने कहा – आपके कोई भाई ना थे, आप खुद थे।" यह बात कहने में वह जरा भी डरी या सहमी नहीं। पूर्ण निर्भयता से उसने सबके सामने बीरबल सिंह को दोषी ठहराया है।

एक स्त्री की शक्ति को प्रेमचंद ने मिट्ठन बाई के जरिए बताने की कोशिश की है। वह समय आने पर अपने पति का सही पथ प्रदर्शन करती है। उसका मन परिवर्तन करने में वह सफल होती है। बीरबल सिंह पुलिस की नौकरी छोड़ इब्राहिम अली के विधवा के सामने पश्चाताप व्यक्त करता है। यही स्त्री शक्ति की ताकत है जो अपने अभिभावकों को पद्भ्रष्ट होने पर सही रास्ते पर लाती है।

प्रेमचंद ने अपने पात्रों के माध्यम से एक वैचारिक क्रांति की है। यह वैचारिक क्रांति स्वाधीनता आंदोलन के लिए पोषक रही है।

11.3.3 कहानी का भाषा सौंदर्य:-

प्रेमचंद की कहानियाँ जन-मानस के मन की कहानियाँ है। कहानी लेखन के समय प्रेमचंद ने देश,काल, वातावरण का पूरा ध्यान रखा है। परिवेश के अनुसार उन्होंने अपनी लेखनी की भाषा को बदला है। इस कारण पाठक उन कहानियों से तादात्मीकरण करता है और उसे वह अपनी ही लगने लगती है। परिवेश, समय और वातावरण की जोड़ भाषा में जान फूंकती है।

'जुलूस' कहानी की भाषा भी सादी सरल और जन-मानस की भाषा है। सन 1930 में स्वाधीनता आंदोलन के समय हिंदुस्तान में आम बोलचाल की जिस भाषा का उपयोग किया जाता रहा उसी भाषा में कहानी लेखन किया गया है। अंग्रेजों का शासन था तो कांस्टेबल, डी.एस.पी., सुपरीटेंडेंट, पुलिस, ग्रेजुएट जैसे अंग्रेजी भाषा के शब्दों का यथोचित उपयोग किया गया है। जब इब्राहिम अली के संवाद आते हैं तब उर्दू बहुल शब्द अधिक दिखाई देते हैं। जैसे – "जुलूस के बूढ़े नेता इब्राहिम अली ने आगे बढ़कर कहा - मैं आपको इत्मिनान दिलाता हूं, किसी किस्म का दंगा-फसाद ना होगा। हम दुकाने लूटने या मोटरें तोड़ने नहीं निकले हैं। हमारा मकसद इससे कहीं ऊंचा है।" यही भाषा का सौंदर्य है।

कहानी के भाषा का सौंदर्य बढ़ाने के लिए कुछ मुहावरों का भी प्रयोग हुआ है। जैसे - दुम दबाकर भागना, माथा सिकुड़ना, सन्नाटा छा ना, ग्लानी उत्पन्न होना, लज्जित होना आदि का प्रयोग वाक्य रचना में सौंदर्य लाने के लिए किया गया है। प्रेमचंद की भाषा सजीव और सरल होती है। जो सीधे पाठक के मन पर असर करती है। तभी तो उन्होंने बहुत सोच समझकर ऐसी भाषा का चयन किया जो आसानी से सबकी समझ में आ जाती है और जो स्वाभाविक है। जुलूस कहानी के एक उदाहरण से पता चलता है कि उन्होंने साधे सरल शब्दों में भी अलंकारिकता का परिचय दिया है। - "जुलूस शहर के मुख्य सड़कों से गुजरता हुआ चला जा रहा था। दोनों और छतों पर, छज्जों पर, जंगलों पर, वृक्षों पर दर्शकों की दीवारें-सी खड़ी थी। बीरबल सिंह को आज उनके चेहरों पर एक नई स्फूर्ति, एक नया उत्साह, एक नया गर्व झलकता हुआ मालूम होता था। स्फूर्ति थी वृक्षों के चेहरों पर, उत्साह युवकों के और गर्व रमणियों के। यह स्वराज्य के पथ पर चलने का उल्लास था। अब उनको यात्रा का लक्ष्य अज्ञात न था, पथभ्रष्टों के भांति इधर-उधर भटकना न था, दलितों की भांति सर झुकाकर रोना ना था। स्वाधीनता का सुनहला शिखर सुदूर आकाश में चमक रहा था। ऐसा जान पड़ता था कि लोगों को बीच के नालों और जंगलों की परवाह नहीं है।सब उस सुनहले लक्ष्य पर पहुंचने के लिए उत्सुक हो रहे हैं।" यह वाक्यांश प्रेमचंद के भाषा-कौशल का प्रमाण प्रस्तुत करता है। सरल वाक्य विन्यास है। शब्दों का नियोजन उपयुक्त है। तत्सम शब्दों का उपयोग किया गया है किंतु वह आसानी से समझ में आ जाते हैं। यह वर्णन एक स्वाभाविक रीति से हुआ है। यह भाषिक सरलता से संभव हुआ है। ऐसा वर्णन करते हैं कि, पाठक के सामने एक चित्र उभरने लगता है। भारत के आजादी के समय आम जनता की मानसिकता कैसी रही होगी यह जुलूस कहानी पर पढ़कर सहज ही समझा जा सकता है। उपरोक्त उदाहरण में उन्होंने अलंकारिकता के साथ-साथ वृक्षों के चेहरों पर इस वाक्य में प्रकृति के मानवीकरण करके उन्होंने स्वाधीनता आंदोलन यह समूचे परिवेश का आंदोलन था यह बताया है। यह मुक्ति का आंदोलन था। इन संवादों द्वारा उन्होंने वैचारिकता का दर्शन कराए हैं।

11.3.4 कहानी का शैली सौंदर्य :-

प्रेमचंद एक मंझे हुए कहानीकार है। शैली के मामले में वह हिंदी के श्रेष्ठ कथाकारों में विशिष्ट है। वह अपनी शैली भारत की कथा-साहित्य की जातीय परंपरा से ग्रहण करते हैं।

'लोक- मानस' और 'लोक-भूमि' से आत्मीय संबंध, प्रेमचंद की थाती है। वह निश्चल और अकृतिम है। प्रेमचंद ने कहानियों को प्रचलित ढर्रे से बाहर निकाला। वह उसे खास से आम जन-जीवन में ले आए। आदर्श से यथार्थ की ओर का सफर बहुत ही कठिन था। पर उन्होंने अपनी रचना धर्मियता के साथ सादी-सरल शैली का इस्तेमाल किया। जन-मानस की कहानी जन-मानस की बोली भाषा में लिखी। उन्हें लोक जीवन की गहरी समझ थी। इसी आम जन-जीवन से उन्होंने अपने पात्रों का चयन किया। रोजमर्रा के ज्वलंत प्रश्नों को, समाज के सच को, हाशियें के सवालों को अपनी कहानियों के माध्यम से उठाया। समाज को इन प्रश्नों पर विचार करने पर मजबूर किया।

हिंदुस्तान में काफी पुराने-समय से कहानी कहने का अंदाज प्रचलन में रहा है। यह कहानी कहने की लोक शैली है। जिसमें प्रेमचंद कहानी कहना सीखते हैं। वह भी बहुत आराम से और निश्चित भाव से अपने पाठकों को अपनी कहानियों के संसार में धीरे-धीरे उतरने का मौका देते हैं। प्रेमचंद की कहानियां पढ़ते समय पाठक अपने आप को उस कहानी से तादातम्यीकरण करने लगता है। यह लेखक की सफलता है। वह कहानी पढ़ते समय कई मुद्दों पर विचार करने के लिए प्रेरित होता है। वह अपने मन से ही सवाल पूछना प्रारंभ करता है। यह लेखक की खूबियां होती है।

कहानी फुर्सत के समय पढ़ने की चीज होती है। प्रेमचंद की कहानी भी आमोद-प्रमोद के साथ-साथ गहन सोंच, सामाजिक ज्वलंत प्रश्न, देश की आजादी, अन्याय, अत्याचार का विरोध, अस्पृश्यता का विरोध, सांप्रदायिक सौहार्द आदि सभी विषय पर लिखी गई। स्त्रियों के अनेक प्रश्नों को उन्होंने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज की समक्ष रखा की इनके साथ भी उचित न्याय हो।

जुलूस कहानी में भी प्रेमचंद स्वाभाविक और रोचक तरीके से कहानी का वर्णन किया है। पाठक कहानी के अंत तक सम्मोहित अवस्था में रहने को विवश होता है। वर्णन शैली विस्तार की मांग करती है। प्रेमचंद भी यही करते हैं। जब कहानी कहते हैं तो विस्तार के साथ घटना और पात्रों के रहस्य की परतें खोलते जाते हैं। घटनाएं सजीव रूप में सामने आती है और उनके चरित्र अपनी सारी कमियों और खूबियों के साथ उभरने लगते हैं। प्रेमचंद साहित्य और जीवन का अन्य साधारण संबंध मानते हैं। दोनों भी एक दूसरे के बगैर अधूरे हैं।

11.4 : पाठ सार

इस अध्याय में हमने प्रेमचंद की 'जुलूस' कहानी का अध्ययन किया है। महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आंदोलन के पृष्ठभूमि पर लिखी गई कहानी है। स्वाधीनता आंदोलन की व्याप्ति और सामान्य जन की 'पूर्ण स्वराज' की मांग व्यापक रूप में प्रस्तुत करती है।

यह आंदोलन शुद्ध रूप में एक व्यापक जन- आंदोलन था। जिसमें किसान, मजदूर, शिक्षित,श्रमिक, बड़े-बूढ़े, बच्चे और स्त्रियाँ सब की रचनात्मक भूमिका थी। तत्कालीन उच्च वर्ग की भूमिका मात्र संदिग्ध दिखाई देती है।

भारतीय स्वाधीनता आंदोलन उच्च नैतिक मानदंडों के आधार पर संचालित हो रहा था। इब्राहिम अली के माध्यम से गांधीवादी विचारधारा को समाज की समक्ष रखा है।

पुलिस के दस्ते की डंडों की बौछार के बाद जब शहर से हजारों की संख्या में आदमी आ रहे थे तब इब्राहिम अली कहते हैं, "तो अब खैरियत नहीं। हमें फौरन लौट चलना चाहिए, नहीं तूफान मच जाएगा। हमें अपने भाइयों से लड़ाई नहीं करनी है। फ़ौरन लौट चलो।" यहां प्रेमचंद ने इब्राहिम अली के माध्यम से गांधी जी के अहिंसा के तत्व की हिमायत की है। हमें लड़ना नहीं है। मनोवृत्ति में बदलाव ही असल जीत है। महात्मा गांधी जन-सागर को मन की प्रेरणा से इकट्ठा करना चाहते थे। इब्राहिम अली की वसीयत थी की उनके शव को गंगा में नहलाया जाए और उनकी मजार पर स्वराज्य का झंडा लगाया जाए। यह सांप्रदायिक सद्भावना की मिसाल है। भारत जैसे बहुभाषी, बहू प्रांतीय, बहू जातिय, संप्रदाय के जन-मानस को एक छत्र में लाना ही गांधी जी का उद्देश्य था और इसी उद्देश्य की पूर्ति प्रेमचंद जी ने अपनी कहानी के पात्रों के माध्यम से की है।

कहानी का एक और मुख्य पक्ष है। वह है स्त्री पक्ष। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन में स्त्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आधी आबादी कहे जाने वाली स्त्रियाँ किसी एक तपके की न होकर वह समाज के हर तपके से सम्मिलित थी। चाहे वह पढ़ी-लिखी, अनपढ़, बड़ी-बूढी, जवान, विविध जाति, पंथ, संप्रदाय, भाषा, प्रांतों से अपनी स्वराज की लड़ाई में योगदान दे रही थी। जुलूस कहानी की स्त्री पात्र मिट्ठन बाई यह स्त्री पक्ष का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई देती है। वह शुद्ध भारतीय नारी है। वह पति को परमेश्वर तो मानती है पर देशभक्ति को सर्वोपरि मानती है। वह यथा समय बीरबल सिंह की आंखें खोलती है और उसे सीधी राह दिखलाने का कार्य करती है। वह एक घरेलू स्त्री होने के बावजूद पूरी दृढ़ता से अपनी देशभक्ति प्रकट करती है। उसका तेजस्वी चरित्र हमारे सामने भारतीय स्त्री का आदर्श प्रस्तुत करता है। कहानी का शिल्प पक्ष महत्वपूर्ण है। भाषा और शैली प्रेमचंद को एक महान कहानीकार बनाती है। पाठक उनकी कहानियों की भाषा से आत्मीयता अनुभव करता है। शिल्प उसे अपनी ही परिवेश का लगता है। वह कहानी में रममाण होता है। किस्सागोई का पारंपरिक तरीका उसके शिल्प को और निखारता है। यह प्रेमचंद की कहानी की सफलता है।

11.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं –

1) भारतीय स्वाधीनता आंदोलन यह व्यापक रूप में जन आंदोलन था।
2) महात्मा गांधी के अहिंसा के तत्व को दर्शाया गया है।
3) लड़ना हमारा मकसद नहीं है। मनोवुत्ति को बदलना ही हमारी जीत है। जो दीर्घकालिक परिवर्तन है।
4) स्वयंम् प्रेरणा ही सबसे बड़ी ताकत है।
5) सांप्रदायिक सद्भावना ही हमारी एकता और अखंडता की ताकत है।
6) देश की महिलाओं का आजादी के आंदोलन में अतुलनीय योगदान रहा है।
7) राजभक्ति से श्रेष्ठ राष्ट्रभक्ति है।
8) सर्वोत्तम बलिदान भी राष्ट्रभक्ति के सामने कम है।

9) 'पूर्ण स्वराज' ही जनमानस के आंदोलन का लक्ष्य था।

10) इब्राहिम अली के चरित्र के माध्यम से गांधी जी के विचारों का निर्वहन किया गया है।

11.6 शब्द संपदा

1) पारीक - पार्क।

2) हाकिम – शासक, प्रधान, बड़ा।

3) इत्मीनान – संतोष, संतुष्ट।

4) मकसद – उद्देश्य, प्रयोजन, लक्ष्य।

5) तामिल – आज्ञा का पालन।

6) इन्कार – अस्वीकृति, निषेध,नकार।

7) मंशा – इच्छा, आकांक्षा, अपेक्षा।

8) नाजुक - कोमल, सुकुमार, महीन।

9) कारगुजारी – करतूत, होशियारी, चालाकी,करतब।

10) बेटन – डंडा, एक छोटी बेत,छड़ी।

11) तिलमिलाना – तड़पना, छटपटाना।

12) सफ – कतार।

13) विराट – भव्य, बड़ा, विशाल।

14) उन्मंत – मतवाला,विक्षिप्त, जो अपने आप में ना हो।

15) मुकाबला – मुठभेड़, आमना-सामना, बराबरी।

16) खैरियत – कुशल-मंगल,आफियत,भलाई, सलामती।

17) फौरन – जल्दी, तुरंत।

18) परास्त – पराजित, ध्वस्त, हारा हुआ।

19) वैर – दुश्मनी, नफरत।

20) बेहयाई – निर्लज्ज, बेशर्म, ढिठाई।

21) तरक्की – उन्नति, पदोन्नति, बढ़ती, वृद्धि।

22) बरखास्त – विसर्जित, समाप्त।

23) मजार – कब्र, मकबरा, समाधि।

24) जलसा – समारोह, महासभा,महफ़िल,जश्न।

25) सरकश – उद्दंड, बागी, विद्रोही।

27) खाक – मिट्टी, धूल।

२८) हसरत – इच्छा, दिली ख्वाहिश, लालसा।

11.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1) भारत का स्वाधीनता संघर्ष एक जन-आंदोलन था। जुलूस कहानी के आधार पर समझाइए।

2) जुलूस कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए।

1) मिट्ठन बाई का चरित्र चित्रण कीजिए।

2) इब्राहिम अली का व्यक्तित्व सांप्रदायिक एकता का प्रतीक है स्पष्ट कीजिए।

3) जुलूस कहानी के उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I) सही विकल्प चुनिए –

1) जुलूस किस बुजुर्ग नेता के नेतृत्व में निकल रहा था।

अ) दीनदयाल ब) शंभूनाथ क) इब्राहिम अली ड) मैकू

2) बीरबल सिंह की पत्नी का नाम क्या था?

अ) मिट्ठन बाई ब) सरला देवी क) सीताबाई ड) चंदा देवी

3) इब्राहिम अली के शव को किस नदी के पानी से नहलाने की वसीयत थी।

अ) जमुना ब) सरयू क) गोमती ड) गंगा

4) घोड़े के कुचले जाने से किसकी मौत हुई थी।

अ) शंभूनाथ ब) इब्राहिम अली क) बीरबल सिंह ड) मिट्ठन बाई

II) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

1) जो ----- बांधें नंगे पाव घूमता है।

2) अगणित कंठों से ----- की एक ध्वनि निकली।

3) जिस वक्त ----- उठा, लाख-सवा लाख आदमी साथ थे।

4) मिट्ठन - तो तुम्हारी ----- है, तैयार हो जाओ।

III) सुमेल कीजिए –

1) बीरबल सिंह - मजार

2) इब्राहिम अली - दरोगा
3) मिट्ठन - जुलूस के नेता
4) स्वराज का झंडा - महिला आंदोलनकारी

11.8 : पठनीय पुस्तकें

1) प्रेमचंद एक विवेचन --- इंद्रनाथ मदान,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2) प्रेमचंद और उनका युग ---- रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3) मानसरोवर ----- प्रेमचंद
4) प्रेमचंद घर में ---- शिवरानी देवी
5) कलम का सिपाही ---- अमृत राय
6) कलम का मजदूर प्रेमचंद ---- मदन गोपाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

इकाई 12: ठाकुर का कुआं : सारांश एवं पात्रों का विवेचन

इकाई की रुपरेखा

12.1 प्रस्तावना
12.2 उद्देश्य
12.3 मूल पाठ : ठाकुर का कुआँ : सारांश एवं पात्रों का विवेचन
12.3.1 ठाकुर का कुआँ कहानी का प्रयोजन
12.3.2 ठाकुर का कुआँ में व्यक्त वैचारिकता
12.3.3 कहानी का भाषा सौष्ठव
12.3.4 कहानी का शैली सौन्दर्य
12.4 पाठ का सार
12.5 पाठ की उपलब्धियाँ
12.6 शब्द संपदा
12.7 परिक्षार्थ प्रश्न
12.8 पठनीय पुस्तकें

12.1 प्रस्तावना

सदियों से कहानियां बोली, सुनी और बाद में लिखी जाने लगी। कहानियां हमारे समाज का हिस्सा है। प्रचलित और परंपरागत ढंग से मनोरंजन के लिए कहानियां लिखी और पढ़ी जाती रही। जिन्होंने नित-नए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों को लेकर अपनी लेखनी चलाई। लिक से हटकर उन्होंने अपने कहानियों और उपन्यासों में सामाजिक समस्याओं को उजागर किया है।

उनकी कहानियों के पात्र आम जन जीवन से लिए गए थे। रोजमर्रा की जिंदगी का हाल बयां करने वाली कहानियां लिखना अपने आप में एक बहुत ही बड़ा क्रांतिकारी कदम था। कहानियां आमोद-प्रमोद के लिए लिखी जाती रही किंतु प्रेमचंद जी ने उसमें सामाजिक जीवन की झांकियों को प्रस्तुत कर समाज के सच से रू-ब-रू कराया है।

अस्पृश्यता, जातीयता, छुआछूत को लेकर कलम उठाने वालों में प्रेमचंद अग्रणी रहे। निराला तथा राहुल सांकृत्यायन ने भी जातीयता पर अपने लेखनी चलाई है। परंतु प्रेमचंद के साहित्य में उपन्यास और कहानियों में अधिकांश रूप से समाज के इस सत्य को उजागर किया है।

अस्पृश्य जाति के व्यक्तियों को कहानी का नायक बनाना यह तत्कालीन समय में इतना आसान नहीं था। कहानी और उपन्यासों में निम्न जातिय व्यक्तियों को प्रमुख या गौण पात्र के रूप में सामाजिक संदर्भ में वैचारिकता प्रदान करना यह एक क्रांतिकारी कदम था। जैसे सद्गति, ठाकुर का कुआं, दूध के दाम, मंदिर,शुद्र,कफन, घासवाली आदि कहानियां इसके उदाहरण है।

आज हम प्रेमचंद जी की 'ठाकुर का कुआं' इस कहानी का अध्ययन करेंगे। यह कहानी सन 1932 के लगभग लिखी गई कहानी है। यह प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानियां में से एक है। प्रेमचंद ने इस कहानी द्वारा सामाजिक विकृति को दर्शाया है। जो एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जातिय व्यवस्था के आधार पर शुद्र मानती है।

12.2 : उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप –

- भारतीय सामाजिक जाति व्यवस्था से रू-ब-रू हो पाएंगे।
- अस्पृश्यता या जातीयता यह भारतीय संस्कृति पर लगा एक कलंक है यह जान जाएंगे।
- कहानी में चित्रित शोषण व्यवस्था को समझ पाएंगे।
- सामंती व्यवस्था के अत्याचारों से पीड़ित आम जन-जीवन के हालात को समझना।
- 'मनुष्य' से मनुष्य भिन्न कैसे हो सकता है? यह सिद्धांत समझ पाएंगे।
- 'जन्म से व्यक्ति मनुष्य होता है' समाज उसे जातिय व्यवस्था में बांधता है यह समझ पायेंगे।
- निम्न जातियों की आर्थिक स्थिति के कारणों को समझना।

12.3 : मूल पाठ : ठाकुर का कुआँ : सारांश एवं पात्रों का विवेचन

भारतीय सामाजिक व्यवस्था के नंगे सच को उजागर करने वाली 'ठाकुर का कुआं' यह कहानी है। वर्ण व्यवस्था यह कर्मों के आधार पर न होकर वह जाति के आधार पर बनी है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र। शूद्रों को अपने से ऊपर के तीनों वर्ग की गुलाम की तरह सेवा करनी है। इन शूद्रों से सभी तरह के अधिकारों को छीन लिया गया था। मूलतः मनुष्य की तरह जीने का अधिकारी इन से छीन लिया गया। मुख्य समाज से इन्हें हाशिये पर फेंका गया। गांव के बाहर इन लोगों की बस्तियां रही। उनकी छाया से भी उच्च जातियां भ्रष्ट हो जाती। इन्हें अपने पद चिन्हों को मिटाने के लिए कमर में झाड़ू बांध कर चलना होता। जिससे इन के कदमों के निशान मिट जाते।

हवा, पानी, जमीन, आकाश यह तो निसर्ग की दी हुई नेमत है किंतु मनुष्य ने इस पर भी पाबंदियां लगाने का प्रयास किया। 'जल ही जीवन है'। और इसी जल को सवर्णों ने अपने अधिपत्य में ले लिया। उन्होंने निचली जातियों को अपने पनघट से पानी लेने के लिए मनाई कर दी। पानी जैसी बुनियादी जरूरत के लिए भी निचली जातियों को असंख्य मुश्किलों का सामना करना पड़ता। प्रेमचंद जी की 'ठाकुर का कुआं' यह कहानी भी इसी बुनियादी हक की मांग करती है।

'ठाकुर का कुआं' कहानी के प्रमुख पात्र दो है। एक 'जोखू' और दूसरी 'गंगी'। यह दोनों भी निचली जाति के हैं। जोखू और गंगी पति-पत्नी है। जोखू काफी दिनों से बीमार है। "जोखू ने लोटा मुंह से लगाया तो पानी में सख्त बदबू आयी। गंगी से बोला यह कैसा पानी है?

मारे बास के पिया नहीं जाता। गला सूखा जा रहा है और तू सडा पानी पिलाये देती है।" इन संवादों से कहानी की शुरुआत होती है।

जोखू की पत्नी गंगी रोज शाम को पानी भर लाया करती थी क्योंकि कुआ दूर था और बार-बार जाना मुश्किल था। कल शाम जब पानी भर लायी तब उसमें बदबू बिल्कुल नहीं थी। उसने पानी सूंघ कर देखा तो सच में उसमें बदबू आ रही थी। उसने सोचा कि जरूर कोई जानवर कुएं में गिरकर मर गया होगा। पर अब इस समय दूसरा पानी कहां से आएगा। ठाकुर के कुएं पर कोई चढ़ने नहीं देगा। दूसरा कुआं साहू का है जो गांव के दूसरे छोर पर है पर वहां भी कौन-सा पानी मिलने वाला है। तीसरा कुआं तो गांव में है ही नहीं।

जोखू कुछ देर तो प्यास रोके रहा पर वह भी कब तक? कुछ देर बाद नाक बंद कर उस बदबूदार पानी को पीने के लिए तैयार होता है। गंगी उसे पानी पीने नहीं देती क्योंकि वह जानती है कि बदबूदार पानी पीने से उसकी बीमारी और बढ़ जाएगी। वह उसे दूसरा पानी ला देने का आश्वासन देती है तब जोखू उसे आश्चर्य से देखता है कि यह दूसरा पानी लाएंगी कहां से? जो दो कुएँ हैं वह पानी तो लेने नहीं देंगे उल्टा गंगी हाथ-पांव तुड़वाकर आएंगी वह अलग। वह उसे घर में ही चुपचाप बैठने की सलाह देता है।

गंगी का मन नहीं मानता वह करीब नौ बजे के समय में ठाकुर के कुएँ की ओर घड़ा लेकर निकलती हैं। ठाकुर के दरवाजे पर दस-पांच बेफिक्र बैठे हुए थे जो ठाकुर के होशियारी का गुणगान कर रहे थे। गंगी कुएं की जगत की आड़ में बैठ रही सही मौके का इंतजार कर रही थी। यह लोग कब यहां से हटे और वह पानी ले सके। इसके विद्रोही मन में कहीं प्रश्न उपस्थित होते हैं। वह भी उन्हीं की तरह मनुष्य है। सारा गांव इस कुएं से पानी लेता है और उन्हें ही क्यों मनाई। यह लोग ऊंचे जाति के हैं। यह सब ऊंचे जाति के होते हुए एक से एक छटें बदमाश है। ठाकुर ने गरीब गडरियें की भेड चुराई और बाद में मार कर खा गए। इन्हीं पंडितों के घर ताश के अड्डे लगे हैं। यह साहु घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काला बाजारी करते हैं। बेगार करा लेते हैं और मजदूरी देते वक्त बहाने बनाने लगते हैं। इतने पाप करने के बाद यह लोग ऊंचे कैसे?

कुएं पर किसी की आने की आहट से वह डर कर वृक्ष के अंधेरे साए में जा खड़ी हुई क्योंकि इन ऊंचे जाति वालों को कभी किसी पर दया नहीं आती। वह आहट स्त्रियों की थी जो कुएं पर पानी भरने आई थी। बेचारी पानी भरते समय एक दूसरे का दु:ख बांट रही थी। ऊंची जाति में भी स्त्री वर्ग को गुलाम समझ जाता था। वह उसे खाना, कपड़ा और रहने के लिए घर देते हैं इसलिए वह उनके गुलाम होती है। जब चाहे, जैसा चाहे वह उस से काम करवा सकते हैं। यही पुरुषी मानसिकता उनके बोलचाल से दिखाई देती है।

ठाकुर का दरवाजा बंद होते ही गंगी को लगा अब मैदान साफ है और उसने बड़ी सावधानी से पानी में डोल फेंका और जल्दी-जल्दी से पानी खींच ने लगी। घड़ा कुएं के मुंह तक आ पहुंचा बस अब हाथ से पकड़ कुएं की जगत पर रखे की उतने में ही ठाकुर का दरवाजा खुलता है और वह डर के मारे गंगी के हाथ से रस्सी छुटती है और बहुत जोर से घड़ा पानी में गिरने के कारण आवाज होती है। ठाकुर पुकार लगाते हुए कुए की ओर आते हैं और गंगी उतनी

ही तेजी से कुएं से भाग खड़ी होती है। वह जब घर पहुंचती है तब देखती है कि जोखू लोटा मुंह से लगाए वही गंदा-मैला पानी पी रहा है।

गंगी के मन ने विद्रोह किया और वह पानी लेने ठाकुर के कुए तक भी गयी। उसने पानी भी घड़ा भर निकला पर ठाकुर के द्वार खुलते ही वह सदियों की गुलामी और अत्याचारों के खौफ से उसके हाथों से रस्सी फिसल गई। घड़ा फिर से कुएं में जा गिरा। सदियों से जो डर दिलों में बैठा है वह विद्रोह कर घड़ा भर पानी नहीं ले पाया।

- **बोध प्रश्न :-**
- भारतीय समाज में 'अस्पृश्यता एक कलंक है' स्पष्ट कीजिए।
- 'ठाकुर का कुआं' शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए। प्रे

12.3.1 ठाकुर का कुआं कहानी का प्रयोजन:-

प्रेमचंद ने सन 1932 के लगभग यह कहानी लिखी है। तत्कालीन समय में महाराष्ट्र में डॉक्टर बाबासाहेब आंबेडकर अस्पृश्यता को मिटाने और मनुष्य के बुनियादी हकों के लिए लड़ाई लड़ रहे थे। सन 1927 में उन्होंने पानी जैसी बुनियादी जरूरत के लिए महाड के चवदार तालाब पर सत्याग्रह किया। पानी सभी के लिए है। उसे कुछ जातियों के लिए आरक्षित नहीं किया जा सकता। वह निसर्ग की देन है और उस पर सबका बराबरी का अधिकार है। अंबेडकर जी के इन आंदोलनों का प्रभाव सभी भारतीय प्रांतों पर हो रहा था। इसी समय प्रेमचंद की लेखनी का रूख यथार्थवादी कहानियां की और मुड़ गया था।

प्रेमचंद ने इस कहानी की रचना कर अस्पृश्य समाज में जागृति लाने का प्रयास किया है। प्रथमत: तो उन्होंने दलित समाज के व्यक्तियों को अपने कहानियों का नायक बनाया यह एक वैचारिक विद्रोह था। उच्चभ्रू कहलानेवाला समाज इतनी आसानी से साहित्य जगत में हाशिए के समाज के आगमन को हजम नहीं कर सकता था। जो समाज हमेशा दूसरों की सेवा करने के लिए है। वह भला कैसे किसी कहानी का नायक या नायिका बन सकता है। मुख्य धारा के समाज में निचली जातियों को केवल शोषण के लिए या उनसे सेवा करवाने के लिए ही उपयोग में लाया है।

जो समाज हमेशा दबा, कुचला, पिछड़ा, मुख्य धारा से कटा हुआ, मुख्य प्रवाह से खदेडा हुआ समाज था। वह इस तरह से साहित्य के केंद्र में लाना एक साहसी कदम था। यह प्रेमचंद जी का इस कहानी को लेकर जो प्रयोजन रहे उनमें से एक है। सदियों से गुलामी की जंजीरों से बना हुआ यह समाज 'ठाकुर का कुआं' इस कहानी के माध्यम से मनुष्य जाति में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहा था। जिन जातियों को 'अस्पृश्यत' मान मनुष्य होने के उनके अधिकार को ही नकारा गया था। ऐसे समाज को अपनी कहानी के द्वारा उपस्थिति दर्ज कराकर आने वाले समय में साहित्य के केंद्र में और समाज के केंद्र में आने के द्वारों को प्रेमचंद ने खोल दिया था।

12 .3.2 ठाकुर का कुआं में व्यक्त वैचारिकता :-

प्रेमचंद ने ठाकुर का कुआं में गंगी और जोखू के माध्यम से मनुष्यता के अधिकारों से वंचित जाति का चित्रण किया है। जिस तरह से पशु की जाती है, पक्षियों की जाती है, इस तरह मनुष्य की जाति भी है। सभी पशु या पक्षी अपने समुदाय या झुंड में सबके साथ मिलजुल कर रहते हैं पर हमारी मनुष्य जाति में इस स्पृश्य और अस्पृश्यता का भेद क्यों? हम एक ही समुदाय के लोग हैं। एक जैसे ही दिखते हैं, रहते हैं और खाते-पीते भी है फिर यह स्पृश्य और अस्पृश्य का भेद क्यों? अस्पृश्य जाती खेत-खलियानों में पशु से भी बढ़कर जी तोड़ कर जो अन्न उपजाती है वह हमें चलता है पर उन्हीं जाति के लोगों की छाया से हम कैसे भ्रष्ट होते हैं? उनके हाथों से फोड़ी लकड़ी चलती है, उपजाया अन्न चलता है, साफ-सफाई चलती है और उनका छूना वर्ज्य है। यह कैसा न्याय? शोषण करने के लिए ही यह जाती, प्रथा बनाई गई है। धार्मिक और संस्कृतिक अधिकारों से भी उन्हें वंचित रखा गया है। सारे सृष्टि का पालन करता तो एक ही ईश्वर है। फिर वह कैसे कह सकता है कि स्वर्ण को मंदिर में प्रवेश और पूजा-अर्चना का अधिकार है और अस्पृश्यों को मंदिर प्रवेश के अधिकारों से नकारता है। यह तो गलत न्याय हुआ? ऐसा एक सृष्टि का पालन करता किस तरह कर सकता है?

जल, जमीन, जंगल,हवा यह तो हमारे नैसर्गिक स्रोत है। जल ही जीवन है। फिर भला जीवन देने में इस तरह से बंटवारा क्यों? पानी पशु, पक्षी, मनुष्य सभी के लिए आवश्यक है। पर प्रेमचंद द्वारा लिखी 'ठाकुर के कुएं' में गंगी जो अस्पृश्य जाति की है वह एक घड़ा पानी ठाकुर के कुएं से नहीं ले जा पाती। वह स्वर्णों का कुआं है। गंगी के छूने से वह पानी भ्रष्ट हो जाएगा। यह कैसे हो सकता है? बेचारी अपने बीमार पति के लिए पानी लेने ठाकुर के कुएं पर हिम्मत कर आ तो जाती है किंतु पेड़ों की आड़ में छुपी रहती है कि कब ठाकुर के द्वार पर बैठे लोगों का जमघट उठ जाए तो वह किसी तरह एक घड़ा पानी पीने के लिए ले सके। इस इंतजार में वह घंटो काट देती है। जब हिम्मत कर कुएँ में डोल दाल देती है और उसे निकालने में सफलता के एक कदम करीब होती है तो इतने में ही ठाकुर का द्वार खोलना उसे अंदर से बाहर तक हिला देता है। और वह उतने ही तपाक से डोल की रस्सी हाथ से छोड़ देती है और कुएं से भाग खड़ी होती है।

ठाकुर का द्वार खुलते हैं गंगी के हाथ के से रस्सी छूटना यह सदियों के गुलामी और अत्याचारों का डर उसे अंदर से हिला देता है और वह कुएं की जगत से भाग जाती है। जितनी हिम्मत जताकर वह घंटो से पेड़ों की आड़ में इंतजार कर रही थी वह एक ही क्षण में ठाकुर की दहाड़ से टूट गई। सदियों का डर यहां जीत गया। क्योंकि गंगी को पता है कि यदि वह ठाकुर के हाथ लग गई तो उसी क्षण उसके हाथ-पैर तोड़ दिए जा सकते हैं। इतनी दहशत,डर,खौफ, अत्याचार सह-सह कर उनके दिलों में बहुत अंदर तक गहरे बैठ गयी है। उस डर को निकालना इतना आसान नहीं है। अस्पृश्यों को मानसिक और शारीरिक गुलामी की जंजीरों में जखड रखा गया था।

प्रेमचंद ने गंगी के चरित्र के द्वारा यह बतलाया है की गंगी का ठाकुर के कुएं पर जाकर पानी लाने की सोच ही इस अस्पृश्य जातियों की वैचारिक क्रांति का पहला कदम है। यह

सोचना भी बहुत बड़ी हिम्मत की बात है कि 'ठाकुर के कुएं से पानी ले आना है।' गंगी ने हिम्मत दिखाई है उसे घड़ा पानी में डाला भी है पर खौफ के मारे वह पानी निकालने में सफल हो नहीं पाई किंतु यह ठाकुर के कुएं पर जाने की सोचना ही पहला क्रांतिकारी कदम है।

12.3.3 कहानी का भाषा सौष्ठव :-

प्रेमचंद की अधिकतर कहानियों की भाषा सरल रही। ठाकुर का कुआँ इस कहानी की भाषा भी सरल ही दिखाई देती है। कहानी का परिवेश ग्रामीण है। कहानी में हिंदी, उर्दू,अरबी, फारसी जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे- आश्चर्य, नाजीर, नकल,अकलमंदी,फरेब,कुप्पी, लौंडिया, कलसिया आदि विविध भाषा के शब्द दिखाई देते हैं।

कहानी की भाषा सरल और पात्रों के परिवेश से जुड़ी होने के कारण कहानी अपने-आप आगे बढ़ती हुई नजर आती है। कुछ संवादों के जरिए हम देख सकते हैं।- "ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट बताएंगे। साहू का कुआं गांव के उस सिरे पर है, परंतु वहां भी कौन पानी भरने देगा? कोई तीसरा कुआं गांव में है नहीं।"

आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है। पात्रों के मुख से कहे जाने वाले संवाद परिवेश से मेल खाते हैं। यही इस कहानी की भाषा का सौंदर्य है। इस कहानी की नायिका "गंगी का विद्रोही दिल रिवाजी पाबंदियों और मजबूरीयों पर चोंटे करने लगा - हम क्यों नीच है और यह लोग क्यों ऊंचे हैं? इसलिए कि यह लोग गले में तागा डाल लेते हैं? यहां तो जितने हैं एक-से-एक छटें हैं। चोरी यह करें, जाल- फरेब यें करें, झूठे मुकदमे यह करें। अभी इस ठाकुर ने तो उसे दिन बेचारे गडरिये की भेड चुरा ली थी और बाद में मारकर खा गया। इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजदूरी देते नानी मरती है। किस-किस बात में हमसे ऊंचे हैं, हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊंचे हैं, हम ऊंचे।" इसी के साथ मुँहवरों का भी प्रयोग हुआ है जो भाषा के सौंदर्य को अधिक निखारता है,- जैसे- नानी मरना, छाती पर सांप लोटना, मैदान साफ होना, कलेजा मजबूत करना आदि का भाषा के अनुसार प्रयोग किया गया है।

प्रेमचंद ने कहानी के बीच संवादों की रचना कर भाषा को अधिक प्रभावी बनाया है- जैसे कुएं पर स्त्रियाँ पानी भरने आई थी। इनमें बातें हो रही थी।–

"खाना खाने चले और हुक्म हुआ की ताजा पानी भर लाओ। घड़े के लिए पैसे नहीं है।'
'हम लोगों को आराम से बैठा देखकर जैसे मर्दों को जलन होती है।'
'हां यह तो ना हुआ कि कलसिया उठाकर भर लाते। बस,हुक्म चला दिया की ताजा पानी लाओ, जैसे हम लौंडिया ही तो हैं।''

इन्हीं छोटे-छोटे संवादों से कहानी का भाषा सौष्ठव निखर आया है।परिवेश के अनुसार भाषा का चयन कहानी की भाषा को सरल और प्रभावशाली बनाता है।

12.3.4 कहानी का शैली सौंदर्य :-

'ठाकुर का कुआं' इस कहानी की शैली संवादात्मक है। वर्णनात्मक शैली भी इस कहानी में दिखाई देती है। गंगी और जोखू के संवादों से कहानी की शुरुआत होती है। कहानी के बीच-बीच वर्णनात्मक पद्धति से लेखकिय टिप्पणियों से कहानी को सरलता से आगे बढ़ाया गया है।

कहानी का परिवेश ग्रामीण है। यह कहानी 'दलित अस्मिता' की कहानी के रूप में जानी जाती है। स्पृश्य- अस्पृश्यता की विकृत मानसिकता मनुष्यता को नीचा दिखाती हुई नजर आती है। पानी सभी की बुनियादी जरूरत है किंतु दलित जातियों की यह जरूरत भी पूरी नहीं हो पाती है। अस्पृश्य जातियों का तात्कालिन सामाजिक विदारक चित्रण हमें इस कहानी के माध्यम से देखने को मिलता है।

कहानी के प्रमुख पात्रों के माध्यम से निम्न जातिय मूलभूत अधिकारों से किस तरह वंचित है यह दर्शाया गया है। लेखक ने कहानी में वर्णनात्मकता को प्रधानता दी है किंतु यहीं कहीं पर चित्रात्मकता भी दिखाई देती है।– "घड़े ने पानी में गोता लगाया, बहुत ही आहिस्ता। जरा भी आवाज ना हुई। गंगी ने दो-चार हाथ जल्दी-जल्दी मारे। घड़ा कुएं के मुंह तक आ पहुंचा कोई बड़ा शहजोर पहलवान भी इतनी तेजी से न खींच सकता था।" यह पढ़ते समय ऐसा लगता है कि हम चलचित्र देख रहे हैं। इसी में लेखक की सार्थकता है।

12.4 : पाठ सार

इस अध्याय में हमने 'ठाकुर का कुआं' इस कहानी का अध्ययन किया है। डॉ.बाबासाहब आंबेडकर जी के पानी के हक़ के लिए किए गए आंदोलनों स्पष्ट रूप से इस कहानी पर प्रभाव दिखाई देता है। प्रेमचंद की यह कहानी दलित अस्मिता की कहानी मानी जाती है।

हाशिए के समाज को साहित्य के केंद्र में लाने का महनीय कार्य प्रेमचंद जी ने किया है। मनुष्यता के अधिकारों से दलित समुदाय को वंचित रखा गया था। सदियों से हो रहे शोषण की, गुलामी की जंजीरों को तोड़ने की पहल प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य के जरिए की है। 'ठाकुर का कुआं' इस कहानी में दलित पात्रों को कहानी का नायक बनाना यह एक क्रांतिकारी कदम रहा। प्रचलित ढर्रे से हटकर उन्होंने कदम उठाए और आगे भी अपनी लेखनी से समाज में जागृति लाने का कार्य किया है।

जोखू और गंगी के माध्यम से उठाए गए प्रश्न यह हमारी मनुष्यता पर लगाए गए सबसे बड़े प्रश्न चिन्ह है। जोखू कहता है, "ठाकुर के कुएँ पर कौन चढ़ने देगा? दूर से लोग डाँट बताएंगे। साहू का कुआं गांव के उस सिरे पर है, परंतु वहां भी कौन पानी भरने देगा? कोई तीसरा कुआं गांव में है नहीं।" इससे स्पष्ट होता है कि एक बीमार आदमी बदबूदार पानी पीने के लिए मजबूर है। जितने भी पानी के स्रोत है वह स्वर्ण के हैं। वहां पर पहरा होता है। पानी यह बुनियादी जरूरत है और उसके लिए तड़पना यह कहां का न्याय है।

अपना वर्चस्व कायम रखने के लिए पानी जैसी बुनियादी जरूरत पर पाबंदी लगाना क्या उचित है? इतनी अमानुषता? फिर मुख्य प्रवाह अपने आप को सभ्य और सुसंस्कृत कैसे कह

सकता है? सभ्यता तो बराबरी और सभी के जीने का हक प्रदान करती है फिर यह मुख्य प्रवाह विपरीत मूल्य का निर्वहन क्यों कर रहा है।

जोखू को पानी के लिए तड़पता देख गंगी दूसरे कुएं से पानी ले आने के लिए कहती है। तब-

"जोखू ने आश्चर्य से उसकी और देखा- पानी कहां से लायेंगी?

ठाकुर और साहू के दो कुएं तो है। क्या एक लोटा पानी न भरने देंगे?

'हाथ-पांव तुड़वा आएगी और कुछ ना होगा। बैठ चुपके से। ब्रह्म-देवता आशीर्वाद देंगे, ठाकुर लाठी मारेंगे, साहू जी एक के पांच लेंगे। गरीबों का दर्द कौन समझता है! हम तो मर भी जाते हैं तो कोई द्वार पर झाकनें नहीं आता, कंधा देना तो बड़ी बात है। ऐसे लोग कुएं से पानी भरने देंगे?"

इस कथन द्वारा जोखू के माध्यम से प्रेमचंद जी ने हमारे समाज व्यवस्था का विदारक सत्य हमारे सामने रखा है।

प्रेमचंद जी के इस कहानी पर हमें अंबेडकरवादी विचारधारा का प्रभाव भी दिखाई देता है। क्योंकि इसी समय महाराष्ट्र के महाड के चवदार तालाब पर 'पानी जैसे बुनियादी हक' के लिए आंदोलन किया था।

12.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1) कहानी साहित्य में 'ठाकुर का कुआं' यह कहानी क्रांतिकारी कहानी की श्रेणी में आती है।

2) प्रेमचंद ने इस कहानी के माध्यम से समाज का विदारक सत्य उजागर किया है।

3) पानी जैसे बुनियादी हक के लिए अछूतों का शोषण किस तरह होता रहा है यह दिखाई देता है।

4) भारतीय समाज व्यवस्था की चातुर्वर्ण पद्धति जो शोषण का मूलक है यह दिखाई दिया है।

5) समानता, बंधुता और मानवीय अधिकार की बात इस कहानी के माध्यम से उठाई गई है।

6) लेखकिय प्रतिबद्धता निभाई गई है।

7) शोषक और शोषण के बीच की खाई को स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है।

8) गंगी और जोखू के माध्यम से समाज से प्रश्न पूछे गए हैं। जो जवाब के रूप में सुधार की अपेक्षा की प्रतीक्षा में है।

12.6 : शब्द संपदा

1) द्वार – दरवाजा।

2) रिश्वत – घूस,लाच।

3) नाजिम – प्रबंधक, अधिकारी।

4) मोहतमिम – क्रमगत, जिसका एतमाम किया गया, बंदोबस्त।

5) नकल - प्रतिलिपि।
6) कुप्पी - चमड़े का बना हुआ छोटा बर्तन जिसमें तेल फूलेल आदि रखते हैं।
7) धुंधली - जो साफ न दिखाई दे।
8) जगत - कुए के ऊपर चारों तरफ बना हुआ चबूतरा।
9) फरेब – छल, धोखा।
10) मुकदमा – दावा,अभियोग।
11) हुक्म - आदेश।
12) बेगार - बिना मजदूरी के बलपूर्वक करवाया जाने वाला काम।
13) कलसियाँ - पानी का छोटा घड़ा।
14) लौंडिया – लड़की, नौकरानी, दासी,
15) बेफिक्रे – निश्चित, बेपरवाह, चिंता रहित।
16) रियायत – लिहाज, नरमी, मेहरबानी।
17) कलेजा – जिगर, हिम्मत, साहस।

12.7: परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न:-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1) 'ठाकुर का कुआं' कहानी में व्यक्त वर्ग संघर्ष को स्पष्ट कीजिए।
2) "'ठाकुर का कुआं' कहानी एक वैचारिक क्रांति की पहल है" स्पष्ट कीजिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न :-

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में लिखिए।

प्रश्न 1. 'गंगी' का चरित्र चित्रण कीजिए।

प्रश्न 2. 'ठाकुर का कुआं' कहानी का परिवेश बतलाइए।

प्रश्न 3. 'पानी मूलभूत अधिकार है।' इस कथन को ठाकुर का कुआं कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I] सही विकल्प चुनिए।

1) 'ठाकुर का कुआं' कहानी की स्त्री पात्र का क्या नाम है?

अ) जमुना ब) सीता क) राधा ड) गंगी

2) 'ठाकुर का कुआं' कहानी में मूल समस्या किस चीज की है।

अ) हवा ब) जमीन क) पानी ड) धुप

3) कहानी में बीमार कौन है?

अ) ठाकुर ब) साहू क)पंडित ड) जोखू

4) बदबू किस चीज में आ रही थी?

अ) खाने में ब) पानी में क) मिठाई में ड) अनाज में

II] रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1) जरूर कोई जानवर--------- में गिरकर मर गया होगा।

2) --------- के कुएँ पर चढ़ने कौन देगा?

3) ब्रह्मा देवता ------- देंगे।

4) काम करा लेते हैं, मजदूरी देते ----- मरती है।

5) गंगी के हाथ से ------ छूट गयी।

III] सुमेल कीजिये।

1) कुआं	(अ) पानी
2) गंगी	(आ) ठाकुर
3) बदबू	(इ) जुआ
4) पंडित	(ई) जोखू

12.8 पठनीय पुस्तकें

1) प्रेमचंद एक विवेचन --- इंद्रनाथ मदान,राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

2) प्रेमचंद और उनका युग ---- रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

3) मानसरोवर ----- प्रेमचंद

4) प्रेमचंद घर में ---- शिवरानी देवी

5) कलम का सिपाही ---- अमृत राय

6) कलम का मजदूर प्रेमचंद ---- मदन गोपाल, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

इकाई 13: प्रेमचंद की पत्रकारिता

इकाई की रूपरेखा

13.1- प्रस्तावना

13.2 – उद्देश्य

13.3 - मूल पाठ : प्रेमचंद की पत्रकारिता

13.3.1 पत्रकारिता: एक परिचय

13.3.2- प्रेमचंद की पत्रकारिता और उनका संघर्ष

13.3.3– प्रेमचंद की पत्रकारिता एवं स्वतंत्रता संग्राम

13.3.4 – प्रेमचंद के पत्र, लेख व संपादकीय

13.4- उपसंहार

13.5 – पाठ की उपलब्धियां

13.6 - शब्द सम्पदा

13.7 – परीक्षार्थ प्रश्न

13.8 सहायक पुस्तक

13.1 : प्रस्तावना

सत्य की खोज में रत रहते हुए समाज में उदार मूल्यों की स्थापना की दिशा में पत्रकारिता की भूमिका विशेष उल्लेखनीय है । इसका मूल लक्ष्य ही अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना दोषों का परिहार, असहाय और पीड़ितों की रक्षा एवं सहयोग तथा जनता का पथ प्रदर्शन करना है।

पत्रकारिता के बारे में पं० पराड़कर कहते हैं- पत्रकारिता यानी तलवार की धार पर धावना है। पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' कहते हैं- मेरी राय में पत्रकार बनने से पूर्व आदमी को समझ लेना चाहिए कि यह मार्ग त्याग का है, जोड़ का नहीं। जिस भाई या बहन को भोग-विलास की लालसा हो, वह और धंधा करे। रहम करे. इस राम रोजगार पर मेरा आदर्श पत्रकार, ईमानदार पादरी, पीर, परमहंस सा नजर आता है। गणेश शंकर विद्यार्थी के लिए पत्रकारिता का एक मात्र ध्येय लोक सेवा एवं जनहित था। बालगंगाधर तिलक पत्रकारिता को जनजागरण का प्रमुख हथियार मानते थे।

मेरी राय में पत्रकार बनने से पूर्व आदमी को समझ लेना चाहिए कि यह मार्ग त्याग का है, जोड़ का नहीं। जिस भाई या बहन को भोग-विलास की लालसा हो, वह और धंधा करे। रहम करे, इस राम रोजगार पर मेरा आदर्श पत्रकार ईमानदार पादरी, पीर, परमहंस सा नजर आता है।" - पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र'

पं० जवाहरलाल नेहरू कहते थे पत्रकारिता राष्ट्रीयता का चिन्तन तथा न्याय विरुद्ध शक्तियों को अवरुद्ध करने और नए राष्ट्र के निर्माण का सबसे सशक्त माध्यम है। टर्नर केटलिज के अनुसार समाचार कोई ऐसी चीज है, जिसे आप कल (बीते) तक नहीं जानते थे। जबकि मैस फील्ड कहते हैं "घटना समाचार नहीं है, बल्कि वह घटना का विवरण है, जिसे उनके लिए लिखा जाता है, जिन्होंने उसे देखा नहीं है।"

जेम्स मैकडोनाल्ड के मुताविक 'पत्रकारिता को मैं रणभूमि से भी अधिक बड़ी समझता हूँ। यह कोई पेशा नहीं है, बल्कि पेशे से कोई ऊंची चीज है। यह एक जीवन है, जिसे मैंने अपने को स्वेच्छा पूर्वक समर्पित किया है।

13.2 : उद्देश्य

पत्रकारिता आज एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में सामने आया है जिसकी उपयोगिता समाज में बहुत बढ़ गयी है पत्रकारिता का सामान्य व व्यवहारिक सूक्ष्म ज्ञान यदि आप रखते भी होंगे, लेकिन विषय की मूल प्रकृति व स्वरूप को विस्तृत रूप से समझना आवश्यक है। इस इकाई में पत्रकारिता का स्वरुप एवं प्रकृति,प्रेमचंद की पत्रकारिता एवं स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिंदी पत्रकारिता एवं इसके विभिन्न आयामों का अध्ययन किया गया है।

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप :

- पत्रकारिता की परिभाषा एवं उसके स्वरुप को समझ सकेंगे।
- पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास के बारे में विधिवत जानकारी प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- प्रेमचंद की पत्रकारिता यात्रा एवं उनके महत्त्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाओं की उपयोगिता के बारे में समझ सकेंगे।
- प्रेमचंद युगीन पत्रकारिता एवं तत्कालीन परिस्थितयों का मूल्यांकन कर सकेंगे।

13.3: मूल पाठ : प्रेमचंद की पत्रकारिता

13.3.1 पत्रकारिता: एक परिचय

पत्रकारिता समाज का आईना है। वह मनुष्य की आस्थाओं, विचारों, मूल्यों को सही रूप में जनता के सामने रखती है। ऐसे में पत्रकारिता का लक्ष्य क्या हुआ? इसका उत्तर होगा साहित्यिक कलात्मक रुझान को बढ़ाना, नैतिक तथा सामाजिक मूल्यों की प्रतिष्ठा करना, भौतिकवादी दुनिया में सही मार्ग दिखाना, सुखी जीवन के द्वार खोलना आदि।

पत्रकारिता का संबंध सूचनाओं को संकलित और संपादित कर आम पाठकों तक पहुँचाने से है। लेकिन हरएक सूचना समाचार नहीं होती है। पत्रकार कुछ ही घटनाओं, समस्याओं और विचारों

को समाचार के रूप में प्रस्तुत करते हैं। किसी घटना के समाचार बनने के लिए उसमें नवीनता, जनरुचि, निकटता, प्रभाव जैसे तत्त्वों का होना ज़रूरी है।अपने रोज़मर्रा के जीवन के किसी आम दिन की कल्पना कीजिए। दो लोग आसपास रहते हैं और लगभग रोज़ मिलते हैं। कभी बाज़ार में, कभी राह चलते और कभी एक-दूसरे के घर पर। भेंट से पहले की कुछ मिनट की उनकी बातचीत पर ध्यान दीजिए। हर दिन उनका पहला सवाल क्या होता है? 'क्या हालचाल है?' या 'कैसे हैं?' या फिर 'क्या समाचार है?' रोज़मर्रा के इन सहज प्रश्नों में ऊपरी तौर पर कोई विशेष बात नहीं दिखाई देती। इन प्रश्नों को ध्यान से सुनिए और सोचिए। इसमें आपको एक इच्छा दिखाई देगी। नया और ताज़ा समाचार जानने की। पिछले कुछ घंटे का हाल जानने की। या बीती रात की खबरें। कल से आज के बीच या कुछ घंटों के अंतराल में आए बदलाव की जानकारी। यानी हम अपने मित्रों, रिश्तेदारों और सहकर्मियों से हमेशा उनका कुशलक्षेम या उनके आसपास की घटनाओं के बारे में जानना चाहते हैं। कहने की ज़रूरत नहीं है कि अपने आसपास की चीजों, घटनाओं और लोगों के बारे में ताज़ा जानकारी रखना मनुष्य का सहज स्वभाव है। उसमें जिज्ञासा का भाव बहुत प्रबल होता है। यही जिज्ञासा समाचार और व्यापक अर्थ में पत्रकारिता का मूल तत्त्व है। यदि हमारे भीतर जिज्ञासा नहीं रहेगी तो समाचार की भी ज़रूरत नहीं रहेगी। पत्रकारिता का विकास इसी सहज जिज्ञासा को शांत करने की कोशिश के रूप में हुआ। वह आज भी इसी मूल सिद्धांत के आधार पर काम करती है ।

हम सूचनाएँ या समाचार क्यों जानना चाहते हैं? दरअसल, सूचनाएँ अगला कदम तय करने में हमारी सहायता करती हैं। इसी तरह हम अपने पास-पड़ोस, शहर, राज्य और देश-दुनिया के बारे में जानना चाहते हैं। ये सूचनाएँ हमारे दैनिक जीवन के साथ-साथ पूरे समाज को प्रभावित करती हैं। आज देश-दुनिया में जो कुछ हो रहा है, उसकी अधिकांश जानकारी हमें समाचार माध्यमों से मिलती है। सच तो यह है कि हमारे प्रत्यक्ष अनुभव से बाहर की दुनिया के बारे में हमें अधिकांश जानकारी समाचार माध्यमों द्वारा दिए जाने वाले समाचारों से ही मिलती है ।

पत्रकारिता के मूल्य

पत्रकारिता एक तरह से 'दैनिक इतिहास' लेखन है। पत्रकार प्रतिदिन का इतिहास अखबार के पन्नों में दर्ज करता चलता है। उसका काम ऊपरी तौर पर बहुत आसान लगता है लेकिन वह इतना आसान होता नहीं। उस पर कई तरह के दबाव हो सकते हैं। अपनी पूरी स्वतंत्राता के बावजूद पत्रकारिता सामाजिक और नैतिक मूल्यों से जुड़ी रहती है। उदाहरण के लिए सांप्रदायिक दंगों का समाचार लिखते समय पत्रकार प्रयास करता है कि उसके समाचार से आग न भड़के। वह सचाई जानते हुए भी दंगों में मारे गए या घायल लोगों के समुदाय की पहचान स्पष्ट नहीं करता। बलात्कार के मामलों में वह महिला का नाम या चित्र नहीं प्रकाशित करता ताकि उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा को कोई धक्का न पहुँचे। पत्रकारों से अपेक्षा की जाती है

कि वे पत्रकारिता की आचार संहिता का पालन करें ताकि उनके समाचारों से बेवजह और बिना ठोस सबूतों के किसी की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा को नुकसान न हो और न ही समाज में अराजकता और अशांति फैले।

एक पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना भी बहुत ज़रूरी है। उसकी निष्पक्षता से ही उसके सामाचार संगठन की साख बनती है। यह साख तभी बनती है जब समाचार संगठन बिना किसी का पक्ष लिए सचाई सामने लाते हैं। पत्रकारिता लोकतंत्रा का चैथा स्तंभ है। इसकी राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में अहम भूमिका है। लेकिन निष्पक्षता का अर्थ तटस्थता नहीं है। इसलिए पत्रकारिता सही और गलत, अन्याय और न्याय जैसे मसलों के बीच तटस्थ नहीं हो सकती बल्कि वह निष्पक्ष होते हुए भी सही और न्याय के साथ होती है।

बोध प्रश्न

- पत्रकारिता का मूल लक्ष्य क्या है?

हिंदी पत्रकारिता का उद्भव

हिंदी पत्रकारिता में सर्वप्रथम प्रकाशित हिंदी समाचार पत्र के रूप में उदंत मार्तंड का नाम सर्वमान्य है। परंतु वेद प्रताप वैदिक द्वारा संपादित हिंदी पत्रकारिता विविध आयाम नामक पुस्तक में प्रकाशित जानकारी में डॉक्टर महादेव में दिग्दर्शन को हिंदी का प्रथम पत्र घोषित किया है। उनकी यही मान्यता 1959 और 1960 के राष्ट्रीय भारती और सरस्वती के अगस्त एवं जनवरी के अंकों में प्रकाशित हुई है। इस जानकारी के अनुसार अप्रैल 1818 से मार्च 1819 में श्रीरामपुर बंगाल मिशनरियों ने दिग्दर्शन नाम का एक मासिक समाचार पत्र निकाला जिसके संपादक जॉन क्लर्क मार्सकमेन इस दौरान इस पत्रिका के हिंदी में कुल 16 अंक निकले बाद में इसे अंग्रेजी और बंगला में भी प्रकाशित किया गया इस तरह दिग्दर्शन बंगला तथा हिंदी दोनों ही भाषाओं का पहला समाचार पत्र माना जा सकता है। एक अन्य विद्वान जोगेंद्र सक्सेना के अनुसार 1818 से 1820 तक दरबार रोजनामचा दैनिक नामक एक अखबार निकला करता था। अखबार राजस्थान के बूंदी से निकलता था। इस अखबार की हिंदी प्रति उपलब्ध नहीं है। इसीलिए हिंदी के पहले अखबार होने का श्रेय दिग्दर्शन या दरबार रोजनमचा को नहीं जाता है स्पष्ट प्रमाण के अभाव में घोषित रूप से हिंदी का पहला समाचार पत्र उदंत मार्तंड को माना गया है। उदंत मार्तंड को हिंदी को पहला अखबार घोषित करने का श्रेय मॉडन के संपादक बजेंद्र मोहन बंदोपाध्याय को जाता है। 1931 के पहले तक बनारस अखबार जो गोविंद रघुनाथ के संपादक में 1843 में हुआ था को हिंदी का पहला अखबार माना जाता था।

बोध प्रश्न

- हिंदी पत्रकारिता का आरम्भ एवं प्रमुख पत्रों के नाम लिखिए

हिंदी पत्रकारिता का विकास

सन् 1857 का परवर्ती भारतीय मानस अवसादग्रस्त हो गया था। सरकारी दमन चक्र उग्र हो चला था, जिसका एकांत लक्ष्य था- राष्ट्रीयता की उग्र चेतना को समूल उखाड़ फेंकना। इस प्रकार भारतीय पत्रकार के सामने दो कठोर मोर्चे थे। एक ओर देशवासियों की मानसिक खिन्नता थी, दूसरी ओर सरकारी दमन नीति । इसी संक्राति काल में हिन्दी पत्रकारिता के दूसरे चरण का निर्माण हुआ। संक्रान्ति की चुनौती ने जैसे, भारतीय पत्रकारों को झकझोर कर जगा दिया था। इस जागृति ने भारतीय मानस-मनीषा को जगाने में बड़ी भूमिका ख़ुदा की। जातीय चरित्र को पराधीनता से उबारने की एक महान प्रेरणा आविर्भूत हुई। भारतीय पत्रकारिता के मनीषियों ने अपनी साधना द्वारा उस प्रेरणा को तीव्र किया, पराधीनता जनित अज्ञान से धूमायित जातीय मानस में नये आलोक की रचना की, दिशाहीन लोगों को सही मार्ग-संकेत दिया, साम्राज्यवादी दानव को पराजित करने की शक्ति दी तथा लड़ने की कला सिखायी। देश की इसी मनोद्वेलित मनःस्थिति में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। प्रमुख - पत्रिकाएँ इस प्रकार हैं-

कविवचन सुधा-15 अगस्त, 1867 में काशी के बाबू हरिश्चन्द्र ने 'कविवचन सुधा' नामक मासिक पत्र निकाला, **हरिश्चन्द्र मैगजीन** - 15 अक्टूबर, 1873 को काशी से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने ही 'हरिश्चन्द्र मैगजीन' को जन्म दिया। यह पत्रिका मासिक थी। इसमें पुरातत्व, उपन्यास, कविता, आलोचना, ऐतिहासिक, राजनीतिक, साहित्यिक तथा दार्शनिक लेख, कहानियाँ एवं व्यंग्य आदि प्रकाशित होते थे। जब इसमें देशभक्तिपूर्ण लेख निकलने लगे तो इसे 'बन्द कर दिया गया। **बालबोधिनी पत्रिका** - 9 जनवरी, 1874 को भारतेन्दु ने 'बालबोधिनी पत्रिका' 'निकाली। यह पत्रिका महिलाओं की मासिक पत्रिका थी। **हिन्दी प्रदीप**-1 सितम्बर, 1877 को प्रयाग से बालकृष्ण भट्ट ने 'हिन्दी प्रदीप' नाम का मासिक पत्र निकाला। यह पत्र घोर संकट के बावजूद भी 35 वर्षों तक निकला। भारतेन्दु जी ने इस पत्र का उद्घाटन किया। पत्रकारिता की दृष्टि से हिन्दी प्रदीप का जन्म हिन्दी साहित्य के इतिहास में क्रान्तिकारी घटना है। इसने हिन्दी पत्रकारिता को नयी दिशा प्रदान की। **भारत मित्र**- 17 मई, 1878 को कलकत्ता से यह पत्र प्रकाशित हुआ। जिस समय यह पत्र प्रकाशित हुआ उस समय वहाँ से हिन्दी का कोई पत्र नहीं निकलता था। **सारसुधानिधि** - 13 अप्रैल, 1879 को प्रकाशित 'सार सुधानिधि' पं. सदानंद जी के सम्पादन में निकला। इसके संयुक्त सम्पादक पं. दुर्गाप्रसाद, सहायक सम्पादक गोविन्द नारायण और व्यवस्थापक पं. शम्भूनाथ थे। **सज्जन कीर्ति सुधाकर**- यह पत्र देशी राज्यों से निकलने वाला पहला 'हिन्दी पत्र' था, क्योंकि राज्यों के सभी पत्र उर्दू व हिन्दी में निकलते थे जिनमें उर्दू का ही प्रथम स्थान होता था। **उचितवक्ता** - यह हिन्दी पत्रकारिता के महान उन्नायक

पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र का अपना पत्र था जो 7 अगस्त, 1880 को प्रकाशित हुआ था। चूँकि पत्र पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र का अपना पत्र था, इसलिए वे स्वेच्छा और पूरी स्वतन्त्रता से इसे प्रकाशित करते थे। स्वाधीनता खोकर उन्नति करने में गौरव नहीं है, यह 'उचितवक्ता' के पहले अंक की सम्पादकीय टिप्पणी का मूल स्वर था। यह 15 वर्ष तक प्रकाशित हुआ। इसने इल्बर्ट बिल, प्रेस कानून, वर्नाक्यूलर एक्ट का बड़ी निर्भीकता से विरोध किया। **आनंदकादम्बिनी**- पं. बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' द्वारा सम्पादित 'आनन्द कादम्बिनी' मासिक पत्रिका का प्रकाशनारम्भ श्रवण वि. सं. 1938 (सन 1881) को हुआ । यह प्रथम बार मिर्जापुर से श्री वेणीप्रसाद शर्मा द्वारा प्रकाशित हुआ। पत्रिका के प्रकाशन में प्रेमधन जी को प्रारम्भ में बड़ी कठिनाई हुई थी। उनके पास अपना प्रेस नहीं था। परिणामस्वरूप 'आनन्दकादम्बिनी' के मुद्रण के लिए अनेक प्रेसों की शरण लेनी पड़ी। **'ब्राह्मण**-पं. प्रतापनारायण मिश्र ने 1883 ई. में कानपुर से मासिक 'ब्राह्मण' का सम्पादन व प्रकाशन प्रारम्भ किया था। इसका पहला अंक होली के दिन 15 मार्च, 1883 को कानपुर के 'नामी यंत्रालय' से मुद्रित हो ईश्वरालम्बित मिश्र द्वारा प्रकाशित हुआ था ।) **भारत जीवन**- बाबू रामकृष्ण वर्मा ने काशी से 3 मार्च, 884 को 'भारत जीवन' पत्र प्रकाशित किया। **हिन्दोस्थान** - सन् 1885 में राजा रामपालसिंह लंदन से इसे कालाकां और यहाँ इसके हिन्दी-अंग्रेजी संस्करण प्रकाशित होने लगे। यह उत्तर महामना मदनमोहन मालवीय के सम्पादन में निकला। यह हिन्दी क्षेत्र से प्रकाशित होने वाला प्रथम सम्पूर्ण हिन्दी दैनिक पत्र था। शुभचिन्तक-सन् 1887 में जयलपुर से पं. रामगुलाम अवस्थी के स 'शुभचिंतक' पत्र निकला। यह पत्र साप्ताहिक था। **हिन्दी बंगवासी** - हिन्दी बंगवासी सन् 1890 में कलकत्ता से पं. अमृतलाल चक्रवर्ती के सम्पादन में निकला। **नागरी नीरद**-सन् 1892 में 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक प्रेमधन 'नागरी-नीरद' नाम का एक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित किया। पं. अम्बिक वाजपेयी के अनुसार इसका प्रकाशन सन् 1893 में हुआ, किन्तु इसका प्रथमांक सितम्बर 1992 ई. को प्रकाशित हुआ था।

सन् 1907 का वर्ष पत्रकारिता के नये और प्रगतिशील प्रयोग अत्युत्तम कहा जा सकता है। इस वर्ष 16 मासिक पत्रिकाओं का साप्ताहिक पत्रों में 'अभ्युदय' और 'हिन्दी केसरी' के नाम उल्लेखनीय **अभ्युदय** - सन् 1907 में उत्तर प्रदेश की राजनीति में जन-जागृति साप्ताहिक पत्र 'अभ्युदय' को महामना पण्डित मदनमोहन मालवीय निर्भीकता, राष्ट्रप्रेम तथा समाज सुधार में अग्रणी यह पत्र 1918 ई. में दै सरदार भगतसिंह की फाँसी दिये जाने के बाद पत्र ने 'फाँसी-अंक' निकाल कर धूम मचा दी। **हिन्दकेसरी** - प्रसिद्ध नेता डॉ. बालकृष्ण शिवराम मुंजे मे 13 अप्रैल,

1907 में इसे नागपुर से निकाला था। इसमें लोकमान्य तिलक के प्रसिद्ध पत्र केसरी के लेखों का अनुवाद होता था। इसके सम्पादक पं. माधवराव सप्रे थे तथा सहायता के लिए पं. जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल और पं. लक्ष्मीनारायण वाजपेयी थे। **स्वराज्य-** इलाहाबाद से सन् 1907 में सम्पादक शान्तिनारायण भटनागर सम्पादन में 'स्वराज्य' साप्ताहिक का प्रकाशन हुआ।

नृसिंह- सन् 1907 में कलकत्ता से पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी के सम्पादन निकला पत्र 'नृसिंह' न्याय और औचित्य का रक्षक था। कांग्रेस के गरम दल व 'नृसिंह' राष्ट्रीय और नरम दल को 'धृतराष्ट्रीय' कहता था। नृसिंह का प्रकाशन एक व तक ही रहा। **प्रताप -** सन् 1910 के साप्ताहिक पत्रों में 'प्रताप' प्रसिद्ध था। इसके सम्पादक बाबू गणेश शंकर विद्यार्थी थे।

स्वदेश- स्वदेश का प्रकाशन गोरखपुर से सन् 1919 में पं. दशरथप्रसाद द्विवेदी ने किया जो गणेशंकर विद्यार्थी द्वारा प्रशिक्षित थे। इस पत्र का मूल सिद्धान्त था-

जो भरा नहीं है भावों से बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है, पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं ।।

सम्पादक द्विवेदी जी के बाद इस पत्र का सम्पादन पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' ने किया। 'भाषी क्रान्ति' विजय तथा विप्लव राग और माँ जैसे आलेखों के कारण स्वदेश स्वतन्त्रता की ज्वाला लोगों में धधकाता था। **कर्मवीर -** जबलपुर से सन् 1919 में श्री विद्यार्थी के अनन्य सहयोगी श्री माखनलाल चतुर्वेदी ने 'कर्मवीर' पत्र निकाला,यह पत्र त्याग, तप, आहुति और क्रान्ति का उद्घोषक था । स्वतन्त्रता संग्राम में बारह बार जेल की यात्रा और 63 बार तलाशियों के कारण चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्व जुझारू बन गया उनके द्वारा लिखी निम्नलिखित पंक्तियाँ आज तक देशभक्तों के कर्ण-कुहरों में अनुगत हैं-

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक ।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक ॥

बोध प्रश्न

- हिंदी पत्रकारिता में सर्वप्रथम प्रकाशित हिंदी समाचार पत्र का नाम एवं प्रकाशन वर्ष बताइए?
- उदंत मार्तंड को हिंदी को पहला अखबार घोषित करने का श्रेय किसे जाता है?
- स्वदेश पत्र का मूल सिद्धांत क्या था?
- मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक ।
  मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएँ वीर अनेक ॥ उपर्युक्त पंक्तियाँ किस कवि द्वारा लिखी गयी हैं ?

13.3.2 – प्रेमचंद की पत्रकारिता और उनका संघर्ष

प्रेमचंद अपने कथात्मक लेखन के कारण साहित्य जगत में समादृत और लोकप्रिय तो हैं ही, इसके साथ ही सतत कथेतर लेखन के माध्यम से भी इन्होंने अपने समय, समाज और राजनीतिक समस्याओं को अभिव्यक्त किया। स्वाधीनता संघर्ष में समुचित योगदान दिया। अपने कथात्मक और गैर कथात्मक रचनाओं के माध्यम से पराधीन भारतीय जनता की दयनीय स्थिति का चित्रण किया। जिसमें गरीब, किसान और मजदूर, सामंतवाद, पूंजीवाद और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के तिहरी शोषण चक्र में पिस रहे थे। प्रेमचंद ने जनता की दृष्टि से सामंतवाद, पूंजीवाद और साम्राज्यवाद की आलोचना ही नहीं की बल्कि उन्होंने अपनी रचनाओं में जनता के साथ अपनी सक्रिय सहानुभूति और पक्षधरता भी व्यक्त की। उन्होंने समाज और राजनीति के अंतर्संबंधों को परिभाषित करते हुए साहित्य को राजनीति के आगे मशाल दिखाती हुई चलने वाली सच्चाई भी बताया।

अंग्रेजों की आर्थिक नीति की समीक्षा 19वीं शताब्दी में शुरू हो चुकी थी। दादाभाई नरोजी, डब्ल्यू सी बनर्जी, गोविंद रानाडे, के साथ ही स्वयं भारतेंदु ने भी लिखा "पै धन विदेश चली जात इहै अति ख्वारी।" दरअसल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को सेफ्टी वाल्व की तरह यूज करने की अंग्रेजों की नीति फेल हो चुकी थी। अब अंग्रेज पहले से कहीं अधिक सचेत और क्रूर हो चले थे। उन्होंने सुधारों का एक जादू रच कर अलग अलग हथकंडों से जनता को लूटना शुरू किया था। इस जादू का पर्दाफाश करने में प्रेमचंद ने बड़ी भूमिका निभाई। न केवल एक कथाकार के रूप में अपितु एक बड़े बुद्धिजीवी के स्तर पर भी। देखा जाए तो हिंदी क्षेत्र में 19वीं सदी के पूर्वार्ध में अंग्रेजों की शोषण नीति का जो छद्म था वह बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में टूटने लगा था। प्रेमचंद न केवल आर्थिक वरन उपनिवेशवाद के सांस्कृतिक पक्ष से भी बहुत आहत थे। वे इस प्रक्रिया को भारतीयों के 'दिमागों का उपनिवेशीकरण' कहते हैं। अंग्रेजों द्वारा किए जाने वाले लूट को वे शोषण के 'पिरामिड-तंत्र' के रूप में समझते थे। जिसमें शीर्ष पर ब्रितानी हुकूमत फिर नौकरशाह-जमीदार-सामंत और शोषण के चक्र में चौतरफ़ा पिसने वाला सबसे निचले पायदान पर किसान-मजदूर वर्ग था।

प्रेमचंद कथा लेखन से इतर बौद्धिक स्तर पर अपनी लेखनी के माध्यम से जनता से निरंतर संवादरत रहे। उन्होंने 'हंस' और 'जागरण' पत्रिका का संपादकीय दायित्व संभाला। 'ज़माना' और 'आजाद' तथा इस जैसे अनेक पत्रों में लगातार लेख और रेगुलर कॉलम लिखते रहे। इसके साथ ही अनेक पत्र-पत्रिकाओं में निबंध और समीक्षाएं लगातार छपती रहीं। प्रेमचंद उर्दू, फारसी, हिंदी, संस्कृत एवं अंग्रेजी शिक्षा में अत्यंत दक्ष थे। इन भाषाओं के ज्ञान से उनकी दृष्टि हिंदुस्तानी-फारसी परंपरा, औपनिवेशिक अंग्रेजी शिक्षा की परंपरा के माध्यम से पश्चिमी विश्व दृष्टि तथा संस्कृत और हिंदूवादी तत्वों के सुदृढ़ प्रभाव के साथ लोक भाषा हिंदी की परंपरा

से अत्यंत समृद्ध थी। इन परंपराओं के आपसी सम्मिश्रण से उनका विवेकशील व्यक्तित्व निर्मित हुआ।

सन 1900 में प्रेमचंद ने स्कूल शिक्षक के रूप में सरकारी नौकरी से अपने जीवन-वृत्त की शुरुआत की। बाद में वह स्कूल इंस्पेक्टर के पद पर भी आसीन हुए। सरकारी नौकरी में बने रहना उनकी व्यावहारिक समझ थी। किंतु उन्होंने अपनी आत्मा को अपनी लेखनी में लगा दी और सन उन्नीस सौ के आसपास से ही उन्होंने लिखने का काम शुरू कर दिया। 'ज़माना' रिसाला के दया नारायण निगम के लिए प्रेमचंद लगातार लिखते रहे। उन्होंने प्रेमचंद को साफ तौर पर पत्रकारिता से एक नियमित रकम आमदनी का आश्वासन दिया। प्रेमचंद के समूचे मीडिया जीवन को हम मोटे तौर पर दो भागों में बांट सकते हैं। एक शुरुआती दौर जब वह विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए लगातार लिख रहे थे और दूसरा वह दौर जब उन्होंने स्वयं अपनी नौकरी छोड़ कर प्रेस खोला। हंस और जागरण नामक मासिक एवं साप्ताहिक पत्र निकालना शुरू कर दिया। प्रेमचंद्र का समूचा मीडिया लेखन अमृत राय ने विविध प्रसंग खंड 1, 2 और 3 में संकलित किया है। हालांकि यह उतनी ही सामग्री है जितनी प्राप्त हो सकी। लगभग 16 सौ पृष्ठों की यह सामग्री संकलित है। विविध प्रसंग के पहले खंड में अधिकांश लेख उर्दू के प्रसिद्ध पत्र जमाना से लिए गए जिससे मुंशी जी का आजीवन बहुत आत्मीय संबंध रहा।

अमृत राय जी लिखते हैं- "मुंशी जी ने "**ज़माना**" के अलावा और भी अनेक उर्दू पत्रों में जैसे मौलाना मोहम्मद अली के 'हमदर्द' और इम्तियाज अली ताज के 'कहकशा', 'जमाना' ऑफिस से ही निकलने वाले साप्ताहिक 'आजाद' और 'चकबस्त' के मासिक पत्र 'सुबह-ए-उम्मीद' में काफी नियमित रूप से लिखा। जमाना में मुंशी जी ने 'रफ्तारे जमाना' के नाम से बहुत अर्से तक एक स्थाई स्थाई स्तंभ लिखा।" इसके अलावा विविध प्रसंग खंड 1 में संकलित पहला लेख ओलिवर क्रॉमवेल पर 'आवाज-ए-खल्क' बनारस की पत्रिका में क्रमशः 1 मई 1903 से 24 सितंबर 1903 तक प्रकाशित हुआ। इसी के साथ ही 'देसी चीजों का प्रचार कैसे बढ़ सकता है' 16 नवंबर 1905 को प्रकाशित हुआ। इस तरह से पहले खंड में संकलित अंतिम लेख जमाना पत्रिका में फरवरी 1919 में 'पुराना जमाना-नया जमाना' नाम से प्रकाशित हुआ।

एक ईमानदार स्कूल इंस्पेक्टर के रूप में प्रेमचंद का स्थानांतरण विभिन्न क्षेत्रों में गाहे-बगाहे होता रहा। प्रेमचंद अखबार बहुत चाव से पढ़ते थे। एक अखबार से उनका काम नहीं चलता था। हालांकि एक अखबार से ज्यादा मंगाने की उनकी सकत भी नहीं थी इसीलिए जहाँ भी रहते किसी क्लब या वाचनालय की तलाश में रहते जहां जाकर 4-6 अखबार पढ़ सकें। इलाहाबाद भी आते तो पैदल या एक आना देकर कटरा से 2 मील दूर भारती भवन जाते थे अखबार पढ़ने के लिए। अमृतराय कलम का सिपाही में लिखते हैं कि "ऐसे आदमी के लिए यह पूरी सजा है कि उसे महोबे और बस्ती जैसी बीहड़ जगहों में पटका जाए और दूर-दूर देहातों में भटकना पड़े जहां डाक की भी सुविधा नहीं है। न अख़बार ही पढ़ने को मिलते हैं और ना ऐसी संगत ही मिलती है कि बातचीत करके वह कुछ पा सके। और भी खलने की वजह यह है कि वह

रफ्तारे ज़माना- जैसा कॉलम लिखते रहना चाहता है जो कि फिलहाल छूट गया है। महज़ किस्सागो बनने से उनकी तबीयत नहीं भरती, वह अखबारनवीस भी बनना चाहता है।" प्रेमचंद उपन्यास और कहानियां तो लगातार लिखते रहे लेकिन पत्रों में न लिख पाने की कमी रह-रहकर उनके मन को कचोटती रहती थी। 18 मार्च 1910 को उन्होंने महोबा से निगम साहब को पत्र लिखा था "जी चाहता है नए-नए वाक्यात पर कुछ नोटिस लिखा करूँ, मगर वाक्यात का इल्म मुझे उस वक्त होता है जब वह अखबारात में निकल चुकते हैं और उनके देर-अज़-वक्त हो जाने का खौफ रहता है।" 13 अक्टूबर 1915 को फिर बस्ती से वह लिखते हैं कि "जब तक करंट अफेयर से लगाव न रहे किसी मजमून पर लिखने की तहरीक नहीं होती और मज़मून भी मुश्किल से सूझता है।

निगम साहब से हुए पत्राचार में प्रेमचंद का वह व्यक्तित्व खुलकर सामने आता है जो देश-विदेश के विभिन्न मसलों को जानने समझने को व्यग्र है। वह सजग पत्रकार की तरह प्रत्येक महत्वपूर्ण मुद्दों पर नोटिस लेना चाहता है। अनेक ख़तों से यह बात भी ज़ाहिर होता है कि वो कई बार सोचते हैं कि' सरकारी नौकरी छोड़कर पूर्णतः पत्रकारिता के क्षेत्र में आ जाऊं'। इस सिलसिले में वो छुट्टियों में एक-दो बार कानपुर निगम साहब के दफ्तरों में भी रह आए। पर उनको यह विश्वास नहीं हो पाता कि पत्रकारिता से मेरा माहखर्च संभल जाएगा। नौकरी करते हुए भी वो स्वास्थ्य या नौकरी की विपरीत परिस्थितियों में भी पत्रों में सतत लिखते रहे। उनके लेखन में कोई भी विषय त्याज्य नहीं था। राजनीति, धर्म, समाज, छुआछूत, विदेशनीति, किसान-मज़दूर या आम आदमी से जुड़े सभी सरोकारों पर अपनी लेखनी चलाते रहे। ऐसा लगता है कि किसी धर्म संप्रदाय पार्टी संगठन या विचारधारा में शामिल होने के लिहाज़ से प्रेमचंद सबसे मिसफिट आदमी थे। असल में उनका जन्म तो सनातन में हुआ था पर शिक्षा संस्कार फारसी में हुई। आर्य समाज से उनको बेहद लगाव था जो आजीवन बना रहा किंतु सनातन धर्म से जुड़ाव भी कभी कम नहीं हुआ। घर में क्रांतिकारी खुदीराम बोस की तस्वीर लगाए रखते थे और गांधी से मोहब्बत करते थे। कांग्रेस से सहानुभूति तो खूब थी लेकिन जरूरत पड़ने पर खुलकर उसकी कड़ी आलोचना भी लिखते थे। आमूल क्रांति की बात हमेशा करते थे समाज को बदल देने की बात किया करते थे, लेकिन माध्यम हमेशा अहिंसा को ही बरतने पर जोर देते थे। जीवन के उत्तरार्ध में सोशलिज्म और कम्युनिज्म को ही मनुष्य के कल्याण का रास्ता वह मानते थे। इस परिप्रेक्ष्य में अगर हम उनके पत्रकार रूप को देखें तो वह केवल सच का और अपनी निरपेक्ष दृष्टि की ही स्पष्ट अभिव्यक्ति करते हुए दिखते हैं। कभी भी कोई भी मसला हो उस पर अपनी ही विवेक और रचनात्मक दृष्टि से विचार करते थे। किसी सामाजिक-धार्मिक भावना या वैचारिक आग्रह का प्रभाव उनके मीडिया लेखन पर नहीं दिखाई पड़ता। 22 अप्रैल 1923 को उन्होंने निगम साहब को एक पत्र लिखा, "मलकाना शुद्धि पर एक मुख्तसर मज़मून लिख रहा हूं मुझे इस तहरीक़ से सख्त इख़्तिलाफ़ (विरोध) है ।..आर्य समाज वाले भिन्नायेंगे, लेकिन मुझे उम्मीद है आप 'जमाना' में इस मजमून को जगह देंगे।"। निगम साहब ने

पूरे 9 महीने उस पर गौर किया। छापने की हिम्मत ना पड़ती थी। 9जनवरी 1924 को मुंशी जी ने दोबारा लिखा - "आपने मेरे मजमून को मुस्तरद (रद्द) कर दिया। ख़ैर कोई मुज़ायक नहीं। मैंने लिख डाला, दिल की आरजू निकल गई।" अमृतराय लिखते हैं कि मुंशी दयानारायण को शायद कुछ शर्मिंदगी हुई इस खत से और वह दोबारा अपने फैसले पर गौर करने के लिए मजबूर हुए। और फिर अगले ही महीने 'कहातुर्रीजाल' (मनुष्यता का अकाल) नाम का वह विस्फोटक लेख प्रकाशित हुआ। उसका छपना था कि चारों तरफ तहलका मच गया। मुसलमानों ने उसको हाथों-हाथ लिया और हिंदू गुस्से से दांत किटकिटाने लगे।"

अंग्रेजों ने तो प्रेमचंद के खिलाफ वारंट निकाले ही, प्रतियों को ज़ब्त किया ही, कई भारतीय बुद्धिजीवियों ने भी प्रेमचंद का विरोध करना शुरू कर दिया था। उन्हें 'घृणा का प्रचारक' भी कहा गया। पर प्रेमचंद भी चुप बैठ जाने वाले लोगों में से नहीं थे। अंग्रेजों को तो नाम बदलकर चकमा दिया और अपने साथियों के हर आक्षेपों का हर्फ़-दर-हर्फ़ रचनात्मक जवाब दिया। उन्हीं दिनों की एक घटना के बारे में 'प्रताप' पत्र के संपादक बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' ने लिखा है- "एक बार वे (प्रेमचंद) प्रताप कार्यालय पधारे। मैं उन दिनों प्रताप का संपादन करता था। मेरे एक उप-संपादक किंचित विवादी मनोभावना के थे। बातचीत में हिंदू-मुस्लिम प्रश्न उठाया। मेरे उप-संपादक महोदय आवेश में आकर बोले- 'इस सांप्रदायिकता को रोकने का दूसरा कोई उपाय नहीं है। हमें ईट का जवाब पत्थर से देना होगा। तभी काम चलेगा।' प्रेमचंद जी मुस्कुराते हुए सुनते रहे। जब उन महाशय की द्वेषमयी वाणी रुकी तो वे अत्यंत साधारण स्वर में बोले- 'अरे भाई, इस समय मुसलमानों का मानस रोगयुक्त है। पागलों के साथ हम भी पागल बन जाए तो कैसे काम चलेगा। ये महाशय बल खाकर पूछ बैठे, क्यों साहब अगर पागल हमारे सामने पेशाब करने लगे तो हम क्या करें। प्रेमचंद जी ने शांति से कहा जरा दूर हट कर खड़े हो जाओ। -और अगर वहां भी आकर वह यही हरकत करे तो? -जरा और दूर हट जाओ। मगर वह हजरत थे हुज्जती, इतने पर भी ना माने । बोले वहां भी आकर यह वही हरकत करें तब? मुंशी जी ने कहा, 'यह कैसे हो सकता है? वह भलामानस कोई मशक थोड़े ही बाँधे है जो यहां वहाँ सब जगह मूतता ही जाएगा।"

प्रेमचंद के लिए पत्र और पत्रकार के दायित्व के क्या मायने था इसका पता हमें स्वदेश के प्रवेश अंक के संपादकीय से चलता है। 'स्वदेश का संदेश' नामक संपादकीय में प्रेमचंद लिखते हैं कि "स्वदेश के लिए सचमुच यह संतोष और सौभाग्य की बात है कि उसका जन्म एक नवीन युग में हो रहा है। ऐसे नवीन और शुभ युग में जो अपने सच्चे सिद्धांतों के बल पर निकटवर्ती भविष्य में सारे संसार से अपनी सत्ता और महत्ता आप मनवा लेगा। परंतु अभी इस नवीन और शुभ योग का प्रकाश होना बाकी है, तो भी हम इस युग का हृदय से स्वागत करते हैं।" प्रेमचंद न

केवल इस लेख में भारतीय समाज के और विश्व के यथार्थ को अभिव्यक्त करते हैं वरन वह हमारे भविष्य की इच्छाओं और कामना को भी आकार देते हैं। जिसमें वह कहते हैं कि 'अब भविष्य में राष्ट्रों के साथ वस्तु या पशुओं के समान व्यवहार नहीं किया जाएगा। प्रत्येक जाति को इस बात का अधिकार होगा कि वह अपने भाग्य का आप निर्णय करें। वह जिस साम्राज्य के अधीन रहना चाहे रहे और उसकी इच्छा हो तो स्वयं अपना राज्य शासन आप करें। प्रेमचंद इसके निष्कर्ष रूप में लिखते हैं कि 'हिंदुस्तान का उद्धार हिंदुस्तान की जनता पर निर्भर है। जनता में अपनी योग्यता के अनुसार या भाव पैदा करना प्रत्येक स्वदेशवासी का परम धर्म है । स्वदेश तुम्हें संदेश दे रहा है कि तुम भी मनुष्य हो तुमको भी यहां समान अधिकार प्राप्त है ।" यह वह दौर था जब देश में तनावपूर्ण माहौल था। ऐसे माहौल में लेखन भी एक जोखिम भरा काम था। जिसे राजद्रोहात्मक गतिविधि के रूप में चिन्हित किया जाता था। प्रेमचंद अपनी दोनों पत्रिकाओं जागरण एवं हंस के जमानत देने की सरकारी मांग से बच नहीं सके थे तथा एक बार उनकी यह जमानत ज़ब्त भी हो गई थी।

मार्च 1930 में देश में गांधी के दांडी मार्च के अवसर पर प्रेमचंद ने मासिक पत्रिका हंस का प्रकाशन शुरू किया। इस समय तक वो अपनी सरकारी नौकरी छोड़ पूरी तरह पत्रिका और प्रकाशन में जुट चुके थे। इसके प्रवेशांक में बड़ी खुशी के साथ वह इस बात का जिक्र करते हैं कि इस पत्रिका का निकलना उस शुभ अवसर के साथ हुआ जब देश ने स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने का फैसला लिया। हिमालय की मानसरोवर झील के साहचर्य से उत्पन्न पत्रिका के नामकरण की तरफ संकेत करते हुए वह बहुत जोर देते हुए कहते हैं कि हंस ने स्वतंत्रता संघर्ष में योगदान देने के लिए अपने वन्य निवास की नीरवता को छोड़ दिया है। इसके बाद लगभग साढ़े छह वर्षों तक (मृत्युपर्यंत) उन्होंने हंस का संपादन किया। प्रेमचंद के लिए यह अखबारी लेखन सत्ता की कटु आलोचना और जनता के हितों की रक्षा करने का एक सशक्त माध्यम था। परिणाम की ज्यादा परवाह न करते हुए बड़ी बेबाकी से वह पत्रिकाओं में जनता का पक्ष रखते थे। सन 1933 के एक लेख में वे लिखते हैं कि "देश राष्ट्र बनना चाहता था। उसे पंथवाद में ढकेल दिया गया... जहां केवल हिंदू-मुसलमान थे, वहां मुसलमान अछूत सिक्ख, ईसाई, अधगोरे, गोरे इतने जंतु निकाल खड़े किए गए और इन सबों ने अपने तेज दांतों और पैने नखों से शिशु राष्ट्र को धर दबोचा।"

प्रेमचंद देशहित के किसी भी मुद्दे पर खुलकर अपनी राय रखते थे। ब्रिटिश सुधारों के प्रयास के खोखलेपन की सच्चाई को लगातार उजागर करते रहे। सन् 1935 में ही ब्रिटिशों द्वारा अधिनियम के माध्यम से लोकतंत्र का डंका पीटने के छद्म का भंडाफोड़ करते हैं। उनकी नजर में यह लोकतंत्र बिल्कुल नहीं था। "विधायिका में कुछ सदस्य और बढ़ गए थे किंतु आम जनता वैसे ही असहाय थी, जैसे पहले थी। इसके अलावा विधायिका लाचार थी तथा यह मूल्यहीन हो चुकी थी।" प्रेमचंद नौकरशाही द्वारा किसी भी मामले की जांच के नाम पर किए जा रहे हीला हवाली और भ्रम फैलाने को अनुचित करार देते हुए कमेटी बनाने की उस गलत परंपरा पर कुठाराघात करते हैं जो आज भी भारत की नौकरशाही में और भारत की सत्ता द्वारा चलाई जा

रही है। हंस के एक लेख में सन 1931 ईस्वी में प्रेमचंद लिखते हैं कि "कमेटी और तहकीकातों से असली बात को टालते रहना राजनीति की पुरानी चाल है। यहां किसी बात की शिकायत पैदा हुई और उस शिकायत ने जोर पकड़ा के फौरन तहकीकात की कमेटी बना दी गई। शिकायत करने वालों में जिनकी आवाज सबसे ऊंची थी उन्हें उस तहकीकात कमेटी में शरीक कर लिया गया। साल दो साल तक तहकीकात में लगे तब वह शिकायत कुछ ठंडी पड़ गई। अगर कमेटी में जोरदार सिफारिशें की तो उन पर विचार करने के लिए एक और कमेटी बना दी गई।

प्रेमचंद की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। बड़ी मुश्किलों से वह पत्रिका निकालने का काम कर रहे थे। फिर भी बाजार के दबावों के आगे नतमस्तक नहीं हुए और न ही अपना तेवर छोड़ा। हंस पर प्रतिबंध लग जाने के बाद जैनेन्द्र को एक पत्र में 15 अगस्त 1932 को जागरण पत्र को लेने की बात करते हैं। इस पत्र में जहाँ एक तरफ उनकी आर्थिक परिस्थिति का पता चलता है वहीं दूसरी तरफ़ उनके बुलंद हौसले से भी हम वाकिफ़ होते हैं- "..हंस में कई हजार का घाटा उठा चुका हूं। लेकिन साप्ताहिक के प्रलोभन को न रोक सका। कोशिश कर रहा हूँ कि सर्वसाधारण के अनुकूल पत्र हो। इसमें भी हज़ारों का घाटा ही होगा, पर करूँ क्या, यहाँ तो जीवन ही एक लम्बा घाटा है।

अपने समय के बड़े सचेत लेखक-पत्रकार के रूप में प्रेमचंद किसी भी अमर्यादित या स्तरहीन सामाजिक व्यवहार तथा पत्रकारी टिप्पणी की भी पूरी खबर लेते थे। बात चाहे विषयवस्तु की हो या भाषा की। ज़माना में दिसंबर 1909 को एक लेख लिखते हैं 'गालियों' पर। इस लेख में उत्तर भारतीय समाज में व्यवहृत गालियों पर समाज को आड़े हाथों लेते हैं। इसी लेख में उन्होंने लखनऊ के एक जिंदादिल अखबार की भी खूब ख़बर ली है जिसने होली में मोटे मोटे अक्षरों में छापा था- 'आई होली आई होली, हमने अपनी धोती खोली'। बड़े तल्ख लहज़े में प्रेमचंद लिखते हैं- "यह इस जिंदादिल अख़बार की जिंदादिली है। वह सभ्य और सुसंस्कृत रुचि का समर्थक समझा जाता है।....अगर किसी दूसरी क़ौम का आदमी इन दो हफ्तों के हिंदी अख़बार उठाकर देखे तो शायद दुबारा उनकी सूरत देखने का नाम न लेगा। हमारे क़ौमी अख़बारों की यह हालत हो जाती है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि आज से 90-100 साल पहले प्रेमचंद ने पत्रकारिता क्या होती है, इसकी एक मजबूत नींव और इसका एक परिदृश्य हमारे सामने उपस्थित कर दिया था। एक ऐसी आवाज जो कहीं भी अन्याय, दमन ,शोषण के खिलाफ जनता की आवाज बनकर लोकतंत्र को मजबूत बनाने वाली स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित हो। जो बेखटके सच को सच और झूठ को झूठ कह सके। आज हमारे समय और समाज की जरूरत है कि बार-बार पत्रकारिता के इन मूल्यों को देखा जाए, समझा जाए। अपने स्वाधीनता आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने वाले प्रेमचंद सरीखे बड़े पत्रकारों से सीख लेकर जनता की आवाज के रूप में पत्रकारिता के महत्व को फिर प्रतिष्ठित किया जाए। एक ऐसी आवाज जो निर्भय और स्वतंत्र हो। धर्म, सत्ता, बाजार और दूसरे किसी भी प्रकार के दबावों से मुक्त हो।

बोध प्रश्न

- पत्रकारिता हेतु प्रेमचन्द के संघर्षों को रेखांकित कीजिए ।

13.3.3 - प्रेमचंद की पत्रकारिता एवं स्वतंत्रता संग्राम

भारतीय नवजागरण और उसके आदि उन्नायक राजा राममोहन रॉय आधुनिकता भारतीय नवजागरण की सबसे बड़ी उपलब्धि है। आधुनिकता अर्थात् एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण जो पूर्व और पश्चिम के बीच सांस्कृतिक सेतु बना। चूँकि नवजागरण का अनुभव सबसे पहले बंगाल ने किया था, इसलिए स्वाभाविक था कि आधुनिकता भारत में बंगाल की खाड़ी से ही प्रवेश करती।

आधुनिकता ने हमारे अन्दर एक ऐसी चेतना उत्पन्न की जिससे पश्चिमी जगत् को अधिकाधिक जानने-समझने के लिए हम उत्सुक हो गये, किन्तु आधुनिकता के मूल वैशिष्ट्य की समग्रता को पूरी तरह आत्मसात् करने के लिए अँगरेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक था। सुधारवादी आन्दोलन के आदि संचालक और भारतीय नवजागरण के उन्नायक राजा राममोहन रॉय ने इसे सही रूप में समझा और अँगरेजी शिक्षा प्रचार का पक्ष समर्थन कर अपनी प्रगतिशीलता का प्रमाण दिया।

अँगरेजी शिक्षा ने सम्पूर्ण सांस्कृतिक परिवेश में परिवर्तन की अपेक्षा उत्पन्न की। उक्त परिवर्तन की अपेक्षा रखनेवाले भारतीयों के दो वर्ग थे जिनकी दो स्वतन्त्रत दृष्टियाँ थीं। एक वह वर्ग था जो अंगरेजियत के रंग में इतना रंग गया था कि भारतीयता उसे फूहड़ और विजातीय लगने लगी थी तथा इस ओर से सर्वथा उदासीन हो आचार-विचार में वह अंगरेजों का अनुकरण करने लगा था।

प्रेमचंद ने एक मजबूत राष्ट्र के निर्माण के लिए पूर देश का एक राष्ट्र जोर इस बात पर था कि भारतीयों को अपनी भाषा पर गर्व होना चाहिए. उन्होंने यह देख लिया था कि विदेशी भाषा के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा का असर सिर्फ भाषाई रूप में नहीं बल्कि पूरी तरह सांस्कृतिक रूप में हमारे सामने पतनशील प्रवृत्तियों के रूप में आ रहा था. यह किसी भी तरह से स्वराज्य के आंदोलन में सहायक होने के बजाय उसके विपरीत कार्य कर रहा था। 'निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल'- भारतेंदु की इस पंक्ति को प्रेमचंद पूरे मन से अपने लेखन में और अपने जन चेतना के प्रचार प्रसार के अभियान में शामिल कर रहे थे और उसे आगे बढ़ा रहे थे. 'हंस' को प्रेमचंद ने हिन्दी का उन्नायक बनाते हुए उसे अखिल भारतीय पत्रिका बनाने का यथासंभव प्रयास किया जिसमें भारत की विभिन्न भाषाओं के बीच अपनापा हो, मैत्री हो और वे एक दूसरे के समानान्तर नहीं बल्कि सर्वसमावेशी ढंग से विकास कर सकें. प्रेमचंद का यह प्रयास रंग भी लाया और 'हंस' को अखिल भारतीय भाषाओं का मुखपत्र बन गया. भाषा के प्रश्न पर प्रेमचंद ने बड़ी ही संजीदगी परंतु आक्रामक ढंग से कार्य किया. उन्होंने अंग्रेजी के प्रभुत्व पर लिखा-

"हमारी पराधीनता का सबसे अपमानजनक, सबसे व्यापक, सबसे कठोर अंग अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व है. कहीं भी वह इतने नंगे रूप में नजर नहीं आती. सभी जीवन के हर एक विभाग में अंग्रेजी भाषा ही मानो हमारी छाती पर मूंग दल रही है. अगर आज इस प्रभुत्व को हम तोड़ सके तो पराधीनता का आधा बोझ हमारी गर्दन से उतर जाएगा"

राष्ट्र की एकता, स्वाधीनता और मजबूती के लिए एक राष्ट्रभाषा की जरूरत तथा उसके स्वरूप, अन्य भाषाओं से उसके परस्पर संबंध पर बल देते हुए हंस' में प्रेमचंद लिखते हैं-

"जिस दिन आप अंग्रेजी भाषा का प्रभुत्व तोड़ देंगे और अपनी एक कौमी भाषा बना लेंगे, उसी दिन आपके आपको स्वराज्य के दर्शन हो जाएंगे. मुझे याद नहीं आता कि कोई भी राष्ट्र, विदेशी भाषा के बल पर के स्वाधीनता प्राप्त कर सका हो. राष्ट्र की बुनियाद राष्ट्र की भाषा है, नदी, पहाड़ और झरने राष्ट्र नहीं बनाते. भाषा ही वह बंधन है जो चिरकाल तक राष्ट्र को एक सूत्र में बांध रखती है, और उसको बिखरने नहीं देती....अगर हम एक राष्ट्र या फिर अपने स्वराज्य के लिए उद्योग करना चाहते है तो हमें राष्ट्र-भाषा का आश्रय लेना होगा। उसी राष्ट्रभाषा के माध्यम से हम अपने राष्ट्र की रक्षा कर सकेंगे. राष्ट्रभाषा से हमारा आशय है... इसे हिंदी कहिए, हिंदुस्तानी कहिए, या उर्दू कहिए, चीज एक है। नाम से हमारा कोई बहस नहीं. ईश्वर भी वही है, जो खुदा है, और राष्ट्र-भाषा में दोनों के लिए समान रूप से स्थान मिलना चाहिए।

बोध प्रश्न

- प्रेमचन्द की पत्रकारिता का मूल उद्देश्य लिखिए ।

13.3.4 – प्रेमचंद के पत्र, लेख व संपादकीय

<u>प्रेमचन्द के पत्र</u>

1. अनसूयाप्रसाद पाठक, 2. बानन्दराव जोशी, 3. इक़बाल वर्मा 'सेहर हथगामी, 4. उन्नावा राजगोपाल कृष्णय्या, 5. उपेन्द्रनाथ अश्क', 6. श्रीमती कमला चौधरी, 7. कलक्टर, बनारस, 8.प. कुंवर सुरेशसिंह, 9. केशोराम सब्बरवाल, 10. जनार्दनप्रसाद झा 'द्विज', 11. जयशंकर प्रसाद, 12. जे०पी० मार्गव, 13. दशरथ- लाल, 14. दयानारायण निगम,15. दुर्गाप्रसाद खत्री, 16. दुर्गासहाय सुरूर, 17. दुलारेलाल भार्गव, 18. घनी राम 'प्रेम', 19. नन्दकिशोर, 20. पं० गंगाप्रसाद अग्निहोत्री, 21. पद्मसिंह शर्मा, 22. पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, 23. पं० महावीरप्रसाद द्विवेदी, 24. माखनलाल चतुर्वेदी, 25. पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र', 26. प्रभाकर माचवे, 27. प्रवासीलाल वर्मा, 28. प्रियरंजन सेन, 29 बिपिनविहारी श्रीवास्तव, बी० ए०. 30. भँवरलाल सिधी, 31. भगवतीप्रसाद वाजपेयी, 32. महताबराय, 33. महाराजा अलवर, 34. डॉ० रघुबीर

सिंह, 35. राजेश्वर बाबू, 36. रामकुमार शर्मा, 37. रामकृपाल मेहता, 38. रामजी, 39. पं० रामदास गौड़, 40. रायकृष्णदास, 41. वीरेन्द्रकुमार जैन, 42. शंकरन, 43. श्यामलाल, 44. शिवपूजन सहाय, 45. श्रीराम शर्मा, 46. सज्जाद जहीर, 47. सद्गुरुशरण अवस्थी, 48. सम्पादक 'नैरंगे खयाल' 49. सम्पादक 'माधुरी', 50. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', 51. सेठ महादेवप्रसाद, 53. हिरण्मय

<u>लेख एवं सम्पादकीय</u>

1. "आज"हिन्दी साप्ताहिक से

शिक्षा-असहयोग , स्वराज्य की पोषक और विरोधक व्यवस्थाएँ

2. *'उर्दू-ए-मुअल्ला' से

हाथीदाँत खानदाने मुश्तरका (संयुक्त परिवार- प्रणाली)

3. 'जमाना' उर्दू मासिक से

हिन्दुस्तानी रेलों की साठ-साला तारीख, तनकीद शबेतार, काउण्ट टॉल्स्टॉय और फ़न-ए-लतीफ़ (सत्कला), मल्काना राजपूत मुसलमानों की शुद्धि, क़ौमी इत्तिहाद (ऐक्य) क्यों कर हो सकता है ?

4. 'जागरण' हिन्दी साप्ताहिक से

आत्मकथा क्या साहित्य का अंग नहीं है ?, आयात और निर्यात के आंकड़े, मां विजये ! भारतीय क्रिकेट टीम की वापसी, शैलबाला, कराची से मद्रास तक हवाई डाक, कुछ विशेष बीमा कम्पनियों की अधिकता, आवश्यक कर्त्तव्य, अलवर-नरेश, जूरी-ट्रायल, वाटर वर्क्स अफ़सर की लापरवाही, स्वदेशी बीमा कम्पनी, नोवल पुरस्कार प्राप्तकर्त्ता जॉन गाल्सवर्दी, सर रास मसूद, न्यू जर्नल्स लिमिटेड, लक्ष्मी इंश्योरेन्स कम्पनी, लाहौर की आश्चर्य- जनक उन्नति, काश्मीर में उपद्रव, भारतीय कपड़ा और भारतीय रुई, घोर वर्षा, काशी-निवासी हिन्दी-प्रेमियों से प्रार्थना, दि न्यू इंश्योरेन्स लिमिटेड, 'घृणा-प्रचारक' महात्मा बुद्ध, महाराजा बड़ौदा का अनुरोध, स्वदेशी बीमा कम्पनी लि०, आगरा, अन्ध-विश्वास, ओरियण्टल बीमा कम्पनी की डायमण्ड जुबली, 'जागरण' की नयी व्यवस्था, कांग्रेस कमेटी का अधिवेशन, न्यायालय और पुलिस ।

5. ' प्रताप' हिंदी साप्ताहिक से

हिंदू-मुस्लिम प्रश्न, उर्दू साहित्य की प्रगति

6. 'माधुरी' हिन्दी मासिक से हिन्दी - रंगमंच, 'चांद' का मारवाड़ी अंक

7. 'युवक' हिन्दी मासिक से

युवक कौन है ?

8. 'समालोचक' हिन्दी मासिक से

वर्तमान यूरोपियन ड्रामा

9. **'हंस' हिन्दी मासिक से**

'हंस' के जन्म पर, डोमिनियन और स्वराज्य, युवकों का कर्त्तव्य, शान्ति- रक्षा, जेल सुधार, जापान के लोग लम्बे हो रहे हैं, राजनीति और रिश्वत, पहले हिन्दुस्तानी फिर और कुछ, महात्माजी का वाइसराय से निवेदन, संग्राम में साहित्य, साहित्यिक उदासीनता, उर्दू के विशेषांक, साहित्य में समालोचना, रूसी साहित्य और हिन्दी, एक प्रसिद्ध गल्पकार के विचार, पं० बनारसीदास जी के दो पत्र, रोमें रोल की कला, समाचार-पत्रों के मुफ्तखोर पाठक, लेखक - मण्डल, ग्राहकों से भ्रम-निवारण, 'नव-शक्ति' का स्वागत, 'विद्यार्थी स्मारक समिति' की अपील, जड़वाद और वाद-कथाओं का महत्व, हिन्दी गल्प-कला का विकास, लेखक-संच, क्षमा-याचना, दो महत्वपूर्ण कान्स, साहित्य में विचार की आवश्यकता, जापान में पुस्तकों का प्रचार, सिनेमा और जीवन, प्रेम-विषयक गल्पों से अरुचि, रुचि की विभिन्नता, ग्राम्य-गीतों में समाज का चित्र, साहित्य की नयी प्रवृत्ति, समकालीन अंग्रेजी ड्रामा, साहित्य में बुद्धिवाद, फ़िल्म और साहित्य, सौन्दर्यशास्त्र, शिरोरेखा क्यों हटानी चाहिए ? हिन्दुस्तान एसोसिएशन (अमेरिका), बम्बई का दूसरा मराठी साहित्य सम्मेलन, 'हंस' से जमानत - "एक हजार रुपये नकद' —प्रकाशन बन्द, प्रगतिशील साहित्य और कला का व्रती 'हंस', महाजनी सभ्यता।

बोध प्रश्न

- प्रेमचन्द के सम्पादकीय लेखों की संक्षिप्त सूची बनाइए ।

13.4: पाठ सार

प्रेमचंद एक कथाकार होने के साथ-साथ महान पत्रकार भी थे। उन्होंने अपनी पत्रिकाओं के माध्यम से आधुनिक हिन्दी पत्रकारिता की नींव रखी थी। प्रेमचंद की अन्य रचनाओं का जितना महत्व है उतना ही उनकी पत्रकारिता का भी है। कथेतर गद्य ने भी तत्कालीन समाज को बहुत प्रभावित किया था। यह आवश्यकता महसूस होती थी कि प्रेमचंद के कथा साहित्य के साथ-साथ उनके कथेतर गद्य का भी समुचित अध्ययन हो। प्रेमचंद ने तत्कालीन समाज की हर समस्या पर अपनी लेखनी चलाई। उन्होंने दहेजप्रथा, किसानों की समस्या, मजदूरों की समस्या,

अछूतों की समस्या, महिलाओं की स्थिति, स्वराज, स्वाधीनता संग्राम आदि पर अपने विचार रखे और उनपर कहानियां और निबंध दोनों लिखे। शायद यही कारण था कि प्रेमचंद अपने युग में ही प्रसिद्ध हो गये थे। इसका कारण यह है कि उनका लेखन समाजिक सरोकारों से जुड़ा हुआ था। वे जिन मुद्दों पर लिखते थे उसका व्यापक प्रभाव समाज पर पड़ता था। लोग उस पर अपनी सहमति या असहमति दोनों दर्ज कराते चलते हैं। प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया था। उनकी लेखन भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की लेखन हैं। प्रेमचंद जिस दौर में लिखना प्रारंभ किया वह पराधीनता का दौर था। वे जहां एक और सामाजिक एकता और सौहाद्र के लिए कथा साहित्य के माध्यम से प्रयासरत थे वहीं दूसरी ओर जनसरोकारों से जुड़ी अपनी पत्रकारिता के माध्यम से लोगों में स्वाधीनता के प्रति जागरूकता के साथ-साथ उस समय समाज में व्याप्त कुरीतियों और विषमताओं के विरुद्ध भी आवाज बुलंद कर रहे थे। उनका पूरा साहित्य अपने समाज का ज्वलंत दस्तावेज है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रेमचंद ने सांप्रदायिकता हो या दहेज-प्रथा, किसान, मजदूर, छूत-अछूत, महिला समस्या, भाषा, आजादी, चुनाव, कोई भी समस्या हो हर विषय पर लिखा। उनके लेखन का जो महत्व उस समय समझा गया वह महत्व आज भी है। वह कौन-सी शक्ति है जो प्रेमचंद को अन्य लेखकों से अलग करती है। उन्होंने जनसभाओं में जो भाषण दिए उनका भी समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा समाज में इनके माध्यम से नयी शक्ति का संचार हुआ।

वर्तमान संदर्भों में प्रेमचंद को समझने की कोशिश करें तो हम पाते हैं कि सिर्फ समय बदला है, हमने विकास किया है लेकिन हमारी समस्याएं काफी हद तक वैसी ही हैं जैसा कि प्रेमचंद के समय में थीं। जातिप्रथा की समस्या जिस तरह उनके युग में थी वह आज भी है। प्रेमचंद मजदूरों के हक के बारे में अपनी आवाज बुलंद करते थे क्योंकि उस समय में इसकी बहुत जरूरत थी। आज भी हम मजदूरों की स्थिति पर नजर डालें तो हम देखोगे कि कमोबेश स्थिति वही है। आज भी मजदूरों की स्थिति चिंताजनक है।

प्रेमचंद के साहित्यकार रूप की चर्चा तो बहुत हुई पर प्रेमचंद की पत्रकार रूप की चर्चा नहीं के बराबर हुई है। उनके पत्रकारिता से जुड़े लेखन, उनके रिपोर्ताज, लेख, टिप्पणियां, पुस्तक परिचय व समीक्षाएं वगैरह को पढ़े बगैर प्रेमचंद के समग्र साहित्यिक अवदान को नहीं समझा जा सकता। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि मैंने इस शोध के दौरान यह पाया कि प्रेमचंद एक आवश्यक कथाकार पत्रकार हैं। इनके साहित्य और पत्रकारिता के योगदानों के अध्ययन के बिना अपने समाज का न तो मूल्यांकन कर सकते हैं और न ही उस युग को समझ सकते हैं जो हमारा अतीत रहा है। मेरा यह प्रयास रहा है कि इसमें हम उन सारी विशेषताओं को समेट सकें तथा उनका मूल्यांकन कर सकूं जो अब तक किसी शोध में नहीं आ सकी हैं। प्रेमचंद के कथेतर साहित्य का यह अध्ययन वर्तमान संदर्भों में मूल्यांकित करने का एक छोटा सा प्रयास है। प्रेमचंद जैसे विशाल लेखक को इस अध्ययन के माध्यम से समझने की कोशिश की

गयी है। इसकी पृष्ठभूमि स्पष्ट करते हुए में बस इतना कहना चाहूंगा कि प्रेमचंद का कथेतर साहित्य में भी एक लय विद्यमान है, जो हमें उनसे जोड़ती है।

निष्कर्ष के तौर पर हम कहें कि प्रेमचंद के कथेतर गद्य में उनकी पत्रकारिता से संबंधित रचनाओं का विशेष महत्व है। उनके संपादकीय, आलेख, टिप्पणियां पत्र आदि ने हमें राह दिखाई है। प्रेमचंद ने अपने कथेतर गद्य में आम आदमी की समस्याओं को प्रमुखता से स्थान दिया। पत्रकारिता की जो शैली उन्होंने विकसित की उसी पर आज की पत्रकारिता खड़ी है। वर्तमान संदर्भों में प्रेमचंद के कर्येतर गय की प्रासंगिकता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

13.5 : पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं-

1. इस इकाई का अध्ययन करने के बाद अब आप हिंदी पत्रकारिता का इतिहास एवं प्रेमचंद की पत्रकारिता का मूल्यांकन एवं विश्लेषण कर सकते हैं।
2. पत्रकारिता समाज का आईना है।वह मनुष्य की आस्थाओं, विचारों, मूल्यों को सही रूप में जनता के सामने रखती है।
3. एक पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना भी बहुत ज़रूरी है।उसकी निष्पक्षता से ही उसके संगठन एवं सेवा की साख बनती है।
4. प्रेमचंद का इरादा अपना शेष जीवन किसी राजनीतिक आंदोलन में शामिल होकर नहीं, बल्कि अपने साहित्यिक कार्यों के माध्यम से देश की सेवा में समर्पित करने का था। उन्होंने खुद को आश्वस्त कर लिया था कि, जब तक उनके पास एक प्रकाशन गृह और एक प्रिंटिंग प्रेस नहीं होगी, वे एक लेखक के रूप में खुद का समर्थन नहीं कर पाएंगे।
5. राष्ट्रीय दृष्टि से पत्रकारिता का विशेष महत्व है, क्योंकि आज पत्रकारिता को लोकतंत्र का आधार स्तंभ माना जाता है।

1. सिद्ध कीजिए "प्रेमचंद के कथेतर गद्य में उनकी पत्रकारिता से संबंधित रचनाओं का विशेष महत्व है"।
2. "प्रेमचंद कथाकार के साथ-साथ बहुत महान पत्रकार भी थे"इस कथन की समीक्षा कीजिए ।
3. "ज़माना"नामक उर्दू पत्र के अतिरिक्त प्रेमचंद ने और किन-किन- उर्दू पत्रों के लिए लिखा।

13.6 : शब्द संपदा

1. लोक सेवा - जन सेवा ,जनता की सेवा
2. कुठाराघात - सर्वनाश
3. साहित्यिक अवदान - अदबी योगदान ,महत्त्व

4. प्रभुत्व - एकाधिकार ,वर्चस्व
5. तहकीकात - खोज ,जाँच पड़ताल
6. साप्ताहिक - सात दिन में एक बार
7. स्वतन्त्रता संग्राम- आज़ादी की लड़ाई
8. विद्यमान - मौजूद
9. प्रतिनिधि - प्रमुख
10. तहरीक- आंदोलन
11. निष्कर्ष- नतीजा ,परिणाम
12. संकलित- इकट्ठा करना

13.7 : परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

(अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग500 शब्दों में दीजिए।

1-पत्रकारिता के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।

2-हिंदी पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास पर विस्तारपूर्वक विवेचन कीजिए।

3-प्रेमचंद की पत्रकारिता का विश्लेषण कीजिए

4-"प्रेमचंद तत्कालीन समाज के सच्चे मार्गदर्शक थे " उनकी पत्रकारिता के दृष्टिगत इस कथन की समीक्षा कीजिए।

5-प्रेमचंद की पत्रकारिता के विचार पक्ष पर प्रकाश डालिए।

6-"प्रेमचंद युगीन हिंदी पत्रकारिता एवं देश प्रेम " पर एक सारगर्भित लेख लिखिए।

खंड (ब)

लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. "पत्रकारिता के माध्यम से प्रेमचंद ने देश-प्रेम का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया " तर्क सहित प्रमाणित कीजिए।

2. प्रेमचंद के प्रमुख सम्पादकीय एवं लेखों का उल्लेख कीजिए

3. द्विवेदी युगीन पत्रकारिता की विशेषता लिखिए ।

4. सन 1921 के बाद साहित्य क्षेत्र में आने वाले प्रमुखपत्रों के नाम लिखिए।

5- प्रेमचंद की पत्रकारिता की उपयोगिता को संक्षिप्त में लिखिए ।

6. निम्नलिखित पर सारगर्भित टिप्पणी लिखिए-

(क) प्रेमचंद की पत्रकारिता से संबंधित सेवा

(ख) हिंदी पत्रकारिता का उद्भव

(ग) स्वतन्त्रता संग्राम और प्रेमचंद

(घ) प्रेमचन्द की भाषा

खंड (स)

I- सही विकल्प चुनिए-

1- हिंदी पत्रकारिता का आरंभ हुआ ?

(अ) उदंत मार्तण्ड (ब) बंगदूत (स) ज्ञानदीप

2- हरिश्चन्द्र मैगज़ीन के संस्थापक कौन थे?

(अ) महावीर प्रसाद द्विवेदी (ब) भारतेंदु हरिश्चंद्र (स)गुलाब रॉय

3- 'हिंदी प्रदीप' नामक मासिक पत्र कहाँ से निकलता था?

(अ) प्रयाग (ब) आगरा (स) लखनऊ

4- हिंदी क्षेत्र में प्रकाशित होने वाला प्रथम सम्पूर्ण हिंदी दैनिक पत्र का नाम क्या था?

(अ) भारत-जीवन (ब) हिंदोस्थान (स) नागरी नीरद

5- 'वह हृदय नहीं है,पत्थर है,जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं' किस पत्र का मूल सिद्धांत था।

(अ) कर्मवीर (ब) प्रताप (स) स्वदेश

6- सन 1930 में देश में गांधी जी के दांडी मार्च के अवसर पर प्रेमचंद ने किस मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया।

(अ) सरस्वती (ब) हंस (स) ज़माना

(II) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

1- प्रेमचंद ने ---- और---- पत्रिका का संपादकीय दायित्व सम्भाल ।

2- सन ----- से प्रेमचंद पर अपना खुद का प्रेस खोलने का धुन सवार हो गया।

3- राष्ट्र की एकता, स्वाधीनता और मजबूती के लिए एक ---- की ज़रूरत है।

4- सरस्वती प्रेस की स्थापना ---- में की।

5- समाज में उदार मूल्यों की स्थापना हेतु ----की भूमिका उल्लेखनीय है।

6- 15 अगस्त 1867 में ------ ने 'कविवचन सुधा' पत्र निकाला।

(III) सुमेल कीजिए

1- आनन्द कादम्बिनी	(अ) - प्रताप नारायण मिश्र
2- ब्राह्मण	(आ)- पंडित बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन
3- अभ्युदय	(इ)- भारतेंदु हरिश्चंद्र
4- हरिश्चन्द्र मैगज़ीन-	(ई)-शांति नारायण भटनागर
5- हिंदी प्रदीप-	(उ)- प्रेमचंद
6- स्वराज्य-	(ऊ)- पंडित मदनमोहन मालवीय
7- हंस	(ए)- दुर्गा प्रसाद मिश्र
8- उचित वक्ता	(ऐ)- बालकृष्ण भट्ट

13.8 : पठनीय पुस्तकें

1. **अमृतराय-विविध प्रसंग खंड-2** हंस प्रकाशन
2. **अमृतराय-कलम का सिपाही**,हंस प्रकाशन
3. **हिंदी भाषा के विकास में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान**-प्रोफ़ेसर ऋषभदेव शर्मा
4. **हिंदी पत्रकारिता** - कृष्ण बिहारी मिश्र - भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली
5. **प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य (खण्ड एक व दो)** - संकलन-सम्पादन-लिप्यंतरण- डॉ0 कमल किशोर गोयनका भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन प्रथम संस्करण- 1988

इकाई 14 : महाजनी सभ्यता : निबंध की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

14.1 प्रस्तावना

14.2 उद्देश्य

14.3 मूल पाठ : महाजनी सभ्यता : निबंध की विवेचना

14.3.1 'महाजनी सभ्यता' की विषयवस्तु

14.3.2 'महाजनी सभ्यता' का भाषा-पक्ष

14.3.3 'महाजनी सभ्यता' में लेखकीय दृष्टि

14.4 पाठ सार

14.5 पाठ की उपलब्धियाँ

14.6 शब्द संपदा

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

14.8 पठनीय पुस्तकें

14.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! आप अब तक प्रेमचंद के युग से भलीभाँति परिचित हो चुके हैं। उनके विचारों को समझ ही चुके हैं। प्रेमचंद एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनके विचारों में हमेशा मध्यवर्ग और निम्नवर्ग विद्यमान था। उन्होंने आजीवन पिछड़ेपन के विरुद्ध संघर्ष किया। प्रेमचंद का साहित्य उस समय की तमाम परिस्थितियों को समझने के लिए सहायक सिद्ध होता है। प्रेमचंद का प्रमुख उद्देश्य था शोषण मुक्त समाज का निर्माण करना। अर्थात मानवीय संबंधों से युक्त स्वस्थ समाज का निर्माण करना। प्रिय छात्रो! आप प्रेमचंद को उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में ही अब तक पढ़ा होगा। उनके आलोचक के रूप से बहुत ही कम लोग परिचित होते हैं। 'हँस' पत्रिका में लिखित उनके संपादकीयों और लेखों/ निबंधों के माध्यम से आप उनके आलोचक रूप से परिचित हो सकते हैं। प्रेमचंद प्रमुख रूप से व्यक्तिगत संपत्ति (सामंती और पूँजीवादी संपत्ति) के आलोचक थे। उनकी आलोचना समाजवादी विचारधारा के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण है। ध्यान देने की बात है कि प्रेमचंद के समय में समाजवादी विचारधारा की भूमिका थी स्वाधीनता आंदोलन को साम्राज्यवादी मार्ग पर सुसंगत रूप से आगे बढ़ाना। इस इकाई में आप महाजनी सभ्यता पर व्यक्त किए गए प्रेमचंद के प्रमुख विचारों से अवगत हो सकेंगे। चलिए! महाजनी सभ्यता क्या है और प्रेमचंद ने उसके संबंध में क्या कहा है, जानने की कोशिश करेंगे।

14.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- प्रेमचंद के विचारों से परिचित हो सकेंगे।
- महाजनी सभ्यता के अभिप्राय से अवगत हो सकेंगे।
- पूँजी के कारण बदलते सामाजिक समीकरण को जान सकेंगे।
- जागीरदारी और महाजनी सभ्यता में निहित सूक्ष्म अंतर को पहचान सकेंगे।
- साम्यवादी विचारधारा की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

14.3 मूल पाठ : महाजनी सभ्यता: निबंध की विवेचना

प्रिय छात्रो! आपकी जानकारी के लिए बता दें - 'महाजनी सभ्यता' शीर्षक यह निबंध 'क़लीम' नामक उर्दू मासिक में अगस्त 1936 में 'महाजनी तहज़ीब' नाम से पहली बार प्रकाशित हुआ था। इसका हिंदी रूपांतरण सितंबर 1936 के हिंदी मासिक 'हंस' में 'महाजनी सभ्यता' नाम से प्रकाशित हुआ। 'प्रेमचंद स्मृति अंक' और 'प्रेमचंद का अप्राप्य साहित्य भाग 2' में भी यह निबंध संकलित है। इस निबंध के माध्यम से प्रेमचंद ने पूँजीवादी व्यवस्था (महाजनी सभ्यता) द्वारा अनिवार्य रूप से पैदा होने वाली व्यक्तिगत स्वार्थ, कपट, लोभ-लालच, बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है। इतना ही नहीं रूसी क्रांति के बाद वहाँ की बेहतरीन सामाजिक संरचना की एक झलक भी इस निबंध में प्रस्तुत है।

14.3.1 'महाजनी सभ्यता' की विषयवस्तु

प्रिय छात्रो! आप जान ही चुके हैं कि पहली बार यह निबंध उर्दू में 'महाजनी तहज़ीब' शीर्षक से प्रकाशित हुआ था और बाद में इसी का हिंदी रूपांतरण 'महाजनी सभ्यता' नाम से प्रकाशित हुआ।

पूँजी संबंधी विचार

महाजनी सभ्यता को जागीदारी सभ्यता या पूँजीवादी सभ्यता भी कहा जा सकता है। इस महाजनी अथवा जागीरदारी व्यवस्था और साम्राज्यवाद में अनेक दोषों के बावजूद कुछ गुण भी विद्यमान थे, परंतु महाजनी सभ्यता का प्रमुख लक्ष्य पैसा कमाना था। इसके कारण सारा समाज दो वर्गों में बँट गया। एक बड़ा हिस्सा दिन भर काम करने के बावजूद दो जून रोटी के लिए मरने और खपने वाला समाज था। दूसरा एक छोटा हिस्सा जो अपनी सुख-शांति के लिए उस बड़े हिस्से को अपने कब्जे में किया हुआ था। पहला हिस्सा संपूर्ण समाज में एक बहुत बड़ा हिस्सा होते भी अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करता रहा और पग-पग पर शोषण का शिकार होता रहा। दूसरा हिस्सा छोटा होते हुए भी अपने पास साधन होने के कारण उस बड़े हिस्सा का उपभोग करता रहा। इस छोटे हिस्से ने पूँजी के बल पर संपूर्ण समाज को नचाया। इस संबंध में प्रेमचंद का यह कथन उल्लेखनीय है - "मनुष्य समाज दो भागों में बँट गया है। बड़ा हिस्सा तो मरने और खपने वालों का है, और बहुत ही छोटा हिस्सा उन लोगों का, जो अपने शक्ति और प्रभाव से बड़े समुदाय को अपने बस में किए हुए हैं। इन्हें इस बड़े भाग के साथ किसी तरह के हमदर्दी नहीं, ज़रा भी रू-रियायत नहीं। उसका अस्तित्व केवल इसलिए है कि अपने मालिकों के

लिए पसीना बहाए, खून गिराए और एक दिन चुपचाप इस दुनिया से विदा हो जाए।" (प्रेमचंद, महाजनी सभ्यता)।

ध्यान देने की बात है कि समाज पूँजी पर आधारित है। पूँजी के अभाव में कुछ भी नहीं हो सकता। महाजनी सभ्यता में पूरा काम पैसों पर ही आधारित है। "इस महाजनी सभ्यता में सारे कामों की गरज महज पैसा होती है। किसी देश पर राज्य किया जाया है, तो इसीलिए कि महाजनों, पूँजीपतियों को ज्यादा से ज्यादा नफा है। इस दृष्टि से मानो आज दुनिया में महाजनों का ही राज्य है।" (प्रेमचंद, महाजनी सभ्यता)। महाजनी सभ्यता धन और वैभव आधारित सभ्यता है। धन और वैभव की पिपासा ने मनुष्य को स्वार्थी बना दिया। मानवीय गुण इस धन-लोभ के तले लुप्त होने लगे। शराफत, कुलीनता, ईमानदारी आदि की कसौटी धन और केवल धन ही बन गया। जिसके पास पैसा है वह देवता-स्वरूप महान है। उसका अंतःकरण काला होने पर भी समाज में उसका हाथ ऊँचा ही रहता है, क्योंकि उसके पास 'धन' रूपी लक्ष्मी है। सब को उसके समक्ष झुकना ही पड़ता है। यह जहरीला हवा चारों ओर फैलने से इंसान की इंसानियत छूमंतर होने लगी। इस संबंध में प्रेमचंद का यह कथन उल्लेखनीय है - "यह हवा इतनी जहरीली हो गई है कि इसमें जीवित रहना कठिन होता जा रहा है। डॉक्टर और हकीम है कि बिना लंबी फीस लिए बात नहीं करता। वकील और बारिस्टर है कि वह मिनटों को अशर्फियों से तौलता है। गुण और योग्यता की सफलता उसके आर्थिक मूल्य के हिसाब मानी जा रही है।" यह हवा इतनी जहरीली है कि इसने अच्छे-अच्छों को नहीं छोड़ा। मौलवी साहब और पंडित जी तक इसके चपेट में आ ही गए। बिना पैसे के ही पैसे वालों के गुलाम बन गए।

बोध प्रश्न

- महाजनी सभ्यता किस पर आधारित है?
- मनुष्य समाज कितने वर्गों में बँट गया?
- समाज का बड़ा हिस्सा किसका है?

जागीरदारी सभ्यता संबंधी विचार

प्रेमचंद इस बात के चिंता व्यक्त करते हैं कि शासक वर्ग के विचार और सिद्धांत शासित वर्ग के भीतर भी समा गए हैं। इसका फल यह हुआ कि हर आदमी अपने को शिकारी समझता है और समाज उसका शिकार है। कहना होगा इस समाज में सभी मानवीय गुण पैसे पर नौछावर हैं। 'न बाप न भैया, सबसे बड़ा रुपया' - यह उक्ति चारों तरह राज्य कर रही है। साहित्य, संगीत, कला - सभी धन की दहलीज पर माथा टेकते हैं। इस महाजनी सभ्यता ने अपने जबड़ों को मजबूत करके संपूर्ण समाज को अपने अधीन कर लिया।

प्रेमचंद के 'महाजनी सभ्यता' नामक निबंध (लिखित भाषण) से यह स्पष्ट होता है कि उनके समय में समाज में दो सभ्यताएँ मौजूद थीं - जागीरदारी सभ्यता और साम्राज्यवादी सभ्यता। इन दोनों सभ्यताओं में अंतर स्पष्ट करते हुए प्रेमचंद कहते हैं कि जागीदारी सभ्यता की बुजाएँ बलवान थीं और कलेजा मजबूत। जबकि साम्राज्यवादी सभ्यता में बुद्धि तथा वाणी के गुण तथा मूल आज्ञापालन विशेष साधन थे। वे यह भी कहने महीन नहीं चूकते कि मनुष्य में अच्छे गुण अब भी विद्यमान हैं, लुप्त नहीं हुए। "जागीरादर अगर दुश्मन के खून से अपनी प्यास

बुझाता था, तो अकसर अपने किसी मित्र या उपकारक के लिए जान की बाजी भी लगा देता था। बादशाह अगर अपने हुक्म को कानून समझता था और उसकी अवज्ञा को कदापि सहन न कर सकता था, तो प्रजापालन भी करता था, न्यायशील भी होता था। दूसरे देश पर चढ़ाई वह या तो किसी अपमान-अपकार का बदला फेरने के लिए करता था या अपनी बात आना-बयान, रोब-दाब कायम करने के लिए करता या फिर देश-विजय और राज्य-विस्तार की वीरोचित महत्वाकांक्षा से प्रेरित होता था।" इससे स्पष्ट है कि उसका उद्देश्य जनता की खून चूसना नहीं होता था। क्योंकि राजा और सम्राट जनसाधारण को अपने स्वार्थ साधन और धन कमाने की भट्ठी का ईंधन नहीं समझते थे। उनके सुख-दुख में भी शामिल होते थे। उनके गुणों का भी कद्र करते थे। जागीदारी सभ्यता में और महाजनी सभ्यता में सूक्ष्म अंतर किया जा सकता है। वह यह है कि जागीदारी सभ्यता प्रजा के बारे भी सोचता है, लेकिन महाजनी सभ्यता के प्रजा गौण है।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद के समय में समाज में कौन सी व्यवस्थाएँ थी?
- जागीरदारी व्यवस्था के संबंध में प्रेमचंद ने क्या कहा?

महाजनी सभ्यता के सिद्धांत संबंधी विचार : समय ही धन है

यह निर्विवाद सत्य है कि धन के अभाव में जीवन यापन करना कठिन है, लेकिन इतना अभी धन-पिपासु नहीं होना चाहिए कि उसी के आगे-पीछे भागने में मजबूर हो जाए। धन ने मनुष्य के दिलोदिमाग पर इस तरह अपना कब्जा जमा लिया है कि कहीं से भी किसी भी तरह से उस पर आक्रमण नहीं किया जा सकता। उसकी पैठ इतनी मजबूत है कि मनुष्य चाहकर भी उसके गिरफ्त से बाहर नहीं निकल सकता। इसने दया और ममता युक्त मनुष्य को जड़-यंत्र बना दिया। उसकी संपूर्ण संवेदनाओं लो निगल लिया। उसकी मनुष्यता को लील लिया।

महाजनी सभ्यता के कारण समाज में नए-नए सिद्धांत, नए-नए नीति-नियम सामने आने लगे। ऐसा है कि हर रोज यह सभ्यता अपने हित के लिए नए-नए नियम गढ़ने लगा। इसका प्रमुख नियम है - समय ही धन है। पहले यह नियम चलता था कि समय ही जीवन है तथा उसका गुण यह था कि समय का सदुपयोग करना चाहिए। धन उतना ही कमाए जितना आवश्यक है। कबीर भी कैट हैं कि 'कबीर सो धन संचिए, जो आगे कूं होइ।/ सीस चढ़ाए पोटली, ले जात न देख्या कोइ।' अर्थात उतना यही धन संचय कीजिए - इकट्ठा कीजिए जो भविष्य में काम आए। कभी भी किसी को भी ऐसा नहीं देखा गया कि वे अपने सर पर धन की गठरी बांधकर ले जा रहे हो। लेकिन आज की स्थिति इसके विपरीत है। सब की निगाहें और सोच अधिक से अधिक धन का संचय करना है। इस संबंध में प्रेमचंद व्यंग्य कसते हैं कि "डॉक्टर साहब हाथ मरीज की नब्ज पर रखते हैं और निगाह घड़ी की सुई पर। उनका एक-एक मिनट एक-एक अशर्फी है। रोगी ने अगर केवल एक अशर्फी नज़र की है, तो वह उसे मिनट से ज्यादा वक्त नहीं दे सकते। रोगी अपनी दुख-गाथा सुनाने के लिए बेचैन है; पर डॉक्टर साहब का उधर बिल्कुल ध्यान नहीं। उन्हें उससे ज़रा भी दिलचस्पी नहीं। उनकी निगाह में उस व्यक्ति का अर्थ केवल इतना ही है कि वह उन्हें फीस देता है। वह जल्द से जल्द नुस्खा लिखेंगे और दूसरे रोगी को देखने

चले जाएँगे।" मसीहा कहने वाले डॉक्टरों की यह स्थिति है। रोगी अस्पताल जाने से कतराने लगा है। अस्पताल जाने का मतलब है अपनी जमा-पूँजी को अर्पित करके कंगाल होकर वापस आना। भले ही प्रेमचंद ने अपने समय के समाज के बारे में कहा हो, लेकिन यह स्थिति आज भी है, और भी विकराल रूप में हमारे सामने आ रही है।

प्रिय छात्रो! यह तो डॉक्टरों की बात। वकीलों की बात भी कर ही लेंगे। कहा जाता है कि स्वास्थ्य के बारे में डॉक्टर से और हालात के बारे में वकील से झूठ नहीं बोलना चाहिए। क्योंकि यदि हम स्वस्थ और सुखी जीवन जीना चाहते हैं तो निरोगी और ईमानदार होना चाहिए। यदि हम यह सोचेंगे वकील दोस्त हमारी सहायता करेगा किसी मुकदमे से बाहर निकालने में तो यह हमारी गलतफहमी होगी। क्योंकि दोस्त होने के कारण वह लेन-देना के बारे में खुलकर बात नहीं कर पाएगा और टालता जाएगा। अतः प्रेमचंद यह सलाह देते हैं कि "इससे तो कहीं अच्छा है कि आप किसी अपरिचित के पास जाएँ और उसकी पूरी अदा करें। ईश्वर न करे कि आज किसी को किसी चीज में कमाल हासिल हो जाए, फिर उसमें मनुष्यता नाम को न रह जाएगी, उसका एक-एक मिनट कीमती हो जाएगा।"

यह सब तो ठीक है। एक हद तक मान भी सकते हैं, क्योंकि लोग यह सोचते हैं कि डॉक्टर और वकील बनने के लिए धन खर्च किया है, तो उसे वसूलना भी तो है। पर हमें राह दिखाने वालों, शिक्षित करने वालों की क्या स्थिति है। इस महाजनी सभ्यता ने हमें राह दिखाने वाले और सही-गलत का अज्ञान देने वाले शिक्षकों को भी नहीं छोड़ा है। इसे भी प्रेमचंद के शब्दों से जानने की कोशिश करेंगे। वे कहते हैं कि "मास्टर साहब पढ़ाने आते हैं, उनका एक घंटा वक्त बंधा है। वह घड़ी सामने रख लेते हैं, जैसे ही घंटा पूरा हुआ, वह उठ खड़े हुए। लड़के का सबक अधूरा रह गया तो रह जाए, उनकी बला से, वह घंटे से अधिक समय कैसे दे सकते हैं; क्योंकि समय रुपया है।" यदि भगवान का पता बताने वाले और सही राह दिखाने गुरु ही धन-लोभ के कारण राह से भटक जाए, तो क्या कहा जा सकता है!

एक ऐसा वक्त था जब हमें यह बता गया था कि समय को ध्यान में रखते हुए काम करें और अपनी जिम्मेदारी निभाएँ। सब चीजों को पैसों से न नापो। आदि, आदि, आदि बातें। लेकिन आज पैसों को ही प्रमुखता दी जा रही है। मनुष्यता और मित्रता भी धन की धुरी पर टिक रहे हैं। धन कमाने के चक्कर में हम रिश्ते-नाते भी भूलते जा रहे हैं। घर-परिवार के सदस्यों से बातचीत करने के लिए हमारे पास समय नहीं है। क्योंकि हम यही सोचने लगे कि उस वक्त में यदि कुछ काम करेंगे तो पैसे कमाया जा सकता है। इस पर टिप्पणी करते हुए प्रेमचंद कहते हैं कि "कुछ कमा लेना ही जीवन की सार्थकता है, शेष सब कुछ समय-नाश है। बिना खोए-सोए काम नहीं चलता, बेचारा इससे लाचार है और इतना समय नष्ट करना ही पड़ता है।"

आर्थिक परिस्थितियों के कारण मनुष्य मजबूर हो जाता है तो वह उस अर्थ को कमाने के लिए दिन-रात एक करने के लिए जुट ही जाता है। धन-लक्ष्मी की कृपा पाना आसान नहीं। समाज मानव-मन की अवस्था कुछ इस तरह कर देना है कि उसे धनार्जन के अलावा कुछ नहीं सूझता और किसी और काम में भी दिल नहीं लगता। उसकी सोच, उसकी दृष्टि हमेशा पैसे के इर्द-गिर्द ही घूमती रहती है। पैसे के अलावा उसका कोई और अपना नहीं। दोस्त भी उसके पास

अपनी गरज लेकर ही उसके पास आते हैं। यहाँ स्वजन और सगे-संबंधी तभी तक आपके इर्द-गिर्द घूमते रहते हैं जब तक आपके पास धन है, क्योंकि वे भी पैसों की ही पुजारी हैं। प्रिय छात्रो! मान लीजिए अगर आपके पैसे नहीं है और आप इतने दयनीय स्थिति में हैं कि छोटी-छोटी जरूरतों के लिए भी सबके सामने हाथ आगे करना पड़ रहा है, तो आपके पास कोई नहीं आएँगे। इस संबंध में प्रेमचंद का यह कथन उल्लेखनीय है - "वह देख रहा है कि पैसे के सिवा उसका और कोई अपना नहीं। स्नेही मित्र भी अपनी गरज लेकर ही उसके पास आते हैं, स्वजन-संबंधी भी उसके पैसे के ही पुजारी हैं। वह जानता है कि अगर वह निर्बल होता, तो वह जो दोस्तों का जमघट लग रहा है, उसमें एक के भी दर्शन न होते, इन स्वजन-संबंधियों में से एक भी पास न फटकता। उसे समाज में अपनी एक हैसियत बनानी है, बुढ़ापे के लिए कुछ बचाना है, लड़कों के लिए कुछ कर जाना है जिसमें उन्हें दर-दर ठोकरें न कहानी पड़ें।"

बोध प्रश्न

- महाजनी सभ्यता के कारण उभरा हुआ पहला सिद्धांत क्या है?
- महाजनी सभ्यता में मनुष्यता और मित्रता किस धुरी पर टिके हैं?

समाज में आने के बाद व्यक्ति इतना अनुभव प्राप्त कर ही लेता है कि वह दुनियादारी सीख जाता है। इस निष्ठुर सहानुभूति दुनिया का उसे पूरा अनुभव हो ही जाता है। वह जिन कठिनाइयों व समस्याओं का सामना किया, वह नहीं चाहता कि उसके बच्चे भी उन्हीं स्थितियों का सामना करें। कठिन विकट स्थितियाँ मनुष्य के हिम्मत-हौसले तोड़कर रख देती हैं। यदि इस समाज में इज्जत की जिंदगी जीनी हो, दो जून रोटी आराम से खाना चाहते हो, तो पैसा कमान ही पड़ेगा। इसके लिए व्यापार करना ही पड़ेगा।

महाजनी सभ्यता के सिद्धांत संबंधी विचार : व्यवसाय व्यवसाय है

व्यापार। महाजनी सभ्यता का दूसरा प्रमुख सिद्धांत। अर्थात व्यवसाय व्यवसाय है। इस सिद्धांत में भावुकता के लिए कोई जगह नहीं। इस सिद्धांत में बेशर्म होना पड़ता है। सहानुभूति, दया, ममता, दोस्ती, बंधुता, मनुष्यता आदि इस सिद्धांत के सामने टिक ही नहीं पाते। प्रेमचंद कहते हैं कि, "पुराने जीवन-सिद्धांत में वह लठमार साफ़गोई नहीं है, जो निर्लज्जता कही जा सकती है और जो इस नवीन सिद्धांत की आत्मा है। जहाँ लेन-देन का सवाल है, रुपये-पैसे का मामला है, वाहन न दोस्ती का गुज़र है, न मुरौवत है, न इंसानियत का, 'बिजनेस' में दोस्ती कैसी। जहाँ किसी ने इस सिद्धांत की आड़ ली और आप लाजवाब हुए। फिर आपकी जुबान नहीं खुल सकती।" इस सिद्धांत के आगे कोई मित्र या सगा-संबंधी नहीं होते। महाजन की भाँति उससे भी वही बर्ताव किया जाएगा जिस तरह अन्य लोगों के साथ हो रहा है। यदि आपने मित्र व्यवसाय-सिद्धांत के भक्त हों, तो सहायता माँगकर कभी भी उसके पास न जाएँ।

महाजनी सभ्यता ने नई-नई रीतियाँ और नीतियाँ चलाई हैं। उनमें से सबसे अधिक रक्त-पिपासु सिद्धांत है व्यवसाय वाला सिद्धांत। सारे रिश्ते-नाते आज इसी बिजनस पर आधारित हो रहे हैं। इस ने तो सब मानवीय संबंधों को समाप्त ही कर डाला। "आदमी आदमी के बीच बस कोई लगाव है, तो बिजनेस का।" ऐसी बिजनस को प्रेमचंद धिक्कारते हैं। आर्थिक संकट के कारण यदि किसी लड़की की शादी नहीं होती तो अपने ही घर में उसकी स्थिति दयनीय हो जाती है।

इसका खुलासा करते हुए प्रेमचंद कहते हैं कि "महाजनी सभ्यता में लड़की एक खास उम्र के बाद लौंडी और अपने भाइयों की मजदूरनी हो जाती है। पूज्य पिताजी भी अपने पितृ-भक्त बेटे के टहलुए बन जाते हैं और माँ अपने सपूत की टहलुई। स्वजन-संबंधी तो किसी गिनती में नहीं। भाई भी भाई के घर आए तो मेहमान है। अकसर तो उसे मेहमानी का बिल भी चुकाना पड़ता है। इस सभ्यता की आत्मा है व्यक्तिवाद।" इस सिद्धांत की आत्मा को प्रेमचंद इसलिए व्यक्तिवाद कहते हैं क्योंकि व्यक्ति अपने स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ही सोचता है। दूसरों के बारे में सोचने के लिए न ही उसके पास समय है और न ही इतना बड़ा दिल। इससे स्पष्ट है कि महाजनी सभ्यता व्यक्ति केंद्रित सभ्यता है।

प्रेमचंद इसके लिए भी किसी को दोषी नहीं ठहराते हैं। क्योंकि यहाँ भी वही चिंता है - मान-प्रतिष्ठा, भविष्य की चिंता, बीवी-बच्चों की गुजार का प्रश्न, दिखावे की आवश्यकता। यदि व्यक्ति इस सिद्धांत के नीति-नियमों का पालन नहीं करेगा तो उसका भविष्य निश्चय ही अंधकारमय ही होगा। ध्यान देने की बात यह है कि अब तक इस सभ्यता की रीति-नीति का अनुसरण करने के सिवा कोई और विकल्प नहीं बचा था। इस सभ्यता के आगे सिर झुकाना ही पड़ता है। महाजन के आचरण के संबंध में प्रेमचंद कहते हैं कि वह "अपने जोम से फूला फिरता था। सारी दुनिया उसके चरणों पर नायक रगड़ रही थी। बादशाह उसका बंदा, वजीर उसके गुलाम, संधि-विग्रह की कुंजी उसके हाथ में, दुनिया उसकी महत्वाकांक्षाओं के सामने सिर झुकाए हुए, हर मुल्क में उसका बोलबाला।

बोध प्रश्न

- महाजनी सभ्यता का दूसरा प्रमुख सिद्धांत क्या है?
- महाजनी सभ्यता के दूसरे सिद्धांत की आत्मा क्या है?
- महाजन के आचरण के संबंध में प्रेमचंद क्या कहते हैं?

नई सभ्यता संबंधी विचार : साम्यवाद

प्रेमचंद ने 'महाजनी सभ्यता' शीर्षक निबंध में जहाँ एक ओर पूँजीवादी सभ्यता के बारे में चर्चा की वहीं दूसरी ओर एक नई सभ्यता के बारे में चर्चा की। इस नई सभ्यता का उदय सुदूर पश्चिम में हुआ। इस नई सभ्यता (साम्यवाद) ने मानववाद व पूँजीवाद की जड़ खोदकर फेंक दी थी। इस नई सभ्यता का मूल सिद्धांत यह था कि प्रत्येक व्यक्ति मेहनत करके कुछ कमा सकता है वह सम्मान पाने का हकदार है। "और जो केवल दूसरों की मेहनत या बाप-दादों के जोड़े हुए धन पर रईस बना फिरता है, वह पतिततम प्राणी है। उसे राज्य-प्रबंधन में राय देने का हक नहीं और वह नागरिकता के अधिकारों का भी पात्र नहीं।" निस्संदेह महाजन इस नई सभ्यता से उद्विग्न होकर फिरेंगे ही। ऐसे में इस नई सभ्यता को श्राप देना स्वाभाविक है।

पश्चिम में उदित यह नई सभ्यता का सूर्य निश्चित रूप से साम्यवाद ही थी, जिससे दुनिया भर के महाजन घबड़ाए हुए थे। प्रेमचंद कहते हैं कि "निस्संदेह इस नई सभ्यता ने व्यक्ति स्वातंत्र्य के पंजे, नाखून और दांत तोड़ दिए हैं। उसके राज्य में अब एक पूँजीपति लाखों मजदूरों का खून पीकर मोटा नहीं हो सकता। उसे अब यह आजादी नहीं कि अपने नफे के लिए साधारण आवश्यकता की वस्तुओं के दाम बढ़ा सके, अपने माल की खपत कराने के लिए युद्ध करा दे,

गोला-बारूद और युद्ध सामग्री बनाकर दुर्बल राष्ट्रों का दमन कराए। अगर इसकी स्वाधीनता ही स्वाधीनता है तो निस्संदेह नई सभ्यता में स्वाधीनता नहीं; पर यदि स्वाधीनता का अर्थ यह है कि जनसाधारण को हवादार मकान, पुष्टिकर भोजन, साफ-सुथरे गाँव, मनोरंजन और व्यवसाय की सुविधाएँ, बिजली के पंखे और रोशनी, सस्ता और सद्यः सुलभ न्याय की प्राप्ति हो, तो इस समाज-व्यवस्था में जो स्वाधीनता और आजादी है, वह दुनिया की किसी सभ्यतम कहने वाली जाति को भी सुलभ नहीं है। धर्म की स्वतंत्रता का अर्थ पुरोहितों, पादरियों, मुल्लाओं की मुफ्तखोर जमात के दंभमय उपदेशों और अंधविश्वास-जनित रूढ़ियों का अनुसरण है, तो निस्संदेह वहाँ इस स्वातंत्र्य का अभाव है, पर धर्म-स्वातंत्र्य का अर्थ यदि लोक-सेवा, सहिष्णुता, समाज के लिए व्यक्ति का बलिदान, नेकनीयति, शरीर और मन की पवित्रता है तो इस सभ्यता में धर्माचरण की जो स्वाधीनता है और किसी देश को उसके दर्शन भी नहीं हो सकते।"

दुनिया के सभी महाजनों ने इस नई सभ्यता के खिलाफ आवाज उठाई। "व्यक्ति-स्वातंत्र्य, धर्म-विश्वास की स्वाधीनता, अपनी अंतरात्मा के आदेश पर चलने की आजादी वह इन सबकी घातक, गला घोंट देने वाली बताई जा रही है। उस पर नए-नए लांछन लगाए जा रहे हैं, नई-नई हुरमतें तराशी जा रही हैं। वह काले से काले रंग में रंगी जा रही है, कुत्सित रूप में चित्रित की जा रहे है। उन सभी साधनों से जो पैसे वालों के लिए सुलभ है, काम लेकर उसके विरुद्ध प्रचार किया जा रहा है, पर सचाई है जो इस सारे अंधकार को चीरकर दुनिया में अपनी ज्योति का उजाला फैला रही है।"

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद ने जिस नई सभ्यता के बारे में कहा है, उसका क्या नाम है?
- प्रेमचंद के अनुसार स्वाधीनता का अर्थ क्या है?
- महाजनों ने इस नई सभ्यता पर क्या लांछन लगाया?

महाजनी सभ्यता : बुराइयों का जड़

प्रेमचंद सभी बुराइयों का जड़ महाजनी सभ्यता को ही मानते थे। धन के करण ही समाज में मनुष्य और मनुष्य के बीच दीवार खड़ी हो गई है। अमीर सीढ़ियाँ चढ़कर और अमीर होता जा रहा है तथा गरीब सीढ़ियाँ चढने के प्रयत्न में लहूलुहान होता जा रहा है और दिन ब दिन गरीबी की गर्त में धँसता जा रहा है। प्रेमचंद मानते हैं कि जहाँ असमानता है वहाँ ईर्ष्या, ज़ोर, जबर्दस्ती, बेईमानी, झूठ, मिथ्या, अभियोग-आरोप, वेश्या-वृत्ति, व्यभिचार और सारी दुनिया की बुराइयाँ अनिवार्य रूप से मौजूद हैं। जहाँ धन अधिक नहीं होता वाहन अधिकांश मनुष्यों की स्थिति एक समान होती है। वहाँ ईर्ष्या, जलन आदि का स्थान नहीं होगा। प्रेमचंद प्रश्न करते हैं कि ऐसी स्थितियों में "सतीत्व-विक्रय क्यों हो और व्यभिचार क्यों हो? झूठे मुकदमे क्यों चलें और चोरी-डाके की वारदातें क्यों हों?" प्रेमचंद आगे कहते हैं कि ये सारी बुराइयाँ तो दौलत की देन हैं, पैसे के प्रसाद हैं। महाजनी सभ्यता ने ही इनकी सृष्टि की है। वही इनको पालती है और वह यह भी चाहती है कि जो दलित, पीड़ित और विजित हैं, वे इसे ईश्वरीय विधान समझकर अपनी स्थिति पर संतुष्ट रहें। उनकी ओर से तनिक भी विरोध-विद्रोह का भाव दिखाया गया, तो उनका सिर कुचलने के लिए पुलिस है, अदालत है, काला पानी है। प्रेमचंद को

यकीन था कि ऐसी सभ्यता का निश्चित रूप से अंत होगा ही। अतः वे कहते हैं, "धन्य है वह सभ्यता, जो मालदारी और व्यक्तिगत संपत्ति का अंत कर रहे है, और जल्दी या देर से उसका पदानुसरण अवश्य करेगी। ... हाँ, महाजनी सभ्यता और उसके गुर्गे अपनी शक्ति भर उसका विरोध करेंगे, जनसाधारण को बहकावेंगे, उनकी आँखों में धूल झोंकेंगे; पर जो सत्य है एक न एक दिन उसकी विजय होगी और अवश्य होगी।"

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद के अनुसार महाजनी सभ्यता ने किसकी सृष्टि की है?

प्रेमचंद सामंतवादी और पूंजीवादी व्यवस्था को स्पष्ट रूप से पहचान रहे थे। इसीलिए उनके अंत की घोषणा कर रहे थे। वे मुफ्तखोर, निकम्मी, लुटेरी और आरामतलब सामंतवाद और केवल पैसा कमाने तथा मुनाफे की रट लगाने वाला पूँजीवाद के खिलाफ वे खड़े थे। उनके साहित्य के केंद्र में ये विरोधी ही है। वे मजदूरों और किसानों के भविष्य के सुखद सपने देख रहे थे।

14.3.2 'महाजनी सभ्यता' का भाषा-पक्ष

प्रेमचंद हिंदुस्तानी शैली के पक्षधर थे। उन्होंने 'महाजनी सभ्यता' शीर्षक निबंध में इसी शैली का प्रयोग किया है। हिंदी और उर्दू मिश्रित वाक्यों का प्रयोग इस निबंध में देखा जा सकता है। कुछ उदाहरण नीचे दिया जा रहा है।

- महाजनी सभ्यता में सारे कामों की गरज महज पैसा होती है।
- महाजनों, पूँजीपतियों को ज्यादा से ज्यादा नफा हो।
- बड़ा हिस्सा मरने-खपने वालों का है।
- उनका एक-एक मिनट एक-एक अशर्फी है।
- कुलीनता और शराफत, गुण और कमाल की कसौटी पैसा, केवल पैसा है।

प्रिय छात्रो! आप जानते ही हैं कि प्रेमचंद ने इस निबंध को पहले उर्दू में लिखता था। इस की शुरुआत उन्होंने एक शेअर से किया है। हिंदी रूपांतरण में भी उन्होंने उस शेअर का प्रयोग किया है, साथ ही हिंदी में उसका अर्थ दिया है - मुज़दः ए दिल कि मसीहा नफ़से मी आयद;/ कि ज़े अनफ़ास खुशश बूए कसे मी आयद। (हृदय तू प्रसन्न हो कि पीयूषिणी मसीहा सशरीर तेरी ओर आ रहा है। देखता नहीं कि लोगों की साँसों से किसी की सुगंधि आ रही है)।

प्रेमचंद ने संपूर्ण निबंध में बहुत ही सरल, बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है।

बोध प्रश्न

- 'महाजनी सभ्यता' में प्रेमचंद ने प्रमुख रूप से किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया था?

14.3.3 'महाजनी सभ्यता' में लेखकीय दृष्टि

महाजनी सभ्यता के कारण समाज को किस तरह की स्थितियों का सामना करना पड़ेगा इसे वक्त से पहले ही प्रेमचंद की पैनी दृष्टि पहचान चुकी है। महाजनी सभ्यता के सिद्धांत 'समय ही धन है' पर टिप्पणी करते हुए प्रेमचंद कहते हैं कि "धन-लिप्सा को इतना बढ़ने न दिया जाए कि वह मनुष्यता, मित्रता, स्नेह-सहानुभूति सबको निकाल बाहर करे।"

पैसों के गुलाम को हम बुरा नहीं कह सकते हैं, क्योंकि वह दुनिया की प्रवाह के साथ बह रहा है। यदि हम उस बहाव के विपरीत जाना चाहते हैं तो भी हम टिक नहीं सकेंगे। मानव हमेशा ही मान-प्रतिष्ठा पाने के लिए ही सब कुछ करता रहा। एक समय में विद्या-कला इस मान-सम्मान के साधन थी अतः विद्या अर्जित करने के लिए सब आगे आते थे। वही जीवन का लक्ष्य हुआ करता था। जब विद्या अर्जित करने के लिए धन की आवश्यकता पड़ी तब से मनुष्य उसे प्राप्त करने के लिए अहर्निश काम करते रहे। वह मजबूर हो गया और एकनिष्ठ भाव से उसकी उपासना करने लगे। वह कोई साधु-संन्यासी तो नहीं है, अतः जीवन यापन करने के लिए धन कमाने लगा। धन कमाते-कमाते वह इतना स्वार्थी हो गया कि उसके आगे शेष सब कुछ गौण हो गए। जब एक व्यक्ति यह देखता है कि समाज में जो व्यक्ति सफल है उसके लिए समय ही धन है तो वह भी उसी के पदचिह्नों पर चलने लगता है। तो प्रेमचंद प्रश्न करते हैं कि ऐसे में उसका क्या दोष है? मान-प्रतिष्ठा की लालसा को दिल से मिटाना तो संभव ही नहीं है।

समाज में जीवन-यापन करने के लिए धन की आवश्यकता है। लेकिन धन कमाने के पीछे भागते-भागते व्यक्ति को इंसानियत नहीं भूलनी चाहिए। इस धन-लिप्सा के संबंध में स्पष्ट करते हुए प्रेमचंद स्पष्ट करते हैं कि "धन-लिप्सा को इतना बढ़ने न दिया जाए कि वह मनुष्यता, मित्रता, स्नेह-सहानुभूति सबको निकाल बाहर करे।"

आज हम जिस समाज में जी रहे हैं वहाँ दिखावे की आवश्यकता है। और यह दिखावे की आवश्यकता हर एक के गर्दन पर सवार है। इसके संबंध में प्रेमचंद स्पष्ट करते हैं कि "वही नुमाइश और दिखावे की आवश्यकता हर एक की गरदन पर सवार है, और हिल तक नहीं सकता। वह इस सभ्यता के नीति-नियमों का पालन न करे तो उसका भविष्य अंधकारमय है।" महाजनी सभ्यता इतना घातक है कि उसने व्यक्ति की स्वतंत्रता को समाप्त कर लिया। इस घातक स्थिति से यदि बाहर आना है तो प्रेमचंद कहते हैं कि साम्यवाद ही एक मात्र निदान है।

बोध प्रश्न

- महाजनी सभ्यता के बारे में प्रेमचंद ने क्या कहा?
- धन-लिप्सा के संबंध में प्रेमचंद क्या कहते हैं?
- महाजनी सभ्यता में दिखावे के संबंध में प्रेमचंद क्या कहते हैं?
- महाजनी सभ्यता से कौन निदान दे सकता है?

14.4 पाठ सार

प्रिय छात्रो! अब तक के अध्ययन से यह स्पष्ट हो ही चुका है कि प्रेमचंद महाजनी सभ्यता को सबसे खतरनाक सभ्यता माना है। उनके अनुसार यह राजतंत्र या जागीरदारी सभ्यता से भी घातक है। राजतंत्र में तो यह पाया जाता है कि राजा अपनी प्रजा के हित के लिए सोचता है। राजा का हुक्म कानून होता है, जिसका पालन करना सबके लिए अनिवार्य है। उसकी अवज्ञा को वह कभी सहन नहीं करेगा। फिर भी वह न्याय के साथ प्रजापालन भी करता है। जनसाधारण को अपने स्वार्थ साधन और धन कमाने की भट्ठी का ईंधन नहीं समझते। इसके विपरीत महाजनी सभ्यता में जनता की कोई कीमत नहीं। इस सभ्यता में यदि कोई कीमती वस्तु है, तो वह है

पैसा। अतः यह सभ्यता राजतंत्र से भी खतरनाक है। यहाँ तो पैसों से ही आदमी का मूल्यांकन होता है।

महाजनी सभ्यता में इंसानियत के लिए कोई स्थान नहीं। सब रिश्ते-नाते धन के सामने खोखले हैं। गुण, ज्ञान, मान-प्रतिष्ठा आदि का आकलन धन के आधार पर ही होता है। साहित्य, संगीत और कला - सभी धन की देहली पर माथा टेकने लगते हैं। इस महाजनी सभ्यता ने प्रमुख रूप से दो सिद्धांत गढ़े हैं। एक है समय ही धन है। दूसरा सिद्धांत है व्यवसाय व्यवसाय है। इतना ही नहीं इसने एक और सिद्धांत गधा है व्यक्तिवाद का। इस सिद्धांतों के कारण ही प्रमुख रूप से सारे मानवीय रिश्ते समाप्त हो गए। प्रेमचंद इस समस्या का समाधान साम्यवाद में ढूँढ़ते हैं।

14.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. प्रेमचंद ने यह स्पष्ट किया है कि महाजनी सभ्यता पूरी तरह से धन पर आधारित सभ्यता है। यह सभ्यता धन से ही सब रिश्तों को आँकता है। उसने तो तमाम मानवीय गुणों को लील लिया।
2. महाजनी सभ्यता ने प्रमुख रूप से कुछ सिद्धांतों को गधा है। जैसे - समय ही धन है, व्यवसाय व्यवसाय है और व्यक्तिवाद।
3. महाजनी सभ्यता गाँव के छोटे सूदखोर से लेकर बड़े शहरों के सत्तालोलुप व्यक्तियों तक में पाई जाती है। इससे मानवता पूरी तरह से आहत होती है।
4. महाजनी सभ्यता का एक मात्र समाधान है साम्यवाद।
5. महाजनी सभ्यता के कारण उत्पन्न सभी अमानवीय स्थितियों को जड़ से मिटाने में पश्चिम में उभरी साम्यवाद सहायक सिद्ध होता है। वस्तुतः इस विचारधारा पर मार्क्स का प्रभाव है।

14.6 शब्द संपदा

1. जागीदारी = जिसके पास जागीर हो, सामंत
2. पूँजीवाद = एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था जिसमें निजी उद्योग को बढ़ावा दिया जाता है
3. महाजनी = रुपए के लेन-देना का व्यवसाय
4. व्यक्तिवाद = व्यक्ति के निजी हित को महत्व देने वाला सिद्धांत
5. सत्तालोलुप = किसी भी प्रकार से सत्ता प्राप्त करने की चाह रखने वाला
6. सामंतवाद = वह शासन प्रणाली जिसके अंतर्गत जमींदारों अधिकार प्राप्त होते हैं
7. साम्यवाद = मार्क्स द्वारा स्थापित सिद्धांत
8. साम्राज्यवाद= साम्राज्य को बढ़ाने की प्रवृत्ति

14.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. 'महाजनी सभ्यता' शीर्षक निबंध के मूल भाव को अपने शब्दों में विचार कीजिए।

2. प्रेमचंद के निबंध 'महाजनी सभ्यता' में व्यक्त लेखक के विचारों को स्पष्ट कीजिए।
3. महाजनी सभ्यता के कारण जन्में सिद्धांतों पर प्रकाश डालिए।
4. 'पूँजी के कारण सामाजिक समीकरण कैसे बदल रहे हैं' - इस उक्ति को 'महाजनी सभ्यता' निबंध के आधार पर निरूपित कीजिए।
5. जागीरदारी सभ्यता और महाजनी सभ्यता में निहित सूक्ष्म अंतर को स्पष्ट करते हुए यह निरूपित कीजिए दोनों में कौन-सी सभ्यता घातक है?

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'महाजनी सभ्यता' से क्या अभिप्राय है? स्पष्ट कीजिए।
2. 'महाजनी सभ्यता बुराइयों का जड़' - इस उक्ति की पुष्टि कीजिए।
3. 'महाजनी सभ्यता' शीर्षक निबंध में व्यक्त लेखकीय विचारों पर प्रकाश डालिए।
4. 'व्यवसाय व्यवसाय है' - इस सिद्धांत से क्या अभिप्राय है?
5. 'धन ही समय' - इस सिद्धांत का क्या अर्थ है?
6. 'महाजनी सभ्यता ने व्यक्तिवाद को जन्म लिया।' क्या आओ इस उक्ति से सहमत है? स्पष्ट कीजिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. इनमें से कौन-सा सिद्धांत महाजनी सभ्यता का देना नहीं है? ( )
   (अ) मार्क्सवाद (आ) व्यवसाय व्यवसाय है (इ) धन ही समय (ई) साम्यवाद
2. प्रेमचंद ने सभी बुराइयों का जड़ किस सभ्यता को माना है? ( )
   (अ) साम्यवाद (आ) महाजनी सभ्यता (इ) मानववाद (ई) प्रगतिवाद
3. महाजनी सभ्यता में मनुष्यता और मित्रता किस धुरी पर टिके हैं? ( )
   (अ) पैसे (आ) रिश्ते (इ) प्रेम (ई) भाईचारा
4. महाजनी सभ्यता में किसके लिए कोई स्थान नहीं? ( )
   (अ) पैसे (आ) भ्रष्टाचार (इ) इंसानियत (ई) स्वार्थ
5. प्रेमचंद ने 'महाजनी सभ्यता' शीर्षक निबंध में प्रयुक्त भाषा-शैली क्या है? ( )
   (अ) उच्च हिंदी (आ) उच्च उर्दू (इ) हिंदुस्तानी (ई) भोजपुरी

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. महाजनी सभ्यता का प्रमुख लक्ष्य ..... कमाना था।
2. महाजनी सभ्यता में ..... गुण इस धन-लोभ के तले लुप्त होने लगे।
3. सहानुभूति, दया, ममता, दोस्ती, बंधुता, मनुष्यता आदि ..... सिद्धांत के सामने टिक ही नहीं पाते।

4. महाजनी सभ्यता की आत्मा ..... है।
5. महाजनी सभ्यता ..... केंद्रित सभ्यता है।
6. ..... सभ्यता ने मानववाद व पूँजीवाद की जड़ खोदकर फेंक दी थी।

III. सुमेल कीजिए

1. महाजनी सभ्यता	(अ) पूँजीवाद
2. साम्यवाद	(आ) महाजनी तहज़ीब
3. व्यक्तिवाद	(इ) स्वार्थ
4. सूदखोर	(ई) महाजनी सभ्यता का समाधान
5. प्रेमचंद	(उ) अमानवीय स्थिति

14.8 पठनीय पुस्तकें

1. प्रेमचंद और उनका युग : रामविलास शर्मा
2. प्रेमचंद के वैचारिक संवेदना : योगेंद्र

इकाई 15 : साहित्य का उद्देश्य : निबंध की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

15.1 प्रस्तावना

15.2 उद्देश्य

15.3 मूल पाठ : साहित्य का उद्देश्य : निबंध की विवेचना

15.3.1 'साहित्य का उद्देश्य' की विषयवस्तु

15.3.2 'साहित्य का उद्देश्य' का भाषा-पक्ष

15.3.3 'साहित्य का उद्देश्य' में लेखकीय दृष्टि

15.4 पाठ सार

15.5 पाठ की उपलब्धियाँ

15.6 शब्द संपदा

15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

15.8 पठनीय पुस्तकें

15.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रो! प्रेमचंद को प्रायः उपन्यास सम्राट और कहानी सम्राट के रूप में याद किया जाता है। लेकिन ध्यान देने की बात है कि निबंध के क्षेत्र में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है। संपादक के रूप में उन्होंने उल्लेखनीय कार्य किया है। उनके द्वारा लिखे गए लेख व निबंध पाठकों को सोचने पर मजबूर करते हैं। उन्होंने वस्तुतः हिंदी साहित्य को जनता का साहित्य बना दिया था। 'हंस' में पराड़कर ने प्रेमचंद के बारे लिखते हुए कहा कि "प्रेमचंद के विचार वर्गों को उठाने और मिलाने के भागीरथ प्रयत्न के द्योतक हैं। स्वयं प्रेमचंद जनता के प्रतीक हैं पर यह उज्ज्वल प्रतीक तब तक रहेगा जब तक हिंदी रहेगी और बोलने वाले रहेंगे।" इस अध्याय में आप प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' का अध्ययन करेंगे।

15.2 उद्देश्य

प्रिय छात्रो! इस इकाई के अध्ययन से आप -

- प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' की विषय-वस्तु समझ सकेंगे।
- 'साहित्य का उद्देश्य' में निहित विचार-पक्ष की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- 'साहित्य का उद्देश्य' के भाव-पक्ष से अवगत हो सकेंगे।
- 'साहित्य का उद्देश्य' के भाषा-पक्ष से परिचित हो सकेंगे।
- 'साहित्य का उद्देश्य' में निहित लेखकीय दृष्टि को समझ सकेंगे।

15.3 मूल पाठ : साहित्य का उद्देश्य : निबंध की विवेचना

प्रिय छात्रो! आप सब जानते ही हैं कि प्रेमचंद ने 1936 में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की थी। उस अवसर पर उन्होंने आधुनिक साहित्य के उद्देश्य को प्रतिपादित करते हुए भाषण दिया था। उसी भाषण का यह लिखित रूप है। इसमें उन्होंने साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला जिनका विवेचन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है।

15.3.1 'साहित्य का उद्देश्य' की विषय-वस्तु

प्रिय छात्रो! प्रेमचंद कृत निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' की विषय-वस्तु का अध्ययन हम विचार-पक्ष और भाव-पक्ष के रूप में करेंगे। इस निबंध में प्रेमचंद प्रमुख रूप से भाषा, बोली, साहित्य, परंपरा, सौंदर्य की कसौटी आदि पर अपने विचार व्यक्त किए। इन पक्षों को कसौटियों के रूप में अपनाकर आगे 'साहित्य का उद्देश्य' शीर्षक निबंध का विवेचन किया जाएगा।

(अ) विचार-पक्ष

भाषा और बोली संबंधी विचार

प्रेमचंद ने अपने भाषण (निबंध) का आरंभ भाषा के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए किया था। उनके अनुसार उर्दू और हिंदी का जो साहित्य आरंभ में मौजूद था, उसका उद्देश्य विचारों और भावों पर असर डालना नहीं, बल्कि भाषा का निर्माण करना था। यह भी एक महत्वपूर्ण कार्य ही है, क्योंकि जब तक भाषा एक स्थायी रूप न प्राप्त करें, तब तक उसमें भावों और विचारों को व्यक्त करने की शक्ति नहीं आएगी।

प्रेमचंद भाषा को साध्य न मानकर, साधन मानते थे। वस्तुतः भाषा के दो रूप होते हैं। एक मौखिक जो मात्र बोलचाल रूप है और दूसरा लिखित। बोलचाल की भाषा अर्थात बोली वह रूप है जिसे बोलने वाला बोलता है और सुनने वाला समझता है। वक्ता और श्रोता के बीच निहित संबंधों के आधार पर यह निर्भर रहता है। बोली का कोई व्याकरण नहीं होता। इसका प्रमुख उद्देश्य है संप्रेषण। प्रेमचंद कहते हैं कि "बोलचाल से हम अपने करीब के लोगों पर अपने विचार प्रकट करते हैं - अपने हर्ष शोक के भावों का चित्र खींचते हैं।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.2)।

बोली में एकरूपता पाना असंभव है। यह परिवर्तनशील है। बोली जीवंत होती है लेकिन मानक नहीं हो सकती। बोली का व्याकरण-सम्मत लिखित रूप भाषा है। बोली की भांति भाषा भी जीवंत हो सकती है और साथ ही मानक। बोली की तुलना में भाषा स्थायी होती है। जो काम एक साधारण व्यक्ति बोलचाल की भाषा के द्वारा करता है अर्थात अपने भावों को सुचारू रूप से बोलकर व्यक्त करता है, उसी काम को एक साहित्यकार लिखकर करता है। लिखित भाषा युगों-योगों तक सुरक्षित रहेगी। प्रेमचंद याद दिलाते हैं कि बोलचाल की भाषा तो मीर अम्मन और लल्लूलाल के समय में भी उपस्थित थी "पर उन्होंने जिस भाषा की दाग बेल डाली, वह लिखने की भाषा थी और वही साहित्य है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.1)। यहाँ प्रेमचंद लिखित रूप में विद्यमान साहित्य की बात कर रहे हैं, न कि मौखिक (लोक साहित्य) साहित्य की।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद भाषा और बोली में क्या अंतर करते हैं?
- प्रेमचंद के अनुसार भाषा क्या है?

साहित्य संबंधी विचार

एक साधारण व्यक्ति जो काम बोलकर करता है अर्थात अपने भावों और विचारों को एक दूसरे व्यक्ति के सामने बोलकर अभिव्यक्त करता है, उसी काम को एक साहित्यकार लिखकर करता है। इसी लिखित रूप को साहित्य कहा जाता है। साहित्य में यदि सच्चाई हो तो, वह युगों-युगों तक पाठकों को प्रभावित करता रहेगा। इसीलिए आज भी प्रेमचंद के साहित्य को प्रासंगिक माना जाता है।

ध्यान देने की बात है कि जो कुछ लिखा हुआ है उसे साहित्य नहीं कहा जा सकता। प्रेमचंद के अनुसार साहित्य उसी रचना को कहेंगे "जिसमें कोई सच्चाई प्रकट की गई हो, जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित एवं सुंदर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो। और साहित्य में यह गुण पूर्ण रूप से उसी अवस्था में उत्पन्न होता है, जब उसमें जीवन की सच्चाइयाँ और अनुभूतियाँ व्यक्त की गई हो। तिलिस्मी कहानियों, भूत-प्रेत की कथाओं और प्रेम-वियोग की आख्यानों से किसी जमाने में हम भले ही प्रभावित हुए हो, पर अब उनमें हमारे लिए बहुत कम दिलचस्पी है। इसमें संदेह नहीं कि मानव प्रकृति का मर्मज्ञ साहित्यकार राजकुमारों की प्रेम-गाथाओं और तिलिस्मी कहानियों में भी जीवन की सच्चाइयों का वर्णन कर सकता है, और सौंदर्य की सृष्टि कर सकता है, परंतु इससे भी यह सत्य की पुष्टि ही होती है कि साहित्य में प्रभाव उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि वह जीवन की सच्चाई का दर्पण हो।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ. 2)।

एक ऐसा समय था जब साहित्यकार अपनी कल्पना-शक्ति से तिलिसम और अय्यारी की दुनिया रचा करते थे। उन आख्यानों में महज मनोरंजन था। साहित्य का जीवन से कोई लेना-देना नहीं था। माना जाता था कि कहानी तो कहानी होती है और जीवन तो जीवन। दोनों को परस्पर विरोधी माना जाता था। उस समय के कवियों अथवा साहित्यकारों की बात करते हुए प्रेमचंद कहते हैं कि "कवियों पर भी व्यक्तिवाद का राग चढ़ा हुआ था। प्रेम का आदर्श वासनाओं को तृप्त करना था, और सौंदर्य का आँखों को। इन्हीं शृंगारिक भावों को प्रकट करने में कवि मडली अपनी प्रतिभा और कल्पना के चमत्कार दिखाया करती थी।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.3)। प्रेमचंद कहते हैं कि "पद्य में कोई नई शब्द-योजना, नई कल्पना का होना दाद पाने के लिए काफी था - चाहे वह वस्तु-स्थिति से कितने ही दूर क्यों न हो। आशियाना और कफस, बर्क और खिरमन की कल्पनाएँ, विरह दशाओं के वर्णन में निराशा और वेदना की विविध अवस्थाएँ, इस खूबी से दिखाई जाती थीं कि सुनने वाले दिल थाम लेते थे। और आज भी इस ढंग की कविता कितनी लोकप्रिय है, इसे हम और आप खूब जानते हैं।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.3)। यह बात प्रेमचंद 1936 में कह गए, लेकिन आज भी इस स्थिति को देखा जा सकता है - मंचीय कविता के संदर्भ में।

साहित्य को अनेक विद्वानों ने अपने-अपने मतानुसार परिभाषित करने का प्रयास किए हैं और कर भी रहे हैं। प्रेमचंद साहित्य को जीवन की आलोचना मानते थे। "चाहे वह निबंध के रूप में हो, चाहे कहानियों के, या काव्य के, उसे हमारे जीवन की आलोचना और व्याख्या करनी चाहिए।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.3)। यहाँ प्रेमचंद ने साहित्य को परिभाषित करते हुए दो शब्दों का प्रयोग किया है - एक है आलोचना और दूसरा है व्याख्या। इन दोनों में अंतर क्या है? छात्रो! जब हम किसी चीज की आलोचना करते हैं तो उसके गुण-दोषों का सम्यक विवेचन करते हैं। इससे हमें यह समझने में आसानी होगी कि जीवन में क्या अच्छा है और क्या नहीं। किन चीजों को अपनाना है और किन चीजों को त्यागना है - यह आलोचना से प्राप्त विवेक बताता है। यह तभी संभव होगा जब जीवन के बारे में पहले से ही कुछ जानकारी हो। यह जानकारी साहित्य के माध्यम से प्राप्त की जा सकती है। यदि साहित्य यह जानकारी देने में सक्षम नहीं हो, तो वह उच्च कोटि का साहित्य नहीं कहलाएगा। छात्रो! एक और बात। जीवन की आलोचना तभी हो सकती है जब हम यह जानते हैं कि जीवन वास्तविक रूप से क्या है। अर्थात जीवन का अर्थ समझना अत्यंत आवश्यक है। यही उसकी व्याख्या है। साहित्य को जीवन की व्याख्या प्रस्तुत करने में सक्षम होना चाहिए।

कुछ आलोचकों ने साहित्य को लेखक का मनोवैज्ञानिक जीवन चरित्र कहा है। इस बात पर प्रेमचंद कहते हैं कि हर व्यक्ति की मानसिक स्थिति अलग होती है। उसकी दृष्टि अलग होती है। साहित्य में लेखक ने जिस दृष्टिकोण को प्रस्तुत किया है, यदि उससे पाठक तादात्म्य कर जाए तो वह साहित्य निश्चित रूप से सफल सिद्ध होगा। अन्यथा नहीं।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद के अनुसार साहित्य क्या है?
- कवि और कविता के संदर्भ में प्रेमचंद की क्या मान्यता थी?
- प्रेमचंद आलोचना और व्याख्या में क्या अंतर करते हैं?
- प्रेमचंद सफल साहित्य किसे मानते हैं?

साहित्य की उपयोगिता

प्रिय छात्रो! यदि कोई वस्तु जीवन में उपयोगी न हो, तो उसका कोई मूल्य नहीं होता। मात्र घर में सजाने के लिए ही किसी वस्तु को हम नहीं खरीदते। यदि हम बाजार से वस्तु खरीदते हैं तो उसकी उपयोगिता पर भी अवश्य ध्यान देते हैं। सुंदर होने पर भी यदि वह वस्तु हमारे लिए उपयोगी नहीं है तो हम उसे क्यों खरीदे भला! यह बात साहित्य पर भी लागू होती है। काव्य और साहित्य के उद्देश्य के संबंध में प्रेमचंद ने अपने विचार व्यक्त किए। उनके अनुसार साहित्य व काव्य का उद्देश्य है मनुष्य की अनुभूतियों की तीव्रता को बढ़ाना व सामाजिक जागरूकता पैदा करना। वे साहित्य को केवल मनोरंजन व सजावट की चीज नहीं मानते। प्रेमचंद यह प्रश्न करते हैं कि "क्या वह साहित्य, जिसका विषय शृंगारिक मनोभावों और उनसे उत्पन्न होने वाली विरह व्यथा, निराशा आदि तक ही सीमित हो - जिसमें दुनिया और दुनिया की कठिनाइयों से दूर भागना ही जीवन की सार्थकता समझी गई हो, हमारी विचार और भाव-संबंधी आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है?" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.3)। शृंगारिक

मनोभाव जीवन का अंग मात्र है, पूरा जीवन नहीं। यदि साहित्य में मात्र इसी का चित्रण हो तो वह उपयोगी नहीं हो सकता है।

एक ऐसा समय था जब कविता ही कवियों के लिए जीविका का साधन थी। अपने आश्रयदाताओं की रुचि के अनुसार कविता करना कवियों का कर्तव्य था। उस समय तो उन्हें साधारण जीवन का सामना करने तथा उसकी सच्चाइयों से प्रभावित होने का अवसर ही नहीं था। वस्तुतः साहित्य समय का प्रतिबिंब होता है। हर रचनाकार जनता की रुचि को ध्यान में रखकर ही रचना करता है। छात्रो! आप ही बताइए! यदि किसी सिनेमा में आपकी रुचि नहीं होती तो क्या आप जबरन उसे देखने चले जाते? नहीं न! निर्देशक जनता की रुचि के अनुसार फिल्मांकन करता है ताकि उसकी सिनेमा हिट हो जाए। बस यह भी वही है। इसी प्रकार साहित्यकार भी जनता की रुचि के अनुसार ही साहित्य का सृजन करता है। "जो भाव और विचार लोगों को स्पंदित करते हैं, वही साहित्य पर भी अपनी छाया डालते हैं। ऐसे पतन के काल में लोग या तो आशिकी करते हैं, वैराग्य से मन रमाते हैं। जब साहित्य पर संसार की नश्वरता का रंग चढ़ा हो, और उसका एक-एक शब्द नैराश्य में डूबा हो, समय की प्रतिकूलता के रोने से भरा हो, और शृंगारिक भावों का प्रतिबिंब बन गया हो, तो समझ लीजिए कि वह जाति जड़ता और ह्रास के पंजे में फँस चुकी है और उसमें उद्योग तथा संघर्ष का बल बाकी नहीं रहा। उसने ऊँचे लक्ष्यों की ओर से आँखें बंद कर ली है और उसमें से दुनिया को देखने-समझने की शक्ति लुप्त हो गई है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ. 4)

ध्यान देने की बात है कि समय के साथ हर स्थिति में परिवर्तन आना सहज है। सामाजिक परिस्थितियों का प्रभाव संवेदनशील साहित्यकारों पर पड़ना स्वाभाविक है। एक समय में साहित्य मनोरंजन और मनबहलाव का साधन रहा। यह उस समय की माँग थी। लेकिन स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में उद्देश्य बदल चुका था, अतः साहित्य भी मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठकर जनता में देशभक्ति की भावना जगाने में सक्षम रहा।

यह भी ध्यान देने की बात है कि साहित्य का काम जब तक केवल मनबहलाव का सामान जुटना रहा, लोरियाँ गा-गा कर बच्चों को सुलाना रहा, केवल आँसू बहाकर जी हल्का करना रहा तब तक कर्म की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन प्रेमचंद ऐसे साहित्य का पक्षधर नहीं थे। वे साहित्य को केवल मनोरंजन और विलासिता की वस्तु नहीं मानते। वे कहते हैं कि "हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सचाइयों का प्रकाश हो - जो हम में गति, संघर्ष और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.19)। आज के साहित्य के सामने बहुमुखी लक्ष्य विद्यमान है। वह मनोरंजन की दुनिया से ऊपर उठ चुका है। आज वह नायक-नायिका की संयोग और वियोग की कहानी नहीं सुनाता बल्कि जीवन की समस्याओं पर गहन स्तर पर विचार करता है और उनका समाधान ढूँढ़ता है। इसी तरह के साहित्य की आवश्यकता आज है।

साहित्य समग्र जीवन की झांकी है। वह मानव जीवन की तमाम स्थितियों को उजागर करने में आज सक्षम है। जहाँ आवश्यक हो वहाँ वह मनुष्य को प्यार से समझाता है और जहाँ

अनिवार्य हो वहाँ फटकार लगाता है। नीति-शास्त्र और साहित्य-शास्त्र दोनों वही करते हैं। पर अंतर यह है कि नीति-शास्त्र तर्कों और उपदेशों के माध्यम से बुद्धि और मन पर प्रभाव डालने का प्रयास करता है। दूसरी तरफ साहित्य-शास्त्र मानसिक अवस्थाओं और भावों के क्षत्र को चुनकर आगे बढ़ता है। "हम जीवन में जो कुछ देखते हैं, या जो कुछ हम पर गुजरती है, वही अनुभव और वही चोटें कल्पना में पहुंचकर साहित्य सृजन की प्रेरणा करती है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.5)

प्रिय छात्रो! ध्यान देने के बात है कि संपूर्ण निबंध में प्रेमचंद ने साहित्य के लिखित रूप पर ही विचार-विमर्श किया था, न कि मौखिक साहित्य का। मौखिक रूप में हमारे यहाँ श्रेष्ठ साहित्य उपलब्ध है। इसे हम लोक-साहित्य की संज्ञा से अभिहित कर सकते हैं। लोक जीवन से निसृत साहित्य लोक के अनुभव-जगत से जुड़ा हुआ साहित्य है। लोक के लिए लोक द्वारा रचा गया साहित्य लोक साहित्य है। इसकी मिठास निराली है।

बोध प्रश्न

- प्रभावी साहित्य क्या होता है?
- साहित्य की उत्कृष्टता की वर्तमान कसौटी क्या है?
- साहित्य की किस कसौटी के बारे में प्रेमचंद ने संकेत किया है?

साहित्यकार का दायित्व

छात्रो! उपयोगी साहित्य का सृजन करना साहित्यकार का दायित्व है। साहित्यकार को इस बात पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है कि वह जिस साहित्य का सृजन कर रहा है उससे जनता का हित हो। अतः उसका लक्ष्य केवल महफ़िल सजाना और मनोरंजन का साधन जुटाना नहीं होना चाहिए। चूँकि साहित्यकार वह व्यक्ति है जो समाज को मशाल दिखा कर सही मार्गदर्शन करता है। समय के अनुरूप साहित्यकार जीवन में व्याप्त समस्याओं की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है और उन समस्याओं का निदान भी साहित्य के माध्यम से ही होता है।

आधुनिक साहित्यकार अनुप्रास के चक्कर में न पड़कर, उन प्रश्नों को ढूँढ़ने लगे जिनसे समाज व व्यक्ति प्रभावित होते हैं। "उसकी उत्कृष्टता की वर्तमान कसौटी अनुभूति की वह तीव्रता है, जिससे वह हमारे भावों और विचारों में गति पैदा करता है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ. 5)। संवेदनशील व्यक्ति जब साहित्य-सृजन की ओर प्रवृत्त होता है तब वह अपनी अनुभूतियों और अनुभवों को कल्पना-शक्ति के माध्यम से सशक्त रूप से अभिव्यक्त करता है। जब हमारी अनुभूति तीव्र होगी तो हमारी रचना प्रभावी होगी। प्रेमचंद कहते हैं कि "जिस साहित्य से हमारी सुरुचि न जागे, आध्यात्मिक और मानसिक तृप्ति न मिले, हममें शक्ति और गति न पैदा हो, हमारा सौंदर्य-प्रेम न जाग्रत हो, जो हममें सच्चा संकल्प और कठिनाइयों पर विजय पाने की सच्ची दृढ़ता न उत्पन्न करे, वह आज हमारे लिए बेकार है, वह साहित्य कहलाने का अधिकारी नहीं।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.5)

साहित्यकारों के संबंध में बात करते हुए प्रेमचंद ने कहा है कि "साहित्यकारों में कर्मशाक्ति का अभाव है। यह एक कड़वी सच्चाई है, पर हम उसकी ओर से आँखें नहीं बंद कर

सकते। अभी तक साहित्य का जो आदर्श अपने सामने रखा था, उसके लिए कर्म की आवश्यकता न थी, कर्माभाव ही उसका गुण था क्योंकि अकसर कर्म अपने साथ पक्षपात और संकीर्णता को भी लाता है। अगर कोई आदमी धार्मिक होकर अपनी धार्मिकता पर गर्व करें, तो इससे कहीं अच्छा है कि वह धार्मिक न होकर 'खाओ पियो मौज करो' का कायल हो।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.19)।

साहित्य मनुष्य में सौंदर्य प्रेम को जगाने की कोशिश करता है। इस संसार में ऐसा कोई मनुष्य नहीं होगा जिसमें सौंदर्य की अनुभूति न हो। साहित्यकार में यदि यह वृत्ति जितनी अधिक तीव्र होगी उसका साहित्य उतना ही अधिक प्रभाव छोड़ता है और मानव जीवन के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। इस संदर्भ में प्रेमचंद का कहना है कि "प्रकृति निरीक्षण और अपनी अनुभूति की तीक्ष्णता की बदौलत उसके सौंदर्य-बोध में इतनी तीव्रता आ जाती है कि जो कुछ असुंदर है, अभद्र है, मनुष्यता से रहित है, वह उसके लिए असह्य हो जाता है। उस पर वह शब्दों और भावों की सारी शक्ति से वार करता है। यों कहिए कि वह मानवता, दिव्यता और भद्रता का बाना बाँधे होता है। जो दलित है, पीड़ित है, वंचित है - चाहे वह व्यक्ति हो या समूह, उसकी हिमायत और वकालत करना उसका फर्ज है। उसकी अदालत समाज है। इसी अदालत के सामने वह अपना इस्तगासा पेश करता है और उसकी न्याय-वृत्ति तथा सौंदर्य-वृत्ति को जागृत करके अपना यत्न सफल समझता है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.6)

एक सच्चा साहित्यकार अपनी ओर से बातें नहीं गढ़ता। वह उचित-अनुचित के दावे पेश नहीं करता। अतिरंजना से भी काम नहीं लेता, क्योंकि वह भलीभाँति जानता है कि इन सबसे वह समाज पर कोई असर नहीं डाल सकता। एक संवेदनशील साहित्यकार वही हो सकता है जो मानव-प्रकृति का सूक्ष्म अवलोकन करता है अर्थात मनुष्य की मानसिक परतों का अध्ययन करता है। वह भी तो मनुष्य ही है। वह अपने द्वारा गढ़े गए पात्रों में अपने आपको फिट करता है। अपने अनुभव-जगत के आधार पर उन पात्रों को जीवन देता है। साहित्यकार पैदा होता है, बनाया नहीं जा सकता।

बोध प्रश्न

- साहित्यकार का क्या दायित्व होना चाहिए?
- एक संवेदनशील साहित्यकार से क्या अपेक्षित है?

परंपरा संबंधी विचार

साहित्यकार परंपरागत ढाँचे को अपनाते हुए साहित्य-सृजन करते हैं। तत्कालीन सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप ही साहित्यकार रचना करता है। एक समय ऐसा था जब समाज को धर्म संचालित करता था। मनुष्य की आध्यात्मिक और नैतिक सभ्यता का आधार धार्मिक आदेश था और वह भय या प्रलोभन से काम लेता था - पुण्य और पाप के मसले साधन के रूप में काम करते थे।

प्रेमचंद प्रमुख रूप से तीन परंपरागत प्रवृत्तियों की आलोचना करते हुए दिखाई देते हैं - मनोरंजन प्रधान साहित्य, भक्ति प्रधान साहित्य और रीति अथवा शृंगार प्रधान साहित्य। उनके अनुसार ये प्रवृत्तियाँ वस्तुतः प्रगतिशील काव्य-धारा के विपरीत हैं।

बोध प्रश्न

- प्रेमचंद किन परंपरागत प्रवृत्तियों की आलोचना की?

सौंदर्य संबंधी विचार

संसार के हर मनुष्य में सौंदर्य-बोध निश्चित रूप से रहता है। प्रिय छात्रो! आखिर सौंदर्य क्या है? हम सब इस प्रश्न का समाधान ढूँढ़ने की कोशिश करेंगे। सौंदर्य देखने वाले की दृष्टि में निहित है। जो चीज मुझे सुंदर लगे, वह आपको भी सुंदर लगे यह जरूरी नहीं। प्रकृति सब के मन को भाति है। प्रेमचंद कहते हैं कि "हमने सूरज को उगना और डूबना देखा है, ऊषा और संध्या की लालिमा देखी है, सुंदर सुगंधि भरे फूल देखे हैं, मीठी बोलियाँ बोलने वाली चिड़िया देखी है, कल-कल निनादिनी नदियाँ देखी हैं, नाचते हुए झरने देखे हैं - यही सौंदर्य है।

प्रिय छात्रो! आपने कभी सोचा कि प्राकृतिक चीजों को देखकर हमारा मन क्यों खिल उठता है? जब कभी किसी मधुर संगीत को सुनते हैं, तो क्यों झूम उठते हैं? टीवी धारावाहिक या सिनेमा में कोई दृश्य देखते हैं तो क्यों हम हँसते हैं, रोते हैं, चीख उठते हैं? जी हाँ, सही कहा आपने। हम अपने आपको उन चीजों से/ उन घटनाओं से जोड़ते जाते हैं। जब हम किसी रम्य दृश्य को देखते हैं तो हमारा अंतःकरण खिल उठता है, हम प्रसन्नचित्त हो जाते हैं। यदि किसी शोक भरी घटना या फिर मार-पीट देखते हैं तो हम भी उसी स्थिति में पहुँच जाते हैं। यह मानव-मात्र के लिए स्वाभाविक है। इसे ही काव्यशास्त्र की दृष्टि से साधारणीकरण कहा जाता है। अर्थात पाठक या श्रोता का मन जब व्यक्ति विशेष या वस्तु विशेष के साथ सामंजस्य स्थापित करता है और तब उनके भीतर के भाव बाहर उमड़ते हैं। यह स्थिति ही साधारणीकरण की स्थिति है। इस संदर्भ में प्रेमचंद का यह कथन उल्लेखनीय है - "बाजों का स्वर-साम्य अथवा मेल ही संगीत की मोहकता का कारण है। हमारी रचना ही तत्वों के समानुपात में संयोग से हुई है, इसलिए हमारी आत्मा सदा उसी साम्य तथा सामंजस्य की खोज में रहती है। साहित्य कलाकार के आध्यात्मिक सामंजस्य का व्यक्त रूप है और सामंजस्य सौंदर्य की सृष्टि करता है, नाश नहीं। वह हममें वफादारी, सचाई, सहानुभूति, न्यायप्रियता और ममता के भावों की पुष्टि करता है। जहाँ ये भाव हैं वहीं दृढ़ता और जीवन है। जहाँ इनका अभाव है, वहीं फुट, विरोध, स्वार्थपरता है - द्वेष, शत्रुता और मृत्यु है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.8)। जहाँ अनुकूल वातावरण होता है वहाँ संकीर्णता और स्वार्थपरता का कोई स्थान नहीं होगा।

मनुष्य जब अपने आपको प्रकृति से जोड़ता है और स्वस्थ वातावरण पैदा करता है तब तक कोई भी संकीर्ण दृष्टिकोण पैदा नहीं हो सकता। इस बात की पुष्टि प्रेमचंद के इन शब्दों से की जा सकती है - "जब हमारी आत्मा वायुमंडल में पालित पोषित होती है, तो नीचता दुष्टता के कीड़े अपने आप हवा और रोशनी से मर जाते हैं। प्रकृति से अलग होकर अपने को सीमित कर लेने से ही ये सारी मानसिक और भागवत बीमारियाँ पैदा होती हैं। साहित्य हमारे जीवन को स्वाभाविक और स्वाधीन बनाता है। दूसरे शब्दों में, उसी की बदौलत मन का संस्कार होता है। यही उसका मुख्य उद्देश्य है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.9)

बोध प्रश्न

- सौंदर्य किसे कहते हैं?

- साधारणीकरण किसे कहते हैं?
- सौंदर्य के संबंध में प्रेमचंद ने क्या कहा?

(आ) भाव-पक्ष

प्रिय छात्रो! अब तक आपने प्रेमचंद के निबंध 'साहित्य का उद्देश्य' में निहित विचार पक्ष का अध्ययन किया है। आइए! अब हम भाषा-पक्ष पर भी विचार करेंगे। पहले ही कहा जा चुका है कि यह निबंध प्रेमचंद के भाषण का लिखित रूप है। 1936 में लखनऊ में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना के प्रथम अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण देते हुए उन्होंने साहित्य के संबंध में विचार व्यक्त किए। भाषण श्रव्य विधा है। श्रोता के समक्ष सुनाया जाता है। इसकी शैली अलग होती है और लिखित रूप की शैली अलग। क्योंकि लिखित पाठ को पाठक पढ़ते हैं, सुनते नहीं। भाषण को लिखित रूप में प्रस्तुत करने के बावजूद इसमें भाषण के तत्व विद्यमान हैं। इसीलिए इस निबंध की शुरुआत 'सज्जनो' जैसे संबोधन से हुआ है। भाषण में वक्ता बहुत सी बातें छोड़ सकता है, छोड़ भी देता है।

भाषण में उपदेशात्मकता अधिक होती है। वक्ता न चाहते हुए भी ऐसा हो ही जाता है। वक्ता भाषण देते समय कभी-कभी अपने आपको श्रोताओं से बड़ा मानने लगते हैं। अतः उदेशात्मक भाव उत्पन्न होना सहज है।

15.3.2 'साहित्य का उद्देश्य' का भाषा-पक्ष

छात्रो! इस लिखित भाषण से एक बात स्पष्ट होती है कि प्रेमचंद उन श्रोताओं को संबोधित कर रहे हैं जो उनसे सहमत हैं। इस लिखित भाषण में ज्यादातर वे ही बातें हैं जिनसे उनके श्रोता पूरी तरह से सहमत हैं। प्रेमचंद अपने प्रगतिशील श्रोताओं के समक्ष भाषण दे रहे थे। अतः इसमें प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना और प्रगतिशील साहित्य के बारे में विचार निहित है। यदि उनके समक्ष नीति-शास्त्र, भक्ति-साहित्य या रीति-काव्य के समर्थक होते, तो शायद उनके भाव और विचार इस प्रकार नहीं होते। कहने का आशय है कि सामने उपस्थित श्रोताओं को ध्यान में रखते हुए भाषण देना होता है। प्रेमचंद के इस लिखित भाषण का अध्ययन करने से एक और बात स्पष्ट होती है कि प्रेमचंद आत्मविश्वास के साथ अपनी बात को श्रोताओं के समक्ष रख रहे थे। यह इसलिए कि वे जानते थे कि वे जो कुछ कह रह थे वह सब सच है। वे बहुत ही सहज रूप से अपनी बात को रख रहे थे। जो भी तर्क वे दे रहे थे, वे सब अनायास ही आ रहे थे। आप एक प्रवाह को देख सकते हैं। पूरा भाषण/ निबंध एक प्रोक्ति के रूप में हमारे सामने उपस्थित है। एक-एक वाक्य अपने आप में सुगठित और गुंफित है। प्रेमचंद के श्रोताओं में हिंदी और उर्दू दोनों के साहित्यकार हैं। यह बात इसलिए कही जा रही है, प्रेमचंद ने दो-तीन जगह हिंदी और उर्दू के साहित्यकारों को संबोधित करते हुए अपनी बात कही। वस्तुतः प्रेमचंद उस भाषा शैली के हिमायती थे जिसे हिंदुस्तानी कही जाती है। इसीलिए भाषण शुरू करते ही उन्होंने कहा था - "हमारी भाषा के 'पायनियरों' ने - रास्ता साफ करने वालों ने - हिंदुस्तानी भाषा का निर्माण करके जाति पर जो एहसान किया है, उसके लिए हम उनके कृतज्ञ न हो तो यह हमारी कृतघ्नता होगी।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.1)

प्रिय छात्रो! भाषण मौखिक अभिव्यक्ति होती है। अतः जब वक्ता के सामने कोई लिखित दस्तावेज नहीं है, तो उसे इधर-उधर भटकने की पूरी संभावना है। इसीलिए आप इस निबंध में यह देख सकते हैं कि प्रेमचंद एक बिंदु पर स्थिर नहीं रहते। अतः इसमें की तरह की बातें आई हैं जिनका विवेचन ऊपर विचार-पक्ष में किया जा चुका है।

प्रेमचंद ने अपने भाषण में कहीं भी बोझिल शब्दों का प्रयोग नहीं किया। उन्होंने बहुत सरल और सहज ढंग से अपनी बात को समझाने का प्रयास किया है। 'चिड़े की कहानी', 'गुलाबुलबुल की दास्तान', 'फिसानये अजायब की दास्तान', 'चंद्रकांता संतति' आदि की बात करते हुए प्रेमचंद ने अपनी बात को स्पष्ट करने की कोशिश की एक समय ऐसा था जब साहित्य-सृजन केवल मनोरंजन के लिए ही किया जाता था, लेकिन अब ऐसी स्थिति नहीं है।

मनुष्य के स्वभाव को सहज उदाहरण देकर समझाते हैं। देखिए - "जैसे शारीरिक स्वास्थ्य एक प्राकृतिक बात है और रोग उसका उलटा, उसी तरह नैतिक और मानसिक स्वास्थ्य भी प्राकृतिक बात है और हम मानसिक तथा नैतिक गिरावट से उसी तरह संतुष्ट नहीं रहते, जैसे कोई रोगी अपने रोग से संतुष्ट नहीं रहता। जैसे वह सदा चिकित्सक की तलाश में रहता है, उसी तरह हम भी फिक्र में रहते हैं कि किसी तरह अपनी कमजोरियों को परे फेंककर अधिक अच्छे मनुष्य बनें। इसीलिए हम साधु-फकीरों की खोज में रहते हैं, पूजा-पाठ करते हैं, बड़े बूढ़ों के पास बैठते हैं, विद्वानों के व्याख्यान सुनते हैं और साहित्य का अध्ययन करते हैं।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.7-8)

प्रेमचंद ने कर्म के संदेश को व्यक्त करने के लिए हजरते इकबाल की पंक्तियों का प्रयोग बहुत सहज ढंग से किया है जिनका आशय है - अगर तुझे जीवन के रहस्य की खोज है, तो वह मुझे संघर्ष के सिवा और कहीं नहीं मिलने का - सागर में जाकर विश्राम करना नदी के लिए लज्जा की बात है। आनंद पाने के लिए मैं घोंसले में कभी बैठता नहीं - कभी फूलों की टहनियों पर, कभी नदी तट पर होता हूँ। (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.11)। इससे स्पष्ट है कि उन्होंने अपनी बात की समर्थन में ही इकबाल की पंक्तियों को उद्धृत किया था। उर्दू की श्रोताओं को इकबाल की पंक्तियाँ समझ में आती हैं, लेकिन उन्होंने हिंदी श्रोताओं के लिए उसका अर्थ समझाया। इससे यह स्पष्ट है कि प्रेमचंद उर्दू और हिंदी दोनों ही शैलियों को सहज रूप से प्रयोग करते थे।

बोध प्रश्न

- आप कैसे कह सकते हैं कि प्रेमचंद के सामने किस प्रकार के श्रोता विद्यमान थे?

15.3.3 'साहित्य का उद्देश्य' में लेखकीय दृष्टि

प्रिय छात्रो! आप जानते ही हैं कि प्रेमचंद के समय में भारत में अनेक तरह के आंदोलन हुए जैसे बंग-भंग विरोधी आंदोलन। अतः वे अपने समय के सामाजिक और राजनैतिक गतिविधियों से प्रभावित थे। प्रेमचंद यह कहने में संकोच नहीं करते कि जिन्हें धन-वैभव प्यारा है, साहित्य मंदिर में उनके लिए स्थान नहीं। साहित्य के मंदिर में उन उपासकों की नितांत आवश्यकता है, जो सेवा को अपने जीवन का सार्थक लक्ष्य मान लिया हो। ऐसे लोगों के दिल में दूसरों के दर्द की तड़प होती है और साथ ही मुहब्बत का जोश। यदि हम सच्चे दिल से समाज की

सेवा करेंगे तो मान-सम्मान, प्रतिष्ठा-प्रसिद्धि सभी हमें प्राप्त होंगे। (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.17)

प्रेमचंद यह प्रश्न करने में संकोच नहीं करते कि मान-सम्मान की चिंता में आखिर मनुष्य क्यों डूबा रहता है? यदि मान-सम्मान न मिले तो निराश क्यों हो जाता है? मनुष्य आखिर संतुष्ट क्यों नहीं रहता? अधिक पाने की लालसा में क्यों डूबा रहता? वे इन प्रश्नों के समाधान में कहते हैं कि "हम तो समाज के झंडा लेकर चलने वाले सिपाही हैं और सादी जिंदगी के साथ ऊँची निगाह हमारे जीवन का लक्ष्य है। जो आदमी सच्चा कलाकार है, वह स्वार्थमय जीवन का प्रेमी नहीं हो सकता।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.18)। ऐसे लोगों को संतुष्ट रहने की दिखावा करने की आवश्यकता ही नहीं होती, क्योंकि वे जीवन में हर स्तर पर संतुष्ट रहते हैं।

प्रेमचंद के लिखित भाषण (निबंध) 'साहित्य का उद्देश्य में प्रगतिशील लेखक संघ की स्थापना की आवश्यकता पर जोर दिया। इस लेखक संघ के समर्थन में उन्होंने अपना मत रखा। उन्होंने इस बात की पुष्टि की कि यह परिषद कुछ इसी प्रकार के सिद्धांतों के साथ कर्म क्षेत्र में प्रवेश किया है। "साहित्य का शराब कबाब और राग रंग का मुखापेक्षी बना रहना उसे पसंद नहीं। वह उसे उद्योग और कर्म का संदेश-वाहक बनाने का दावेदार हैं।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.18)

प्रगतिशील लेखक संघ के उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए प्रेमचंद कहते हैं, "हम हर एक सूबे में, हर एक जबान में, ऐसी परिषद स्थापित कराना चाहते हैं, जिसमें हर एक भाषा में हम अपना संदेश पहुँचा सके। यह समझना भूल होगी कि हमारी कोई नई कल्पना है। नहीं, देश के साहित्य-सेवियों के हृदयों में सामुदायिक भावनाएँ विद्यमान हैं। भारत की हर एक भाषा में इस विचार के बीज प्रकृति और परिस्थिति ने पहले से बो रखे हैं, जगह-जगह उसके अंकुए भी निकलने लगे हैं। उसको सींचना एवं उसके लक्ष्य को पुष्ट करना हमारा उद्देश्य है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.19)। प्रेमचंद साहित्यकारों पर भी बेबाक टिप्पणी करते हैं। यथा - "जो साहित्यकार अमीरों का मुँह जोहने वाला है, वह रईसी रचना शैली स्वीकार करता है। जो जन-साधारण का है वह जन-साधारण की भाषा में लिखता है।" (प्रेमचंद, साहित्य का उद्देश्य, पृ.18)

'साहित्य का उद्देश्य' निबंध में प्रेमचंद के स्पष्ट और बेबाक दृष्टिकोण से परिचित हो सकते हैं।

बोध प्रश्न

- प्रगतिशील लेखक संघ के उद्देश्य के बारे में प्रेमचंद ने क्या बताया?

15.4 पाठ सार

प्रिय छात्रो! साहित्य का आधार जीवन है। इसी नींव पर साहित्यकार भवन का निर्माण करते हैं। मानव जीवन को यदि परमात्मा की सृष्टि माना जाए तो साहित्य मानव की सृष्टि है। अपने जीवनकाल में मनुष्य सुख-शांति की तलाश में घूमता रहता है। भारतीय जीवन दर्शन है - सत्यम्, शिवम्, सुंदरम्। जो सत्य है वही शिव है और वही सुंदर है। सच्चा आनंद सत्य और सुंदर से ही प्राप्त हो सकता है। उसी आनंद को उत्पन्न करना साहित्य का मूल लक्ष्य होना चाहिए। जब सत्य आनंद का स्रोत बन जाता है तो वह साहित्य के रूप में परिणत हो जाता है। साहित्यकार

सामाजिक परिस्थितियों से इस प्रकार प्रभावित हो जाता है कि अपने अनुभव-जगत को व्यक्त करने के लिए साधन ढूँढने लगता है। भाषा ही वह साधन है जिसके माध्यम से वह अपने विचारों और भावों की अभिव्यक्ति करता है। ऐसे में उसका लक्ष्य यह होना चाहिए कि केवल मनोरंजन के लिए साहित्य-सृजन न हो, बल्कि जीवन की सच्चाइयों को प्रकाश में लाने के लिए साहित्य लिखा जाना चाहिए। और उस साहित्य से सब का हित होना चाहिए। इस इकाई में प्रेमचंद ने साहित्य, सौंदर्य, परंपरा, साहित्यकार का उद्देश्य आदि की विषयों पर अपनी बेबाक टिप्पणियाँ प्रस्तुत की हैं।

15.5 पाठ की उपलब्धियाँ

इस इकाई के अध्ययन के बाद निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए -

1. प्रेमचंद का मानना है कि साहित्यकार पैदा होता है, बनाया नहीं जा सकता। यदि हम समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी को महसूस करेंगे तो उत्कृष्ट साहित्य-सृजन कर सकते हैं।
2. प्रेमचंद के अनुसार साहित्य समग्र जीवन की झांकी है। वह मानव जीवन की तमाम स्थितियों को उजागर करने में आज सक्षम है। जहाँ आवश्यक हो वहाँ वह मनुष्य को प्यार से समझाता है और जहाँ अनिवार्य हो वहाँ फटकार लगाता है।
3. प्रेमचंद साहित्य को कला की दृष्टि से नहीं देखते। वे साहित्य की उपयोगितावादी दृष्टि का समर्थन करते हैं। इस रूप में साहित्य नीति के समकक्ष ठहरता है।
4. प्रेमचंद साहित्य को मनबहलाने की वस्तु नहीं समझते। उनके अनुसार साहित्य वही है जिसमें उच्च चिंतन हो, स्वाधीनता का भाव हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो और जीवन की सच्चाई हो।
5. प्रेमचंद के अनुसार समाज के निर्माण में साहित्य योगदान होना चाहिए।

15.6 शब्द संपदा

1. अतिरंजना	=	अतिशयोक्ति
2. आलोचना	=	गुण-दोषों का विवेचन
3. आश्रयदाता	=	सहारा देने वाला
4. जीविका	=	जीवन के लिए आवश्यक साधन
5. तादात्म्य	=	अभिन्नता
6. नश्वरता	=	नष्ट हो जाने का भाव
7. नैराश्य	=	निराशा का भाव
8. प्रतिकूल	=	विपरीत
9. प्रतिबिंब	=	परछाई
10.सम्यक	=	समस्त, पूरा
11.साधारणीकरण	=	किसी अवस्था से तादात्म्य स्थापित हो जाना
12.सामंजस्य	=	तालमेल
13.ह्रास	=	पतन

15.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

(अ) दीर्घ श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए।

1. साहित्य का उद्देश्य' शीर्षक निबंध में निहित प्रेमचंद के विचारों को रेखांकित कीजिए।
2. 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध के भाव-पक्ष पर प्रकाश डालिए।
3. 'साहित्यकार पैदा होता है, बनाया नहीं जाता।' प्रेमचंद की इस उक्ति से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्कपूर्ण विवेचन कीजिए।
4. प्रेमचंद सफल किसे मानते थे? उदाहरण सहित समझाइए।
5. 'साहित्य का उद्देश्य' शीर्षक निबंध में प्रतिपादित लेखकीय दृष्टिकोण पर प्रकाश डालिए।

खंड (ब)

(आ) लघु श्रेणी के प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 200 शब्दों में दीजिए।

1. 'साहित्य का उद्देश्य' निबंध की भाषा पर टिप्पणी लिखिए।
2. साहित्य की उपयोगिता के संबंध में प्रेमचंद की क्या मान्यता थी? स्पष्ट कीजिए।
3. संवेदनशील साहित्यकार के दायित्व के संबंध में प्रेमचंद ने क्या कहा?
4. प्रेमचंद के अनुसार सौंदर्य क्या है? सौंदर्य के संबंध में उनके विचारों पर प्रकाश डालिए।

खंड (स)

I. सही विकल्प चुनिए

1. प्रेमचंद के अनुसार साहित्य कैसा होता है? ( )
   (अ) मनोरंजक (आ) प्रगतिशील (इ) फूहड़ (ई) रूढ़
2. प्रेमचंद के अनुसार साहित्य क्या नहीं है? ( )
   (अ) मनोरंजन (आ) चेतना जगाने वाला (इ) समसामयिक (ई) प्रगतिशील
3. प्रेमचंद के अनुसार साहित्य की कसौटी क्या है? ( )
   (अ) सृजन (आ) मनोरंजन (इ) समसामयिक (ई) प्रगतिशील
4. प्रेमचंद के अनुसार साहित्य मात्र ..... की अभिव्यक्ति नहीं है? ( )
   (अ) सौंदर्य (आ) चेतना (इ) समस्या (ई) भावोद्रेक
5. प्रेमचंद के अनुसार साहित्य ..... की खोज है। ( )
   (अ) मनोरंजन (आ) सत्य (इ) आदर्श (ई) तथ्य

II. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. साहित्य ..... का प्रतिबिंब होता है।
2. साहित्यकार ..... होता है, बनाया नहीं जा सकता।
3. प्रेमचंद के अनुसार साहित्य जीवन की ..... है।

4. जीवन की ..... को प्रकाश में लाने के लिए साहित्य लिखा जाना चाहिए।
5. प्रेमचंद साहित्य की ..... दृष्टि का समर्थन करते हैं।

III. सुमेल कीजिए

1. साहित्यकार	(अ) प्रेमचंद
2. साहित्य	(आ) समाज के प्रति प्रतिबद्ध
3. सौंदर्य	(इ) 1936
4. साहित्य का उद्देश्य	(ई) मानसिक तृप्ति
5. प्रगतिशील लेखक संघ	(उ) जीवन की आलोचना

15.8 पठनीय पुस्तकें

1. प्रेमचंद और उनका युग : रामविलास शर्मा
2. साहित्य का उद्देश्य : प्रेमचंद - प्रकाशक - शिवरानी प्रेमचंद, 1954

इकाई 16 : प्रेमचंद के नाटक ‘कर्बला’ की विवेचना

इकाई की रूपरेखा

16.1 प्रस्तावना

16.2 उद्देश्य

16.3 मूल पाठ : प्रेमचंद के नाटक ‘कर्बला’ की विवेचना

16.3.1 कर्बला नाटक का सार

16.3.2 'कर्बला नाटक के पात्र एवं कथ्य

16.3.3 कर्बला नाटक की अंतर्वस्तु

16.3.4 कर्बला नाटक के मार्मिक संवाद

16.3.5 नाटकीय संभावनाएँ

16.3.6 कर्बला नाटक की भाषा

16.3.7 कर्बला नाटक के महत्त्वपूर्ण अंश

16.4 पाठ सार

16.5 पाठ की उपलब्धियाँ

16.6 शब्द संपदा

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

16.8 पठनीय पुस्तकें

16.1 प्रस्तावना

16.2: उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के उपरांत आप :

- "कर्बला " नाटक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा इसका सारांश बता सकेंगे
- "कर्बला " की अन्तर्वस्तु की विवेचना कर सकेंगे,

- "कर्बला में चित्रित पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ एवं उनकी संवाद शैली को समझा पाएँगे; और
- "कर्बला की नाटकीय संभावनाओं के बारे में जान-समझ सकेंगे।
- नाटक के विशिष्ट पात्रों के संवादों को पढ़कर उनके संघर्षों को समझ सकेंगे ।

16.3: मूल पाठ : प्रेमचंद के नाटक 'कर्बला' की विवेचन

प्रस्तावना- 'कर्बला प्रेमचंद का चर्चित नाटक है। इसकी रचना सन् 1924 में हुई थी। इसमें प्रेमचंद ने इस्लाम धर्म की प्रसिद्ध महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना- कर्बला की लड़ाई को चित्रित किया गया है। यह इस्लाम के अनुयायियों का यह ऐसा आन्तरिक संघर्ष था, जिसमें हजरत मोहम्मद साहब के नवासे हुसैन और उनका परिवार शहीद हो गया था। प्रेमचंद ने इस घटना का चित्रण बहुत कारुणिक शैली में किया है। नाटक का मूल विषयवस्तु युद्ध से संबंधित है, अतः उसमें हिंसा और खून-खराबा तो होता ही है, परन्तु लेखक ने हत्या आदि के दृश्य को दूसरे पात्रों द्वारा सूचित किया है। नाटक की परंपरा का पालन करते हुए उसे दृश्य रूप में नहीं दिखाया है। इतिहास और परंपरा ने जिन पात्रों को खलनायक के रूप में पहचान दी है प्रेमचंद ने उन्हें उसी रूप में प्रस्तुत किया है। जाहिर है कि हज़रत इमाम हुसैन अत्यंत दयालु, वीर और प्रभावशाली रूप में नाटक में आते हैं। उनको अपने शहीद होने की जानकारी हो गई थी, फिर भी बहादुरी से लड़े। इसकी प्रेमचंद ने भरपूर प्रशंसा की है। 'कर्बला' इराक का एक ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से पवित्र शहर है, जो बगदाद से लगभग 80-90 किलोमीटर दूर है। यहाँ पर इस्लाम के अनुयायियों में 680 ईसवी में एक धार्मिक युद्ध हुआ था। यह युद्ध हज़रत मोहम्मद साहब के नवासे हज़रत हुसैन और यजीद (खलीफा उमय्या के वंशज) के बीच में हुआ। हजरत मोहम्मद साहब की मृत्यु के बाद इस विशाल साम्राज्य का उत्तराधिकारी कौन होगा? इस विषय में स्वयं मोहम्मद साहब ने यह निश्चित किया कि खलीफा का चुनाव सर्वसम्मति से होना चाहिए। इससे एक तो आपसी विवाद नहीं होगा, दूसरे इस्लाम के सभी अनुयायी खलीफा के साथ एकजुटता महसूस करेंगे। उस समय मोहम्मद साहब के दामाद और उनके चचेरे भाई हजरत अली भी खलीफा के दावेदारों में से एक थे, परन्तु सर्वसम्मति से उमर फारुक को खलीफा नियुक्त कर दिया गया। उनके बाद अबू बकर भी इसी प्रक्रिया से खलीफा बनाए गए। अबू बकर के बाद खलीफा का यह पद उसमान को मिला । उसमान की कार्यशैली कुछ लोगों को पसंद नहीं आई, इस कारण उसमान की हत्या कर दी गई। उसमान के बाद खलीफा का यह पद हजरत अली को मिला। उसमान के संबंधियों को शक था कि उसमान की हत्या अली ने करवाई थी, इसलिए उन लोगों ने अली को अपना खलीफा मानने से इन्कार कर दिया। शाम-प्रांत के सूबेदार मुआबिया ने इन विरोधियों का नेतृत्व किया। फलतः हज़रत अली और मुआबिया के बीच युद्ध हुआ । यह युद्ध करीब पाँच साल चला। इसमें अली पराजित हो गए। अली पुनः नई

सेना संगठित करने की योजना बना रहे थे, इसी बीच एक व्यक्ति ने हज़रत अली की हत्या कर दी। इस तरह मुआबिया अगले खलीफा बने । चूँकि मोहम्मद साहब के परिवार के साथ आम लोगों की सहानुभूति थी, इसे देखते हुए मुआबिया ने घोषणा की थी कि अगले खलीफा के रूप में वे हज़रत अली के पुत्र हसन को नियुक्त करेंगे। संयोग से हसन की मृत्यु हो गई और मुआविया ने अपने पुत्र यजीद को खलीफा घोषित कर दिया। अली समर्थक लोगों का मत था कि हसन के छोटे भाई हुसैन को खलीफा बनाना चाहिए था । यजीद को इस बात का भय था कि हुसैन उसे खलीफा के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। अतः अपने खलीफा के पद को सुरक्षित रखने के लिए हुसैन को मारना जरूरी समझा। इस राजनीतिक और वैचारिक परिप्रेक्ष्य में कर्बला शहर में दोनों पक्षों का युद्ध हुआ।

कूफा प्रान्त के लोगों के बुलावे पर हुसैन पहले मदीना से रवाना हुए फिर मक्का की तरफ होते हुए वे कर्बला में फरात नदी के किनारे पहुँचे। उनके पीछे-पीछे यजीद की सेना चल रही थी। उन्हें चारों ओर से घेर रखा था, ताकि वे यहाँ से किसी गुप्त स्थान में भाग न सकें। हुसैन के साथ उनके परिवार, बच्चे और महिलाओं के साथ कुल 72 लोग थे और यजीद की सेना में करीब बाईस हजार लोग थे । यजीद ने हुसैन और उनके परिवार को नदी से पानी लेने पर रोक लगा दी। अंत में सभी लोगों को कत्ल कर दिया गया। हुसैन और उसके साथियों ने शहादत के रूप में अंगीकार किया। यह घटना 10 अक्टूबर, 680 ई. को हुई।

प्रेमचंद ने इस ऐतिहासिक घटना पर 'कर्बला शीर्षक से एक नाटक लिखा जो 1924 में प्रकाशित हुआ । इस नाटक में प्रेमचंद ने कुछ हिन्दू पात्रों का वर्णन किया है जो इस युद्ध में हुसैन के साथ शहीद हुए थे। स्वयं प्रेमचंद ने लिखा है, "पाठक इसमें हिन्दुओं को प्रवेश करते देखकर चकित होंगे, परन्तु वह हमारी कल्पना नहीं है, ऐतिहासिक घटना है। आर्य लोग वहाँ कैसे और कब पहुँचे, यह विवादग्रस्त है। कुछ लोगों का ख्याल है, महाभारत के बाद अश्वत्थामा के वंशधर वहाँ जा बसे थे। कुछ लोगों का यह भी मत है, ये लोग उन हिन्दुओं की सन्तान थे, जिन्हें सिकन्दर यहाँ से कैद कर ले गया। कुछ हो, ऐतिहासिक प्रमाण है कि कुछ हिन्दू भी हज़रत हुसैन के साथ कर्बला के संग्राम में सम्मिलित होकर वीर गति को प्राप्त हुए थे।

16. 3.1 कर्बला नाटक का सार-

प्रेमचंद मूलतः उपन्यासकार और कहानीकार हैं, परन्तु उन्होंने तीन नाटक भी लिखे 'कर्बला के अतिरिक्त प्रेमचंद ने दो और नाटकों की रचना की है- 'संग्राम' तथा 'प्रेम की वेदी । इसके अतिरिक्त कई नाटकों के अनुवाद भी किए हैं। कर्बला उनका इस्लाम के इतिहास से संबंधित ऐतिहासिक और धार्मिक नाटक है । कर्बला शहर में सन् 680 ई. में हज़रत मोहम्मद साहब के नवासे हुसैन और तत्कालीन खलीफा यजीद के बीच युद्ध हुआ था, जिसमें अपने परिवार और समर्थकों के साथ हुसैन शहीद हो गए थे। इस घटना की ऐतिहासिकता को ध्यान में

रखते हुए उन्होंने नाटक में किसी तरह का कोई प्रयोग नहीं किया। पात्रों को उसी तरह से प्रस्तुत किया है, जैसा इतिहास में उनका उल्लेख मिलता है। उनके साथ कुछ कल्पित पात्रों की सृष्टि की है। इस संघर्ष में कुछ हिन्दू पात्रों ने भी भाग लिया था जो हुसैन के पक्ष में शहीद हो गए थे। प्रेमचंद उनकी उपस्थिति को भी ऐतिहासिक तथ्य मानते हैं हालोंकि इस बात पर थोड़ा-सा विवाद है।

कर्बला की भाषा उर्दू बहुल है, क्योंकि इसके पात्र मुस्लिम हैं। इसी तरह से उनके पदनाम भी अरबी-फारसी में प्रयुक्त होने वाले हैं। प्रेमचंद ने नाटक में उर्दू कवियों की कुछ कविताओं के साथ श्रीधर पाठक की एक रचना को भी शामिल किया है। यह दुःखान्त नाटक है, जिसमें कहीं-कहीं करुणा का अतिरेक मिलता है। दुःखान्त होते हुए भी यह नाटक ग्रीक ट्रेजेडी की शैली में लिखा हुआ नहीं है। इस नाटक में पाँच अंक हैं, तथा कई दृश्य परिवर्तन हैं। नाटक में प्रेमचंद ने स्त्री पात्रों को भी चित्रित किया है हुसैन, यजीद, मरवान, वलीद, अब्बास, साद, जियाद, शिमर आदि प्रमुख पात्र हैं। अंत में शिमर के हाथों हुसैन शहीद होते हैं तथा साद आत्महत्या कर लेता है।

कर्बला प्रेमचंद का ऐतिहासिक और धार्मिक नाटक है। इसका प्रारंभ यजीद और उसके समर्थकों की बैठक से होता है। यजीद उस समय खलीफा घोषित हो चुके थे। उस समय के लोगों को विश्वास था कि खलीफा के रूप में उसका चयन इस्लामी परंपरा के अनुसार नहीं हुआ था। हज़रत अली के पुत्र हजरत हुसैन को खलीफा बनाया जाना चाहिए था। अपने मन में यजीद भी यह जानता था । इसलिए उसके मन में यह विश्वास था कि हुसैन उसके नाम की 'बैयत' नहीं लेंगे, अर्थात् खलीफा के रूप में उसे स्वीकार नहीं करेंगे। फिर इस्लाम के अनुयायियों पर हुसैन का नैतिक प्रभाव है। इसलिए जब तक हुसैन जिन्दा हैं, तब तक यजीद निष्कंटक शासक नहीं हो सकते। अतः यजीद हुसैन को मारने का आदेश देते हैं। हुसैन को भी लगता है. कि यजीद गलत रीति से खलीफा बना है, इसलिए वे कभी भी उसके नाम की बैयत नहीं लेंगे। यह इस्लाम की परंपरा के खिलाफ है। अतः इन दोनों के बीच युद्ध होना लाजिमी है। नाटक का प्रारम्भ इस समझ से होता है।

प्रेमचंद बताते हैं कि यजीद शराबी है, वेश्यागामी है और धर्म के अनुसार आचरण नहीं करता। हुसैन मदीना में रहते हैं। यजीद वहाँ के गवर्नर वलीद को पत्र लिखता है कि वह हुसैन से मेरे नाम की बैयत लेने के लिए कहे। यदि वह नहीं लेता तो उसे कत्ल कर दे। इस तरह हुसैन का यहाँ रहना दूभर हो जाता है। हुसैन अपने परिवार के साथ मक्का की तरफ रवाना हो जाते हैं। उन्हें कूफ़ा निवासियों का भी पत्र मिलता है कि हुसैन कूफ़ा आएँ तथा यजीद के जुल्मों से उन्हें मुक्त करे। हुसैन मदीना को खून खराबे से बचाने के लिए यहाँ से रवाना हो जाते हैं। उनके मक्का पहुँचने की खबर यजीद को भेज दी जाती है। यजीद मरवान को यहाँ का नाजिम बनाकर

भेजता है। हुसैन को कत्ल न कर पाने की सजा के तौर पर मदीना से वलीद को हटा दिया जाता है।

इधर हुसैन कूफ़ा के लिए रवाना हो जाते हैं। कूफ़ा वालों का मन बदल जाता है। वे हुसैन के स्थान पर यजीद के समर्थक हो जाते हैं। यजीद की सेना मक्का से ही हुसैन का पीछा कर रही होती है। साथ ही, उनको चारों तरफ से घेर कर रखा जाता है ताकि वे किसी गुप्त स्थान पर न चले जाएँ। पर्याप्त सेना इकट्ठी कर लेने के बाद भी यजीद ने हुसैन पर आक्रमण नहीं किया, क्योंकि उसे आशंका थी कि यहाँ के नागरिक कहीं विद्रोह न कर दें। इसलिए फरात नदी के किनारे पर हुसैन के काफिले को रोक दिया जाता है तथा नदी की रक्षा के लिए सेना तैनात कर दी जाती है। साथ ही यह आदेश भी भिजवा दिया गया कि हुसैन को नदी से पानी न लेने दिया जाए तथा वे कोई कुआँ भी नहीं खोद सकते। गरमी के मौसम में पानी का कष्ट कितना जानलेवा होता है, इसका वर्णन प्रेमचंद ने विस्तार से किया है। हुसैन ने समझौते का प्रयास किया लेकिन यजीद के लोग किसी बात से सहमत नहीं हुए। अन्ततः युद्ध हुआ। "उन दिनों समर की दो पद्धतियाँ थीं- एक तो सम्मिलित, जिसमें समस्त सेना मिलकर लड़ती थी और दूसरी व्यक्तिगत, जिसमें दोनों दलों से एक-एक योद्धा निकलकर लड़ते थे।" यह युद्ध दूसरी पद्धति से हुआ। दोनों ओर से एक-एक योद्धा जाते और वीरगति को प्राप्त करते। इस तरह सभी 72 लोग शहीद हुए। सबसे अंत में हुसैन शहीद हुए। इस युद्ध में उनके नवजात बच्चों की और स्त्रियों की भी हत्या कर दी गई। "हुसैन की शहादत के बाद शत्रुओं ने उनकी लाश की जो दुर्गति की, वह इतिहास की अत्यंत लज्जानक घटना है।" यह ऐसी अनोखी घटना है- "ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि किसी धर्म संचालक के नवासों को अपने नाना के अनुयायियों के हाथों यह बुरा दिन देखना पड़ा।".

पाठ की उपलब्धियां - प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ नाटक कर्बला - अमर कथा शिल्पी मुंशी प्रेमचंद द्वारा इस्लाम धर्म के संस्थापक हजरत मुहम्मद के नवासे हुसैन की शहादत का सजीव व रोमांचक विवरण लिए हुए एक ऐतिहासिक नाटक है। इस मार्मिक नाटक में यह दिखाया गया है कि उस काल के मुस्लिम शासकों ने किस प्रकार मानवता प्रेमी, असहायों व निर्बलों की सहायता करने वाले हुसैन को परेशान किया और अमानवीय यातनाएं दे देकर उसका कत्ल कर दिया। कर्बला के मैदान में लड़ा गया यह युद्ध इतिहास में अपना विशेष महत्त्व रखता है। मुस्लिम इतिहास पर आधारित मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखा गया यह नाटक 'कर्बला' साहित्य में अपना विशेष महत्त्व रखता है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद अब आप कर्बला नाटक का मूल्यांकन एवं विश्लेषण कर सकते हैं।

बोध प्रश्न -

- कर्बला नाटक के मूल उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
- "कर्बला नाटक आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने लिखे जाने के समय में था" इस कथन की समीक्षा कीजिए।

16.3.2 'कर्बला' नाटक के पात्र एवं कथ्य

पुरुष पात्र

हुसैन-हज़रत अली के बेटे और हज़रत मोहम्मद साहब के नवासे। इन्हें फ़र्ज़न्दे-रसूल,शब्बीर,भी कहा गया है।
अब्बास-हज़रत हुसैन के चचेरे भाई।
अली अकबर-हजरत हुसैन के बड़े बेटे।
अली असगर-हजरत हुसैन के छोटे बेटे।
मुस्लिम-हज़रत हुसैन के चचेरे भाई।
जुबेर-मक्का का एक रईस।
वलीद-मदीना का नाज़िम।
मरवान-वलीद का सहायक अधिकारी।
हानी-कूफ़ा का एक रईस।
यजीद-खलीफा
नुहाक,शम्स,सरजन रूमी-यजीद के मुसाहिन।
जियाद-बसरे और कूफ़े का नाज़िम।
साद-यज़ीद की सेना का सेनापति।
अब्दुल्लाह,वहब,कसीर,मुख्तार,हुर,जहीर,हबीब आदि हजरत हुसैन के सहायक।
हज्जाज, हारिस, अशअस, कीसे, वलाल आदि यज़ीद के सहायक।
साहसराय-अरब-निवासी एक हिन्दू।
मुआबिया-यज़ीद का बेटा।

स्त्री पात्र

जैनब-हुसैन की बहन।
शहरबानू-हुसैन की स्त्री।
सकीना-हुसैन की बेटी।
क़मर-अब्दुल्लाह की स्त्री।
तौबा-कूफा की एक वृद्धा स्त्री।
हिन्दा-यजीद की बेगम।
क़ासिद-सिपाही, जल्लाद आदि।

'कर्बला प्रेमचंद का ऐतिहासिक और धार्मिक नाटक है। इसका प्रारंभ यजीद और उसके समर्थकों की बैठक से होता है। यजीद उस समय खलीफा घोषित हो चुके थे। उस समय के लोगों को विश्वास था कि खलीफा के रूप में उसका चयन इस्लामी परंपरा के अनुसार नहीं हुआ था। हज़रत अली के पुत्र हजरत हुसैन को खलीफा बनाया जाना चाहिए था। अपने मन में यजीद भी यह जानता था । इसलिए उसके मन में यह विश्वास था कि हुसैन उसके नाम की 'बैयत' नहीं लेंगे, अर्थात् खलीफा के रूप में उसे स्वीकार नहीं करेंगे। फिर इस्लाम के अनुयायियों पर हुसैन का नैतिक प्रभाव है। इसलिए जब तक हुसैन जिन्दा हैं, तब तक यजीद निष्कंटक शासक नहीं हो सकते। अतः यजीद हुसैन को मारने का आदेश देते हैं। हुसैन को भी लगता है. कि यजीद गलत रीति से खलीफा बना है, इसलिए वे कभी भी उसके नाम की बैयत नहीं लेंगे। यह इस्लाम की परंपरा के खिलाफ है। अतः इन दोनों के बीच युद्ध होना लाजिमी है। नाटक का प्रारम्भ इस समझ से होता है।

प्रेमचंद बताते हैं कि यजीद शराबी है, वेश्यागामी है और धर्म के अनुसार आचरण नहीं करता। हुसैन मदीना में रहते हैं। यजीद वहाँ के गवर्नर वलीद को पत्र लिखता है कि वह हुसैन से मेरे नाम की बैयत लेने के लिए कहे। यदि वह नहीं लेता तो उसे कत्ल कर दे। इस तरह हुसैन का यहाँ रहना दूभर हो जाता है। हुसैन अपने परिवार के साथ मक्का की तरफ रवाना हो जाते हैं। उन्हें कूफ़ा निवासियों का भी पत्र मिलता है कि हुसैन कूफ़ा आएँ तथा यजीद के जुल्मों से उन्हें मुक्त करे। हुसैन मदीना को खून खराबे से बचाने के लिए यहाँ से रवाना हो जाते हैं। उनके मक्का पहुँचने की खबर यजीद को भेज दी जाती है। यजीद मरवान को यहाँ का नाजिम बनाकर भेजता है। हुसैन को कत्ल न कर पाने की सजा के तौर पर मदीना से वलीद को हटा दिया जाता है।

इधर हुसैन कूफ़ा के लिए रवाना हो जाते हैं। कूफ़ा वालों का मन बदल जाता है। वे हुसैन के स्थान पर यजीद के समर्थक हो जाते हैं। यजीद की सेना मक्का से ही हुसैन का पीछा कर रही होती है। साथ ही, उनको चारों तरफ से घेर कर रखा जाता है ताकि वे किसी गुप्त स्थान पर न चले जाएँ। पर्याप्त सेना इकट्ठी कर लेने के बाद भी यजीद ने हुसैन पर आक्रमण नहीं किया, क्योंकि उसे आशंका थी कि यहाँ के नागरिक कहीं विद्रोह न कर दें। इसलिए फरात नदी के किनारे पर हुसैन के काफिले को रोक दिया जाता है तथा नदी की रक्षा के लिए सेना तैनात कर दी जाती है। साथ ही यह आदेश भी भिजवा दिया गया कि हुसैन को नदी से पानी न लेने दिया जाए तथा वे कोई कुआँ भी नहीं खोद सकते। गरमी के मौसम में पानी का कष्ट कितना जानलेवा होता है, इसका वर्णन प्रेमचंद ने विस्तार से किया है। हुसैन ने समझौते का प्रयास किया लेकिन यजीद के लोग किसी बात से सहमत नहीं हुए। अन्ततः युद्ध हुआ। "उन दिनों समर की दो पद्धतियाँ थीं- एक तो सम्मिलित, जिसमें • समस्त सेना मिलकर लड़ती थी और दूसरी व्यक्तिगत, जिसमें दोनों दलों से एक-एक योद्धा निकलकर लड़ते थे।" यह युद्ध दूसरी पद्धति से

हुआ। दोनों ओर से एक-एक योद्धा जाते और वीरगति को प्राप्त करते। इस तरह सभी 72 लोग शहीद हुए। सबसे अंत में हुसैन शहीद हुए। इस युद्ध में उनके नवजात बच्चों की और स्त्रियों की भी हत्या कर दी गई। "हुसैन की शहादत के बाद शत्रुओं ने उनकी लाश की जो दुर्गति की, वह इतिहास की अत्यंत लज्जानक घटना है।" यह ऐसी अनोखी घटना है- "ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि किसी धर्म संचालक के नवासों को अपने नाना के अनुयायियों के हाथों यह बुरा दिन देखना पड़ा।".

बोध प्रश्न :-

1- कर्बला नाटक के दो प्रमुख पात्रों के नाम लिखिए।

2- मरवान किस ख़लीफ़ा का वफ़ादार नौकर था।

3- यजीद की सेना किसका और क्यों पीछा करती है

16.3.3 कर्बला नाटक की अंतर्वस्तु

हज़रत मुहम्मद की मृत्यु के बाद कुछ ऐसी परिस्थिति पैदा हुई कि ख़िलाफ़त का पद उनके चचेरे भाई और दामाद हज़रत अली को न मिलकर उमर फ़ारूक को मिला। हज़रत मुहम्मद ने स्वयं ही व्यवस्था की थी कि खलीफ़ा सर्व-सम्मति से चुना जाया करे, और सर्व-सम्मति से उमर फ़ारूक चुने गए। उनके बाद अबूबकर चुने गए। अबूबकर के बाद यह पद उसमान को मिला। उसमान अपने कुटुंबवालों के साथ पक्षपात करते थे, और उच्च राजकीय पद उन्हीं को दे रखे थे। उनकी इस अनीति से बिगड़कर कुछ लोगों ने उसकी हत्या कर डाली। उसमान के संबंधियों को संदेह हुआ कि यह हत्या हज़रत अली की ही प्रेरणा से हुई है। अतएव उसमान के बाद अली खलीफा तो हुए, किंतु उसमान के एक आत्मीय संबंधी ने जिसका नाम मुआबिया था, और जो शाम-प्रांत का सूबेदार था, अली के हाथों पर वैयत न की, अर्थात् अली को खलीफ़ा नहीं स्वीकार किया। अली ने मुआबिया को दंड देने के लिए सेना नियुक्त की। लड़ाइयाँ हुईं, किंतु पाँच वर्ष की लगातार लड़ाई के बाद अंत को मुआबिया की ही विजय हुई। हजरत अली अपने प्रतिद्वंदी के समान कूटनीतिज्ञ न थे। वह अभी मुआबिया को दबाने के लिए एक नई सेना संगठित करने की चिंता में ही थे कि एक हत्यारे ने उनका वध कर डाला।

मुआबिया ने घोषणा की थी कि अपने बाद मैं अपने पुत्र को खलीफ़ा नामजद न करूंगा, वरन हज़रत अली के ज्येष्ठ पुत्र हसन को खलीफ़ा बनाऊँगा। किंतु जब इसका अंत-काल निकट आया, तो उसने अपने पुत्र यजीद को खलीफ़ा बना दिया। हसन इसके पहले ही मर चुके थे। उनके छोटे भाई हज़रत हुसैन खिलाफ़त के उम्मीदवार थे, किंतु मुआबिया ने यज़ीद को अपना उत्तराधिकारी बनाकर हुसैन को निराश कर दिया।

खलीफ़ा हो जाने के बाद यजीद को सबसे अधिक भय हुसैन का था, क्योंकि वह हज़रत अली के बेटे और हज़रत मुहम्मद के नवासे (दौहित्र) थे। उनकी माता का नाम फ़ातिमा जोहरा

था, जो मुसलिम विदूषियों में सबसे श्रेष्ठ थी। हुसैन बड़े विद्वान, सच्चरित्र, शांत-प्रकृति, नम्र, सहिष्णु, ज्ञानी, उदार और धार्मिक पुरुष थे। वह वीर थे, ऐसे वीर कि अरब में कोई उनकी समता का न था। किंतु वह राजनीतिक छल-प्रपंच और कुत्सित व्यवहारों से अपरिचित थे। यजीद इन सब बातों में निपुण था। उसने अपने पिता और मुआबिया से कूटनीति की शिक्षा पाई थी। उसके गोत्र (कबीले) के सब लोग कूटनीति के पंडित थे। धर्म को वे केवल स्वार्थ का साधन समझते थे। भोग-विलास एवं ऐश्वर्य का उनको चस्का पड़ चुका था। ऐसे भोग-लिप्सु प्राणियों के सामने सत्यव्रती हुसैन की भला कब तक चल सकती थी और चली भी नहीं।

यजीद ने मदीने के सूबेदार को लिखा कि तुम हुसैन से मेरे नाम पर बैयत अर्थात् उनसे मेरे खलीफ़ा होने की शपथ लो। मतलब यह कि यह गुप्त रीति से उन्हें कत्ल करने का षड्यंत्र रचने लगा। हुसैन ने बैयत लेने से इनकार किया। यजीद ने समझ लिया कि हुसैन बगावत करना चाहते हैं, अतएव वह उसे लड़ने के लिए शक्ति-संचय करने लगा। कूफ़ा-प्रांत के लोगों को हुसैन से प्रेम था। वे उन्हीं को अपना खलीफ़ा बनाने के पक्ष में थे। यजीद को जब यह बात मालूम हुई, तो उसने कूफ़ा के नेताओं को धमकाना और नाना प्रकार के कष्ट देना आरंभ किया। कूफ़ा निवासियों ने हुसैन के पास, जो उस समय मदीने से मक्के चले गए थे, संदेशा भेजा कि आप आकर हमें इस संकट से मुक्त कीजिए। हुसैन ने इस संदेश का कुछ उत्तर न दिया, क्योंकि वह राज्य के लिए खून बहाना नहीं चाहते थे।

इधर कूफ़ा में हुसैन के प्रेमियों की संख्या बढ़ने लगी। लोग उनके नाम पर बैयत करने लगे। थोड़े ही दिनों में इन लोगों की संख्या २० हजार तक पहुंच गई। इस बीच में इन्होंने हुसैन की सेवा में दो संदेश और भेजे, किंतु हुसैन ने उसका भी कुछ उत्तर नहीं दिया। अंत को कूफ़ावालों ने एक अत्यन्त आग्रहपूर्ण पत्र लिखा, जिसमें हुसैन को हज़रत मुहम्मद और दीन-इस्लाम के निहोरे अपनी सहायता करने को बुलाया। उन्होंने बहुत अनुनय-विनय के बाद लिखा था– "अगर आप न आए, तो कल क़यामत के दिन अल्लाह-ताला के हुजूर में हम आप पर दावा करेंगे कि या इलाही, हुसैन ने हमारे ऊपर अत्याचार किया था, क्योंकि हमारे ऊपर अत्याचार किया था, क्योकि हमारे ऊपर अत्याचार होते देखकर वह खामोश बैठे रहे। और, सब लोग फरियाद करेंगे कि ऐ खुदा हुसैन से हमारा बदला दिला दे। उस समय आप क्या जवाब देंगे, और खुदा को क्या मुँह दिखायेंगे?"

धर्म-प्राण हुसैन ने जब यह पत्र पढ़ा, तो उनके रोंएं खड़े हो आए, और उनका हृदय जल के समान तरल हो गया। उनके गालों पर धर्मानुराग के आँसू बहने लगे। उन्होंने तत्काल उन लोगों के नाम एक आश्वासन पत्र लिखा– "मैं शीघ्र ही तुम्हारी सहायता को आऊँगा" और अपने चचेरे भाई मुसलिम के हाथ उन्होंने यह पत्र कूफ़ावालों के पास भेज दिया।

मुसलिम मार्ग की कठिनाइयां झेलते हुए कूफ़ा पहुँचे। उस समय कूफ़ा का सूबेदार एक शांत पुरुष था। उसने लोगों को समझाया– "नगर में कोई उपद्रव न होने पावे। मैं उस समय तक किसी से न बोलूंगा, जब तक कोई मुझे क्लेश न पहुँचावेगा।

जिस समय यजीद को मुसलिम के कूफ़ा पहुंचने का समाचार मिला, तो उसने एक दूसरे सूबेदार को कूफ़ा में नियुक्त किया जिसका नाम 'ओबैद बिनजियाद' था। यह बड़ा निष्ठुर और कुटिल प्रकृति का मनुष्य था। इसने आते ही आते कूफ़ा में एक सभा की, जिसमें घोषणा की गई कि "जो लोग यजीद के नाम पर बैयत लेगें, उनके साथ किसी तरह की रियायत न की जाएगी। हम उसे सूली पर चढ़ा देंगे, और उसकी जागीर या वृत्ति जब्त कर लेंगे।" इस घोषणा ने यथेष्ट प्रभाव डाला। कूफ़ावालों के हृदय कांप उठे। जियाद को वे भली-भाँति जानते थे। उस दिन जब मुसलिम भी मसजिद में नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़े हुए, तो किसी ने उनका साथ न दिया। जिन लोगों ने पहले हुसैन की सेवा में आवेदन-पत्र भेजा था, उनका कहीं पता न था। सभी के साहस छूट गए थे। मुसलिम ने एक बार कुछ लोगों की सहायता से जियाद को घेर लिया। किंतु जियाद ने अपने एक विश्वास-पात्र सेवक के मकान की छत पर चढ़कर लोगों को यह संदेशा दिया कि 'जो लोग यजीद की मदद करेंगे, उन्हें जागीर दी जायेगी, और जो लोग बगावत करेंगे, उन्हें ऐसा दंड दिया जायेगा कि कोई उनके नाम को रोनेवाला भी न रहेगा।" नेतागण यह धमकी सुनकर दहल उठे और मुसलिम को छोड़-छोड़कर दस-दस, बीस-बीस आदमी विदा होने लगे। यहां तक कि मुसलिम वहां अकेला रह गया। विवश हो उसने एक वृद्धा के घर में शरण लेकर अपनी जान बचाई। दूसरे दिन जब ओबैदुल्लाह को मालूम हुआ कि गिरफ्तार करने के लिए भेजा। असहाय मुसलिम ने तलवार खींच ली, और शत्रुओं पर टूट पड़े। पर अकेले कर ही क्या सकते थे। थोड़ी देर में जख्मी होकर गिर पड़े। उस समय सूबेदार से उनकी जो बातें हुईं, उनसे विदित होता है कि वह कैसे वीर पुरुष थे। गवर्नर उनकी भय-शून्य बातों से और भी गरम हो गया। उसने तुरंत कत्ल करा दिया।

हुसैन, अपने पूज्य पिता की भाँति, साधुओं का-सा सरल जीवन व्यतीत करने के लिए बनाए गए थे। कोई चतुर मनुष्य होता, तो उस समय दुर्गम पहाड़ियों में जा छिपता, और यमन के प्राकृतिक दुर्गों में बैठकर चारों ओर से सेना एकत्र करता। देश में उनका जितना मान था, और लोगों को उन पर जितनी भक्ति थी, उसके देखते २०-२५ हज़ार सेना एकत्र कर लेना उनके लिए कठिन न था। किंतु वह अपने को पहले से हारा हुआ समझने लगे। यह सोचकर वह कहीं भागते न थे। उन्हें भय था कि शत्रु मुझे अवश्य खोज लेगा। वह सेना जमा करने का भी प्रयत्न न करते थे। यहां तक कि जो लोग उनके साथ थे, उन्हें भी अपने पास से चले जाने की सलाह देते

थे। इतना ही नहीं, उन्होंने यह कभी नहीं कहा कि मैं खलीफ़ा बनना चाहता हूं। वह सदैव यही कहते रहे कि मुझे लौट जाने दो मैं किसी से लड़ाई नहीं करना चाहता। उनकी आत्मा इतनी उच्च थी कि वह सांसारिक राज्य-भोग के लिए संग्राम-क्षेत्र में उतरकर उसे कलुषित नहीं करना चाहते थे। उनके जीवन का उद्देश्य आत्मशुद्धि और धार्मिक जीवन था। वह कूफ़ा में जाने को इसलिए सहमत नहीं हुए थे कि वहां अपनी खिलाफ़त स्थापित करें, बल्कि इसलिए कि वह अपने सहधर्मियों की विपत्तियों को देख न सकते थे। वह कूफ़ा जाते समय अपने सब संबंधियों से स्पष्ट शब्दों में कह गए थे कि मैं शहीद होने जा रहा हूं। यहां तक कि एक स्वप्न का भी उल्लेख करते थे, जिसमें आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनकी टेक केवल यह थी कि मैं यजीद के नाम पर बैयत न करूंगा। इसका कारण यही था कि यजीद मद्यप, व्यभिचारी और इस्लाम धर्म के नियमों का पालन न करने वाला था। यदि यजीद ने उनकी हत्या कराने की चेष्टा न की होती, तो वह शांतिपूर्वक मदीने में जीवन-भर पड़े रहते। पर समस्या यह थी कि उनके जीवित रहते हुए यजीद को अपना स्थान सुरक्षित नहीं मालूम हो सकता था। उसके निष्कंटक राज्य भोग के लिए हुसैन का उसके मार्ग से सदा के लिए हट जाना परम आवश्यक था। और, इस हेतु कि खिलाफत एक धर्म-प्रधान संस्था थी, अतः यजीद को हुसैन के रण-क्षेत्र में आने का उतना भय न था, जितना उनके शांति-सेवन का। क्योंकि शांति सेवन से जनता पर उनका प्रभाव बढ़ता जाता था। इसीलिए यजीद ने यह भी कहा था कि हुसैन का केवल उसके नाम पर बैयत लेना ही पर्याप्त नहीं, उन्हें उसके दरबार में भी आना चाहिए। यजीद को उनकी बैयत पर विश्वास न था। वह उन्हें किसी भांति अपने दरबार में बुलाकर उनकी जीवन-लीला को समाप्त कर देना चाहता था। इसलिए यह धारणा कि हुसैन अपने खिलाफ़त कायम करने के लिए कूफ़ा गए, निर्मूल सिद्ध होती है। वह कूफ़ा इसलिए गए कि अत्याचार पीड़ित कूफ़ा निवासियों की सहायता करें। उन्हें प्राण-रक्षा के लिए कोई जगह न दिखाई देती थी।

यदि वह खिलाफ़त के उद्देश्य से कूफ़ा जाते, तो अपने कुटुंब के केवल ७२ प्राणियों के साथ न जाते जिनमें बाल-वृद्ध सभी थे। कूफ़ावालों पर कितना ही विश्वास होने पर भी वह अपने साथ अधिक मनुष्यों को लाने का प्रयत्न करते। इसके सिवा उन्हें यह बात पहले से ज्ञात थी कि कूफ़ा के लोग अपने वचनों पर दृढ़ रहने वाले नहीं हैं। उन्हें कई बार इसका प्रमाण भी मिल चुका था कि थोड़े-से प्रलोभन पर भी वे अपने वचनों में विमुख हो जाते हैं। हुसैन के इष्ट-मित्रों ने उनका ध्यान कूफ़ावालों की इस दुर्बलता की ओर खींचा भी, पर हुसैन ने उनकी सलाह न मानी। वह शहादत का प्याला पीने के लिए, अपने को धर्म की वेदी पर बलि देने के लिए विकल हो रहे थे। इससे हितैषियों के मना करने पर भी वह कूफ़ा चले गए। दैव-संयोग से यह तिथि वही थी, जिस दिन कूफ़ा में मुसलिम शहीद हुए थे। १८ दिन की कठिन यात्रा के बाद वह नाहनेवा के समीप, कर्बला के मैदान में पहुंचे, जो फ़रात नदी के किनारे था। इस मैदान में न कोई बस्ती थी,

न कोई वृक्ष। कूफ़ा के गवर्नर की आज्ञा से वह इसी निर्जन और निर्जल स्थान में डेरे डालने को विवश किये गए।

शत्रुओं की सेना हुसैन के पीछे-पीछे मक्के से ही आ रही थी और सेनाएं भी चारों ओर फैला दी गई थीं कि हुसैन किसी गुप्त मार्ग से कूफ़ा न पहुँच जाये। कर्बला पहुंचने के एक दिन पहले उन्हें हुर की सेना मिली। हुसैन ने हुर को बुलाकर पूछा– "तुम मेरे पक्ष में हो, या विपक्ष में?" हुर ने कहा– "मैं आपसे लड़ने के लिए भेजा गया हूं।" जब तीसरा पहर हुआ, तो हुसैन नमाज पढ़ने के लिए खड़े हुए, और उन्होंने हुर से पूछा– "तू क्या मेरे पीछे खड़ा होकर नमाज पढ़ेगा?" हुर ने हुसैन के पीछे खड़े होकर नमाज पढ़ना स्वीकार किया। हुसैन ने अपने साथियों के साथ हुर की सेना को भी नमाज पढ़ाई। हुर ने यजीद की बैयत ली थी। पर वह सद्विचारशील पुरुष था। हज़रत मोहम्मद के नवासे से लड़ने में उसे संकोच होता था। वह बड़े धर्म-संकट में पड़ा। वह सच्चे हृदय से चाहता था कि हुसैन मक्का लौट जायें। प्रकट रूप से तो हुसैन को ओबैदुल्लाह के पास ले चलने की धमकी देता था। पर हृदय से उन्हें अपने हाथों कोई हानि नहीं पहुँचाना चाहता था। उसने खुले हुए शब्दों में हुसैन से कहा– "यदि मुझसे कोई ऐसा अनुचित कार्य हो गया, जिससे आपको कोई कष्ट पहुंचा, तो मेरे लोक और परलोक, दोनों बिगड़ जायेंगे। और, यदि मैं आपको ओबैदुल्लाह के पास न ले जाऊं; तो कूफ़ा में नहीं घुस सकता। हाँ, संसार विस्तृत है, कयामत के दिन आपके नाना की कृपा दृष्टि से वंचित होने की अपेक्षा कहीं यही अच्छा है कि किसी दूसरी ओर निकल जाऊं। आप मुख्य मार्ग को छोड़कर किसी अज्ञात मार्ग से कहीं और चले जायें। मैं कूफ़ा के गवर्नर (अर्थात् 'आमिल') को लिख दूंगा कि हुसैन से मेरी भेंट नहीं हुई, वह किसी दूसरी ओर चले गए हैं। मैं आपको कसम दिलाता हूं कि अपने पर दया कीजिए, और कूफ़ा न जाइए।" पर हुसैन ने कहा– "तुम मुझे मौत से क्यों डराते हो? मैं तो शहीद होने के लिए ही चला हूं।" उस समय यदि हुसैन हुर की सेना पर आक्रमण करते, तो संभव था, उसे परास्त कर देते, पर अपने इष्ट-मित्रों के अनुरोध करने पर भी उन्होंने यहीं कहा– "हम लड़ाई के मैदान में अग्रसर न होंगे, यह हमारी नीति के विरुद्ध है।" इससे भी यही बात सिद्ध होती है कि हुसैन को अब अपनी आत्मरक्षा का कोई उपाय न सूझता था। उनमें साधुओं का सा संतोष था, पर योद्धाओं का सा धैर्य न था, जो कठिन-से-कठिन समय पर भी कष्ट निवारण का उपाय निकाल लेते हैं। उनमें महात्मा गांधी का-सा आत्मसमर्पण था, किंतु शिवाजी की दूरदर्शिता न थी।

इधर हुसैन और उनके आत्मीय तथा सहायकगण तो अपने-अपने खीमे गाड़ रहे थे, और उधर ओबैदुल्लाह– कूफ़ा का गर्वनर– लड़ाई की तैयारी कर रहा था। उसने 'उमर-बिन-साद'

नाम के एक योद्धा को बुलाकर हुसैन की हत्या करने के लिये नियुक्त किया, और इसके बदले में 'रै सूबे के आमिल का उच्च पद देने को कहा। उमर-बिन-साद विवेकहीन प्राणी न था। वह भली-भांति जानता था कि हुसैन की हत्या करने से मेरे मुख पर ऐसी कालिमा लग जायेगी, किंतु 'रै' सूबे का उच्च पद उसे असमंजस में डाले हुए था। उसके संबंधियों ने समझाया– "तुम हुसैन की हत्या करने का बीड़ा न उठाओ, इसका परिणाम अच्छा न होगा।" उमर ने जाकर ओबैदुल्लाह से कहा– "मेरे सिर पर हुसैन के वध का भार न रखिए।" परंतु 'रै' की गवर्नरी छोड़ने को वह तैयार न हो सका। अतएव अब ओबैदुल्लाह ने साफ़-साफ़ कह दिया कि 'रै' का उच्च पद हुसैन की हत्या किए बिना नहीं मिल सकता। यदि तुम्हें यह सौदा महंगा जंचता हो, तो कोई जबरदस्ती नहीं है। किसी और को यह पद दिया जायेगा।" तो उमर का आसन डोल गया। वह इस निषिद्ध कार्य के लिए तैयार हो गया। उसने अपनी आत्मा को ऐश्वर्य-लालसा के हाथ बेच दिया। ओबैदुल्लाह ने प्रसन्न होकर उसे बहुत कुछ इनाम-इकराम दिया, और चार हज़ार सैनिक साथ नियुक्त कर दिए। उमर-बिन-साद की आत्मा अब भी उसे क्षुब्ध करती रही। वह सारी रात पड़ा अपनी अवस्था या दुरवस्था पर विचार करता रहा। वह जिस विचार से देखता, उसी से अपना यह कर्म घृणित जान पड़ता था। प्रातःकाल वह फिर कूफ़ा के गवर्नर के पास गया। उसने फिर अपनी लाचारी दिखाई। परंतु 'रै' की सूबेदारी ने उस पर फिर विजय पाई। जब वह चलने लगा, तो ओबैदुल्लाह ने उसे कड़ी ताक़ीद कर दी कि हुसैन और उनके साथी फ़रात-नदी के समीप किसी तरह न आने पावें, और एक घूंट पानी भी न पी सकें। हुर की १०००० सेनाएं भी उमर के साथ आ मिली। इस प्रकार उमर के साथ पांच हजार सैनिक हो गए। उमर अब भी यही चाहता था कि हुसैन के साथ लड़ना न पड़े। उसने एक दूत उनके पास भेजकर पूछा– "आप अब क्या निश्चय करते हैं?" हुसैन ने कहा– 'कूफ़ावालों ने मुझसे दग़ा की है। उन्होंने अपने कष्ट की कथा कहकर मुझे यहां बुलाया और अब वह मेरे शत्रु हो गए हैं। ऐसी दशा में मैं मक्के लौट जाना चाहता हूँ, यदि मुझसे जबरदस्ती रोका न जाये।" उमर मन से प्रसन्न हुआ कि शायद अब कलंक से बच जाऊं। उसने यह समाचार तुरंत ओबैदुल्लाह को लिख भेजा। किंतु वहां तो हुसैन की हत्या करने का निश्चय हो चुका था। उसने उमर को उत्तर दिया "हुसैन से बैयत लो, और यदि वह इस पर राजी न हो, तो मेरे पास लाओ।"

शत्रुओं को, इतनी सेना जमा कर लेने पर भी, सहसा हुसैन पर आक्रमण करते डर लगता था कि कहीं जनता में उपद्रव न मच जाये। इसलिये इधर तो उमर-बिन-साद कर्बला को चला, और उधर ओबैदुल्लाह ने कूफ़ा की जामा मसजिद में लोगों को जमा किया। उसने एक व्याख्या न

देकर उन्हें समझाया– 'यजीद के खानदान ने तुम लोगों पर कितना न्याययुक्त शासन किया है, और वे तुम्हारे साथ कितनी उदारता से पेश आए हैं! यजीद ने अपने सुशासन से देश को कितना समृद्धिपूर्ण बना दिया है! रास्ते में अब चोरों और लुटेरों का कोई खटका नहीं है। न्यायालयों में सच्चा, निष्पक्ष न्याय होता है। उसने कर्मचारियों के वेतन बढ़ा दिए हैं। राजभक्तों की जागीरें बढ़ा दी गई हैं, विद्रोहियों के कोर्ट तहस-नहस कर दिए गए हैं, जिससे वे तुम्हारी शांति में बाधक न हो सकें। तुम्हारे जीवन-निर्वाह के लिए उसने चिरस्थायी सुविधाएं दे रखी हैं। ये सब उसकी दयाशीलता और उदारता के प्रमाण हैं। यजीद ने मेरे नाम फ़रमान भेजा है कि तुम्हारे ऊपर विशेष कृपा-दृष्टि करूं, और जिसे एक दीनार वृत्ति मिलती है, उनकी वृत्ति सौ दीनार कर दूं। इसी तरह वेतन में भी वृद्धि कर दूँ, और तुम्हें उसके शत्रु हुसैन से लड़ने के लिये भेजूं। यदि तुम अपनी उन्नति और वृद्धि चाहते हो तो तुरंत तैयार हो जाओ। विलंब करने से काम बिगड़ जायेगा।''

यह व्याख्यान सुनते ही स्वार्थ के मतवाले नेता लोग, धर्माधर्म के विचार को तिलांजलि देकर, समर-भूमि में चलने की तैयारी करने लगे। 'शिमर' ने चार हजार सवार जमा किए, और वह बिन-साद से जा मिला। रिकाब ने दो हजार, हसीन के चार हजार, मसायर ने तीन हज़ार और अन्य एक सरदार ने दो हजार के पास अब पूरे २२ सहस्र सैनिक हो गए। कैसी दिल्लगी है कि ७२ आदमियों को परास्त करने के लिये इतनी बड़ी सेना खड़ी हो जाये! उन बहत्तर आदमियों में भी कितने ही बालक और कितने ही वृद्ध थे। फिर प्यास ने सभी को अधमरा कर रखा था। किंतु शत्रुओं के अवस्था को भली-भांति समझकर यह तैयारी की थी। हुसैन ही शक्ति न्याय और सत्य की शक्ति थी। यह यजीद और हुसैन का संग्राम न था। यह इस्लाम धार्मिक जन-सत्ता का पूर्व इस्लाम की राज-सत्ता से संघर्ष था। हुसैन उन सब व्यवस्थाओं के पक्ष में थे, जिनका हज़रत मोहम्मद द्वारा प्रादुर्भाव हुआ था। मगर यजीद उन सभी बातों का प्रतिपक्षी था। दैवयोग से इस समय अधर्म ने धर्म को पैरों-तले दबा लिया था, पर यह अवस्था एक क्षण में परिवर्तित हो सकती थी, और इसके लक्षण भी प्रकट होने लगे थे। बहुतेरे सैनिक जाने को तो चले जाते थे, परंतु अधर्म के विचार से सेना से भाग आते थे। जब ओबैदुल्लाह को यह बात मालुम हुई, तो उसने कई निरीक्षण नियुक्त किए। उनका काम यहीं था कि भागनेवालों का पता लगावे। कई सिपाही इस प्रकार जान से मार डाले गए। यह चाल ठीक पड़ी। भगोड़े भयभीत होकर फिर सेना में जा मिले।

इस संग्राम में सबसे घोर निर्दयता जो शत्रुओं ने हुसैन के साथ की, वह पानी का बंद कर देना था। ओबैदुल्लाह ने उमर को कड़ी ताक़ीद कर दी थी कि हुसैन के आदमी नदी के समीप न जाने पावें। यहां तक की वे कुएं खोदकर भी पानी न निकालनें पावें। एक सेना फ़रात-नदी की रक्षा करने कि लिये भेज दी गई। उसने हुसैन की सेना और नदी के बीच में डेरा जमाया। नदी की

ओर जाने का कोई रास्ता न रहा। थोड़े नहीं, छः हजार सिपाही नदी का पहरा दे रहे थे। हुसैन ने यह ढंग देखा, तो स्वयं इन सिपाहियों के सामने गए, और उन पर प्रभाव डालने की कोशिश की, पर उन पर कुछ असर न हुआ। लाचार होकर वह लौट आए। उस समय प्यास के मारे इनका कंठ सूखा जाता था, स्त्रियां और बच्चे बिलख रहे थे, किंतु उन पाषाण-हृदय पिशाचों को इन पर दया न आती थी।

शहीद होने के तीन दिन पहले हुसैन और अन्य प्राणी प्यास के मारे बेहोश हो गए। तब हुसैन ने अपने प्रिय बंधु अब्बास को बुलाकर, उन्हें बीस सवार तथा तीस पैदल देकर, उनसे कहा– "अपने साथ बीस-मश्कें ले जाओ और पानी से भर लाओ।" अब्बास ने सहर्ष इस आदेश को स्वीकार किया। वह नदी के किनारे पहुंचे। पहरेदार ने पुकारा– कौन हैं?" इधर उस पहरेदार का एक भाई भी था। वह बोला– "मैं हूं, तेरे चाचा का बेटा, पानी पीने आया हूं।"

पहरेदार ने कहा– पी ले।" भाई ने उत्तर दिया– "कैसे पी लूं?" जब हुसैन और उनके बाल-बच्चे प्यासे मर रहे हैं, तो मैं किस मुंह से पी लूं?" पहरेदार ने कहा– यह तो जानता हूं, पर करूं क्या, हुक्म से मजबूर हूं!" अब्बास के आदमी मश्के लेकर नदी की ओर गए, और पानी भर लिया। रक्षक-दल ने इनको रोकने की चेष्टा की, पर ये लोग पानी लिए हुए बच निकले।

हुसैन ने फिर अंतिम बार संधि करने का प्रयास किया। उन्होंने उमर-बिनसाद को संदेसा भेजा कि "आज मुझसे रात को, दोनों सेनाओं के बीच में, मिलना।" उमर निश्चित समय पर आया। हुसैन से उसकी बहुत देर तक एकांत में बात हुई। हुसैन ने संधि की तीन बातें बताई– (१) या तो हम लोगों को मक्के वापस जाने दिया जाये, (२) या सीमा-प्रांत की ओर शांतिपूर्वक चले जाने की अनुमति मिले, (३) या मैं यजीद के पास भेज दिया जाऊं। उमर ने ओबैदुल्लाह को यह शुभ सूचना सुनाई, और वह उसे मानने के लिये तैयार भी मालूम होता था, किंतु शिमर ने जोर दिया कि दुश्मन चंगुल में आ फंसा है, तो उसे निकलने न दो, नहीं तो उसकी शक्ति इतनी बढ़ जायेगी कि तुम उसका सामना न कर सकोगे। उमर मज़बूत हो गया।

मोहर्रम की ९ वीं तारीख को, अर्थात हुसैन की शहादत से एक दिन पहले, कूफ़ा के दिहातों से कुछ लोग हुसैन की सहायता करने आए। औबेदुल्लाह को यह बात मालूम हुई, तो उसने उन आदमियों को भगा दिया, और उमर को लिखा– "अब तुरंत हुसैन पर आक्रमण करो, नहीं तो इस टाल-मटोल की तुम्हें सज़ा दी जायेगी।" फिर क्या था; प्रातःकाल बाइस हज़ार योद्धाओं की सेना हुसैन से लड़ने चली। जुगून की चमक को बुझाने के लिये मेघ-मंडल का प्रकोप हुआ।

हुसैन को मालूम हुआ, तो वह घबराए। उन्हें यह अन्याय मालूम हुआ कि अपने साथ अपने साथियों और सहायकों के भी प्राणों की आहुति दें। उन्होंने इन लोगों को इसका एक अवसर देना उचित समझा कि वे चाहें, तो अपनी जान बचावें, क्योंकि यजीद को उन लोगों से कोई शत्रुता न थी। इसलिए उन्होंने उमर-बिन-साद को पैग़ाम भेजा कि हमें एक रात के लिये मोहलत दो। उमर ने अन्य सहायकों तथा परिवारवालों को बुलाकर कहा– "कल ज़रूर यह भूमि मेरे खून से लाल हो जायेगी। मैंने तुम लोगों का हृदय से अनुगृहीत हूं कि तुमने मेरा साथ दिया। मैं अल्लाहताला से दुआ करता हूं कि वह तुम्हें इस नेकी का जवाब दे। तुमसे अधिक वीरात्मा और पवित्र हृदयवाले मनुष्य संसार में न होंगे मैं तुम लोगों को सहर्ष आज्ञा देता हूं कि तुममें से जिसकी जहाँ इच्छा हो, चल जाय, मैं किसी को दबाना नहीं चाहता, न किसी को मजबूर करता हूं। किंतु इतना अनुरोध अवश्य करूँगा कि तुममें से प्रत्येक मनुष्य मेरे आत्मीय जनों में से एक-एक को अपने साथ ले ले। संभव है, खुदा तुम्हें तबाही से बचा ले, क्योंकि शत्रु मेरे रुधिर का प्यासा है। मुझे पा जाने पर उसकी और किसी की तलाश न होगी।

यह कहकर उन्होंने इसलिये चिराग़ बुझा दिया कि जाने वालों को संकोचवश वहां न रहना पड़े। कितना महान्, पवित्र और निस्वार्थ आत्मसमर्पण है।

किंतु इस वाक्य का समाप्त होना था कि सब लोग चिल्ला उठे– "हम ऐसा नहीं कर सकते। खुदा वह दिन न दिखावे कि हम आपके बाद जीते रहें। हम दूसरों को क्या मुँह दिखायेंगे? उनसे क्या यह कहेंगे कि हम अपने स्वामी, अपने बंधु तथा इष्ट मित्र को शत्रुओं के बीच में छोड़ आए, उनके साथ एक भाला भी न चलाया, हम अपने को, अपने धन को और अपने कुल को आपके चरणों पर न्योछावर कर देंगे।"

इस तरह ९ वीं तारीख, मोहर्रम की रात, आधी कटी। शेष रात्रि लोगों ने ईश्वर-प्रार्थना में काटी। हुसैन ने एक रात की मोहलत इसलिये नहीं ली थी कि समर की रही-सही तैयारी पूरी कर ले। प्रातःकाल तब सब लोग सिजदे करते और अपनी मुक्ति के लिये दुआएं मांगते रहे।

प्रभात हुआ– वह प्रभात, जिनकी संसार के इतिहास में उपमा नहीं है? किसकी आँखों ने यह अलौकिक दृश्य देखा होगा कि ७२ आदमी बाइस हजार योद्धाओं के सम्मुख खड़े हुसैन के पीछे सुबह की नमाज इसलिये पढ़ रहे हैं कि अपने इमाम के पीछे नमाज पढ़ने का शायद यह अंतिम सौभाग्य है। वे कैसे रणधीर पुरुष हैं, जो जानते हैं कि एक क्षण में हम सब-के-सब इस आंधी में उड़ जायेंगे लेकिन फिर भी पर्वत की भांति अचल खड़े हैं, मानों संसार में कोई ऐसी शक्ति नहीं है, जो उन्हें भयभीत कर सके। किसी के मुख पर चिंता नहीं, कोई निराश और हताश नहीं है। युद्ध के उन्माद ने, अपने सच्चे स्वामी के प्रति अटल विश्वास ने, उनके मुख को तेजस्वी बना दिया है। किसी के हृदय में कोई अभिलाषा नहीं है। अगर कोई अभिलाषा है, तो यही कि कैसे अपने

स्वामी की रक्षा करें। इसे सेना कौन कहेगा, जिसके दमन को बाइस हजार योद्धा एकत्र किए गए थे। इन बहत्तर प्राणियों में एक भी ऐसा न था, जो सर्वथा लड़ाई के योग्य हो। सब-के-सब भूख-प्यास से तड़प रहे थे। कितनों के शरीर पर तो मांस का नाम तक नहीं था, और उन्हें बिना ठोकर खाए दो पग चलना भी कठिन था। इस प्राण-पीड़ा के समय ये लोग उस सेना से लड़ने को तैयार थे, जिसमें अरब देश के वे चुने हुए जवान थे, जिन पर अरब को गर्व हो सकता था।

उन दिनों समर की दो पद्धतियाँ थीं– एक तो सम्मिलित, जिसमें समस्त सेना मिलकर लड़ती थी, और दूसरी व्यक्तिगत, जिसमें दोनों दलों से एक-एक योद्धा निकलकर लड़ते थे। हुसैन के साथ इतने कम आदमी थे कि सम्मिलित संग्राम में शायद वह एक क्षण भी न ठहर सकते। अतः उनके लिए दूसरी शैली ही उपयुक्त थी। एक-एक करके योद्धागण समर-क्षेत्र में आने और शहीद होने लगे। लेकिन इसके पहले अंतिम बार हुसैन ने शत्रुओं से बड़ी ओजस्वी भाषा में अपनी निर्दोषिता सिद्ध की। उनके अंतिम शब्द ये थे–

"खुदा की कसम, मैं पद-दलित और अपमानित होकर तुम्हारी शरण न जाऊंगा, और न मैं दासों की भांति लाचार होकर यजीद की खिलाफ़त को स्वीकार करूंगा। ऐ खुदा के बंदो! मैं खुदा से शांति का प्रार्थी हूँ। और उन प्राणियों से जिन्हें, खुदा पर विश्वास नहीं है, जो ग़रूर में अंधे हो रहे हैं पनाह मांगता हूँ।"

शेष कथा आत्म-त्याग, प्राणसमर्पण, विशाल धैर्य और अविचल वीरता की अलौकिक और स्मरणीय गाथा है, जिसके कहने और सुनने से आंखों में आंसू उमड़ आते हैं, जिस पर रोते हुए लोगों की १३ शताब्दियां बीत गई और अभी अनंत शताब्दियां रोते बीतेंगी।

हुर का जिक्र पहले आ चुका है। यह वही पुरुष है, जो एक हज़ार सिपाहियों के साथ हुसैन के साथ-साथ आया था, और जिसने उन्हें इस निर्जल मरुभूमि पर ठहरने को मज़बूर किया था। उसे अभी तक आशा थी कि शायद ओबैदुल्लाह हुसैन के साथ न्याय करे। किंतु जब उसने देखा कि लड़ाई छिड़ गई, और अभी समझौते की कोई आशा नहीं है, तो अपने कृत्य पर लज्जित होकर वह हुसैन की सेना से आ मिला। जब वह अनिश्चित भाव से अपने मोरचे से निकलकर हुसैन की सेना की ओर चला, तब उसी सेना के एक सिपाही ने कहा– 'तुमको मैंने किसी लड़ाई में इस तरह काँपते हुए चलते नहीं देखा।'

हुर ने उत्तर दिया– "मैं स्वर्ग और नरक की दुविधा में पड़ा हुआ हूं, और सच यह है कि मैं स्वर्ग के सामने किसी चीज की हस्ती नहीं समझता, चाहे कोई मुझे मार डाले।"

यह कहकर उसने घोड़े के एड़ लगाई, और हुसैन के पास आ पहुंचा। हुसैन ने उसका अपराध क्षमा कर दिया, और उसे गले से लगाया। तब हुर ने अपनी सेना को संबोधित करके कहा– "तुम

लोग हुसैन की शर्तें नहीं मानते? कितने खेद की बात है कि तुमने स्वयं उन्हें बुलाया, और जब वह तुम्हारी सहायता करना चाहते हैं, किंतु तुम लोग उन्हें कहीं जाने भी नहीं देते? सबसे बड़ा अन्याय यह कह रहे हो कि उन्हें नदी से पानी नहीं लेने देते! जिस पानी को पशु और पक्षी तक पी सकते हैं, 'वह भी उन्हें मयस्सर नहीं!''

इस पर शत्रुओं ने उन पर तीरों की वर्षा कर दी, और हुर भी लड़ते हुए वीर-गति को प्राप्त हुए। उन्हीं के साथ उनका पुत्र भी शहीद हुआ। आश्चर्य होता है और दुःख भी कि इतना सब कुछ हो जाने पर भी हुसैन को इन नर-पिशाचों से कुछ कल्याण की आशा बनी हुई थी। वह जब अवसर पाते थे, तभी अपनी निर्दोषिता प्रकट करते हुए उनसे आत्मरक्षा की प्रार्थना करते थे। दुराशा में भी यह आशा इसलिये थी कि वह हज़रत मोहम्मद के नवासे थे, और उन्हें आशा होती थी कि शायद अब भी मैं उनके नाम पर इस संकट से मुक्त हो जाऊं। उनके इन सभी संभाषणों में आत्मरक्षा की इतनी विशद चिंता व्याप्त है, जो दीन चाहे न हो, पर करुण अवश्य हैं, और एक आत्मदर्शी पुरुष के लिये, जो हो कि स्वर्ग में हमारे लिये अकथनीय सुख उपस्थित है शोभा नहीं देती। हुर के शहीद होने के पश्चात् हुसैन ने फिर शत्रु-सेना के सम्मुख खड़े होकर कहा–

''मैं तुमसे निवेदन करता हूं कि मेरी इन तीन बातों में से एक को मान लो।

(१) ''मुझे यजीद के पास जाने दो कि उससे बहस करूं। यदि मुझे निश्चय हो जायेगा कि वह सत्य पर है, तो मैं उसकी बैयत कर लूंगा।''

इस पर किसी पाषाण-हृदय ने कहा– ''तुम्हें यजीद के पास न जाने देंगे। तुम मधुरभाषी हो, अपनी बातों में उसे फंसा लोगे, और इस समय मुक्त होकर देश में विद्रोह फैला दोगे।''

(२) ''जब यह नहीं मानते, तो छोड़ दो कि मैं अपने नाना के रोज़े की मुजाविरी करूँ।''

(इस पर भी किसी ने उपर्युक्त शंका प्रकट की)

(३) ''अगर ये दोनों बातें तुम्हें अस्वीकार हैं, तो मुझे और मेरे साथियों को पानी दो; क्योंकि प्राणि-मात्र को पानी लेने का हक है।''

(इसका भी वैसा ही कठोर निराशाजनक उत्तर मिला।)

इस प्रश्नोत्तर के बाद हुसैन की ओर से बुरीर मैदान में आए। उधर से मुअक्कल निकला। बुरीर ने अपने प्रतिपक्षी को मार लिया और फिर खुद सेना के हाथों मारे गए। बुरीर के बाद अब्दुल्लाह निकले और दस-बीस शत्रुओं को मारकर काम आए।

अब्दुल्लाह के बाद उनका पुत्र, जिसका नाम वहब था, मैदान में आया था। उसकी वीर-गाथा अत्यंत मर्मस्पर्शी हैं, और राजपूतों के अमर वीर-वृत्तांत को याद दिलाती है। वहब का विवाह

हुए अभी केवल सत्रह दिन हुए थे। हाथ की मेहंदी तक न छूटी थी। जब उसके पिता शहीद हो गए, तो उसकी माता उससे बोलीं–

"मीख्वाहम कि मरा अज़ खूने-खुद शरबते दिही ताशीरे कि अजपिस्ताने मन खुरदई बर तो हलाल गरदद।"

कितने सुंदर शब्द है, जो शायद ही किसी वीर-माता के मुंह से निकले होंगे। भावार्थ यह है–

'मेरी इच्छा है कि तू अपने रक्त का एक घूंट मुझे दे, जिसमें कि यह दूध जो तूने मेरे स्तन से पिया है, तुझ पर हलाल हो जाये।'

वहब के शहीद हो जाने के बाद क्रम से कई योद्धा निकले, और मारे गए थे इस्लामी पुस्तकों में तो उनकी वीरता का बड़ा प्रशंसात्मक वर्णन किया गया है। उनमें से प्रत्येक ने कई-कई सौ शुत्रओं को परास्त किया। ये भक्तों के मानने की बातें हैं। जो लोग प्यास से तड़प रहे थे, भूख से आंखों-तले, अंधेरा छा जाता था उनमें इतनी असाधारण शक्ति और वीरता कहां से आ गई? उमर-विन-साद की सेना में 'शिमर' बड़ा क्रूर और दुष्ट आदमी था। इस समर में हुसैन और उनके साथियों के साथ जिस अपमान-मिश्रित निर्दयता का व्यवहार किया गया। उसका दायित्व इसी शिमर के सिर है। यह धार्मिक संग्राम था, और इतिहास साक्षी है कि धार्मिक संग्राम में पाशविक प्रवृत्तियां अत्यंत प्रचंड रूप धारण कर लेती हैं। पर इस संग्राम में ऐसे प्रतिष्ठित प्राणी के साथ जितनी घोर दुष्टता और दुर्जनता दिखाई गई, उसकी उपमा संसार के धार्मिक संग्रामों में भी मुश्किल से मिलेगी। हुसैन के जितने साथी शहीद हुए, प्रायः उन सभी की लाशों को पैरों तले रौंदा गया, उनके सिर काटकर भालों पर उछाले और पैरों से ठुकराए गए। पर कोई भी अपमान और बड़ी-से-बड़ी निर्दयता उनकी उस कीर्ति को नहीं मिटा सकती, जो इस्लाम के इतिहास का आज भी गौरव बढ़ा रही है। इस्लाम के साहित्य और इतिहास में उन्हें वह स्थान प्राप्त है, जो हिंदू-साहित्यों में अंगद, जामवंत, अर्जुन, भीम आदि को प्राप्त है। सूर्यास्त होते-होते सहायकों में कोई भी नहीं बचा।

अब निज कुटुंब के योद्धाओं की बारी आई। इस वंश के पूर्वज हाशिम नाम के एक पुरुष थे। इसीलिए हज़रत मोहम्द का वंश हाशिम कहलाता है। इस संग्राम में पहला हाशिमी जो क्षेत्र में आया, वह अब्दुल्ला था। यह उसी मुसलिम नाम के वीर का बालक था, जो पहले शहीद हो चुका था। उसके बाद कुटुंब के और वीर निकले। जाफ़र इमाम हसन के तीन बेटे, अब्बास के कई भाई, हज़रत अली के कई बेटे और सब बारी-बारी से लड़कर शहीद हुए। हज़रत अब्बास से हुसैन ने कहा– "मैं बहुत प्यासा हूं।" संध्या हो गई थी। अब्बास पानी लाने चले, पर रास्ते में घिर गए। वह असाधारण वीर पुरुष थे। हाशिमी लोगों में इतनी वीरता से कोई नहीं लड़ा। एक

हाथ कट गया, तो दूसरे हाथ से लड़े। जब वह हाथ भी कट गया, तो जमीन पर गिर पड़े। उनके मरने का हुसैन को अत्यंत शोक हुआ। बोले– "अब मेरी कमर टूट गई।" अब्बास के बाद हुसैन के नौजवान बेटे अकबर मैदान में उतरे। हुसैन ने अपने हाथों उन्हें शस्त्रों से सुसज्जित किया। आह! कितना हृदय-विदारक दृश्य है। बेटे ने खड़े होकर हुसैन से जाने की आज्ञा मांगी, पिता का वीर हृदय अधीर हो गया। हुसैन ने निराशा और शोक से अली अकबर को देखा, फिर आँखें नीची कर लीं और रो दिए। जब वह शहीद हो गया तो शोक-विह्वल पिता ने जाकर लाश के मुंह पर अपना मुंह रख दिया, और कहा– "बेटा, तुम्हारे बाद अब जीवन को धिक्कार है।" पुत्र-प्रेम की इहलोक की ममता के आदर्श पर, गौरव पर कितनी बड़ी विजय है?

अब हुसैन अकेले रह गए। केवल एक सात वर्ष का भतीजा और हसन का एक दुधमुंहां पोता बाकी था। हुसैन घोड़े पर सवार महिलाओं के खीमों की ओर आए, और बोले– "बच्चे को लाओ, क्योंकि अब उसे कोई प्यार करने वाला न रहेगा।" स्त्रियों ने शिशु को उनकी गोद में रख दिया। वह अभी उसे प्यार कर रहे थे कि अकस्मात् एक तीर उसकी छाती में लगा, और वह हुसैन की गोद में ही चल बसा? उन्होंने तुरंत तलवार से गड्ढा खोदा, और बच्चे की लाश वहीं गाड़ दी? फिर अपने भतीजे को शत्रुओं के सामने खड़ा करके बोले– "ऐ अत्याचारियों, तुम्हारी निगाह में मैं पापी हूं, पर इस बालक ने तो कोई अपराध नहीं किया, इसे क्यों प्यासा मारते हो?" यह सुनकर किसी नर-पिशाच ने एक तीर चलाया, जो बालक के गले को छेदता हुआ हुसैन की बांह में गड़ गया। तीर के निकलते ही बालक की क्रीड़ाओं का अंत हो गया।

हुसैन अब रण-क्षेत्र की ओर चले। अब तक रण में जाने वालों को वह अपने खीमे के द्वार तक पहुंचाने आया करते थे। उन्हें पहुंचाने वाला अब कोई मर्द न था। तब आपकी बहन जैनब ने आपको रोकर विदा किया। हुसैन अपनी पुत्री सकीना को बहुत प्यार करते थे। जब वह रोने लगी, तो आपने उसे छाती से लगाया, और तत्काल शोक के आवेग में कई शेर पढ़े, जिनका एक-एक शब्द करुण-रस में डूबा हुआ है। उनके रण-क्षेत्र में आते ही शत्रुओं में खलबली पड़ गई, जैसे गीदड़ों में शेर आ गया। हुसैन तलवार चलाने लगे, और इतनी वीरता से लड़े कि दुश्मनों के छक्के छूट गए। जिधर उनका घोड़ा बिजली की तरह कड़ककर जाता था, लोग काई की भांति फट जाते थे। कोई सामने आने की हिम्मत न कर सकता था। इस भांति सिपाहियों के दलों को चीरते-फाड़ते वह फ़रात के किनारे पहुंच गए, और पानी पीना चाहते थे कि किसी ने कपट भाव से कहा–

"तुम यहाँ पानी पी रहे हो, उधर सेना स्त्रियों के खीमों में घुसी जा रही है।" इतना सुनते ही लपककर इधर आए, तो ज्ञात हुआ कि किसी ने छल किया है। फिर मैदान में पहुँचे, और शत्रु-दल

का संहार करने लगे। यहाँ तक कि शिमर ने तीन सेनाओं को मिलाकर उन पर हमला करने की आज्ञा दी। इतना ही नहीं बग़ल से और पीछे से भी उन पर तीरों की बौछार होने लगी। यहाँ तक कि जख़्मों से चूर होकर वह जमीन पर गिर पड़े, और शिमर की आज्ञा से एक सैनिक ने उनका सिर काट लिया। कहते हैं, जैनब यह दृश्य देखने के लिये खीमें से बाहर निकल आई थी। उसी समय उमर-बिन-साद से उसका सामना हो गया। तब वह बोली– "क्यों उमर, हुसैन इस बेकसी से मारे जायें, और तुम देखते रहो।" उमर का दिल भर आया आंखें सजल हो गई और कई बूंदें डाढ़ी पर गिर पड़ी।

हुसैन की शहादत के बाद शत्रुओं ने उनकी लाश की जो दुर्गति की, वह इतिहास की अत्यंत लज्जाजनक घटना है। उससे यह भली-भांति प्रकट हो जाता है कि मानव-हृदय कितना नीचे गिर सकता है। गुरु-गोविन्दसिंह के बच्चे की कथा भी यहाँ मात हो जाती हैं, क्योंकि ऐसा शायद ही कभी हुआ हो कि किसी धर्म-संचालक के नवासों को अपने नाना के अनुयायियों के हाथों पर बुरा दिन देखना पड़ा हो।

बोध प्रश्न

1. कर्बला नाटक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
2. कर्बला शीर्षक की उपयुक्तता पर टिप्पणी लिखिए
3. कर्बला दुःखान्त नाटक है समीक्षा कीजिए।

16.4.4 कर्बला नाटक के मार्मिक संवाद

[दोपहर का समय। हुसैन अपने खेमे में खड़े है, जैनब, कुलसूम, सकीना, शहरबानू, सब उन्हें घेरे खड़े हैं।]

हुसैन– जैनब, अब्बास के बाद अली अकबर दिल को तस्कीन देता था। अब किसे देखकर दिल को ढाढ़स दूं? हाय! मेरा जवान बेटा प्यासा तड़प-तड़पकर मर गया! किस शान से मैदान की तरफ़ गया था। कितना हंसमुख, कितना हिम्मत का धनी! जैनब, मैंने उसे कभी उदास नहीं देखा, हमेशा मुस्कुराता रहता था। ऐ आंखों! अगर रोई, तो तुम्हें निकालकर फेंक दूंगा। खुदा की मर्जी में रोना कैसा! मालूम होता है, सारी कुदरत मुझे तबाह करने पर तुली हुई है। यह धूप कि उसकी तरफ ताकने ही से आंखें जलने लगती है! यह जलता हुआ बालू, ये लू के झूलसाने वाले झोंके, और यह प्यास! यों जिंदा जलना तीरों और भालों के जख्मों से कहीं ज्यादा सख्त है।

[अली असगर आता है, और बेहोश होकर गिर पड़ता है।]

शहरबानू– हाय, मेरे बच्चे को क्या हुआ!

हुसैन– (असगर को गोद में उठाकर) आह! यह फूल पानी के बग़ैर मुर्झाया जा रहा है। खुदा, इस रंज में अगर मेरी जबान से तेरी शान में कोई बेअदबी हो जाये, तो माफ कीजिए, मैं अपने होश में नहीं हूं। एक कटोरे पानी के लिए इस वक्त मैं जन्नत के हाथ धोने को तैयार हूं।

[असगर को गोद में लिए खेमे से बाहर आकर।]

ऐ जालिम क़ौम, अगर तुम्हारे खयाल में गुनहगार हूं, तो इस बच्चे ने तो कोई खता नहीं की है, इसे एक घूंट पानी पिला दो। मैं तुम्हारी नबी का नेवासा हूं, अगर इसमें तुम्हें शक है, तो काबा का बेकस मुसाफिर तो हूं। इससे भी अगर तुम्हें ताम्मुल हो, तो मुसलमान तो हूं। यह भी नहीं, तो अल्लाह का एक नाचीज बंदा तो हूं। क्या मेरे मरते हुए बच्चे पर तुम्हें इतना रहम भी नहीं आता?

मैं यह नहीं कहता हूं कि पानी मुझे ला दो,
तुम आन के चिल्लू से इसे आब पिला दो।
मरता है यह, मरते हुए बच्चे को जिला दो,
लिल्लाह, कलेजे की मेरी आग बुझा दो।
जब मुंह मेरा तकता है यह हसरत की नजर से,
ऐ जालिमो, उठता है धुआं मेरे जिगर से।

[शिमर एक तीर मारता है, असगर के गले को छेदता हुआ हुसैन के बाजू में चुभ जाता है। हुसैन जल्दी से तीर को निकालते हैं और तीर निकलते ही असगर की जान निकल जाती है। हुसैन असगर को लिये फिर खेमे में आते हैं।]

शहरबानू– यह मेरा फूल-सा बच्चा!

हुसैन– हमेशा के लिये इसकी प्यास बुझ गई। (खून से चिल्लू भरकर आसमान की तरफ उछालते हुए।) इस सब आफ़तों का गवाह खुदा हैं। अब कौन है, जो जालिमों से इस खून का बदला लें।

[सज्जाद चारपाई से उठकर, लड़खड़ाते हुए मैदान की तरफ चलते हैं।]

जैनब– अरे बेटा, तुम में तो खड़े होने की भी ताब नहीं, महीनों से आंखें नहीं खोली, तुम कहाँ जाते हो।

सज्जाद– बिस्तर पर मरने से मैदान में मरना अच्छा है। जब सब जन्नत पहुंच चुके, तो मैं यहां क्यों पड़ा रहूं।?

हुसैन– बेटा, खुदा के लिये बाप के ऊपर रहम करो, वापस जाओ। रसूल की तुम्हीं एक निशानी हो। तुम्हारे ही ऊपर औरतों की हिफ़ाजत का भार है। आह! और कौन है, जो इस फ़र्ज को अदा

करे। तुम्हीं मेरे जांनसीन हो, इन सबको तुम्हारे हवाले करता हूं। खुदा हाफिज! ऐ जैनब, ऐ कुलसूम, ऐ सकीना, तुम लोगों पर मेरा सलाम हो कि यह आखिरी मुलाकात है।

[जैनब रोती हुई हुसैन से लिपट जाती है।]

[हुसैन दरिया की तरफ़ जाते हैं।]

शिमर– अब और भी गजब हो गया, पानी पीकर लौटे, तो खुदा जाने क्या करेंगे। हज्जात को ताकीद करनी चाहिए कि दरिया का रास्ता न दे।

[हज्जाज को बुलाकर]

हज्जाज, हुसैन को हर्गिज दरिया की तरफ न जाने देना।

हज्जाज– (स्वगत) यह अजाब क्यों अपने सिर लूं। मुझे भी तो रसूल से कयामत में काम पड़ेगा। (प्रकट) जी हां, आदमियों को जमा कर रहा हूं।

[हुसैन घोड़े की बाग ढीली कर देते हैं, पर वह पानी की तरफ गर्दन नहीं बढ़ाता, मुंह फेरकर हुसैन की रकाब को खींचता है।]

हुसैन– आह! मेरे प्यारे बेजबान दोस्त! तू हैवान होकर आक़ा का इतना लिहाज करता है, ये इंसान होकर अपने रसूल के बेटे के खून के प्यासे हो रहे हैं। मैं तब तक पानी पीऊंगा, जब तक तू न पिएगा।

(पानी पीना चाहते हैं।)

हज्जा– हुसैन, तुम यहां पानी पी रहे हो, और लश्कर खेमों में घुसा जाता है।

हुसैन– तू सच कहता है?

हुसैन– यकीन न आए, जो जाकर देख आओ।

हुसैन– (स्वगत) इस बेकली की हालत में कोई मुझसे दग़ा नहीं कर सकता। मरते हुए आदमी से दग़ा करके कोई क्यों अपनी इज्जत से हाथ धोएगा।

[घोड़े को फेर देते हैं, और दौड़ते हुए खेमे की तरफ़ आते हैं।]

आह! इंसान उसने कहीं ज्यादा कमीना और कोरबातिन है, जितना मैं समझता था। इस आखिरी वक्त में मुझसे दग़ा की और महज इसलिए कि मैं पानी न पी सकूं।

[फिर मैदान में आकर लश्कर पर टूट पड़ते हैं, सिपाही इधर-उधर भागने लगते हैं।]

शिमर– (तीर चलाकर) तुम मेरे ही हाथों मरोगे।

[तीर हुसैन के मुंह में लगता है, और वह घोड़े से गिर पड़ते हैं। फिर संभलकर उठते हैं, और तलवार चलाने लगते हैं।]

साद– शिमर, तुम्हारे सिपाही हुसैन के खेमों की तरफ़ जा रहे हैं, यह मुनासिब नहीं।

शिमर– औरतों का हिफाजत करना हमारा काम नहीं है।

हुसैन– (दाढ़ी से खून पोछते हुए) साद, तुम्हें दीन का खौफ़ नहीं है, तो इंसान तो हो, तुम्हारी भी तो बाल-बच्चे हैं। इन बदमाशों को मेरे खेमों में आने से क्यों नहीं रोकते ?

साद– आपके खेमों में कोई न जा सकेगा, जब तक मैं जिंदा हूं।

[खेमो के सामने आकर खड़ा हो जाता है।]

जैनब– (बाहर निकलकर) क्यों साद! हुसैन इस बेकसी से मारे जायें, और तुम खड़े देखते रहो? माल और दुनिया तुम्हें इतनी प्यारी है!

[साद मुंह फेरकर रोने लगता है।]

शिमर– तुफ् है तुम पर ऐ जवानों! एक प्यादा भी तुमसे नहीं मारा जाता! तुम अब नाहक डरते हो। हुसैन में अब जान नहीं है, उनके हाथ नहीं उठते, पैर थर्रा रहे हैं, आँखें झपकी जाती है, फिर भी तुम उनको शेर समझ रहे हो।

हुसैन– (दिल में) मालूम नहीं, मैंने कितने आदमियों को मारा, और अब भी मार सकता हूं, है तो मेरे नाना ही की उमत्त, हैं तो सब मुसलमान, फिर इन्हें मारूं, तो किसलिये? अब कौन है, जिसके लिये जिंदा रहूं? हाय, अकबर! किससे कहें, जो खूने-जिगर हमने पिया है, बाद ऐसे पिसर के भी कहीं बाप जिया है।

हाय अब्बास!

अब्बास–

गश आता है हमें प्यास के मारे,
उलफ़त हमें ले आई है फिर पास तुम्हारे।
इन सूखे हुए होठों से होठों को मिला के,
कुछ मशक में पानी हो, तो भाई पिला दो।
लेटे हुए हो रेत में क्यों मुंह को छिपाए?
ग़ाफिल हो बिरादर तुम्हें किस तरह जगाएं?
खुश हूंगा में, आगे जो अलम लेके बढ़ोगे,
क्या भाई के पीछे न नमाज आज पढ़ोगे?

लड़ते-लड़ते शाम हो गई, हाथ नहीं उठते। आखिरी नमाज पढ़ लूं। काश नमाज पढ़ते हुए सिर कट जाता, तो कितना अच्छा होता!

[हुसैन नमाज में झुक जाते है, अशअस पीछे आकर उनके कंधे पर तलवार मारता है। क़ीस दूसरे कंधे पर तलवार चलाता है। हुसैन उठते हैं, फिर गिर पड़ते हैं, फौज़ में सन्नाटा छा जाता है। सबके सब आकर उन्हें घेर लेते हैं।]

शिमर– खलीफा यजीद ने हुसैन का सिर मांगा था, कौन है यह फख हासिल करना चाहता है?

[एक सिपाही आगे बढ़कर तलवार चलाता है। मुसलिम की छोटी लड़की दौड़ी हुई खेमे से आती है, और हुसैन की पीठ पर हाथ रख देती है।]

नसीमा– ओ खबीस, क्या तू मेरे चचा का कत्ल करेगा?

[तलवार नसीमा के दोनों हाथों पर पड़ती है, और हाथ कट जाते हैं।]

[शीस तलवार लेकर आगे बढ़ता है, हुसैन का मुंह देखते ही तलवार उसके हाथ से छूटकर गिर पड़ती हैं।]

शिमर– क्यों, तलवार क्यों डाल दी?

शीस– उन्होंने जब आंखें खोलकर मुझे देखा, तो मालूम हुआ कि रसूल की आंखें हैं। मेरे होश उड़ गए।

कीस– मैं जाता हूं।

[तलवार लेकर जाता है, तलवार हाथ से गिर पड़ती हैं और उल्टे कदम कांपता हुआ लौट आता है।]

शिमर– क्यों, तुम्हें क्या हो गया?

क़ीम– यह हुसैन नहीं, खुद रसूल पाक हैं। रोब से मेरे होश गायब हो गए या खुदा जहन्नुम की आग में न डालियो।

शिमर– इनकी मौत मेरे हाथों लिखी हुई है। तुम सब दिल के कच्चे हो

[तलवार लेकर हुसैन के सीने पर चढ़ बैठता है।]

हुसैन– (आंखें खोलते हैं, और उसकी तरफ ताकते हैं।)

शिमर– मैं उन बुजदिलों में नहीं हूं, जो तुम्हारी निगाहों से दहल उठे थे।

हुसैन– तू कौन है?

शिमर– मेरा नाम शिमर है।

हुसैन– मुझे पहचानता है?

शिमर– खूब पहचानता हूं, तुम अली और फ़ातिमा के बेटे और मुहम्मद के नेवासे हो।

हुसैन– यह जानकर भी तू तुझे कत्ल करता है?

शिमर– मुझे जन्नत से जागीरें ज्यादा प्यारी हैं।

[तलवार मारता है, हुसैन का सिर जुदा हो जाता है।]

साद– रोता हुआ शिमर जियाद से कह देना, मुझे 'रै' की जागीर से माफ़ करें। शायद अब भी नजात हो जाय।

[अपने सीने में नेजा चुभा लेता है, और बेजान होकर गिर पड़ता है। फौज के कितने ही सिपाही हाथों में मुंह छिपाकर रोने लगते हैं। खेमों से रोने की आवाजें आने लगती हैं।]

बोध प्रश्न :-

1- शिमर व हुसैन के मध्य संवाद को रेखांकित कीजिए।

2- असगर को तीर लगने की मार्मिक एवं हृदयविदारक घटना का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए ।

16.4.5 नाटकीयता -

प्रेमचंद जानते थे कि इस नाटक का यथावत् मंचन नहीं हो सकता। उन्होंने मंचन की दृष्टि से इस नाटक की रचना नहीं की। इसे एक पाठ्य रचना के रूप में लिखा । नाटक में अनगिनत पात्र दृश्य परिवर्तन और घटना बहुलता है जिन्हें रंगमंच पर प्रदर्शित नहीं किया जा सकता। यदि कोई निर्देशक रंगमंच की सुविधा के अनुसार इस नाटक का मंचन करना चाहे तो कर सकता है। पाँच अंकों के इस नाटक में 42 बार दृश्य परिवर्तन होता है युद्ध आदि घटनाओं का चित्रण नहीं किया जाता, इसलिए पात्र युद्ध की विभीषिका का वर्णन करते जाते हैं। आलोचकों का विचार है कि प्रेमचंद नाटककार नहीं थे, वे मूलतः उपन्यासकार थे। इसलिए उन्होंने नाटक को भी उपन्यास की तरह ही लिखा उपन्यास में जीवन की पूर्णता का वर्णन होता है। 'कर्बला के जितने प्रसंग थे या जितने प्रसंग हो सकते थे, सबका आयोजन उन्होंने इस नाटक में कर दिया। उसके बाद उन्होंने 'कर्बला के संघर्ष का चित्रण कर दिया। इसलिए वे संवाद के माध्यम से कथा को विकसित करते हैं आगे-पीछे जो घटित हो गया, उसकी जानकारी देते हैं युद्ध, बैठक आदि दृश्यों को तो दिखाया नहीं जा सकता, इसलिए वे संवादों में इसकी सूचना दे देते हैं। वैसे कुछ आलोचकों का मत है कि नाटक में 'दृश्यांश' मुख्य होता है। दिखाए जाने वाले दृश्य ज्यादा महत्वपूर्ण होते हैं जिस नाटक में सूच्यांश अधिक होते हैं, वह नाटक नाट्यकला की दृष्टि से कमजोर माना जाता है। लेखक को नाटक का अंत पता है, पाठक को भी पता होता है अतः इसमें किसी प्रकार के कुतूहल की सृष्टि नहीं होती, न कथा में अचानक परिवर्तन होता है, न पात्र

एकाएक बदलते हैं। इतिहास को जिस विस्तार से प्रेमचंद ने इसमें वर्णित किया है, उससे भी इसकी नाटकीय संभावना कम हो जाती है।

बोध प्रश्न –

1- कर्बला नाटक की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए।

16.4.6 कर्बला नाटक की भाषा

प्रेमचंद उर्दू से हिंदी में आए थे। प्रारम्भ में वे उर्दू में लिखते थे, हिंदी में बाद में लिखने लगे। हिंदी में लिखते समय भी उनका उर्दू में लेखन जारी रहा। इस कारण प्रेमचंद की भाषा पर उर्दू का स्वाभाविक प्रभाव है। प्रेमचंद की यह परंपरा राजा शिव प्रसाद सितारे हिंदी की भाषा से आती है। इनसे भिन्न भाषा परंपरा राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा से विकसित हुई, जो आगे चलकर प्रसाद और अज्ञेय की संस्कृतनिष्ठ भाषा बनी। इस नाटक की विषयवस्तु मुस्लिम इतिहास से संबद्ध है, इसलिए इसमें संस्कृतनिष्ठ भाषा अस्वाभाविक प्रतीत होती है इसी को ध्यान में रखते हुए प्रेमचंद ने ऐसी भाषा रखी है जो साधारणतः सभ्य समाज में प्रयोग की जाती है, जिसे हिन्दू और मुसलमान दोनों ही बोलते और समझते है-

"अब्दुल्लाह जागरी ज्यादा नहीं, तो परवरिश तो हो ही जाती है वह फौरन छिन जायगी। कितनी मेहनत से हमने मेवों का बाग लगाया है। यह कब गवारा होगा कि हमारी मेहनत का फल दूसरे खाएँ। कलाम पाक की कसम, मेरे बाग पर बड़ों-बड़ों को रश्क है।

कमर : बाग के लिए ईमान बेचना पड़े तो बाग की तरफ़ आँख उठाकर देखना भी गुनाह है।

अब्दुल्लाह : क़मर, मामला इतना आसान नहीं है, जितना तुमने समझ रखा है। जायदाद के लिए इंसान अपनी जान देता है, भाई-भाई दुश्मन हो जाते हैं, बाप-बेटों में, मियाँ बीबी में तिफ़ाक़ पड़ जाता है। अगर उसे लोग इतनी आसानी से छोड़ सकते तो दुनिया जन्नत बन जाती।"

हालाँकि सिर्फ हिंदी जानने वाले छात्रों को यह भाषा दुरूह जान पड़ती है। इसमें कई शब्द ऐसे आ गए हैं जो उर्दू न जानने वाले छात्रों की समझ में नहीं आएँगे- उदाहरण के लिए जलाक्तन (देश निकाला), माजूल करना (पद से हटा देना) कुछ शब्द ऐसे अवश्य हैं जो उर्दू में प्रयोग किए जाते हैं, हालाँकि हिंदी वाले भी उन्हें समझ सकते हैं। उदाहरण के लिए मुनासिब, औलाद, दगाबाज, रश्क आदि । नाटक में जहाँ हिन्दू पात्र आते हैं, वहाँ उनकी भाषा तत्सम बहुल हो जाती है। उदाहरण के लिए धर्मात्मा शस्त्र ग्रहण, सुदुपदेश, विलंब, प्रदर्शन आदि मुस्लिम पात्र इन शब्दों का प्रयोग नहीं करते। इसी तरह राज कर्मचारियों के पद उर्दू-फारसी के हैं जैसे- मसलन, कासिद, मुख्तार, आदि ।

प्रेमचंद मानते हैं कि नाटक में संगीत का अंश भी होना चाहिए इसलिए उन्होंने कुछ गीत शामिल किए हैं। इसके लिए प्रेमचंद ने कुछ उर्दू कवियों की गजलों को शामिल कर दिया है।

अनीस के मर्सिये' के भी दो चार बंद भी उन्होंने उधृत कर दिए हैं। इसी तरह श्रीधर पाठक की भारत स्तुति को भी प्रेमचंद ने शामिल कर लिया है। अंततः देखा जाए तो नाटक की भाषा उर्दू बहुल होते हुए भी हिंदी ही है, जिसे हम राजा शिवप्रसाद सितारे हिंदी की भाषिक परंपरा में रख सकते हैं।

बोध प्रश्न-

1- कर्बला नाटक की शिल्प की समीक्षा कीजिए।

2- 'कर्बला' नाटक की भाषा की विशेषताएँ बताइए। (लगभग 6 पंक्तियों में)

16.4.7 कर्बला नाटक के महत्त्वपूर्ण अंश

यहाँ हम 'कर्बला' नाटक के कुछ महत्वपूर्ण अंश को प्रस्तुत कर रहे हैं, इससे आपको इस नाटक को समझने में और मदद मिलेगी साथ ही आप नाटक के अंशों की व्याख्या स्वयं कर सकेंगे।

उद्धरण 1

युद्ध से पहले का यह दृश्य है। मदीना के नाजिम वलीद रात के समय मिलने के लिए हुसैन को बुलावा भेजते हैं। इस्लाम के इतिहास में यह अनिश्चय और आशंका की घड़ी है। कब कौन मार दिया जाएगा, किसके साथ कब क्या हो जाएगा, इसका पूर्वानुमान करना मुश्किल था। नाटक के दृश्य में हुसैन और उनके भाई अब्बास बैठे हुए हैं और आपस में चर्चा कर रहे हैं कि अब क्या किया जाए ! निमंत्रण मिला है, जाया जाए या इन्कार कर दें। इसी संदर्भ में अब्बास और हुसैन का वार्तालाप चल रहा है। इन पंक्तियों से हुसैन की वीरता, ईमानदारी और दृढ़ इच्छाशक्ति का एहसास होता है।

अब्बास : आप एतबार करें, लेकिन मैं आपका वहाँ जाने की हरगिज सलाह न दूंगा इस सन्नाटे में अगर उसने कोई दगा की तो कोई फ़रियाद भी न सुनेगा। आपको मालूम है कि मरवान कितना दगाबाज और हरामकार है। मैं उसके साए से भी भागता हूँ। जब तक आप मुझे यह इतमीनान न दिला दीजिएगा कि दुश्मन यहाँ आपका बाल बाँका न कर सकेगा मैं दामन न छोड़ूंगा।

हुसैन: अब्बास, तुम मेरी तरफ से बेफ़िक्र रहो, मुझे हक़ पर इतना यकीन है और मुझमें हक़ की इतनी ताकत है कि मेरी बात और वलीद तो क्या, यज़ीद की सारी फौज भी मुझे कुछ नुकसान नहीं पहुँचा सकती । यकीन है कि मेरी एक आवाज पर हजारों ख़ुदा के बंदे और रसूल के नाम पर मिटनेवाले दौड़ पढ़ेंगे और अगर कोई मेरी आवाज़ न सुने तो भी मेरे बाजुओं में इतना बल है कि मैं अकेले उनमें से एक सौ को जमीन पर सुला सकता हूँ । हैदर का बेटा ऐसे गीदड़ों से नहीं डर सकता। आओ जरा नाना की कब्र की जियारत कर लें।

उद्धरण 2

इस प्रकरण में खलीफा के सेना में चल रहे मानसिक उथल-पुथल की जानकारी मिलती है तथा हुसैन के नैतिक प्रभाव का भी पता चलता है।

“साद मेरा दिल अभी तक हुसैन से जंग करने को तैयार नहीं होता चाहता हूँ किसी तरीके से सुलह हो जाय, मगर तीन क़ासिदों में से एक भी मेरे खत का जवाब न ला सका। एक तो हजरत हुसैन के पास जा ही न सका, दूसरा शर्म के मारे रास्ते ही से किसी तरफ खिसक गया और तीसरे ने जाकर हुसैन की बैयत अख्तियार कर ली। अब और कासिदों को भेजते हुए डरता हूँ कि इनका भी वही हाल न हो ।

शिमर ज़ियाद को ये बातें मालूम होंगी, तो आपसे सख्त नाराज होगा। साद मुझे बार-बार यही ख्याल आता है कि हुसैन यहाँ जंग के इरादे से नहीं, महज हम लोगों के बुलाने से आए हैं। उन्हें बुलाकर उनसे दगा करना इंसानियत के खिलाफ मालूम होता है।

शिमर : मुझे खौफ है कि आपके ताखीर से नाराज होकर जियाद आपको वापस न बुला लें फिर उनके गुस्से से ख़ुदा ही बचाए जियाद ने कितनी सख्त ताकीद की थी कि हुसैन के लश्कर को पानी का एक बूंद भी न मिले।

16.4 पाठ सार

16.5: पाठ की उपलब्धियाँ

16.6 : शब्द संपदा

1. अनुयायी - मानने वाले,पैरोकार ,
2. नवासा - पुत्री का पुत्र यजीद (खलीफा उमय्या के वंशज)
3. खलीफा - सरपरस्त
4. कूफा - बग़दाद का एक प्रांत,
5. बगावत - विद्रोह
6. समर - युद्ध,
7. मयस्सर - उपलब्ध

8. दुधमुंहां - नवजात,
9. रण - क्षेत्र- युद्ध का मैदान
10. लश्कर - सेना, रुधिर- खून
11. मश्क - चमड़े का बना हुआ एक पात्र जिसमें पानी भरा जाता था
12. पाशविक- पशुओं जैसा , खौफ- डर, भय
13. ताकीद- निर्देश, सुलह- समझौता
14. ताखीर- देर, विलम्ब, जियारत- दर्शन
15. बाज़ू - भुजा ,हाथ, एतबार- विश्वास
16. रश्क - अचरज, अचम्भा

16.7 परीक्षार्थ प्रश्न

खंड (अ)

दीर्घ प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 500 शब्दों में लिखिए।

1- कर्बला दुःखान्त नाटक है समीक्षा कीजिए।
2- कर्बला नाटक के विचार पक्ष पर प्रकाश डालिए।
3- "कर्बला नाटक आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना अपने लिखे जाने के समय में था" इस कथन की समीक्षा कीजिए।
4- कर्बला का नायक कौन है? तर्क सहित प्रमाणित कीजिए।
5- यज़ीद ने मुस्लिम को सज़ा देने के लिए कौनसा आरोप लगाया।
6- किस वेश्या ने यज़ीद के सामने गाना सुनाने से मना कर दिया।

खंड (अ)

लघु प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 200 शब्दों में लिखिए।

1- कर्बला नाटक के भावपक्ष का विश्लेषण कीजिए
2- मुस्लिम का चरित्र चित्रण कीजिए
3- कर्बला शीर्षक की उपयुक्तता पर टिप्पणी लिखिए।
4- कर्बला नाटक के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
5- ज़ोहरा की मृत्यु कैसे हुई।

खंड (ब)

i. **सही उत्तर चुनिए**
ii. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए.**

iii. सुमेल कीजिए

16.8 पठनीय पुस्तकें

प्रे

पाठ्य/ सहायक पुस्तक

कर्बला प्रेमचन्द प्रकाशक सरस्वती प्रेस, वाराणसी